सभा-समिति

● कलकत्ता, १८-४-८२। पूर्व घोषणाक अनुसार मैथिली मुक्ति मोर्चाक बैसार स्थानीय उषानगर विद्यालय मे भेल। मोर्चाक संयोजक श्री रामलोचन ठाकुरक पूजनीया माताक देहावसान २-४-८२ कें भ जेबाक कारणे ओ अनुपस्थित छलाह। उपस्थित सदस्यगण एहि आकस्मिक एवं असामयिक निधन पर एक शोक प्रस्ताव पारित कएलनि तथा दिवंगत आत्माक चिर शान्तिक हेतु ओ शोक संतप्त परिवार कें शाहस आ धैर्य प्रदान करबाक हेतु मां मैथिली सं दू मिनट मौन प्रार्थना कएल गेल।

सभाक अग्रिम कार्यवाही - स्थगित राखल गेल।

(द्वारा—जनार्दन झा, सह-संयोजक)

● घनश्यामपुर (दड़िभंगा), ११-३-८२। दड़िभंगा स्थित साहित्यिक संस्था कौशिकीक तत्वावधान मे पहिल खेप एहि अंचल मे कवि सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न भेल। कार्यक्रमक शुभारंभ श्री उदयकान्ता मिश्र एवं तुलसी चन्द झा द्वारा श्री वैद्यनाथ विमल रचित भगवती वन्दना 'पूजा कोना करी हे भवानी' सं भेल जाइ मे तवला वादन क रहल छलाह श्री कृष्ण मोहन झा।

उद्‌घाटनकर्त्ता प्रसिद्ध लेखक प्रो० डा० नित्यानन्द झा अपन उद्‌घाटन भाषण मे ग्रामीण जनता सं अपन भाषाओ साहित्यक प्रति सतत जागरूक रहि मैथिलीक उत्थान लेल अभियानक आह्वान केलथिन प्रो० डा० दयानन्द झाक अध्यक्षता मे एगो भव्य कवि सम्मेलन भेल जाइ मे सर्वश्री कृष्ण मोहन झा, जय प्रकाश चौधरी जनक, प्रो० देवकान्त मिश्र, प्रो० विमल नारायण ठाकुर, वैद्यनाथ विमल आदि भाग लेलनि। कार्यक्रम अर्धरात्रि धरि चलैत रहल। सांस्कृतिक कार्यक्रमक मुख्य आकर्षण छलाह किशोर गायक श्री अरविन्द कुमार झा केदार चन्द्र मिश्र कुमर कान्त ठाकुर ओ श्रवण कुमार झाक गीत सेहो मनोरम छल। संचालनक रहल छलाह कौशिकीक संयोजक श्री वैद्यनाथ विमल।

कौशिकीक अध्यक्ष श्री रमानन्द रेणु अपन सन्देश मे कहलनि जे जाधरि गामक माटि नहि जागत-ताधरि कोनो क्रान्ति नहि भ सकत। एहि लेल ग्रामीण लोक-जीवन सं सम्बद्ध भ क भाषा ओ साहित्यक उत्थान लेल अभियान करी। ग्रामीण जनता दिस सं सर्व श्री केदार नाथ मिश्र, देवेन्द्र नाथ झा, देवकान्त झा अपन-अपन उद्‌गार व्यक्त केलनि। 'अन्त मे स्वागत समिति दिस सं श्री शिवकुमार मिश्र धन्यवाद ज्ञापन केलनि।

(द्वारा—वैद्यनाथ विमल)

* कलकत्ता-१-५-८२। मिथिला सांस्कृतिक परिषदक द्वारा कवीश्वर चन्दा झा (कवीश्वर जोड़ि देनाइ हम आवश्यक बुझैत छी ले०) जयन्ती स्थानीय श्री सनातन धर्म विद्यालय मे मनाओल गेल जकर अध्यक्षता केलनि परिषदक आयोजन हेतु नियुक्त स्थायी अध्यक्ष डा० श्री मुनीश्वर झा। प्रधान वक्ता छलाह डा० अशर्फी झा प्रधान अतिथिक रूप मे मंचपर ल गेल गेलाह श्री मिथिलेन्दु जी।

कार्यक्रमक आरंभ मिथिलाक जातीय गीत 'जय-जय भैरवि' सं भेल जकर गायिका छलीह कुमारी हेमा। हेमा अपन गायन क्षमता सं कनेकालक लेल लोक कें अपन गामधर ल जेबा मे सफल रहलि। ओ आरो कएकटा गीत गओलक। ओकरा मे पूर्ण प्रतिभा छैक आ जं अभ्यास करय त नीक गायिका बनि सकैछ।

कार्यक्रम पूर्ण अव्यवस्थि छल एकटा गीत आ एकटा भाषण आ बीच मे अध्यक्षीय अनुशासन। सभसं अधलाह बात त ई भेल जे कवीश्वरक छवि उपलब्ध होइतहु मंचपर नहि छल आयोजक लोकनि भरिसक एकर खगता नहि बुझलनि सभ सं महत्वपूर्ण भाषण छल प्रधान वक्ता साहेबक। ओ कवीश्वरक खूब प्रशंसा केलनि कारण से केनाइ आवश्यक छलनि—भनहि हुनक रचना पढ़ल नहिं छलनि, जे अपनहि बजलाह परञ्च मैथिलीक आधुनिक कविता जे विश्वक कुनू भाषाक कविता सं पाछू नहि अछि तकर धोर निन्दा केलनि। ओ प्र० वक्ता छलाह तें हुनक पौत्रा कें ई अधिकार अवस्से छलनि जे छड़पि कें मंचपर चढ़ि जाथि आ अओ बूढ़। हाथ उठाउ। फटाक—पढ़ि लेथि—दस बर्ख धरि डा० लोढ़ाक ओइ ठाम हाट-बजार केलाक पश्चात् पी एच० डी० क उपाधि पओनिहार डा० अशर्फी झा अपन पौत्रक पढ़ाओल पांती के दोहरबैत आजुक कविताक निरर्थकताक बात कहलनि। डा० झा कें बुझक चाहियनि जे हाट-बाजार स झोड़ाभरि तरकारी कीनि गुरुआइन लग पहुचओने पी एच० डी० अवस्से भेटि गेलनि परञ्च कविता बुझबाक बोध एना नहि भेटैत छैक। तहिता जं प्रधान वक्ताक एहि आरोप सं अध्यक्ष महोदय अपन सहमति प्रकट केलनि त अचरजे की? हुनको हेतु डिगरीक अर्थ चाकरीएटा छनि जकर आ आधुनिक साहित्यक संदर्भ हुनक ज्ञानक परिचय की इएह सहमति प्रमाणित नहि करैछ?

एहि अवसर पर श्री बाबू साहेब चौधरी अवस्से ककीश्वरक प्रति असली श्रद्धाञ्जलि मैथिलीक रक्षा, विकासक बात कहलनि जे आयोजनक उपलब्धि मानल जा सकैछ।

खेदक संग लिखए पड़ि रहल-ए जे ई आयोजनी संस्था सभ आइधरि आयोजनक महत्ता नहि बुझि सकल-ए। कुनू विभूतिक जयन्ती वा स्मृति दिवस मना कें हमरा लोकनि हुनक नहि अपितु अपन, अपन देस समाजक उपकार करैत छी। विभूतिक स्मृति दिवस एही लेल आवश्यक जे हुनक व्यक्तित्व-कृतित्व सं शिक्षा लय हमरा लोकनि अपन देश-भाषा-संस्कृतिक विकास लेल शपथ ली आ काज करी। तें आवश्यक छैक जे मात्र विद्यापति आ कवीश्वर चन्दा झा के स्मृतियेटा नहि—ग्रीयर्सन महोदयक स्मृति पर्व, ज्योतिरीश्वर स्मृति पर्व, महाकवि डाक आ लाल दास स्मृति पर्व मनाओल जाय। आवश्यक छैक महावली लोरिक, सलहेस दीनाभद्री आ रायरणपालक स्मृति दिवस मनाओल जाय। मिथिलाक एकांगी इतिहासक पुनरावृत्ति आत्मघाती प्रयास थिक—एहि सं निवृत्ति भेनहि मिथिलाक कल्याण छैक।

मात्र अखबार मे नाम छपेबा लेल आ अनहा मे कनहा राजा बनबाक लोभे एहि तरहे कुनू विभूतिक नाम पर मजाक उड़ोनाइ सरिपहु निन्दनीय ओ लज्यास्पद थिक।

(द्वारा—अग्रदूत)

कलकत्ता, १८ अप्रील १९८२। स्थानीय मिथिला जन कल्याण सं कीर्तन मंडली द्वारा मुल्लाहाटी (लेक गार्डेन्स) मे आयोजन चौबीस घण्टा व्यापी अखंड अष्टयाम कीर्तन समारोह बेस धूम-धामक संग सम्पन्न भेल। आयोजनक शेष मे स्थानीय कलाकार लोकनि द्वारा विबाह कीर्तन सेहो बेस जमल आ उपस्थित समुदायक मनोरंजन करबा मे पूर्ण सफल भेल।

चिट्ठी-पुरजी

"देसिल बयना" क प्रति भेटल। जें 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' कहले गेल छै तें हमरो मीठ लागल, कही, तं पुनरूक्तिये हयत। ओना, ई कहल जाय कि पत्रिका बड़ जोरगर आ तेवर-वला अछि, तं कोनो अतिशयोक्ति नहि। 'लोचन कविराय' केर कमाल तं देखबे जोग अछि।

—आरसी प्रसाद सिंह, पटना

पत्र दीर्घायु हो, एकर भव्य प्रचार प्रसार-हो। मैथिली पत्र पत्रिका में एखन देसिल बयना जे मात्र जन्मे ग्रहण केलक अछि, तखन एहि मे रोचकता, कौतुहलता और विशिष्टताक स्पष्ट छाप अछि। प्रयासक हेतु साधुवाद।

—श्री देव झा, हिन्द-मोटर

सम्पादकी 'भीख नहि अधिकार चाही' देखि मन गद-गद भए गेल। हमरा लोकनि कें अधिकार दिआवए मे अपनेक ई पत्र सदक्खन पथ प्रदर्शकक काजेटा नहि करत बल्कि मिथिला मैथिलीक अभ्युत्थान लेल प्रवल सम्लक संग डेग सं डेग मिलाकए जन जागरण आ चेतना प्रदान करत से आशा अछि। आजुक मिथिलाक अनेकानेक सपूत कुम्भकर्णी निद्रा सं ग्रसित भए अपना कें पंगु बनएने जा रहल छथि। आवश्यकता छल अपने एहन बिगुल फुकनिहारक से आबि गेल छी प्रवासी भए देसिल बयना लएक एहि बयना के स्वीकार कए हम अपना के कृत्य-कृत्य आ धन्य बुझि रहल छी।

एना पत्रिकाक आन वस्तु सेहो कम दिव्यगर नहि अछि, आ समाजक लेल अपनेक एक-एक आखर राम वाण जकां काज करत से विस्वास अछि।

—अशोक कुमार झा, दड़िभंगा

बालगीत

मामा, आब बुझैछी!

मामा, अहांछी फोकटिया से आब बुझैछी।
अहां कतेक महगा छी से भाव बुझैछी॥
मामा आब बुझैछी।
इसकूल मे माट सैब, बेर बेर कहै छथि।
अहांकेर चमकब, सुरूज के मानै छथि॥
सुरूज भेने निपत्ता, अहां झाम बुड़ै छी।
मामा आब बुझैछी।
जं अपनेला लल मामा, हमरा की देब यौ।
कोना चानीक कटोरीसे, दूधभात लेब यौ॥
एतेक ताम झाम देखि, हमजीह कुचै छी।
मामा, आब बुझैछी॥
मुदा दादीके मुश्किल छै, बातके बूझायब।
अहां बिना नै हेतै अट-जटीन गायब॥
अहां अनकेला कन्नोक बोझ ढ़वै छी।
मामा आब बुझैछी॥
मामा, अहांछी फोकटिया से आब बुझैछी।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

कह लोचन कविराय

दूरक ढोल सोहावन कहबी छैक पुरान
किन्तु मात्र कहबीए नहि सुनियो रहलहु कान
सुनियो रहलहु कान आंखि सं देखि रहल छी
मैथिलीक दुर्दशा हाल मिथिलाक कहब की
कह लोचन कविराय विवेक एहन नवतूरक
निश्चित पतनक मूल प्रगति बात त दूरक

अरुणोदय प्रकाशन, ३३।५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता—७०००३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनिअर आर्ट प्रिन्टर्स ३२ बी बृन्दावन बैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता—५ मे मुद्रित। सम्पादक—श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्तिमोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अङ्क—६ जून, १९८२ मूल्य—पचास पाइ

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

सम्पादकीय

सरकारी पुरस्कार आ मैथिलीक साहित्यकार

कुनू छोट सं छोट आ पैघ सं पैघ आन्दोलन मे साहित्यकारक भूमिका प्रधान रहल-ए। साहित्कार क्रान्ति द्रष्टा होइत छथि। ई पुरान परती-परांत के तोड़ि आन्दोलनक नव माटि तैयार करैत छथि आ पुनः आन्दोलनक बीजारोपण करैत छथि। परञ्च एहीठाम हिनक काज शेष नहि होइछ। ई अपन रोपल आन्दोलनक बीज के माटि सं बहार भय विशाल वृक्षक रूप लेबाक, ओकरा फुलेबा-फड़बाक समुचित परिवेशक सिरजन करैत छथि, आततायीक हाथ सं ओकर रक्षा लेल स्वयं त सतत् तत्पर रहिते छथि, समाजक लोक कें सेहो ओकर उपयोगिताक भान करा ओकर रक्षाक लेल सचेतन बनबैत छथि। शेष मे जखन कि ओ गाछ फल दैत छैक त ई स्वयं सहटि जाइत छथि। तें साहित्यकारक ई गरिमा अछि। ई प्रातः स्मरणीय होइत छथि, अनुकरणीय होइत आ अमरता कें प्राप्त करैत छथि।

कहल जाइछ जे जे काज तरूआरि सं संभव नहि होइत छैक से साहित्यकार अपन कलम सं सहजहिं क लैत छथि। तें एक दिस जं विशाल मानवताक दृष्टि हिनका कलम दिस—दिशा निर्देशक लेल लागल रहैछ त दोसर दिस मानवताक शत्रु शोषक-शासकक सेहो। पहिल वर्गक हृदय मे जतय आदरक भावना रहैत छैक त दोसर वर्गक हृदय मे आतंकक। तें पहिल वर्ग जतय हिनक सहायक होइत रहल-ए त दोसर विरोधी। परंच साहित्यकार जनबलक सहयोगे समस्त विरोध कें भूलुंठित करैत अपन लक्ष्य पथ पर अविराम चलैत रहैत छथि।

एहि दृष्टिसे जं आजुक मैथिली साहित्यकार दिस तकैत छी घृणा सं मन भिनकि जाइछ, लाजें माथा नत भ जांइछ। किछु अपवाद कें छोड़ि प्रायः सभ कें सभ अपन असली चरित्र छोड़ि स्वान प्रवृतिक परिचय द रहल छथि। इएह कारण अछि जे एतोदिनक पश्चातो मिथिला-मैथिल-मैथिली अपन न्यायोचित अधिकार सं वंचित रहल-ए। मैथिली आन्दोलन जातीय आन्दोलनक रूप मे नहि रूपायित भ सकल-ए।

मानव जीवन मे भाषाक की महत्व छैक से आब लिखबाक खगता नहि। वर्तमान मे कर्नाटक प्रदेश मे चलि रहल आन्दोलन जकर मुख्य माङ छैक 'कन्नड़' के त्रिभाषा फर्मूलान्तर्गत प्रथम आवश्यक भाषा बनेबाक—टटका उदाहरण थिक जे केना पथ सं पैघ 'ज्ञानपीठ' पुरष्कार विजेता साहित्यकार एकर नेतृत्व क रहल छथि। ओतबे नहि समस्त बुद्धिजीवी कलाकार लोकनि एहि मे पूर्ण सक्रिय छथि। परञ्च मैथिली आन्दोलन मे साहित्यकारक सहयोगिताक गप्प त फराक जाओ—विरोधे भेटैत रहलैक-ए। कुनू-कुनू नवसिखुआ अति प्रगतिशील गीतकार त भूखक प्रधानता देखेबा लेल भाषा आन्दोलन कें घृणित राजनीतिक संग जोड़बो सं बाज नहि आयल। पता ने हुनका जखन भूख लगैत छनि खेनाइ भाषा मे मंगैत छथि अथवा पेट डेङाबय लगैत छथि। ओना सत्य ई अछि जे इहो गप्प प्रकाश करै लेल गीतकार महोदय कें भाषाएक सहारा लेमय पड़लनिहें। सं एक शब्द मे कही त मैथिली आन्दोलन मे सभ सं बाधक ई साहित्यकार नामक जन्तुए रहल-ए।

एतबा होइतहु ने हेतु किछु साहित्यकार सचेतन रहलाह आ तें हुनका पथ भ्रष्ट करबा लेल मैथिली विरोधी बिहार सरकारक नेता जगन्नाथ मिश्र नाना तरहक षडयंत्र रचैत रहलाहए। एही षडयंत्रक फलस्वरुप किछु साहित्यकार कें पुरस्कार देबाक योजना बनलए। समाचार-सूत्रक अनुसार श्री नागार्जुन (यात्री नहि), आरसी प्रसाद सिंह श्रीकन्त ठाकुर विद्यालंकार जयनाथ मिश्र आदिक नाम एहि योजनान्तर्गत अछि। जहांधरि विद्यालंकार आ जयनाथ मिश्रक बात अछि—इहो लोकनि जे साहित्यकार छथि से एही समाचार सं ज्ञात भेल। ओना ई लोक अवस्से जनैए जे जयनाथ मिश्र डा० जगन्नाथ मिश्रक ससुर छथिन आ विद्यालंकार सदा सं मैथिली विरोधी आ हिन्दीक प्रबल पक्षधर रहलाहए। सम्बन्ध मे पैघ आ मैथिली विरोधी मे पैघ हेबाक कारणे ई लोकनि अवस्से सरकारी पुरष्कारक योग्यता रखैत छथि।

जहांधरि महाकवि नागार्जुनक प्रश्न अछि इमरजेंसीक समय मे ओ 'सरकारी चारा' गर्वक संग अस्वीकार केने छथि आ तें जे एहि बेर स्वीकार करताह ताइ मे पूर्ण संदेह। 'कविवर आरसी प्रसाद सिंह कें हिन्दी साहित्यकारक रूप मे पांच सेक मासिक वृत्ति कहांदन भेटिए रहल छनि। परञ्च एहि बेर एकठहुरी दस हजारक 'तोरा' ओ स्वीकारैत छथि वा नहि से त भविष्ये कहत। ओना सरकारी वृत्ति [illegible] एक साहित्यकार अस्वीकार कर एगो [illegible] उदाहरण प्रस्तुत केने छथि आ आरसी बाबू तकर [illegible] केने छथिन। पांच सेक मासिक वृत्ति हिन्दी साहित्यकार (!) [illegible] क संग क रहल छथि। तुलना मे [illegible] जे पचास [illegible] एगो [illegible] सरकार [illegible] रहल-ए जकर सूदि सं साहित्यकार लोकनि कें पाल्ल जाएत।

जहांधरि बिहार सरकारक प्रश्न छैक ओ अपन सहस्रो कलंक कें झंपबा लेल हजारो षडयंत्र करबे करत, मैथिली आन्दोलन के असफल कए मैथिलीक विनाशक हेतु साहित्यकार कें कीनबाक प्रयास करबे करत परञ्च कि साहित्यकार सभ एते नीच, एहन दयाक पात्र बनबा लेल तैयार अछि ? कि विवेकक लेसमात्रो ओकरा लोकनि मे शेष नहि छैक ?

जं सरकार टुकड़ी फेकैए त निश्चिते ओकर विशेष उद्देश छैक, ओ प्रतिदान चाहैए आ ई प्रतिदान एक मैथिलीक साहित्यकार सं मिथिला-मैथिली विरोधी सरकार की चाहैए से ककरो सं नुकाएल नहि। इतिहास साक्षी अछि जे मां-बाप भनहि अपन नेना कें बेचि लेने हो—कुनू बेटा अपन मां के हाट नहि चढ़ओलक-ए। देखाचाही मैथिलीक साहित्यकार लोकनि की करैत छथि परञ्च जनता कें, साधारण मिथिलावासी कें सचेत रहनाइ परमावश्यक। जगन्नाथक दृष्टि शनिक दृष्टि थिक आ से मिथिला-मैथिली पर लागि चुकलए—से हमरा लोकनि कें नहि बिसरबाक चाही।

● जय मैथिली

✻ मैथिली ✻

मैथिली—माने मैथिली भाषा हिमालय स गंगा तक आ बंगाल स गंडक तक पसरल विशाल सुजला-सुफला शस्य श्यामला मिथिला देशक भाषा, तीन कोटि मैथिलक मातृभाषा।

ओना ई सर्वमान्य अछि जे भाषा कुनू खास व्यक्ति वा वर्णक नञि होइ छइ, परंच मिथिला मे एहन भ्रामक प्रचार कएल गेलए आ एखनों कएल जा रहलए जे मैथिली कुनू विशेष वर्णक भाषा थिक, आ थोड़-बहुत अबोध लोक एहि प्रचारक शिकार भेलए। तें एहि भ्रम के दूर करैक खगता छैक, हमरा जनतबे।

भाषा पर गप्प करैकाल सर्वप्रथम भाषा थिक की ताइपर विचार क लेब आवश्यक। भाषा के विचारक वाहन कहल गेलए। मनुक्ख सामाजिक प्राणी थिक। ओ मात्र समाज मे रहिते नञि अछि वरन समाजक अन्यान्य सदस्यक संग अपन विचारक आदान-प्रदान करैए, एक दोसराक सुख-दुखक खोज खबरि रखैए, ओकर सहभागी होइए आ ई सभ होइ छइ भाषाक माध्यमे। सुख-दुखक अनुभव पशुओं के होइ छइ परंच भाषाक अभाव में ओ प्रकट नञि क सकैए जे मनुक्ख बड़ सरलता स क लए। किन्तु भाषा मात्र एतबे नञि; असल मे विचारक वास्तव रूप थिक। मार्क्स भाषा के immediate reality of thought कहलनिहें। भाषाक बिना विचारक अस्तित्वे ने रहैए। एहि स इहो पता चलए जे मनुक्खक सामाजिक आ विवेकशील प्राणी हैब भाषाक जन्मक कारण भेल। मनुक्ख के अपन मनक बात दोसर के कहबाक तथा दोसराक बात जनबाक आन्तरिक इच्छाए कहिओ भाषा के जन्म देलके हैत। दोसर जे भाषा एहि रूपे जन्म लेलक हैत वा जाइ भाषा के जन्म देल गेल हैते से निश्चित रूपे समाजक सभ सदस्यक लेल एकेटा छल हैते, अन्यथा उद्येशक पूर्ति संभव नञि छलै। तेसर, भाषा मनुक्खक लेल बनाओल गेल या एना कही जे भाषाक आविर्भाव साधनक रूप मे भेल—साध्य छल मनुक्ख, मनुक्खक कल्याण, एहि संबंध मे स्तालिन कहै छथि—भाषा समाजक लेल बनाओल गेलए, एकर निर्माण लोकक बीच विचारक आदान प्रदानक माध्यमक रूप मे जे समाजक सभ सदस्यक लेल एकेटा होइए आ सभ सदस्यक एके रंग सेवा करैए।'

मनुक्ख विकासशील प्राणी थिक, ओ मात्र अपन विचार दोसर के सुना क वा दोसरक विचार जानि क चुप्प भ बैसि नञि सकैए। ओ प्रत्येक समस्याक समाधान चाहैए प्रत्येक अनजानल वस्तु के ज्ञान' चाहैत नव नव वस्तुक खोज कर' चाहैत कुनू वस्तु के जनबाक जिज्ञासा जे कि विकासक बीज थिक तथा ताइ लेल उचित प्रयासक निमित्त प्रयोजन होइ छइ शिक्षाक, आ शिक्षा बिना भाषाक भ नञि सकैए। तहिना कुनू विकासक काज कुनू एक व्यक्ति स संभव नञि, ताइ लेल चाही सामूहिक प्रयास आ तें सामूहिक शिक्षाक प्रयोजन आ सभक लेल सहज-सरल शिक्षा मातृभाषाक बिना असंभव। आइ विश्वक प्रायः समस्त विद्वान एहि मत स सहमत छथि आ मातृ भाषाक महत्ता के स्वीकार करै छथि।

विकासक मूल थिक संघर्ष। मानव सभ्यताक आदिकाल स आइ तक डेग-डेग पर मनुक्ख के संघर्ष कर' पड़लैए आ पहि रहल छैक ई संघर्ष जिनगीक विभिन्न क्षेत्र मे। विभिन्न रूप मे होइत रहलैए आ भाषा एहि मे सहायक सिद्ध भेलैए। पहिने कहि आयल छी जे कुनू विकास एकक प्रयासे संभव नञि। स्वभावतः संघर्ष सेहो सामूहिक रूप मे भेलए। स्तालिनक अनुसार 'भाषा जत्ते वैचारिक आदान-प्रदानक माध्यम थिक, तत्ते संघर्षक आ सामाजिक विकासक साधन सेहो।'

आब ज विचार करी जे भाषा संघर्षक आ विकासक साधन केना थिक त फेर शिक्षाक चर्च करब आवश्यक। शिक्षा मेल

(शेषांश पृष्ठ ङ: पर)

गाम सं दूर : मिथिलाक मजदूर—४

उषा आ जयाक श्रमिक

बिजुली पंखा आ सिलाइ मशीनक लेल उषा आ जया नहि मात्र देश अपितु विदेशों मे विख्यात अइ। एकर ख्यातिक कारण छेक जे पंखा आ मशीन उच्च कोटिक होइत छेक जे निर्विवाद दक्ष श्रमिकक परीश्रमक फल थिक। एहि श्रमिक मे लगभग तीन सए मिथिलाक श्रमिक अइ।

एहि दुनू कारखाना मे जे कि एके मालिक अइ, श्रमिक वर्ग कें तीन श्रेणी मे विभाजित कएल गेल अइ—१) अदक्ष, अर्द्ध दक्ष; दक्ष। मैथिल श्रमिक प्रथम दू श्रेणी मे छथि। ओना इहो अजरजेक गप जे चाकरीक सम्पूर्ण जीवन मे लोक दक्ष किएक ने भ पबैछ? कून एहन व्यवस्था छेक जे दक्षक श्रेणी सं बहुलांश श्रमिक के फराके राखि अवसर दय देछ? से जे हो, परञ्च वास्तविकता इएह छेक।

एहि दुनू कारखाना मे कार्यरत श्रमिक औसतन ६००) सं टाका महिना पबैत छथि। कहबाक प्रयोजन नहि जे अन्यान्य छोट छीन कल-कारखाना मे काज केनिहार सं हिनका लोकनिक आर्थिक स्थिति नीक छनि। कम्पनी द्वारा सस्तदर मे आवासक सुविधा, नेना सभक शिक्षा लेल विद्यालयक सुविधा प्रदान कएल गेल छनि। परञ्च ई नहि बिसरबाक थिक जे ई महिना पेबाक लेल श्रमिक समुदाय कें पर्याप्त संघर्ष करय पड़ल छनि। एहनो समय भेलैए जखन कि ६ मास बर्ख दिन धरि कम्पनी हड़ताल रहलैए आ बहुतो कें गामक शरणापन्न होमय पड़लनिहें। ओतबे नहि, जे पाइ पाइ हिनका लोकनि कें आइ भेटि रहल छनि आरंभ मे से त नहिंञे भेटैत छलनि। जहिया कारखाना खुजल छल, मात्र पैंतालिस टाका महिना पर श्रमिक वर्ग काज करैत छलाह। अभावक ताड़ना सं विताड़ित लोक ताहू पर काज करैक लेल बाध्य भेल छल। ओना इहो गप सत्य जे मिथिलाक श्रमिकक जे संख्या आइ एहि दुनू कारखाना मे अइ, ताइ सं बहुत बेसी पहिने छल। कालक्रमे लोक अवकाश प्राप्त कय अपन देसकोस घुरैत गेल आ नव लोकक बहाली भ नहि पओलकैक, फलतः एकर संख्या दिनानुदीन कमिते जा रहल-ए।

जहिना एहि कम्पनीक नाम देश-विदेश मे छेक, तहिना एहि मे कार्यरत श्रमिकक नाम मैथिली जगत मे। एहि मे एक ठाम मात्र अधिक संख्यक मैथिल श्रमिक छथि तेहटा नहि, अपितु इतिहासक श्रमिक अपेक्षाकृत बेसी सजग छथि। हिनका लोकनि मे पूर्ण जातीय चेतना त छनिहे, संगहि मैथिली आन्दोलन मे प्रत्यक्ष सहयोग रहलनिहें। कलकत्ताक अधिकांश मैथिली सेवी संस्थाक पृष्टपोशक एहि दुनू कम्पनीक श्रमिक वर्ग रहला-ए आ एहुखन छथि। जखन कुनू आन्दोलनक चर्च होइछ, आर्थिक सहयोग लेल लोकक नजरि एहि ठामक श्रमिक लोकनि दिस दौड़ि जाइत छनि। किन्तु जं मात्र आर्थिक सहयोग धरि सीमित रही त से निश्चिते एकभगाह होएत। मैथिली रंग मंचक सुपरिचित आ कुशल कलाकार गौतम भारती, जनार्दन झा, कमल नारायण कर्ण, सदानन्द झा, काली कान्त ठाकुर आदि एही कम्पनीक श्रमिक छथि। गौतम भारती भोजपुरी भाषी होइतहुँ मैथिली मंचपर कतेक बेर आ जाइ दक्षताक संग उपस्थित भेल छथि तकरा कुनू निश्पक्ष इतिहासकार कहियो ने बिसरि सकैछ। डॉ० प्रेमशंकर सिंह सन बइमान मंचक इतिहास लेखक जं नहि हो त निश्चिते भारतीजीक नाम स्वर्णाक्षर मे लिखल जाएत। जनार्दन झा मात्र कलाकारे नहि निष्कलंक नाटकक लेखक सेहो छथि। हिनक आर दू गोट नाटक लिखल पड़ल छनि, मंचो भेलनिहें परञ्च प्रकाशित नहि भ सकल-ए। मुक्तिमोर्चाक संयोजकक सहयोगी तथा 'देसिल बयना' क सम्पादक सेहो इएह छथि। तहिना कमल नारायण कर्ण मात्र कलाकारे नहि, कतेको नाटकक निर्देशक रहि चुकल छथि। एही कम्पनीक रामाधार मिश्र मुक्ति मोर्चाक वरिष्ट सदस्य तथा 'देसिल बयना' क पांच मे सं एक—पार्टनर छथि।

एहि कम्पनीक मैथिल श्रमिकक आर एगो विशेषता ई छनि जे ई लोकनि विभिन्न राजनैतिक दल सं सम्बद्ध रहितहुँ मैथिली मिथिलाक नाम पर एकबद्ध छथि। तें कांग्रेस (इ) क सक्रिय कार्यकर्ता होथि वा मार्क्सीय साम्यवादी दलक वा आने कुनू दलक पटनाक प्रदर्शन मे एकजुट भए सभ पहुँचल छलाह, जेना आन काज मे रहैत छथि।

एहि कम्पनीक श्रमिक लोकनि एगो संस्थाक निर्माण से हो केने छथि—जे मित्रसंघक नाम जानल जाइछ। ई संस्था कुनू मैथिल श्रमिक जखन अवसर प्राप्त करैत छथि त तिनका प्रीति भोजक संग मिथिलाक परम्परानुसार विदाइ करैत अइ। एहि संस्थाक माध्यमे प्रवास मे रहितो प्रवासक मानसिक कष्ट सं बहुत हद धरि मुक्ति तथा अपन भूमि, भाषा, संस्कृति सं सतत जुड़ल रहबाक सुख हिनका लोकनि कें प्राप्त छनि।

—मुजतबा अली

मिथिला-विभूति—५

महाकवि गोविन्द दास

मिथिला-विभूति महाकवि गोविन्द दासक जन्म मधुबनी जिलाक लोहना गाम मे कविपति विद्यापतिक देहावसानक लगभग सओ बर्ख पश्चात् भेल छल। हिनक पिताक नाम कृष्णदास झा छलनि। हिनक छोट भाइ रामदास झा सेहो विराट पंडित ओ नाट्यकार छलाह, जिनक लिखल 'आनन्द विजय नाटिका' उपलब्ध अइ।

कविपति विद्यापतिक पश्चात् विद्यापतिक (पदावली) परम्परा मे सभ सं पैघ आ सशक्त कवि निर्विवाद रूपें गोविन्द दास कें छोड़ि आन नहि छथि। हिनक लिखल पदक संख्या हजारक लगभग अइ। अपेक्षित शोध-खोजक अभाव मे हिनक अन्यान्य रचनाक पता आइधरि नहि चलि सकल-ए।

हिनक पद मुख्यतः राधा-कृष्ण विषयक रहितहु कविपति विद्यापतिए जकां शिव-शक्ति तथा अन्यान्य देवी-देवता सं सेहो सम्पर्कित अइ। भक्ति-श्रृङ्गार सौन्दर्यक त्रिवेणी ई अपन काव्यक माध्यमे बहओने छथि। अपन पदक सम्बन्ध ई स्वयं एक ठाम लिखैत छथि—रसना-रोचन श्रवण विलास रचइ रुचिर पद गोविन्द दास।'

विभिन्न पोथी तथा हिनक रचनाक आधार पर प्रमाणित होइए जे ई मात्र कविए नहि विराट पंडित, विविध कला मर्मज्ञ, महान दार्शनिक तथा समाज विज्ञानी छलाह। इएह सर्वप्रथम विद्यापति कें 'कविपति' कहि सम्मानित कएल—

कविपति विद्यापति मतिमाने।
लाख गीत जगचीत चोरायल
गोविन्द गोरि-सरस-रस-गाने॥

महाकविक महानताक परिचायक एही गीतक शेष पद थिक जाइ मे ओ अपना कें मतिमन्द कहैत छथि, जे सुख सम्पद रहितहुँ आन पद रचना करय चाहैत, जेना कि वामन (बौने) चान धरय चाहैत हो।

जेना कि पहिनहि कहि आयल छी महाकवि गोविन्द दासक सम्बन्ध मे एखनो धरि हमरा लोकनि कें पूर्ण जानकारी नहि अइ कारण अपेक्षित शोध-खोज नहि भेलए। हमरा लोकनिक लेल एहि सं पैघ लाजक बात आन कि भ सकैछ, जे आइ धरि हिनक समस्त पदक संकलनो नहि प्रकाशित भ सकल-ए। १९३२ मे मथुरानाथ दीक्षित महाशय 'गोविन्द गीतावली' नामे किछु पद प्रकाशित अवस्स केलनि परञ्च 'मैथिली कैरेक्टर' सं अपरिचित हेबाक कारणे शब्दक अर्थ नहि बूझि ओकर बदलि अनर्थ क देलनि जे पश्चात् गोविन्द दास कें बंगालक कवि कहनिहार बंगाली गवेषक लोकनि के खंडन-मंडन करबा मे बड़ सहजता भेलनि। १९३८ मे स्व० रमानाथ झा 'श्रृंगार भजन' नामे किछु पद प्रकाशित केलनि परञ्च इहो हिरबा छूबि संतुष्ट भ गेलाह। परिश्रम कए ने त पद संग्रह क सकलाह आने गोविन्द दास कें मैथिल हेबाक अकाट्य तर्क प्रस्तुत क सकलाह। मात्र पंजीक सहारा लय किना जे) उपर लिखल गेल अइ) हुनका मैथिल बना देलनि।

मैथिल जातिक ई विशेषता रहलैक-ए जे ओ अपन विभूति कें, अपन वस्तु कें नहि चीन्हैए। जहिना हनुमान जी कें केओ मन पाड़ि देनि—का चुप साधि रहेउ बलवाना? त हुनका अपन बलक भान होनि, तहिना हमरो लोकनि कें जखन केओ देखा देए, परिचय करा देए—तखने अपन विभूति कें चीन्हैत छी। कविपति विद्यापतिक सम्बन्ध सेह भेल अइ, महाकवि गोविन्द दासक सम्बन्धहु मे तहिना भेल अइ। गोविन्द दास जे मैथिल छलाह—ई बात सर्वप्रथम प्रकाश मे अनलनि नगेन्द्र नाथ गुप्त महाशय। १३३१ साल में 'मासिक वसुमती' पत्रिकाक कार्तिक संख्या, १३३५ साल मे साहित्य-परिषत् पत्रिकाक ३५ म भाग मे १३३६ सालक जेठ-अषाढ़ मासक प्रवासी मे १९३० ई० जुलाइ मासक Modern Review मे एहि सम्बन्ध मे हुनक प्रबन्ध प्रकाशित भेल। एकर पश्चाते १३३२ साल मे दिल्ली मे जे बंगीय साहित्य सम्मेलन भेल ताइ मे नगेन्द्र बाबूक विरोध मे सतीश चन्द्र राय महाशय पत्र लिखि पठओलनि। हुनक कहनाम छलनि जे गोविन्द दास मैथिल नहि, बंगाली छलाह। आ एही ठाम सं महाकवि कें बंगाली बनेबाक प्रयास क्रमशः बेसिक होइत गेल। बंगाली चेतना आ एकता का मैथिल चेतना निछुआन रहि गेल। महाकवि गोविन्द दास झा गोविन्द कविराज बनि गेलाह।

विद्यापति पदावलीक सन गोविन्ददास क पदक सभक तीक आ विस्तृत संकलन-प्रकाशन विमान बिहारी मजुमदार महाशय द्वारा भेल अइ। एहि मे विमान बाबू अपन पूर्ववर्ती तथा समकालीन बंगाली विद्वानक बहुतो तर्क दय गोविन्द दास कें बंगाली कवि प्रमाणित करैत छथि। परञ्च जाइठाम ओ रमानाथ झाक तथा दीक्षित महाशयक तर्क कें बड़ सहजताक संग काटि दैत छथि ताइठाम हुनक अपन तथा जुटाओल तर्क से हो ताही सहजताक संग काटल जा सकैछ। उदाहरण स्वरूप सुकुमार सेन महाशय महाकविक पंक्ति—रसिक-शिरोमणि नागर-नागरी—

लीला स्फुरब कि नोचक चर्च करैत कहैत छथि जे ई मे कि बेचल छोड़ि देलक सं लिखल अनन्त। जे सुकुमार बाबूक कथन सत्य त कि प्रमाणित होइछ जे महाकवि बंगाल छलाह—आ तें ओ मैथिल नहि छलाह? पोथी मे आगा कहल गेल-ए जे विद्यापति जे राधा-कृष्णक लीला गीत रचलनि से मिथिलावासी स्वीकार नहि करय चाहैत छथि। त कि एकर माने भेल जे विद्यापति सेहो मैथिल नहि छलाह? परञ्च इएक विषय जे सुकुमार बाबू त बहुत पैघ विद्वान सुनीति बाबू सेहो विद्या-

(शेषांश पृष्ठ पांच पर)

कविता

भाषात्मक एकता सं सम्बद्ध

तीनटा मुक्तक

(१)

नहि हो केओ मुस्लिम, हिन्दू
नहि हिन्दू हो मुसलमान
"हाशमी" ई अनिवार्य आइ अछि
हो दुनू पहिने इनसान

(२)

सभ तं "आदम" केर औलाद
अथवा "मनु" केर अछि सन्तान
भाय भाय मे केहन झगड़ा
केहन ई घटिया ईमान

(३)

सभ मानऽ ई मही के माता
"आदम" केर अछि जन्म स्थान
एतऽ "शीशा" केर अछि मजार आ
स्वर्ग - सलिल गङ्गा सुहान

—फजलुर रहमान हाशमी

'ले मशाल सभ कलुष जरा दे'

जाग - जाग मैथिल संथाली, भोजपुर - संतान
सभ सूतल छें लूटि रहल छौ, घरक साज-समान ।

सभक माय टुक-टुक तकै छौ, अबला बनि छौ ठाढ़ि
निर्लज बनि सभ जीबि रहल छें, फुसिये करै अराढ़ि
आबो नहि चेतबें तऽ जेतौ रहल सहल सम्मान ॥

कनहा-कुबड़ा बहिरा-बौका, मिलि के तोड़ौ माल
तोहर दुलरुआ भूखले सूतौ, तोहर हाल बेहाल
अपन घर मे तोहरे भाषाकेर भेऽौ अपमान ॥

तोहर आँखि छौ जाली मढ़ल, देखै नहि निज भेष,
तोहरे घर सँ तोहरे सम्पत्ति पठबौ देश-विदेश
दिन पर दिन कंगाल बनै छें, ककरो नहि छौ मान ॥

भाइ-भाइ मे लड़ा-भिड़ाकऽ हथिओने छौ कुरसी,
तों प्रमादवश फूटि रहल छें, रहि-रहि दै छौ घुड़की
एक्कर ओक्कर पीठ ठोकै छौ, मूरुख नै छौ ज्ञान ॥

ठोहि पारिकऽ माय कनै छौ, तैयो नहि छौ लाज
जे सभ हनटा सिखा रहल छौ, तकरे करै छें काज
अप्पन पएर कुरहरि सं काटै, बनल छें नादान ॥

पूरुब मे बिगुल बजै छौ, दही नगाड़ा चोट
ताल ठोकि मैदान ठाढ़ हो, छोड़ नोट आ भोट
उठें उठै, आबो तऽ चेतैं, कर मे धरै कमान ॥

अपना हक ले सभ लड़ैए, एखनो धरि छें चुप्प,
मुँह फुलौने सभ बैसल छें, देख अन्हरिया घुप्प
ले मशाल सब कलुष जरा दे, तखने हेतौ बिहान ॥

—अर्जुनलाल करण

दू गोट लघु कथा

गिरगिट

बैशाखक ठहाठही दुपहरिया मे अपन आ अपन गर्भवती स्त्रीक आहारक जोगार कए जखन श्रीमान गिरगिट अपन डेरा घुरलाह त देखैत छथि जे पत्नी घोघना लटकओने बैसल छथिन। बेर-बेर एकर कारण पुछला उत्तर पत्नीक मओन भंग नहि भेलनि त ओ खिसिया कें बजलाह—एहिना घोघना फुलओने रहब त लोक कि अगर-जानी जनैए जे अहांक मनक बात बूझि लेत।

पत्नी ओहिना बिधुआएल भनभनेलीह—लोक बुझिए क की करत ? जं सरिपहुं लोक कें हमर कचोटक चिन्ता छइ त सत्त करओ।

—एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त, अहांक कहल जे नहि करए से अही कुंड नर्क मे पड़ए। आबो त बाजब ? गिरगिट आत्म समर्पण क देलनि।

पत्नी खखास करैत बजलथिन—चलू हमरा लोकनि अइखन एइ देश सं चलि चली।

गिरगिट छगुन्ता मे पड़ि गेलाह। 'आखिर कून एहन बात भेलैक जे हमरा लोकनि के अपन जन्मभूमि छोड़ि चलि जेबाक चाही ?'

पत्नीक पाड़ा गर्म भ गेलनि। 'कनियो जं ज्ञानक छूति रहैत त ई पूछय नहि पड़ैत। आखिर कुनू जाति जन्तुक अपन परिचय रहैत छैक, विशेषता रहैत छैक। जं सेह ने बंचतै त लोक कें लाजे मरि नहि जा हेतैक ?'

—अहांक कहबाक अर्थ हमरा नहि बुझै मे आयल ! हमरा लोकनि अपन रंग बदलाक लेल विख्यात छीं। परिवेशक अनुसार रंग बदलबाक पटुता हमरा लोकनि मे जन्मजात होइए....

—मुदा ताहू मे हम सभ पाछू पड़ि गेलहु....पत्नी बीचे सं लोकि लेलथिन।

—अहां कि नेता लोकनिक बात क रहल छी ?' गिरगिटक प्रश्न भेल।

—त आर ककर ? आइ—कल्हि नेता लोकनिक बराबरी करबाक दक्षता कि हमरा लोकनि मे रहि गेलए ?

गिरगिट के बड़ जोर सं हंसी लागि गेलनि। ओ ठहाका दैत बजलाह—तें ने कहैत छैक स्त्रीगणक बुद्धि। हमरा लोकनि कें त एहि मे प्रसन्नता हेबाक चाही। कहबीयो छैक जे दस टके नहि नितराइ, दस समाङे नितराइ।

भारत रत्न

शरसय्या पर पड़ल-पड़ल भीष्म पितामह सोचि रहल छलाह जे अन्यायी कौरवक संग दय ओ नीक नहि केलनि। आगामी इतिहास हुनका कहियो क्षमा नहि करत। अन्त मे ओ फेर हथियार उठेबाक आ पाण्डव दिस सं लड़बाक घोषणा केलनि। ई गप्प जखन दुर्योधनक कान तक गेलै त पहिने त ओ घबड़ाएल किन्तु पश्चात् शकुनीक संग परामर्श कए दोसर दिन हस्तिनापुर मे विराट सभाक आयोजन केलक। एहि सभा मे ओ भीष्म पितामह कें एगो पैघ प्रशस्ति पत्रक संग 'भारत रत्न'क उपाधि सं अलंकृत केलक। कहल जाइछ जे तकर बाद जे भीष्म पितामह मओन व्रत धारण केलनि से जा जीलाह मुंह नहि खोललनि।

● अग्रदूत

डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ थैलीनाथ मिश्र प्रकरण

बिहार भारतक सभ सं धनी प्रदेश थिक जाइठाम भारतक उपलब्ध 'कच्चा मालक' चालिस प्रतिशत पाओल जाइत छैक। परञ्च एते होइतहु एहि ठामक जनता सभ सं गरीब आ अशिक्षित अइ, केन्द्र द्वारा अवहेलित अइ। एकर एक मात्र कारण छैक जे एहि ठामक नेता बइमान होइत आयल-ए जे केन्द्रक चमचागिरी कए अपन सिंहासन कें सुरक्षित रखनाइ आ तकरा बले अपन स्वजन पोषण केनाइ टा कें अपन धर्म बना लेत अइ। एहि तरहक नेता मे शीर्षस्थ छनि बिहारक वर्तमान मुख्यमंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र—जे थैलीनाथ मिश्रक नामे ख्याति प्राप्त क रहल छथि। डा० मिश्र मे बड़-बड़ गुण अइ—कोबड़ छोट कहत अपराधू। एक दिस जं ई मिथिला मैथिली विरोधीक रूप मे ख्यात छथि त दोसर दिस वर्णवादी, सम्प्रदायवादी राजनीति करबाक लेल। परञ्च हिनक चर्चक सभ सं प्रधान कारण रहल-ए हिनक स्वजन पोषण नीति आ थैली (सलामी) लेबाक बात। अंग्रेजीक बहुप्रचलित पत्र 'ऑरगेनाइजर' जे कि दिल्ली सं प्रकाशित होइए, तकर २-८ मइ १९८२ क अंक मे मुख पृष्ठ पर 'द क्राइमस ऑफ मिश्रा' शीर्षक सं हिनक विभिन्न घोटालाक भंडाफोर कएल गेलए जकर संक्षिप्त सार निचा देल जा रहल-ए।

१) बिहारक स्पिरीट व्यवसायी ५ पाइ प्रति लिटर दाम बढ़ेबाक माङ बहुतो दिन सं करैत आबि रहल छल जकरा गफूर मंत्रीमंडल आ जनता सरकार सोझे अस्वीकार क देने रहैक। परञ्च डा० मिश्र एकरा एक रुपया पांच पाइ प्रति लिटर यानी कि ७५ पाइ प्रति लिटर सं १.८० प्रति दाम करवा देलथिन। मात्र एकटा व्यवसायी के ६० लाखक स्टाक छलैक जे एहि बढ़ोत्तरी सं एक कोटि नफा कमाएल। एहि पुनीत काजक लेल कहांदन मिश्रा साहेब कें एक कोटिक थैली प्राप्त भेलनि।

२) साल बीज—१९८० मे बिहार राज्य फॉरेस्ट डेभलपमेन्ट कर्पोरेशन मात्र

५०% (४०,००० मेट्रिक टन्स) साल बीज ३ बिहारीक हाथें आ बांकी ३% कमीशन द बिहारीक हाथें बेचबाक निर्णय लेने छल परञ्च डा० मिश्रक प्रभावें एकेटा व्यवसायीक हाथे ११७५) प्रति टन भाव सं बेचि देल गेल जखन कि मध्यप्रदेश मे एकर भाव २१८५) छलैक। एहिठाम स्मरण रखबाक थिक जे बिहारक साल बीज सर्वोत्तम होइत अइ। सरकार कें एहि सं ७·३२ कोटिक घाटा भेलैक जखन कि मिश्रा साहेब कें कएक कोटिक आमद।

३) कोइला—कोइला मात्र लाइसेंस बला व्यवसायीक हाथें बेचल जाइत छल परञ्च मिश्रा साहेब नियम परिवर्तन कए किछु ठीकेदारक हाथें बेचबा देलथिन—जकरा सं व्यवसायी कीनत आ तकरा बाद उपभोक्ता धरि जायत। एहि तरहें बीचक लोकक उपस्थिति सं कोंइलाक दाम प्रति क्वींटल २५ टाका बढ़ि गेलैक। किछु 'कालाबाजारी' जखन एफ० आइ० आर० मे फंसल आ मिश्रा साहेब ओकरा मौखिक आदेश सं छोड़ेबा मे असफल रहलाह त लिखित आदेश धरि द देलथिन। बनारसक एगो नामी बदमास पकड़ल गेल छल त हिनक पैरवी सं ओ सिलीगोरी अस्पताल मे भरती कराओल गेल, फेर बनारस आ ओइ ठाम सं ओ फिराड़ भ गेल। ओकरा संग सं बहुतरास कागज पत्र भेटल छलैक। कहांदन ओ एखनो दिल्ली-पटना तीनातानि कें घूमि रहल-ए आ पकड़निहार एस० पी० (सी० आइ० डी०) क बदली भ गेलैक।

४) शराब—जनता अमल मे नशाबन्दी लागू भेल छलैक। मिश्रा सरकार एकरा तोड़ि एक्साइज विभागक नियम के उलंघन करैत 'लीडर शीप ऑक्शन' बन्द कए पुरने ठीकेदार कें ठीका देलकै कहांदन दुटा मद्य व्यवसाइ त खुलेआम बजैए जे मिश्रा कें मुख्यमंत्री बनेबा लेल ओ दुनू मिलि एक कोटि टाका खर्च केने अइ।

५) कुसियार—१९८० मे मिश्रा साहेब घोषणा केलनि जे कुसियार उपजौनिहार कें २२) प्रति क्विंटल दाम देल जेतैक। १३ फरबरी १९८१ कें एकरा ६ मास लेल स्थगित क देल गेलैक। एहिठाम मन रखबाक थिक जे ६ मास कुसियारक पूरा 'सीजन' भ जाइछ। कहल जाइछ जे चिनी मिलक मालिक सभ दिल्लीक किसान सम्मेलन लेल ५० लाख मिश्रा साहेब कें थैली भेंट केने रहनि—जकरा लोकनिक सलाह पर उपरोक्त स्थगन आदेश बहार भेल छल।

६) बाढ़ि नियंत्रण—१९८१-८२ मे बाढ़ि नियंत्रण नाम पर ८० कोटि खर्च भेलैक जकर अधिकांश नकली बील पर भुगतान कएल गेल। १९७३ मे जखन मिश्रा साहेब सिंचाइ मंत्री छलाह तखन एके काज दू गोट ठीकेदार के देल गेल रहैक Estimate committee of Bihar क अनुसार Associated Engineering corporation जे कि मिश्रा साहेबक भाइ कमल नारायण मिश्रक छियनि तकरा 'सिविल वर्क' लेल (१,५७,५०० स्क्वायर फीट) ६१,८३८) देल गेलैक जखन कि दू गो आन ठीकेदार कें २,१४,५०० स्क्वायर फीटक लेल मात्र १३,३९८) देल गेलैक। समितिक अनुसार से सं बेसी irregularities मिश्रा विभाग मे भेलनि।

७) व्यवस्था—१५,०००) तनखा करवा क लेल मिश्रा साहेब प्रति इंजिनियर १००) टाका मङने छलथिन। प्रत्येक बदली पर फराके सलामी छलैक। स्वयं Engineers Association से हो एहि तथ्य कें स्वीकार केलकए।

८) कर्पूरी ठाकुरक मुख्य मंत्रीत्वकाल मे ६००० Asstt. Engineer कें पद पर इंजिनियर बहाल कएल गेल छल, १९७८ क बेकार इंजिनियरक आन्दोलनक फलस्वरूप। दू वर्ख बाद मिश्रा साहेब लोक सेवा आयोग द्वारा विज्ञप्ति देलथिन जे उपरोक्त सभ अभियंता कें फेर सं आवेदन करय पड़तनि। शुरू भेल फेर आन्दोलन। आन्दोलनकारी अभियंता लोकनि जखन मुख्यमंत्री सं भेंट करै चाहलनि त मिश्रा साहेब अपन Personal Asstt. कें पठा देलथिन जे अभियंता लोकनि कें २५ लाखक थैली मुख्य मंत्री कें भेंट करै लेल कहलथिन। थैली मिश्रा साहेब कें भेटि गेलनि आ लोक सेवा आयोगक विज्ञप्ति खटाइ मे पड़ि गेल।

९) मिश्रा साहेब कें बड़ सेहन्ता छलनि जे हुनक बेटी कें बी० ए० (Eco. Hons) मे फस्ट क्लास फस्ट भेटनि। एहि लेल ओ पटना वि० विद्यालय मे मॉडरेटरस बहाली करबओलनि। परञ्च कपार संग नहि देलकनि। मॉडमैंरेटिंग बोर्डक अध्यक्ष डा० केदारनाथ प्रसाद प्रतिवाद स्वरूप इस्तीफा दय देलथिन आ छात्र आन्दोलन भड़कल। बहुतो छात्र हाजति मे पड़ल आ अन्ततः हुनका बेटी कें दोसर स्थान प्राप्त भेलनि। ओना शिक्षक लोकनिक अनुसार हुनक बेटी दोसरो श्रेणी पेबाक योग्यता नहि रखैछ।

१०) आ सब सं प्रधान अइ पटना अरबन को-आपरेटिव बैंकक घोटाला जाइ मे ३५ लाख गबन करबाक आरोप मिश्रा साहेब पर छनि। एकर मामिला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचि गेल अइ—देखा चाही की होइए।

अजगुत-अनटोटल

* घोटाला शिरोमणि बिहारक मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ (थैलीनाथ) मिश्र कें पश्चिम बंगालक चुनाव अभियान मे देखि लोक कें छगुन्ता लागब स्वाभाविक के। स्वाभाविक एहि दुआरे जे जगन्नाथ बाबू पर दर्जनो घोटालाक आरोप छनि, सुप्रीम कोर्ट धरि केस हुनका पर पहुंचि गेल अइ आ एहि तरहक बदनाम-धन्य व्यक्तिक उपस्थिति अथवा भाषण सं लोक मे कांग्रेस प्रति आकर्षण बढ़तैक त एहि सं पैघ अजगुत आर की भ सकैछ। परञ्ज लोक—साधारण लोक सोझमतिया होइए, ओ कुनू विषयक तह तक नहि जाइए नहि जाय चाहैए। परञ्च जे दू-चारि प्रतिशत लोक सभ विषय के खोंइचा छोड़ाकए देखैक अभ्यासी अइ—से एकरो तहिना देखलक आ तें ओकरा सं भितरिया बात नुकाएल रहबे केना करतैक ? हं, ओकरा लोकनि कें अनटोटल अवस्से लगलैक।

साम्प्रदायिक राजनीति करबा मे जगन्नाथ बाबू शीर्षस्थ छथि। गत १३ मइ कें रांचीक रोमन केथलिक चर्च पहुंचि विशपक समक्ष ठेहुनिया देबाक घटना टटकें उदाहरण अइ। परञ्ज हुनक कलकत्ता आगमन निश्चिते रोमन केथलिक सम्प्रदाय कें प्रभावित करबाक उद्देश सं नहि भेल छल। ओना साम्प्रदायिक सद्भावनाक जेहन सुन्नर आ सुदृढ़ प्रम्परा बंगालक रहलैए—तेहन भरिसके आनठाम हेतैक। ई निर्विवाद जे एहि सद्भावना के नष्ट करबा मे राजनैतिक दलक भूमिका प्रधान रहलैक-ए आ ताहू मे अगिल्ह रहल-ए कांग्रेस। परञ्ज एहिठाम ओकर गोटी आइधरि उफांटिए रहलैक। सेजे होउक, मुदा चक्रचालि रचनाहर सब किएक हारि मानि लेत ?

केन्द्रीय उर्जा मंत्री श्रीमान् ए० बी० ए० गनी खान चौधरी महाशय एहने लोक मे सं छथि, स्वभावतः हुनका जगन्नथ बाबू सन कुख्यात लोकक प्रयोजन पड़लनि। एहि दुआरे जे कलकत्तो मे बिहारी आ उत्तर प्रदेशक बहुत रास मुसल्मान अइ। भाषा कें धर्म-सम्प्रदायक संग जोड़ि 'दस प्रतिशत मुसलमान क भाषा उर्दू' कें बिहारक दोसर राजभाषा बना अशिक्षित-अल्पशिक्षित धर्मान्ध लोकक बीच सस्त जनप्रियता जगन्नाथ बाबू अवस्से हासिल केने छथि आ तकरे काज मे लगाबय चाहलनि चौधरी मोशाय। स्वभावतः जगन्नथ बाबू कें बीछि-बीछि कें ओही अंचल मे ल जाएल गेल जाइ ठाम तथा कथित उर्दूभाषीक संख्या बेसी छैक। जगन्नाथ बाबू सेहो उर्दू मे (!) भाषण केलनि। किन्तु चौधरी मोशायक कपाड़े जड़ल छथि—तेयो चारू नाल चित्त।

कलकत्ताक मैथिलीभाषीक लेल अजगुत क एहू सं पैघ कारण भेलैक दोसरे। मैथिली आन्दोलनक 'स्वनामधन्य वयोवृद्ध सेनानी' श्री बाबू साहेब चौधरी कें हरलनि ने पुरलनि दू गोट चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, लक्ष्मण झा सागर आ आओर चारि गोट युवक कें ल क दौड़लाह दमदम हवाई अड्डा-पर माला पहिरा एलाह जगन्नाथ बाबू कें पता ने ओ केना बिसरि गेलाह जे ई उएह व्यक्ति छथि जे मैथिलीक विनाश लेल उर्दू कें दोसर राजभाषा बनओलनि आ भाई-भाइ मे झगड़ा बझओलनि। ई उएह व्यक्ति छथि जनिक लठैत ६ दिसम्बर १९८० कें पटनाक राजपथ पर मैथिली सेनानी कें कान-कपार झाड़ि देलक जाइ मे श्री चौधरी सेहो रहथि मनहि चोट नहि लागल होनि ओतबे नहि जगन्नाथ बाबू आन्दोलनकारी मिथिला सपूत लोकनि कें आर० एस० एस० कहि बदनाम करै सं सेहो बाज नहि एलाद। श्री बाबू साहेब चौधरी स्वयं आइधरि जगन्नाथ बाबू कें मिथिला-मैथिली बिरोधी कहि भर्त्सना-आलोचना करैत आबि रहल छलाह जे बात ओ रातारातीं केना बिसरि गेलाह !

ओना लोक जतय-ततय बजैत सूनल जाइछ जे चौधरी जी बूढ़ भेने दूरि गेलाह, भसिया जाइत छथि। किछु लोकक कहब छैक जे सुन्दरपुर वासी पं० देवनारायण झा। चौधरी जी सं मैथिली आन्दोलन मे पाछू रहितों अपना गाम मे मुख्यमंत्रीक चुमाओन करबा हिनक प्रियपात्र बनि गेल-छथि आ निकट भविष्य मे विधान-परिषदक सदस्यता लाभ करै बला छथि। तें चौधरी जी हुनका 'ओवर टेक' करबा लेल ई चालि चललाह-ए। ई त भविष्ये कहत जे गोटी पहिने किनकर लाल होइत छथि परञ्च मैथिली कें दाव पर चढ़ओनाइ लोक कें अनसोंहात अवस्से लगैत छइ। वयोवृद्ध जानि भनहि बेसी किछु लोक नहि बाजओ-दुर छीया नहि करतु परञ्च एतेबरि त कहिते छथि ई नहि उचित विचार।

* कुनू समालोचक गणतंत्र कें मुर्ख द्वारा, मुर्खक लेल मुर्खक सरकार कहने छथि। हमरा विश्वास अइ जे जं ओ आइ जीवैत रहितथि आ भारतीय गणतंत्रक चेहरा देखितथि त निश्चित अपन थियोरी मे एमेन्ड मेन्ट क ओकरा एना कहितथि मुर्खक सरकार मुर्ख द्वारा ४२०क लेल। विश्वक महान गणतंत्र भारतक विभिन्न प्रदेश मे पश्चिम बंगाल सभ तरहें आगू मानल जाइए। एहीठामक केनिंग अंचलक एगो मतदात्री गत १९ मइ कें प्रजाइडिंग अफसर लग जा कें पुछैत छथिन—साइकिल कोथाइ बाबू ? आस्चर्य त होइत अफसर प्रति प्रश्न केलथिन—साइकिल ! साइकिल की हबे ? महिला—केन आमार छेले जे बोल्लो साइकिले छाप दिते ?

एही केन्द्र पर एगो दोसर वृद्धा मोहर आ मतपत्र ल क जखन सपटा सं घेरल घर मे पहुंचलीह त ओ बिसरि गेलीह जे छाप कुनू चेन्ह पर लगेबाक छथि। अपन बेटा कें शोर पारलनि शंकर। ओ शंकर !! अधिकारी बीच मे दखल देलथिन—काके डाकछेन ? महिला केनो ? आमार छेले शंकर कें कोथाय जे छाप दिते बल्लो सुइबा गेलाम........।

ई त मात्र नमूना थिक। पता ने एहन कतेको मतदाता एहि देशे मे छथि जनिका लोकनिक मत पर बीति जनप्रतिनिधि शासन करैत छथि।

*** पश्चिमी देशक कतेको पत्रिका मे भरिपेजक विज्ञापन छपलए—इशुक अवतार भ गेल। हुनक नव नाम छनि-मैत्तेय स्वामी। एहि मे आगा कहल गेलए जे ओ एखन गुप्त छथि आ मात्र हुनक किछु शिष्य ई बात जनैए। परञ्च दू मासक भीतरे ओ अपन परिचय प्रकाशित करताह आ टेलीविजन सं विश्वक समस्त लोकक संग-जकर जे भाषा छैक ताही भाषा मे गप-शप करताह।

एहि सम्बन्ध मे विशेष जानकारीक लेल कतेको पता देल गेलए जाइपर सम्पर्क स्थापित करै लेल कहल गेलैए। एहि मे सं एक अइ टीतारा प्रेस, ५६, डार्टमाउथ पार्क रोड, लन्डन।

कहबी कुनू बेजाय छैक जे जीब त की की ने देखब।

—उचित वक्ता

महाकवि गोविन्द दास

पति कें मैथिल मानि चुकल छथि आ आब त भरिसक कुनू बंगाली विद्वान कें मोह नहि रहि गेल छनि। सुकुमार बाबूक दोसर तर्क छनि जे १६५४-५७ मे नकल कएल सजनीकान्त दासक एगो पोथी मे बहुतो पद मेटलैक जाइ मे सं पांच टा पद कतौ मुद्रित नहि छैक। गोविन्द दास जं १७म शताब्दी मे मिथिला मे बैसि कें कविता रचलनि त एहि पोथी मे हुनक पद रहनाइ असंभव। हुनक इहो तर्क निराधार छनि कारण पहिने त सजनीकान्त दासक नकलैक वर्ष संदिग्ध छैक आ दोसर गोविन्द दास जे १६५० धरि विख्यात कवि नहि भ गेल छलाह तकरे कि प्रमाण? सतरहम शताब्दीक अर्थ १६९९ किन्नहु ने भ सकैछ, विद्यापतिक पद बंगाल मे ततेँ प्रचिलित आ प्रिय छलैक जे मैथिलीक नव सं नव कविक गीत जे पदावली-परम्पराक छल—तकरा बंगाल धरि पहुँचवा मे कनियो समय नहि लगैत छलैक—एहि मे अचरज की?

दोसर तर्क देल गेल अइ जे गोविन्द दास श्री वसन्त नामक कुनू बंगाली कविक चर्च अपन कविता मे केने छथि, तहिना केने छथि श्री वल्लभ कविकचर्च। श्री वसन्तक नामे ५१ टा पद पदकल्पतरु मे पाओल पाओल जाइछ तथा श्री वल्लभक नामे २५ टा पद। जे हेतु गोविन्द दास एहि दुनू बंगाली कविक उल्लेख अपन गीत मे केलनि तेँ ओ बंगाली छलाह। जं नामोल्लेख मात्रो सं केओ कुनू जातिक हो, तैयो गोविन्द दास बंगाली नहि भ क मैथिलीक भ सकैत छथि कारण ओ पूर्ण निष्ठा आ सम्मानक संग विद्यापतिक स्मरण केने छथि।

एवम् प्रकारे अनेको तर्क उपस्थित कएल गेल-ए। हुनका कुनू बंगालक राजदरवार सं जोड़ल गेलए परञ्च हमरा लोकनि जनैत छी जे मिथिलाक विद्वान समस्त 'भारत' मे पसरल रहलाहए आ विभिन्न रजबाड़ा-मे सम्मानित पद पर आसीन होइत आबि रहलाह-ए। एगो तर्क इहो देल गेल-ए जे जं ओ मिथिलाक रहितथि त कि हुनक एको गो पोथी मिथिला मे सुरक्षिति नहि रहैत? मिथिला मे जे हुनक पोथी सुरक्षित नहि अइ से विनु पूर्ण खोजक कइले केना जा सकैछ? दोसर विद्यापतियोक नीक सं नीक पोथी त मिथिला सं बाहरे पाओल गेल-ए। व्यालि भक्ति तरंगिनी' बंगलादेश मे प्राप्त भेलैक। तेँ कि विद्यापति मैथिल नहि छलाह?

हिनका लोकनिक अन्तिम तर्क छनि किछु शब्द कें ल क जे वर्तमान मिथिला मे प्रचिलित नहि अइ। जं एकरे आधार मानि लेल जाइ त फेर विद्यापतिक चर्च करय पड़त। 'लखय' शब्द तथा 'पारय' प्रचिलित नहि छैक तेँ कि विद्यापति कें सेहो मैथिल नहि मानल जायत? जं शब्दे कें आधार मानल जाय त निश्चिते तकर प्रतिशत बहार कैल जेबाक चाही आ एहि तरहेँ मैथिली वा बंगला भाषा जकर वेशी प्रतिशत शब्द गोविन्द दासक पद मे हो तकरे महाकवि पर अधिकार द देल जाइक त निश्चिते हमरा लोकनि के आपत्ति नहि हैत। ओना एहिठाम ई कहब आवश्यक जे पोथी बंगाली विद्वान द्वारा प्रकाशित हेबाक कारणे ओकर शब्द मे पूर्ण परिवर्तन क देल गेल छैक, तथापि वर्तमानोक जे रूप छैक से किन्नहु बंगला नहि मैथिलीक बेसी लगैछ। प्रस्तुत अइ उदाहरण स्वरूप एगो पद :—

रति रस-अवश अलस अति पूर्णित
शूतलि निभृत-निकुञ्ज।
मधु-लोभे भ्रमर भ्रमरिगण झंकर त
विकशित फल फूल पुञ्जे॥
विनोदिनी माधव-कोर।
तमाले बेढ़ल जनु कनक लताविलि
दुहु रूप अति उजोर॥
भुजे-भुजे छन्द बन्द करि सुन्दरि
श्यामर कोक घुमाय॥
रति-रसे अलसि दुहु तनु दर-दर
प्रिय सखि चामर डोलाय॥
सुवासित वारि झारि भरि राखल
मन्दिरे दुहु जन पास
मन्दिर निकट पद-तले शूतलि
अनुचरि गोविन्द दास॥

एहि गीत मे 'घुमाय' एगो शब्द अइ जे वर्तमान मैथिली मे प्रचिलित नहि। जं मात्र एकरा आधार पर एहि गीत कें बंगला मानल जाय त 'कोर' शब्द बंगला मे नहि छैक (कोल छैक) 'भरि'क बदला 'भर्ती करे राखा' होइ छैक, दर-दर नहि छैक, दुहु नहि छैक, उजोर नहि छैक (आलो होइ छैक) करिक बदला 'करे' होइ छैक एवम् प्रकारे जं सभ तरहेँ मानियो लेल जाय जे महाकवि गोविन्द दासक जन्म बंगाल में मेल छलनि, भरि जीवन बंगाले मे रहलाह एक शब्द मे जे ओ बंगाली छलाह तैयो इ त किन्नहु प्रमाणित नहि भ सकैछ जे बंगलाक कवि छलाह। गोविन्द दास जं कवि छलाह त निर्विवाद ओ मैथिलीक कवि छलाह, विद्यापतिक उत्तरीधिकारी छलाह। ओना स्वयं मजुमदार महोदय सेहो मैथिल गोविन्द दासक अस्तित्व के स्वीकारिते छथि तथा हुनक नामे निछाउरवत दू गोट पद शेष मे प्रकाशित कएनहि छथि।

महाकवि गोविन्द दास मैथिलीक कवि छलाह तकर प्रवल आधार इहो अइ जे मात्र मैथिलीए साहित्यक तेहन विशिष्ट परम्परा छलैक, मैथिलीए साहित्य ओतेक विकशित छल जाइ मे पाद लोकनि सं ल क कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर महाकवि डाक, कविपति विद्यापति सन युगपुरुष भ गेल छलाह। बंगला साहित्यक एहन कुनू परम्परा नहि छलैक आ तेँ हठात् पहिले-पहिल एहन महाकविक प्रादुर्भाव असम्भव बुझना जाइछ।

निष्कर्षतः महाकवि गोविन्द दास जे मैथिलीक कवि छलाह ताइ मे सन्देह नहि तथापि बंगाली विद्वान लोकनि पूर्वाग्रह मुक्त भ जं हिनका सम्बन्ध शोध-खोज करितथि त प्रशंसनीय होइत ने कि निराधार 'अपन' कहि प्रचारित क देनाइ। ओनहुना साहित्यक रसिकक लेल सम्पूर्ण विश्वक साहित्य अपने होइत छैक तेँ विश्वक समस्त साहित्यकार कें अपन बुझनाइ उदात्त भावनाक परिचायक थिक मुदा पूर्वाग्रह मे परि मात्र अपनहि टा बुझनाइ संकीर्णताक परिचायक।

—मुजतबा अली

लाल बुझक्करक चिट्ठी

श्रीमान सम्पादक जी!
जय मैथिली।

आगा हाल सुरति ई जे देसकोस मे बर्खाक अभावेँ त बुझू जे अकालेक स्थिति छैक। सभ ठाम लोक त्राहि-त्राहि क रहल-ए। परञ्च जेना कि कहबी छैक ने जे प्रेत चाइय अशौच, से कहै छी तहिना 'काला-बाजारी' सभ दिन-दुन्ना राति-चौगुन्ना चीज-वस्तुक दाम बढ़ा मालोमाल भेल जा रहल-ए। जेना सभ चीज मे आगि लागल होइक।

सम्पादक जी अहां त जनिते छी जे लाल बुझक्कर के अपना सं बेसी अनकेँ चिन्ता रहैत छनि। माथ दुखाइ छइ ककरो आ बेचैन रहै छथि लाल बुझक्कर। ओना हमरा बुझाइए जे अपनो लाल बुझक्करक एहि पुरना रोगक शिकार भेल छी। ने त हम पुछै छी जे जं विधान सभाध्यक्ष महामहोपाध्याय पंडित प्रवर श्री राधानन्दन झा ई बाजिए देलथिन जे 'बज्जिका' अढ़ाइ हजार बर्खक पुरान भाषा थिक त एहि मे महाभारत केना अशुद्ध भ गेलैक? जं राधाबाबू हमरा सं पहिने सम्पर्क केने रहितथि त हम आर बिखिया कें बुझा दितियनि जे 'मैथिली बोली' एकरा सं प्रभावित नहि भेल अइ—असल मे एही सं बहार भेल अइ। श्रीमान अपना ओइ ठाम त बड़ प्रचलित कहबी छैक जे 'बाप रहै पेट में आ पुत गेल गया'।

इं त कहैत जे छलौं, रामजीक प्रताप सं आ गुरुगंगाक आशीर्वाद सं, ओ मंच रहैक बजिकाक जाइपर हिनका बजाओल गेल रहनि, तखन अपने इ आशाए केना कएल जे ओ बजिका छोड़ि आन भाषाक स्तवन पाठ करताह? कहबीयो छैक जे जे दिए पाकल आम सेह ने होथि ईल झा। मिथिला मे पूर्वापर सं भांट लोकनि होइत आएल छथि, जे भरि सूप के कहै, भरि चंगेड़ी धान देखिते जजमानक सातो पीढ़ीक गुणगान नाभिकुण्ड सं जोर लगा कें करैत छथि। तेँ जं राधाबाबूं ओहि परम्परा कें उजागर केलनि त बेजाइऐ की? कम स कम राधाबाबू ओहि श्रेणीक नहि छथि जे खेताह कतौ आ पढ़ड़ा करता ककरो दुआरिक। ओना अपनेक एहि कथन सं हम मरि छितनी सहमत छी जे राधाबाबू मैथिल छथि, मिथिलांचलक प्रतिनिधि छथि। परञ्च तहिना इहो सत्य थिक जे ओ मैथिल जनताक बल पर नहि 'नोट अथवा सोंट'क बल पर विजयी होइत आयल छथि। दोसर इहो गौरवशाली परम्परा त मिथिलांचल के प्रतिनिधिक छनि जे दिल्ली पटना जाइते मिथिला-मैथिलीक विनाशक षडयंत्र रचै लगैत छथि। डा० जगन्नाथ मिश्र त एकर जीविते प्रमाण छथि। तेँ ज राधाबाबू एहि परम्पराक निर्वाह केलनि त अनुचिते की? हम त ओहि दिनक प्रतीक्षा बड़ व्यग्रताक संग क रहल छी जे राधाबाबूक परम भक्त 'मैथिलीक वयोवृद्ध सेनानी श्रीमान बाबूसाहेब चौधरी' जेना दमदम हवाइ अड्डा पर जा जगन्नाथ बाबू कें माला पहिरा एलथिन तहिना हिनको पहिरा अओथिन। पता ने मैथिलीक क्रान्ति दूत सुन्दरपुर बासी पंडित श्री देबनारायण झा एखन धरि किएक चुप छथि? उर्दू कें बिहारक दोसर राजभाषाक घोषणा होइते ओ अपन दुआरि पर जगन्नाथ बाबूक चुमाओन दहीक मटकुरी ल कें केने छलाह सेः राधाबाबू बेर मे पता ने किएक पतनुकान नेने छथि?

दोसर बात ई जे राजनीति मे एखन फूसि बजबाक प्रतियोगिता लागल छैक। अपने कें त बुझले हैत जे विश्व विख्यात फुसियाह हेबाक कारणे जगन्नाथ बाबू इन्दिराजीक प्रिय पात्र बनल छथि आ तेँ मुख्यमंत्रीक सिंहासनारुढ़ छथि। राधाबाबू सेहो राजनीति करैत छथि आ तेँ नहि दिल्ली त पटना के प्रधान सिंहासन पेबाक लिलसा त हेवे करतनि। तेँ जं ओ एहि प्रतियोगिता मे फनलाह-ए त बेजाय की? हमरा लोकनि कें त 'तहेदिलं' सं आशीर्वाद करक चाही जे यथाशिघ्र राधाबाबूक लिलसा पूर होइन आ इहो 'बज्जिका' कें बिहारक तेसर राजभाषा घोषित करथि।

हं, आर एगो बात। अपनेक पत्रिका मे प्रकाशित अपन प्रिय बन्धु विश्व वंचकक पत्र अपना नामे देखल। छगुन्ता लागल जे विश्ववंचक जी सन पाकल व्यक्ति एते जल्दी केना 'वंचित' भय गेलाह आ दौआ फेरय पर तुलि गेलाह। हमर एगो चटिया लिखने छथि—हजारों साल तक नरगिस अपनी बेनुरी पे रोती है। बड़ी मुश्किल से होता है, चमन मे दीदावर पैदा॥ से कहबाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे विश्वबंचक जी कें एतें जल्दी नहि घबरेबाक चाहियनि। जं ओ हमर सलाह मानथि त किछु दिनक हेतु लाल बुझक्करक आखाढ़ा पर नंङौटा बान्हि उतरथु आ थेथरपनाक अभ्यास करथु। प्रमाण पत्र मेटलाक बाद किछु दिनक हेतु वंचक कुल भूषण डा० जगन्नाथ मिश्रक पाठशाला मे शिक्षा लेथु आ तइखन व्यावहारिक क्षेत्र मे उतरथु। अन्यथा खाली विश्ववंचक नाम राखि लेने काज चलनिहार नहि, एहिना सभठाम ठकाइत रहताह। हुनका त भरिसक इहो पता नहि हेतनि जे मिथिलांचलक गली गली मे जगन्नाथ मिश्रक पट्ठ शिष्य सभ घुरि रहल-ए आ अवसर पबिते केहनो दिग्गज कें चारू नाल चित्त क सकैए। जहां धरि ओ हमरा सलाह देलनिहें, से हुनका बुझक चाहियनि जे जं जगन्नाथ मिसर कुनू अखाढ़ाक खलीफा छथि त लालबुझक्कर सेहो कुनू अखाढ़ाक। एतबे किएक, थेथरपनाक अभ्यास ओहो हमरे मरवाढ़ा पर केने छथि आ एहि तरहेँ हमर पटिया भेलाह तेँ गुरु कतौ चटिया सं डेराय? दोसर बात, डर त जगन्नाथ बाबू कें हेवाक चाहियनि जे कहीं कुर्सी ने छिना जाइन आ ओ त्रिशंकु जकां बीचे मे लटकल रहथि। लाल बुझक्कर कें कथीक डर? ने भारतक नक्शा पर मिथिला छनि आ ने संविधान मे मैथिली—जे छीनेतनि। कहबाक माने मतलब ई जे जखन घरारीयो लोक हथिआइए नेने छनि त [illegible] कि चोरक डरेँ भगबो नुकओ[illegible] नहि? से सम्पादकजी अपने कने शानझाक जोग दक हमर प्रिय बन्धु के बुझा दियनि से आग्रह।

पत्रोत्तर नहि पेवाक प्रवल आकांक्षी
श्रीमान लाल बुझक्कर
बुझनुक ग्रामवासी

सभा-समिति

कटिहार, २२-२३ मइ, १९८२। स्थानीय राळाराम विद्यालयक सभागार मे विद्यापति-स्मृति पर्व समारोह मनाओल गेल। पहिल दिन भाषण, कवि सम्मेलनक आयोजन भेल आ दोसर दिन गीत-नादक।

एहि आयोजन मे सर्वप्रथम दृष्टि के आकर्षित करैत छल कविपति विद्यापतिक भव्य चित्र जे कलाकार श्री प्रणव कर्मकारक उत्कृष्ट चित्रकारिताक परिचायक थिक।

दोसर दिन साँझक ७-३० सं कार्यक्रम आरंभ भेल स्थानीय कलाकार द्वारा मिथिलाक जातीय गीत 'जय-जय भैरवि' सं तत्पश्चात् शशिकान्त सुधाकान्त, (दहिभत्ता) श्री उमाकान्त मिश्र (लक्ष्मीपुर) क अतिरिक्त कतिपय स्थानीय कलाकार अपन सरस गीत द्वारा लोकक मनोरंजन कयलनि स्थानीय कलाकर श्री यमुना प्रसाद मंडल, तबला श्री लक्ष्मण झा 'सागर' (कलकत्ता) सेहो एगो गीत गओलनि।

एहि अवसर पर मैथिली मुक्ति मोर्चा कलकत्ताक संयोजक श्री रामलोचन ठाकुर कविपति कें अपन श्रद्धाञ्जलि दैत उपस्थित जनसमुदाय सं मातृभाषा मैथिली विकासक हेतु सजग होएबाक आग्रह कैलनि तथा मैथिली कें व्यवहारिक रूप देबाक अनुरोध कैलनि।

मंचक संचालन कर' रहल छलाह युवा साहित्यकार श्री नवीन चौधरी। कार्यक्रम रातिक १०-३० धरि चलैत रहल कारण दर्शक लोकनि केर निष्ठा संग बैसल छलाह।

कटिहार सीमावर्ती क्षेत्र होयबाक कारणे एहि ठामक प्रत्येक छोट पैघ काज विशेष महत्व रखैत अछि आ ताहि मे कविपतिक स्मृति पर्वक त कहबे की हो। परञ्च जेना कि देखल गेल अन्यान्य संस्था सभ जकां एहु ठाम प्रतिबद्ध कर्मी आँगुर पर गनल छथि ओ तेहना अवस्था मे एहि तरहक आयोजन सफलतापूर्वक क लेनाइ सरिसुं प्रशंसनीय अछि। दुःखक संग लिखय पड़ि रहल अछि जे 'जय-जय भैरवि' जकरा हमरा लोकनि मिथिलाक जातीय संगीतक मर्यादा देने छी तें आइ-काल्हिक युवक लोकनि नहि जनैत छथि। पर्वो देखि गीत-गायन स्वभावतः ककरो अनठोहात लगतैक तथा बहरिया कें निश्चिते छगुन्ता लगतैक। ओना हम आशा करब जे गायक बन्धुक भविष्य मे अपन एहि खाधि कें दूर करताह आ एहि संदर्भ मे सजग कार्यकर्त्ता लोकनि अगुएताह। कटिहार क्षेत्र मे मैथिलीक हेतु बहुत कार्य केनाइ छैक परञ्च सभ सं पैघ काज छैक जे बाट-घाट सं निपत्ता भेल मैथिलीक पुनः स्थापना केनाइ। विश्वास अछि जे मैथिल सेनानी लोकनि स्मृति पर्व धरि सिमित नहि रहि मैथिली कें अपन जीवनक व्यवहार क्षेत्र आ विशेष कें बाट-घाट, कोट-कचहरी मे स्थापित करताह [illegible] आदेशक अपना ने [illegible] प्रयोजन छैक—मात्र चेतना आ अपन विश्वासक खगता छैक आ मैथिलीक विकास क सही-सड़क धरातल निर्विवाद इएह प्रमाणित होएत।

मैथिली

साहित्यिक-सांस्कृतिक विकाशक आधार आ से भाषाक बिना संभव नञि। साहित्यक बिना चेतनाक विकाश असंभव आ अचेतन लोक सं कुनू संघर्ष वा आन्दोलन सफल नञि भ सकैछ। एहि सम्बन्ध मे माओ त्से तुंग कहै छथि—जनता के बिनु जगओने आन्दोलन केनाइ एडभेंचर छोड़ि आर किछु नञि थिक—आ जनता के जगेबा लेल ओकरा अपन संग अनबाक लेल ओकरे भाषा में सम्बोधन करब अनिवार्य। संस्कृतिक चर्च करैत ओ आन ठाम कहै छथि 'असंस्कृत सेनादल बोगस सेना दल थिक आ बोगस सेनादल कहियो शत्रु के पराजित नञि क सकैए।'

शिक्षा आइ ककरो नञि वौद्धिको-पार्जनक हेतु सेहो आवश्यक अइ आ तें आवश्यक अइ भाषा। भाषा मनुक्खक प्रत्येक क्रियाक संग जुड़ल अइ। अस्तित्व रक्षार्थ आवश्यक अइ संगहि सर्वांगिण विकाशक आधार अइ। एकर व्याख्या करैत स्तालिन कहै छथि—भाषा मनुक्खक उत्पादक क्रिया स प्रत्यक्ष रूपे जुड़ल अइ। आ मात्र मनुक्खक उत्पादके क्रिया सं नञि ओकर जिनगीक सभ क्षेत्रक समस्त क्रिया, उत्पादन सं ल क निर्माणक चरम पर्याय तक। इएह कारण थिक जे समाजवादी देश सभ मे भाषा के अधिकार देल गेलए तथा ओकर विकासक निमित्त सभ संभव प्रयास कैल गेलए। रूस मे आन्दोलनक बाद गोट चालीसे भाषा के, जकरा ने त अपन लिपि छलै आ ने लिखित साहित्य, लिपि बनबा देल गेलैक, व्याकरण आ शब्दकोश बना देल गेलैक आ एहि मे कतेक एहनो भाषा छल जकर बजनिहारक संख्या हजार मे सीमित छल।

माओ जखन बेर-बेर लेखक लोकनि के जनता लग जेबाक आ ओकरा सं सिखबाक आग्रह करै छथि त हुनक प्रधान इंगित भाषा दिश रहैए। रूसक लेखक 'पवेल कोगिन' युवा जातीय लेखक (National artist) के पारिभाषित करैत कहै छथि—युवा जातीय लेखक ओ थिक जे अनिवार्य रूपे अपन लोकक संग जुड़ल अइ, ओकर ऐतिहासिक रूप आ पथ सं परिचित अइ समर्पित अइ अपन देशक स्वार्थहित आ अपन अनुभव एवं विचार के अपन मातृभाषा मे व्यक्त करैए।'

जनभाषा के दबेबाक प्रयास मात्र साम्राज्यवादी धनतांत्रिक देश मे होइए कारण शोषक-शासक नञि चाहैए जे जनता जागओ/जनता के जगने ओकर आशन सुरक्षित नञि रहि सकै छइ। शोषणक पहिया जाम भ जा सकै छइ। तें दक्षिण अफ्रिका हो वा भारत वा पाकिस्तान—एक दिश सरकार द्वारा जनभाषाक कंठरोधक प्रयास त दोसर दिश जनता द्वारा अपन भाषाक रक्षार्थ संघर्षक प्रत्यक्ष रूप देखल जा सकैए/तथा कथित स्वराजक नामपर १५ अगस्त १९४७ क जे एहि भारत मे हिन्दी साम्राज्यवादक स्थापना भेल से ठीक रूसक विपरीत विभिन्न जनभाषा सभ के उदरस्थ कर' लागल। एहि भूं इफोड़ भाषाक विकाशक नाम पर कोटि-कोटि टाका पाइन जकां बहय लागल आ जनताक खून पसेनाक कमाइ ओकरे कंठ मोकबा लेल खर्च होइत रहल। मैथिलीक संगहि नेपाली राजस्थानी कोंकणी, डोगरी, संथाली आदि कतेको भाषा एहि साम्राज्यवादक प्रत्यक्ष शिकार भेल आ एहि सं मुक्ति लेल, अपन अस्तित्व रक्षार्थ संघर्षरत अइ। तें आइ प्रत्येक चेतन वर्गक आ विशेष क साहित्यकार वर्गक ई प्रधान कर्त्तव्य भ जाइ छइ जे ओ प्रत्यक्षतः हिन्दी साम्राज्यवादक विरोध करय आ एहि समस्त भाषाक मुक्ति संघर्ष के सबल सफल बनेबाक सभ संभव प्रयास करय—सभ भाषाक प्रतिनिधि ल क संयुक्त-मोर्चाक निर्माण करय अन्यथा मुनिबीक सुग्गा जकां साम्यवाद-समाजवादक रट लगबैत रहत, कार्यतः किछु भेनिहार नञि।

—रामलोचन ठाकुर

(अग्निपत्र-१२ सं साभार)

अग्निपत्र
मार्च, 1979

देसिल बयना

पाठकीय परिवारक (संरक्षक) सदस्य

५२.	श्री वी० चौधरी,	कटिहार
५३.	" महाचन्द्र झा,	"
५४.	" उपेन्द्र नारायण झा,	"
५५.	" नित्यानन्द ठाकुर,	"
५६.	" श्रीमती इरा मल्लिक,	कलकत्ता

आदर्श विवाह

बाबू पाली ग्राम निवासी श्री शुकदेव ठाकुरक पौत्री ओ श्री लक्ष्मीकान्त ठाकुरक जेठ कन्या सुश्री सुधीराक शुभ-विवाह मकुनमा गामक श्री मानेश्वर मिश्रक एक मात्र पुत्र चिरंजीवी प्रेमकान्त मिश्रक संग बाबूपाली मे भेल। दहेज प्रथाक कलुषित कलंक सं मुक्त ई विवाह पूर्ण रूपेण आदर्श छल।

बाल गीत

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी रमना
सबहक एकहि अङना
सभ अपने केओ नञि अदना
मायक सन्तति छोट-पैघ के
के अछोप के बभना।

छोट-पैघ कहि झगड़ लगाबै
थिक ओ सत्यानाशी
कान ने कखनो दीहें तों सभ
सुन बेचन, सुन काशी
फुटने घर गमारो लूटै
रखिहें मन, मन रखना॥

एक माय कें कएटा सन्तति
केओ गोरे केओ कारी
केओ पढ़बा मे महाचन्सगर
केओ भुसकोलक टारी
माइक सिनेह समाने सभ क ए
आर समाने बेदना॥

—राम लोचन ठाकुर

'देसिल बयना' चन्दाक दर :—

१ प्रति	५०) पइसा
१ बर्खक	५) टाका
५ बर्खक	२०) टाका

पाइ पठेबाक पता :—
श्री जनार्दन झा,
१७६/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/१, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००२३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पार्थिनार आर्ट प्रिन्टर्स ३२ बी वृन्दावन बेशाख स्ट्रीट कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक—श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्तिमोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अङ्क—१०-११ जुलाइ अगस्त, १९८२ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

बाजब थिक अपराध

३१ जुलाई १९८२ स्वातंत्र्योत्तर बिहारक इतिहास मे एगो अविस्मरणीय तिथिक रूप मे अंकित होएत। करइबी छेक जे कुकृत्तियें नाम कि सुकृत्तियें नाम। से बिहारक वर्तमान सरकार, जकर नेता मातृघ्न-भ्रातृघ्न डा० जगन्नाथ मिश्र छथि, मनहि कुन्दू सुकृति नहि क सकल हो, परञ्च हुकर कुकृत्तिक जँ सूची बनाओल जाय त निश्चित भारतीय संविधान सं मोट पोथा तैयार भ सकेछ। एहि मे कून पैघ आ कून छोट सेहो निर्णय केनाइ सहज तकिन्हुँ नहि होएत। धर्म-सम्प्रदायक संग भाषा कें जोड़ि मुसल्मानक भाषा उर्दू कहि तकरा बिहारक दोसर राजभाषा बनओनाइ एहने एक कुकृति छल वा कही घृणित अपराध छल, जकरा एखनो कम सं कम मिथिलाक जनमानस बिसरि नहि सकलए। एमहर ३१ जुलाइ कें एगो प्रदर्शन भेल विधान सभा मे मात्र ५ मिनटक आ नव विधेयक पास भेल सरकारक आलोचना केनाइ दंडनीय अपराध। माने प्रेसक स्वाधीनता कें गरदनि दबा देल गेल। ओ प्रेस जकरा गणतंत्रक प्रहरी कहल जाइछ। आ जखन प्रहरीए नहि रहत तखन गणतंत्रक स्थितिक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ।

ओना त भारतीय प्रेसक चरित्र आ विशेष कें स्वाधीनताक पश्चात, बड़ उज्वल नहि रहलैकए। ई उएह प्रेस थिक जे राजकुमारक लंघीक रंगक वर्णन करैत नहि अघाइत रहलए आ महारानी साहिबाक नुआक रंग-पाढ़िक वर्णन मे पेजक पेज रंगि दैत रहलए- परञ्च एकर विपरीत, भनहि तकर संख्या नगण्ये किएक ने होइक, किछु प्रेस अवस्से अइ जे राष्ट्र आ लोककें सर्वोपरि मानैत रहलए आ जखन कखनो ओकरा पर प्रहार भेलैक, ओकर विरुद्ध काज भेलैकए त ओ सजग प्रहरीक रूप मे 'जगले रहब' टाहि दैत रहलए। आ निर्विवाद एहने प्रेसक मुंहपर ताला लगेबाक प्रयास थिक बिहार सरकार प्रेसविधेयक—जे 'काला कानून' क रूप मे चर्चित भ रहलए।

कहबी छेक जे कनाह कें कनहा कहने ओकरा लगैत छेक। परञ्च ई मात्र कहबी नहि कटु सत्य अइ। तें जं जगन्नाथ मिश्र भगवती पर १०८ छांगर कें चढ़ा आ ओकर रक्त मे स्नान केलनि—कुनू तांत्रिकक सुझाव पर आ से प्रेसबला छापि देलकैक त हुनका लगनाइ स्वाभाविके। स्वाभाविक छेक जे हुनक सुपुत्री कें फर्स्ट क्लास फर्स्ट भेटबो ने केलनि आ त इ लेल ओ जते चक्रचालि चललनि सभ प्रेसवला प्रकाशित क जन-जन तक पहुँचा देलकै—तें प्रेस पर खिसिएनाइ। ई उएह प्रेसवलकाक काज थिक जे हुनक छोट सं छोट किरदानी कें देखार क दैछ। (विशेष विवरणक लेल देखू—देसिल बयना—जून, १९८२—डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ थैलीनाथ मिश्र प्रकरण) तें भरिसक जगन्नाथ बाबू सोचने होथि महाराष्ट्रक भूतपूर्व मुख्य मंत्री अंतुलेक स्थिति सं उबरबाक हेतु प्रेसक मुंह बन्न केनाइ छोड़ि दोसर उपाय नहि।

ओना बिहारक ई घटना नव नहि कहल जा सकैछ। एहि सं पहिने तमिलनादक सरकार एवं उड़ीसा सरकार एहि तरहक आइन बना चुकलए। उड़ीसा मे त एक पत्रकारक स्त्रीक संग जाइ बर्बरताक संग बलात्कार कएल-गेल ओ ओकर हत्या कएल गेल तकर चर्चे की? परञ्च जगन्नाथ बाबू एमहर किछु दि. सं प्रेस पर बड़ बेसी खिसिआएल छलाह। गत बर्ख त ओ कम सं कम एक दिनक लेल आर्यावर्त इण्डियन नेशन कें दखल कइए लेने रहथि। परञ्च जखन एहि सभ उपाय सं ओ हारि गेलाह त गत मार्च मे तीनटा अपसर कें तमिलनाद पठओलनि—ओइठाम प्रेसक मुंह केना बन्न भेलैए से उपाय जनबाक लेल आ जुलाइक शेष दिन ओकरा कार्यरूप मे अनलनि।

आनठामक अपेक्षा बिहार सरकारक एहि चालिक विरोध बड़ तीव्र भेलैए आ भ रहलैए। १ अगस्त के बिहारक पत्रकार लोकनि जगन्नाथ मिश्रक बहिष्कार क निर्णय लेलनि। २ अगस्त कें लगभग १०० पत्रकार कें पत्रकार गैलरीक पास रहितों संसद मे नहि प्रबेश करय देल गेलनि आ लठिआओल गेलनि। ६ दिसम्बर १९८० कें मैथिली सेनानी लोकनि अपन वाकस्वाधीनताक दावी मे प्रदर्शन केने रहथि त एहिना लठिओल गेल छलाह। २ अगस्त कें एहि स्वाधीनताक दावीदार प्रेसकर्मी लोकनि अन्यायो जगन्नाथी लठैत द्वारा लठिआओल गेलाह। ३ अगस्त कें एहि करिया विधेयक विरुद्ध मे लोक सभा सं समस्त विरोधी नेता बाहर भ गेलाह। बिहार विधान सभा आ विधान परिषद् मे तुमुल नाद चलैत रहल। ५ अगस्त के बिहारक पत्रकार, छात्र-युवा वर्ग, राजनैतिक दलक नेता-कर्मी (विरोधी), शिक्षक, श्रमिक संगठन सभ के सभ बाट पर पहरा एहि 'काला कानून' क विरुद्ध अपन आवाज बुलन्द केलनि आ ११ अगस्त 'काला-दिवस' क रूप मे पालन करबाक निर्णय लेलनि।

आन्दोलनक चिनगारी नीक जकां सुनगि रहलए। आन्दोलन कर्त्ता लोकनि अपना कें बेजाय सं बेजाय स्थितियो मे लड़ैत रहबाक लड़ाइ कें विजयतोरण धरि ल जेबाक लेल प्रस्तुत क रहलाहए। ओमहर लाठी-गोलीक बल पर चलैवला सरकार सेहो अपन लाठी मे तेल लगा रहलए बन्दुक मे गोली भरि रहलए। बेसी त भविष्ये कहत—परञ्च ई धरि सत्य जे जनान्दोलनक समक्ष केहनो अन्यायी सरकार कें झुक' पड़लैए त जगन्नाथ मिसर कून खेतक मुरै छथि। 'जय प्रकाश-आन्दोलन' कें एखनो लोक बिसरि नहि सकलए। तखन बिहार के पथ प्रदर्शक कहल गेल छलैक। कि बिहार अपन एहि ख्याति कें पुनः पाबि सकत?

● जय मैथिली

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

लोक कथा

एकटा रहथि राजा

एकटा रहथि राजा। ओ जेहने पराक्रमी रहथि, तेहने प्रजा वत्सल। राजाक नाम-यश अपन राज सं बाहरो पसरल छल। परञ्च सभ रहितहुँ राजाकें मानसिक शान्ति नहि छलनि। कारण तेसरपन बीति रहल छलनि मुदा कुनू सखा-सन्तान नहि भेलनि। एकरे चिन्ता मे राजा-रानी दुनू बेकती सतत खिन्न रहैत रहथि।

एहिना एक दिन दुनू गोटे उदास बैसल रहथि ता एगो बाबाजी जुमलाह। राजा खबरि पबितहि बाहर आ बाबाजीक नीक जकां स्वागत करलनि आ इच्छित दान देबाक घोषणा केलनि। बाबाजी रानीक हाथें एक मुट्ठी अरबा चाउर-टा लेबक इच्छा प्रकट केलनि।

जखन रानी सूप सं एक मुठी चाउर बाबाजीक झोड़ी में दैत छलथिन त बाबाजीक नजरि रानीक उपर एकटक लागल रहल- परञ्च राजा-रानी धार्मिक प्रबृतिक हेबाक कारणे एकरा अन्यथा लेबे किएक करितथि। बाबाजी चाउर कें अपन झोड़ी मे रखैत राजा सं बजलाह—हे राजा! हम अहां लोकनिक मनक व्यथा बुझैत छी। तें हम जेना कहैत छी तेना करू। आहाँ लोकनि कें निश्चित सन्तान लाभ होएत। परञ्च स्मरण राखू जे इ बात तीनू आदमी छोड़ि चारिम नहि जानि सकय। अगिला मंगल दिन बेरखन अहां अपन गाछी जाएब आ सिनुरिया गाछ सं एगो आम तोड़ि लायब। मन रहय जे आम माटि पर नहि खसय। दहिना हाथें झटहा फेकब आ बाम हाथे आम लोकब आ ओहिना नेने आङन चलि आयब। बाट मे कतबो केओ टोकय त बाजी नहि। रानी मा ओ आम अपन खोंइछ मे ल ओ फेर सिलौट-लोढ़ा सं ओकरा कुच्चा बना खा लेती। आर एगो बात—पूर समय भेनहि जे प्रसव करतीह ताइ मे प्रथम त बालक जन्म लेत, किन्तु दोसर एगो शंख होएत। ओइ शंख कें अहाँ धो-पोछि पवित्र जगह पर राखि देबैक आ रोज साँझखन ओकरा धूप-दीप देखा देल करिऐक। अपन यात्राक शेष मे हम जखन घुरब त ओ हमरा द दी। हमर कहल मे मिसियो भरि अन्यथा नहि हो—ने त भयंकर अनिष्टक संभावना।' एतबा कहि बाबाजी विदा भ गेलाह।

सन्तान सुखक कल्पना मात्रे सं राजा-रानीक आनन्दक सीमा नहि रहल। अगिला मंगल कें जेना-जेना बाबाजी कहने रहथिन राजा केलनि आ रानी गर्भवती भेलथिन जे थोड़े दिनक बाद स्पष्ट परिलक्षित भेल। समय पुरला पर रानीक गर्भ सं एगो दिव्य राजकुमार आ दोसर शंख जन्म लेलक। नगर उत्सव सं दलमल्लित भ उठल। फेर नेना दिनानुदिन पैघ होइत गेल। एहि तरहें दिन केना बीतैत गेल से हुनका लोकनि के ख्याले ने रहनि।

किछु दिनक बाद जखन नेना छेटगर भेलैक आ अन्न खाए लगलैक त एगो अजगुत भेल। राजा-रानीक सचार लागि सभ दिन हुनक सूतबाक घर मे राखल रहनि। एक दिन जखन कने विलम्ब सं ओ लोकनि धुरथि त देखै छथि जे रानीक थाड़ीक भात छिटल रहनि—जेना कुनू नेना छिटि-छाटि क खेने हो। दुनू गोटे छगुन्ता मे रहथि परञ्च निस्तुकी हेवे ने करनि। एकर बाद मे ई क्रम प्रायः चलैत रहल। अचरजक बात ई जे दिन पर दिन भात बेसी खलिआय लगलैक। परञ्च ई बात ओ लोकनि बजबो ने करथि।

किछु दिनक बाद राजा कतौ बाहर गेल छलाह। एक राति रानी पलंग पर पड़ल रहथि आ खवासनी संचार लगा गेलनि। हुनकर आँखि कने लागि सन गेल छलनि ता देखलनि जे एगो नेना पीढ़ी पर बैसि क खा रहल अइ खेलाक बाद गिलास सं कने पानि पीबि आ हाथ धो ओ शंख मे धुसिया गेल। रानी कें भेलनि जे ओ भरिसक सपना देखलनिहें मुदा उठला पर संचार देखि सपनाक वास्तविकता पता चललनि—परञ्च फेर ओ चुप्पे रहलीह। आनदिन त दुनू बेकती एके थारी मे खा लैत छलीह—से आइ एके थारी हेबाक कारणे हुनका मुखले रहय पड़लनि।

दोसर दिन जखन राजा घुरलाह त रानी सभ वृतान्त कहलथिन। दुनू बेकती मीलि योजना बनओलनि आ ओइ राति घरे मे नुकाएल रहलाह। फेर जखन खवासिन संचार लगाक केवाड़ बन्न क चल गेल त थोड़ेक कालक बाद देखै छथि जे ओही शंख सं एक दिव्य नेना बहार भेल आ आसन पर बैसि भोजन क रहल ए। जखन

ओकरा थोड़ेक खायल भ गेलै त राजा दोग सं बहरा लपकि कें नेना कें पकड़लनि। ओ अकचकासन गेल। राजाक संगदि रानी सेहो जुमि गेलीह। राजा पुछलथिन—अहां के छी बाउ ? एना चोरा कें रोज किएक संचार अंइठा दैत छी ?

नेना बाजल—हम आन केओ नहि—अहीं लोकनिक छोट संतान थिकौं—जे शंखक रूप में जन्मल रही। रहल बात संचार अंइठेबाक—से सन्तानक अंइठ मां कें त नहि लगबाक चाही। तें हम सभदिन माइएक थाड़ी मे खाइत छी। आ चोरा क त हमरा खाइए पड़त—शंखक लेल कतौ संचार लगलैए ? माइक दूधो त हम राति मे चोराइए क पीबैत रहलहुँ आ मां ओकरा सपना बुझैत रहलीह।'

—किन्तु आब त हम अहां कें शंख मे नहि जाय देब। रानी बजलीह।

—से तइखन हैत जे शंख कें नुका क कुनू पेटी-बाकस मे बन्न क दियौक। ओना महात्माजी त तैयो बुझिए जेताह—तखन ?

'तकर भार हमरा पर अइ'—राजा बजलाह।

ओइ दिन सं बालक बाहरे रहय लागल परञ्च बात फेलि नहि जाय तें राजा दुनू बालक के महलक भीतरे खेल-धूप, पढ़ब-लिखब कें व्यवस्था केलनि। जं जं दिन बीतैक एक दिन सं राजा-रानीकें बड़का सं छोटका नेनाक संस्कार आ तेजस्विता पर प्रसन्नता होनि तहिना महात्माजीक आगमन सं सम्भावित अनिष्टक बात सोचि चिन्ता सेहो। आखिर एक दिन महात्माजी आबिए गेलथिन आ अपन धरोहरक याचना केल-थिन। राजा-रानी दुनू बेकती हुनका पूर्ण श्रद्धाक संग प्रणाम केलनि आ शंख आनि हाथ मे देलथिन। महात्माजी शंख हाथ मे लितहि बुझि गेलाह आ आंखि लाल करैत बजलाह—राजा ! बात त एहन नहि छल। शंख खाली अइ' तं एहि संख सं जे बहरा-एल हो—तकरा शिघ्र हमरा सोझा उपस्थित कक ने त हम शाप देब।

बेचारे राजा कें त काटू त शोणित नहि भट द दुनू नेना कें उपस्थित करैत बजलाह—हे महात्मा, इएह दुनू सन्तान थिक—अपनेकें जे इच्छा हो चूनि लिअ।

महात्मा छोटकाक हाथ पकड़लनि आ उठि विदा भेलाह। राजा-रानी उदास मने घर जा पड़ि रहलनि।

ओम्हर महात्मा जी ओइ बालकक संग गाम-घर सं बहराइत एगो छोट सन पांतर मे पहुँचलाह, जाइठाम सं बाट दू दिस जाइत रहैक। महात्माजी बालक कें पुछलथिन—बाउ, एहिठाम सं ई दुनू बाट हमर कुटी धरि जाइए। एगो ६ मासक आ दोसर बर्ख दिनक बाट छैक। छ मासक बाट मे पर्वत-पहाड़, नदी-नाला त छैके संगहि बाघ-सांपक से हो भय छइ, जखन कि बर्ख दिनक बाट निष्कन्टक छैक। आब अहीं कहू जे कून बाटे जाइ ?

महात्मा जी छए मासक बाट चलू ने। बाघो-सांप देखबाक अवसर भेटत आ जल्दी पहुँचियो जयब। बालक बाजल।

महात्माजी आश्चर्जित होइत बालक दिस देखलनि आ बजलाह—चलू, हमरा लोकनि आपस चली। बालक चतुर छल आ ओकर दाब लहि गेलैक। महात्माजी ओकरा संग फेर राजाक ओइठाम पहुँचलाह आ छोट नेना कें राखि जेठ जनक माङ केल-थिन। शापक डरे भीतु राजा बिना कुनू आनाकानी केनहि महात्मा जीक प्रस्ताव स्वीकार कए जेठजन कें संग क देलथिन। महात्मा जी ओकरा ल विदा भ गेलाह।

फेर जखन ओइ पांतर मे पहुँचलाह त महात्माजी ओकरो सं उएह प्रश्न केलथिन। जेठका राजकुमार कने डरपोक स्वभावक छल तें बर्ख दिनक बाट जेबाक स्वीकारलक। महात्माजी प्रसन्न भ विदा भेलाह।

महात्मा जीक आश्रम एगो घनघोर जंगलक बीच विशाल महल छल। एगो सुन्दर कमरा मे राजकुमार के ओ राखि देलथिन आ आदेश देलथिन जे ओ असगर महलक बाहर नहि जाए। जं जेबो करय त सभ दिस जाए मुदा दक्षिण दिस नहि जाए।

महात्माजी सभ दिन प्रातःकाल स्नान पूजा क क बहरा जाथि आ फेर दोसर-तेसर सांझ क आपस आबथि। एहि बीच राज-कुमार सभ दिस घूमय परञ्च आदेशानुसार दक्षिण दिस नहि जाय। एक दिन ओकरा हठात कि फुरलैक की ने, ओ दक्षिण दिस चल गेल। दक्षिण दिस एगो विराट बड़क गाछ रहैक आ ताइठाम एगो पेघ इनार। इनार मे हुल्की दैते ओकर अचरजक ठेकान नहि रहलैक। इनार मे पानि नहि रहैक—खाली लोकक माथ भरल रहैक। राजकुमार कें देखिते मुंड सभ ठहाका मारि हंसय लागल।

हंसबाक कारण जिज्ञासा केला पर मुंह सभ कहलकै—बाउ, दू दिनक बाद तोरो इएह गति हेतह—तें हमरा लोकनि कें हंसी लागि गेल ए। जे महात्मा तोरा अनलकहे, से असल मे कसाइ थिक। ओ एहिना गाम घर सं लोक कें बझा क अनैछ आ महा-कालीक समक्ष बलिप्रदान करैछ। मुंड के एहि इनार मे ध दैछ आ देह कें माउस रान्हि देवी के भोग लगबैछ आ अपनो खाइछ।

—मुदा एहि सं बचबाक उपाय ? राजकुमार आकुलताक संग पुछलकैक।

मुंह सभ बाजल—बचबाक उपाय छैक अबस्से, जं तोरा सं पार लाग ओ तखन। परसू शनि छैक आ महात्मा भरि दिन व्रत राखत आ पूजा-पाठ करत। सांझखन ओ तोरा बजओतह—स्नानादि करा नव वस्त्र पहिरा कें। पूजा जखन भ जेतै त देवी प्रतिमाक दहिनाकात बड़का कराह मे तेल टहकैत रहतैक। ओ तोरा देखै लेल कहत जे बाउ देखहक त तेल गर्म भेल वा नहि। तों जखन मुड़ी झुका कराह मे देखबह तखन देवीक पयर लग में तरुआरि राखल छैक ताइ सं तोहर माथ छोपि लेतह। तें तोरा जखन ओ तेल देखय लेल कहत त तों कहियहक जे केना देखल जाय से कने बुझा देथुन। ओ तोरा देखबैक लेल अपन पूरा गरदनि झुका क कराह मे ताकत आ तो फुर्ती सं तरुआरि ल क ओकर गरदनि पर प्रहार करिह मन राखी जे एके छओ मे ओकर माथ देह सं कात भ जाइ आ माथ कें बाम हाथे लोकि लिह आ कालीक पयर पर राखि दियहुन। फेर ओकर शरीर के कराह मे द टुकड़ी-टुकड़ी काटि खूब नीक जकां भुजि देवी के बड़का थाड़ी मे भोग लगा दियहुन। सभ काज विधिवत भेने देवी प्रसन्न भ वरदान माङै लेल जं कहथुन त पहिल वरदान हमरा लोकनिकें जीवित करबाक मङिह, दोसर देवी कें एहि अभि-शप्त जगह छोड़ि आनठाम चलि जाइक, आ तेसर अपन जे मन होअ। तीन स बेसी नहि हेबाक चाही। संगहि मन राखी जे महात्मा बड़ पहुँचल छथि—तोहर भाव-भंगिमा सं ओ बुझि ने जाथुन। आब तों जाह। हमरा लोकनिक शुभकामना तोरा संग अइ—नीके ना रहने परसू राति मे भेंट होएत।

राजकुमार अपन कमरा मे घुरि आयल। ओइ राति ओकरा नीन्न नहि भेलैक। ओ बड़ व्यग्रता सं शनि दिनक बाट जोहय लागल। परञ्च ओ तते सतर्क छल जे महात्माजी कें एहि सभक भनको नहि लगलनि।

अन्ततः शनि दिन एलै। महात्माजी भरि दिन पूजा पर बैसल रहलाह। राजकुमार कें सेहो उपास कराओल गेलैक। आ ठीक जखन सांझ पड़लैक—महात्माजी स्नान कए गेरुआ वस्त्र धारण केलनि आ राज-कुमार के सेहो स्नान करबा नव वस्त्र पहिरबा देलथिन। ओ फेर पूजा पर बैसलाह त राजकुमार कें सेहो अपना लगल मे बैसा लेलनि। लगभग पहर भरि पश्चात महात्मा जी ध्यान तोड़लनि आ राजकुमार दिस देखैत बजलाह—बाउ देखियौक त जे करा-हक तेल गर्म भेल वा नहि। राजकुमार कें त जेना वाण मारि देलकैक। किन्तु ओ अपना कें एहि स्थिति सं मुकाबला करैक हेतु तैयार केनहि छल। झट द बाजल—त, भ गेलैक। महात्मा जी ओहिना शान्त भावें कहलथिन—कने उठि कें देखियौक ने।

राजकुमार उठि कें दूरहि सं देखि बाजल—खौलैत छैक।

'एहिना लोक देखैत छैक ?'—महा-त्माजीक शिकायत भेलनि।

राजकुमार बेश गम्भीरताक संग बाजल-क्षमा करब, हमरा नहि बुझल अइ। एक खेप जं अपने देखा दी त फेर भूल नहि होएत।

महात्माजी तरूआरि सं आँखि हटा राजकुमार के देखैत आस्ते सं उठलाह आ कराहक लग जा पूरा गरदनि नमरा कराह मे तकैत बजलाह—हे एना……

एहि बीच राजकुमार तरूआरि ल हुनक माथ देह सं फराक क देलक। ओ अपन बात पुराओ ने क सकलाह। आ जेना मुंड सभ कहने छलैक बाम हाथे माथ लोइकि देवीक पयर पर राखि देलकै। भरि दिन सहल रहलाक बादे जानि ने कतय सं ओकरा ओतेक फुर्ती आ जोर आबि गेलैक। ओ महात्माजीक छटपट करैत देहकें उठा कराह मे ध देलक आ ओही मे तरुआरि सं छोट-छोट टुकड़ी काटि नीक जकां भूजि थाड़ी मे ल भगवतीक सामने परसि देलक आ कलजोड़ि बाजल—मां भगवती जं कुनू गलती भेल हो त नेना जानि क्षमा करब अहां के प्रसाद परसल अइ—भोग लगाउ।

एतबा कहिते एक अद्भुत शब्द सं मंदिर गनगना गेलैक आ सभ दीप मिझा गेलैक। राजकुमार डरे संत्रस्त—जाइठाम छल ताहीठाम कल जोड़ने ठाढ़ भेल रहल। कनेके कालक बाद जेना भगवतीक शब्द ओकरा सुनाइ पड़लैक—आइ सरिपहुँ तों स्वादीष्ट मांस भोग लगओलें। बहुत दिनक पश्चात् आइ मन तृप्त भेल। आइ तोरा जे वरदान लेबाक छौक माङि ले।

राजकुमार बाजल—मां ! जं सरिपहुँ एहि अबोध पर प्रसन्न छी त हमरा तीन गोट वरदान दिअ। पहिल त ई जे महात्मा जी द्वारा कतेक लोक कें काटि अहांक भोग लगाओल गेल-ए आ जकरा लोकनिक मुंड दक्षिणबरिया इनार मे पड़ल छैक ओकरा सभ कें जीबा दियौक। दोसर—अहां एहि अभिशप्त मंदिर कें छोड़ि आन ठाम चल जाउ आ तेसर जे जखन हमरा कुनू गाढ़-विपत्ति पड़य आ अहां कें स्मरण करी त अहां उपस्थित होइ।

भगवती कहलथिन—तहिना हैत। आ फेर एकटा विचित्र सन शब्द भेलैक—दीप सभ अपनहि जरि गेलैक आ चारूभर ततेक इजोतसन भ गेलैक जेना दिन होइक। राजकुमार ओहिना मंदिर सं बहरा इनार लग गेल त सभ ओकर स्वागत केलकैक आ बहार करैक लेल होरीक व्यवस्था करबाक आग्रह केलकैक। राजकुमार फेर मंदिर मे गेल आ कतेक तकलाक बाद एगो मोटगर रस्सी भेटलैक—जाइ लक सभ कें उपर केलक। सभ ओकरा घेरि लेलकैक आ जेना एगो अभिनव उत्सवक रूप ल लेलकैक। देखैत-देखैत राति बीति गेलैक आ पूबकात मे सुरुज भगवान उगि एलथिन। तखन राजकुमार के भूखक अनुभव भेलैक। सभ केओ मीलि मंदिर मे आयल—भोजन बना बनभोज केलक। सभक संग परिचय-पात भेलैक—तखन राजकुमार जनलक जे ओ सभ कुनू ने कुनू देशक राजकुमार छलैक। सभ बाइकाल एकरा अपना ओइठाम जेबाक नोत देलकैक। ओ मे घोड़शाला छलैक जाइ मे महात्माजी विभिन्न देश सं नीक घोड़ा संग्रह केने छलाह। सर्व प्रथम राज-कुमार कें मनोनुकूल घोड़ा चूनै लेल कहल गेलै आ फेर सभ कें सभ एक-एक टा घोड़ा पर चढ़ि अपन-अपन देश विदा भेल। राजकुमार सभ के विदा क सोचलक—घर त जेबे करब, किएक ने आर कने दिन-दुनियां देखल जाय। ई सोचि ओ घोड़ा पर चढ़ि विदा भेल—जेम्हरे घोड़ा ल जाय। ओइ अभिशप्त जगह पर एक मात्र घोड़ा—जे ककरो कान मे नहि लगलैक—घास चड़ए लागल……

जाइत-जाइत जखन ओ कतेको दूर गेल त बाट मे दू गो बाघक बच्चा खेलाइत भेटलैक। जेठका राजकुमार सं कहलकै—हे राजकुमार, हमरो अपना संग नेने ने चलू।

राजकुमार बाजल—तों छैं त बाघ, के जानय कहीं हमरे पर ने चोट करे।

बाघ कहलकै—हे राजकुमार, हम बाघ क बच्चा अवस्से छी—मुदा विश्वासघात नहि करब। बेर विपति मे मदतिए करब।

राजकुमार के मन मानि गेलैक। ओकरा घोड़ा पर बैसा लेलक आ विदा भेल। छोटका बाघ उदास भेल देखैत रहल।

ओ सभ आर जखन किछु दूर गेल त एगो गाछक डारि पर दू गो बाघक बच्चा

खेलाइत छल। फेर जेठका बाजल—हे राजकुमार हमरो अपना संग नेने चलू ने। छी त हम बाभ चिड़ै, मुदा तैयो कहियो काज मे लागि सकैत छी।

राजकुमार ओकरा दिस देखलनि आ कहलथिन—चल आ बैस एही घोड़ा पर आ ओकरो बैसा लेलनि। छोटका फेर खिन्न मने हिनका लोकनिक बाट दिस तकैत रहल।

जाइत-जाइत जखन साँझ पड़ि गेलैक त राति-बीच विश्राम करै लेल राजकुमार एगो गाम मे पहुँचलाह। गामक कात मे एगो धोबीक घर रहैक। धुड़खुड़ लग एगो बुढ़िया के ठाढ़ देखि ओ कहलथिन—गे मौसी, राति बीच हमरा रहय देबें। भोरे फेर त चलिए जायब।

बुढ़िया बाजल—रहए किएक ने देब। अहां कि हमर घर उठा क ल जाएब। बड़ भाग सं ककरो ओइठाम केओ अभ्यागत अबै छइ। रहू ने।

बुढ़िया एगो पटिया आनि आङन मे ओछा देलकनि आ एक लोटा पानि आनि देलकनि। राजकुमार गोठुला घरक ओसारा मे घोड़ा के बान्हि हाथ-पएर धो पटिया पर बैसि गेलाह। कात मे बाघक आ बाभक बच्चा पड़ि रहलनि। बुढ़िया भानस-भात मे लागि गेल। मुदा ओ जते बेर घर जाय त कानय लागय आ आङन आबय त हंसय लागय। राजकुमार कें ई देखि बड़ छगुन्ता लगलनि। अन्ततः ओ पुछिए देलथिन—मौसी एगो बात पुछियौक?

—किएक ने पुछब? बुढ़िया बाजलि।

राजकुमार पुछलथिन—तों जते बेर घर जाइ छें त कानय लगै छें आ आङन एने हंसय लगै छें—एकर की कारण?

बुढ़िया बाजलि—बाउ, अहां एक दिनक पाहुन छी, ई सभ बुझि क की करबैक।

राजकुमार कें बड़ हठ केला पर बुढ़िया कहलनि—बाउ, हमरा एके गो बेटा अइ, जेकर काल्हि गौना छइ—आइ बरियाती गेलै ए। तें ओही खुशी मे हम जखन आङन अबै छी त हंसै छी। मुदा परसू हमर बेटा दैत्य पेट मे चलि जाएत सेह सोचि क कनैत छी—जखन घर जाइ छी।

राजकुमार आश्चर्य प्रकट करैत पुछलथिन—दैत्यक पेट मे! ई दैत्य की भेलैक?

बुढ़िया बाजलि—से अहां केना बुझबै। बुझैत छेक एहि नगरक लोक, जकर सैं-बेटा ओकर पेट मे पड़ि चुकल छेक। राजा क कानून छेक—बेरी-बेरी सभक घर सं एक गोटे क सभ दिन दैत्यक पेट मे जेतैक। से नहि भेने त दैतबा एके दिन मे कतेको के खा जाइ छलै।

राजकुमार कहलकै—ठीक छै—परसू तोरा बेटाक बदला मे हम जाएब, मुदा ई बात तों कतौ बाजै नहि, आ ने एखन सं कनबे कर।

बुढ़िया कनैत बाजलि—से कोना हेतै बेटा—अहूँ त ककरो बेटे हेबै ने। हम अपन बेटा खातिर अहां कें कोना मरबा देब?

—आइ सं हमरा तों अपने बेटा बुझै। हम तोरा मां कहबौक। मुदा ई गप्प दोसर केओ नहि बुझै।

बुढ़िया मानि त गेल मुदा ओकरा मन मे कचोट रहबे करैक। ओमहर राजकुमार एक बेर फेर व्यग्रताक संग परसूक बाट जोहय लगलाह। बुढ़िया जखन चैन सं घर मे भानस करय लागलि त राजकुमार बाघ सं पुछलनि—बाउ, आब कहै—दैत्य सं केना सामना करबिही?

बाघ बाजल—हम लपकि क ओकर डांड़ ध लेबै आ टस स मस नहि होमय देबै।

बिनु पुछने बाभ कहलकनि—हम त फट द दुनू आंखिए फोड़ि देबैक।

राजकुमार बजलाह—तखन हमरे तरुआरि सं ओकर घेंट कटैत कते देरी लागत। मुदा सभ केओ सावधान भ जाइ जो।

राति मे भोजन भात क सभ सूतल आ भोर मे राजकुमार घूमि फिरि नगर दर्शन केलक आ फेर राति मे बुढ़ियाक आङन जा विश्राम। भिनसरे डिगडिगिया पड़लैक जे आइ जकर पारी छैक से पुबरिया पोखरिक भीड़ पर दैत्यराज लग ठीक समय पर चल जाय ने त राजा ओकरा बाले-बच्चे भाकसी झोंका देथिन।

राजकुमार तैयार भेल। घोड़ा पर बाघ आ बाभ पहिने सवार भेल आ ओ बुढ़िया सं आशीर्वाद लेलनि। बुढ़िया कनैत बाजलि—बेटा हमरो अरुदा ल क तों जीबैं-मुदा मन कहैत छलै जे ओ घुरत नहि। राजकुमार विदा भेल—पुबरिया पोखरि दिस।

राजकुमार जखने पोखरिक समीप पहुँचल त ओकरा भयंकर गर्जन सुनाइ पड़लैक जकरा ओ दैत्यक गर्जन मानि आर सतर्क भ गेल। जखने भीड़ पर पहुँचल त ओ विशालकाय विकराल दैत्य मुंह बाबि छुटलैक। बघबा लपकल। उड़ल बाभ। आ चमकि उठलैक राजकुमारक तरुआरि। दक्षिण में दिवरा भीड़ सन दैत्यक लहास ढेर भ गेलैक आ शोणितक बोमकार छूटय लगलैक। राजकुमार अपन संगीक संग दोसर दिस विदा भ गेल।

राजकुमार फिरलो ने छल मुदा नगर मे दैत्यक मरबाक खबरि पसाही जकां पसरि गेलैक आ कतेको लोक दैत्य कें मारनिहारक रूप मे अपना कें प्रचारित करैत राजदरबार मे हाजिर भेल। एकर कारण ई छलै जे राजा दैत्य के मारनिहार के आधा राजक संग अपन बेटी बियाहि देबाक प्रतिज्ञा केने छलाह। मुदा दावीदारक संख्या बेसी देखि हुनका संदेह भेलनि आ तें आइ जकर पार छलैक तकर पता लगबैत धोबिनियांक ओहिठाम सिपाही पठाओल गेल। सिपाही धोबिनिया कें पकड़ि दरबार मे उपस्थित केलक। राजा पुछलथिन—आइ तोहर बेटाक पार छलौक, ओ गेल छलौक कि नहि?

धोबिनिया बाजलि—महाराज, हमर बेटा काल्हि गौना कराक आयल-ए तें हमर बहिनपुत ओकरा नहि जाय देलकैक आ ओकरा बदला मे अपने चल गेल।

राजा पुछलथिन—ओ छौक कहां।

दैतबाक पेट मे हेतै, आर कतय। एतबा कहि ओ हबोटकार भ कानय लागलि।

राजा ओकरा सांत्वना दैत कहलथिन—आइ दैत्य मारल गेल-ए मुदा के मारलक तकर निस्तुकी नहि भ पबैछ। तें तोहर बहिनपुतक जरुरति। तों जो, मुदा जाधरि ओ नहि अबैछ तोरा घर पर सिपाहीक पहरा रहतौक आ ओकरा अबिते एतय पठा दही।

धोबिनियां के नेने एमहर सिपाही सभ ओकरा घर पहुँचल ता ओमहर सं राजकुमार सेहो जुमि गेल। ओ अबिते हंसैत बाजल—मौसी मधुर खुआ। आइ तोहर दैतबा के यमपुर पठा देलिऐक। आइ सं ककरो सैं-बेटा ओकरा पेट में नहि जेतैक।

सिपाही सभ आश्चर्य सं ओइ विचित्र राजकुमार के देखलक जकरा घोड़ा पर बाघ आ बाभ शोभायमान रहैक तथा तरुआरि एखनो शोणित मे रंगल रहैक। धोबिनिया खुशी सं राजकुमार के पजिया ओकरा चुम्मा लैत राजाक आदेश सुना देलकै। राजकुमार सिपाही सभक संग राजदरबार बिदा भेल।

राजकुमार कें दरबार पहुँचिते झुट्ठा दावीदार सभ सहटि गेल। राजकुमार सं गप्प केलाक बाद राजा विश्वस्त भ गेलाह जे दैत्यक मारनहार ई युवक धोबिनियाक बहिनपुत हो वा नहि कुनू देशक राजकुमार थिक। ओ अपन बचनक अनुसार राजकुमार क संग अपन बेटी के बियाहि आधा राज दय देलथिन आ झुठा दावीदार सभ कें पकड़ि फांसी देबाक आदेश सुना देलथिन। राजकुमार स्त्री आ राज पाबि चैन सं रहय लगलाह।

एहिना मास ६ मास बीति गेल। आब राजकुमार जेना घर-आङनक वातावरण सं उबि गेलाह। एक दिन ओ राजाक समक्ष शिकार खेलाय जेबाक प्रस्ताव रखलनि। राजा एहि प्रस्ताव कें स्वीकार करैत सुझाव देलथिन ओ सभ दिस शिकार खेलथि, मुदा दक्षिण दिस भुलियो कें ने जाथि। राजकुमार सुझावक पालन करैक बात गछि तैयारी मे लागि गेलाह। राजा हुनका संग आर किछु चतुर शिकारी कें तैयार कए विदा केलक। संग मे गाजा बाजा से हो रहैक।

राजकुमार भरिदिन घोड़ा दौड़बैत रहलाह परञ्च एकोटा शिकार हाथ नहि लगलनि अवरजक बात त ई जे जते जे शिकार उठैक से दक्षिण जंगल दिस पड़ा जाइ—आ ई अपन सन मुंह लेने घुरि आबथि। दिन लगचिआयल जाइत छलै। अन्ततः ई निर्णय लेलनि जे आब जे कुनू शिकार भेटतनि—से जतय किएक ने जाओ ई पछोर करताह आ बिनु मारने नहि फिरताह। संयोग सं एगो हरिण हिनका देखैलनि आ ओ पाछा केलनि। हरिण सोझे दक्षिण दिस पड़ायल आ इहो पछोर धेने गेलाह। आन सभ शिकारी कतय छुटि गेल से पतो ने लगलनि। ओमहर सूर्य लुकझुक करैत रहै आ तइखन हरिण हिनक आंखि सं अढ़ भ गेलनि। एमहर पियासे कंठ सुखा रहल छनि। किछु दूर पर एगो पोखरि सन बुझना गेलनि आ ई ओम्हरे घोड़ा दौड़लनि। ठीके एगो विशाल पोखरि रहैक मुदा चारू कात सं घेरल—मात्र एकटा घाट—जल तक जेबाक सिढ़ी। राजकुमार घोड़ा सं फनलाह आ खट-खट सिढ़ी उतरि जइखन आंजुर मे जल लेबय लगलाह तइखन दोसरकात बैसल एक रूपसी कुमारि कन्या पर नजरि पड़लनि जे हिनका हाथक इशारा सं जल नहि पीबाक लेल कहि रहल छलनि। राजकुमार कातर दृष्टिएं ओकरा दिस तकैत अनुनय केलथिन—हे देवी! पियासे हमर कंठ सुखा रहल-ए आ मन व्याकुल भेल अइ। जं शिघ्रे जल नहि पीबि सकलौं त प्राणे छुटि जायत। एहना अवस्था मे अहांक निषेध कि उचित भेल?

युवती बाजलि—हे आगन्तुक, हम आहांक स्थिति बुझि रहल छी, परञ्च हमरा संग बाध्यता अइ।

—जं कुनू असुविधा नहि हो त कि हम ओहि बाध्यताक सम्बन्ध जानि सकैत छी? राजकुमार पुछलथिन।

युवती बाजलि—जं अहां जानए चाहैत छी त सुनू। अहां देखिए रहल छी जे हम कुमारि छी आ हमर एकमात्र सम्बल ई पोखरि थिक। हम प्रण केने छी जे एहि पोखरिक उपयोग उएह व्यक्ति करताह जे हमरा संग विवाह करबाक लेल राजी होथि। आ हमर विवाह हुनके संग होएत जे हमरा पाशा खेलाय मे हरा देथि। कि अपने एहि लेल तैयार छी?

राजकुमार प्यासें व्याकुल छलाह। ओ पाशा खेलै लेल तैयार भ गेलाह। युवती कहलकनि—आ जं अपने हारि जाइ तखन?

तखन की? हुनक प्रश्न भेलनि।

तखन हम अहां के, अहांक घोड़ा, बाघ आ बाभक संग पाथर बना एहि भीड़ पर स्थापित क देब। बाजू तैयार छी?—युवतीक प्रश्न छलैक।

राजकुमार स्वीकृति दय पाशा खेलाय लेल बैसि गेलाह। पाशा तीन बेर चलल परञ्च तीनू खेप राजकुमार हारि गेलाह। युवती हुनका सभ कें पाथर बना देलकनि।

ओमहर जं जं राति बीतै राजा-रानीक संगहि राजकुमारक पत्नी चिन्ता सं व्याकुल रहथि। महल मे कन्ना-रोहटि आरम्भ भ गेल आ भोर होइत-होइत सगरो हल्ला भ गेलैक जे राजाक जमाय जे काल्हि शिकार खेलाय गेलथिन से नहि फिरलथिन। भरिसक दक्षिण भर चल गेलथिन आ तें फिरबाक आशाओ नहि।

× × ×

ओमहर जे मुंह सभ नवजीवन प्राप्त क कें अपन-अपन देश फिरल छल अपन-अपन जीवाक खिस्सा लोक के कहैक। ई बात पसरैत-पसरैत राजकुमारक माय-बापक कान तक गेलैक। ओकर छोटका भाइ के जखन ई रहस्यमय घटनाक पता चललैक त ओ माय-बाबू सं प्रस्ताव केलक—भाइ कें खोज मे जेबाक। पहिने त राजा-रानी आनाकानी केलथिन परञ्च शेष मे अनुमति देलथिन। छोट राजकुमार घोड़ा कसलक आ विदा भेल। एहि बेर ओ बर्ख दिनक बाट धेलक कारण ओकरा मन छलैक जे छ मास क बाट जेबाक गप्प कहलाक बादे महात्मा जी ओकरा आपस द बदला मे जेठ भाइ कें ल गेलथिन। आ जेठ भाइ निश्चिते बर्ख दिनक बाट जायब स्वीकारने होएतैक तें ल गेलथिन। परञ्च बर्ख दिन बाट ओकर सरेसा घोड़ा मात्र एक मास मे चलि गेलैक। मंदिर धरि जेबा मे असुविधा नहि भेलैक कारण ओ रास्ता मंदिरे तक जाइत रहैक। मुदा मंदिर ओकरा एकदम सुन्न-मशान बुझेलैक जेना कतेको बर्ख सं एहिठाम लोक नहि आयल हो। आ चारूकात घूरि-फिरि देखि लेलक आ जाइ बाटे आयल छल से बाट छोड़ि जे एकटा दोसर बाट रहैक ताइ बाटे घोड़ा हंकलक। जाइत जाइत जं किछु दूर गेल त जंगल सं एगो बाघक गर्जन सुनेलै। ओ सावधान भ तरुआरि धेलक ता बाघ बहुत लग आबि गेल रहैक। बाघ

कहलकै—हे तेजस्वी युवक, हमरा लेल तखारिक प्रयोजन नहि। अतल मे आइ सं कतेको दिन पहिने अहींसन एगो राजकुमार एहिना घोड़ा पर चढ़ल आइत रहति। हमर जेठ भाइ हुनका अपन संग ल जेबाक आग्रह केलकनि आ ओ लेने गेलथिन। तहिया सं हम एसगरे एहिठाम ओकर फिरबाक प्रतीक्षा करैत छी से जं अहां उएह व्यक्ति छी त हमर भाइ कहां अछ?

राजकुमार कहलथिन—हे वनराज हम त ओ व्यक्ति नहि छी—तखन भ सकैछ जे ओ हमर भाइ रहल होथि, जिनका खोज मे हम बहराएल छी। देखबा-सुनबा मे हम दुनू भाइ एके रंग छी। बौंआ हेबाक कारणे नाने लेल ओ जेठ आ हम छोट छी।

बाघ बाजल—तखन हमर निवेदन जे हमरो अपना संग नेने चली। बेर बिपत्ति मे हम अहांक मदतिए करब।

राजकुमार कें मन मानि गेलनि आ ओकरा अपना संग ल लेलथिन। किछु दूर गेलाह पर एहिना एगो गाछक डारि सं बाझ झपट मारि आएल आ बाघे जकां पूर्ण वृतान्त कहि संग ल जेबाक आग्रह केलकनि। राजकुमार ओकरो संग ल विदा भेलाह।

एहिना घुमैत-फिरैत एक दिन राजकुमार ओही राजाक नगर मे पहुँचलाह जाइठाम हुनक भाइक विवाह भेल रहनि। नगरक काते मे धोबिनियाक घर रहैक। दूरे सं देखि धोबिनिया हिनका चीन्हि गेल—माने जेठ राजकुमारक रूप मे। आङन मे पटिया ओछा हिनका सं हाल-समाचार आ निपत्ता हेबाक मादे पुछय लगलनि। ओमहर ओ अपन बेटा कें राजा क ओहठाम पठा देलक—शुभ समाचार देबा लेल।

धोबिनियाक मुंहे देख मरबाक कथा आ राजाक बेटी सं विवाहक कथा तथा शिकार पर जेबाक कथा सभ जेना राजकुमार क लेल बुझौअलि होइन, मुदा एते त निश्चुकी भइए गेलनि जे हुनक भाइ एहि ठाम तक आयल छलथिन आ उएह राज कन्या सं विवाह केने रहथिन। परञ्च भाइ कें खोजबाक समस्या रहिए गेलनि। एही गुनधुन मे रहति ता राजाक सिपाही सभ धुमि गेल आ हिनका ल गेलनि। राजा-रानी कनेत-कनेत बताह सन भेल। ई कतबो कहथिन जे हम नहि छी, ओ हमर भाइ छल हेताह—केओ माननिहारे नहि। एहिना ओजन-भात भेल आ हिनका सुतबाक व्यवस्था घरे मे भेलनि। राजकुमारी अबिते कानि-कानि नाना उलहन उपराग देबय लगलथिन आ लाख बुझओलो पर नहि बुझलनि जे ई हुनक स्वामी नहि छनि। आकार-प्रकारक एहन सामन्जस्य दूनू भाइ मे रहनि जे हिनक बात पर ककरो विश्वास ने होइक। अन्ततः शरीर खराबक बहन्ना बना कते सप्त द क राजकुमारी के एक रातिक खातिर फराक सुतबाक आग्रह केलथिन जे वाध्य भ हुनका माने पड़लनि।

भोरे उठि राजकुमार शिकार पर जेबाक आज्ञा राजा सं मङलथिन। राजा कहलथिन जे एक खेप शिकार खेलाइ लेल गेलाह सेत एते दिनक बाद फिरला ओ फेर आइए शिकार मे केना जेताह। मुदा राजकुमार तते ने हठ केलथिन जे वाध्य भ राजा कें आज्ञा देमय पड़लनि। जाइत-जाइत राजा कहलथिन—सभदिस जइहथि मुदा दक्षिण दिस कुनू हालत मे नहि जाइक। संगहि किछु चतुर शिकारी कें संग ल जाथि। मुदा राजकुमार असगरे जेबाक बात कहलथिन आ घोड़ा हकलनि।

जंगल मे प्रवेश करिते ओ सोझे दक्षिण दिस घोड़ा दौड़लनि। ओ घोड़ा दौड़ने जाइथ मुदा जंगल जेना कुनू ओरे-छोड़ ने भेटनि। आखिर हुनका पियास लगलनि आ से तते जोर सं जे मन भेछन्त भ गेलनि। आ चारूभर जलकरक तलाश मे नजरि खिड़ौलनि त किछु दूर पर एगो पोखरि देखाइ पड़लनि। घोड़ा कें आर जोर सं हाँकि पोखरि पर पहुँचलाह आ भीड़ पर घोड़ा लगा घाट पर उतरिते बेर ओही कुमारि कन्या पर नजरि पड़लनि। जल पीबाक शर्त ओ युवती ओहिना हिनको कहि रखलनि आ इहो राखी होइत पाशा खेलाय लगलाह। तीन खेप युवती हारि गेल आ शर्तक अनुसार ई युवती कें पत्नी बना लेलथिन। युवती अपनहि हाथे हिनका पानी पियौलकनि। त युवती सं कहलथिन—हे रूपसी ओना त हम अहांक सम्बन्ध मे किछु नहि जनैत छी परञ्च जखन पत्नी बनाइए लेल तखन जनबाक प्रयोजनो नहि। चलू आब हमरा लोकनि एहिठाम सं चली। दुनू गोटे विदा भेलाह त युवतीक नजरि ओइ चारू पाथरक ढेरी पर अटकि गेलैक। राजकुमार लक्ष्य करैत कहलथिन किछु ताकि रहल छी की?

युवती बाजलि—हे पतिदेव अहां सं जाय की? किछु दिन पहिने अहीं सन एगो लोक एहिठाम आयल छल—जहिना अहां पियासे तबधल रही तहिना ओहो छल। अहींसन घोड़ा पर सवार आ ओकरो संग एगो बाघ आ एगो बाझ रहैक। जं सत्त पूछी त अहां कें देखिते हम पहिने त भ्रम मे पड़ि गेल रही। त सं कहैत छी जे बेचारा तीन खेप पाशा हारि गेल आ शर्तानुसार हम ओकरा लोकनि कें पाथर बना देलिऐक। ई जे देखैत छी से उएह चारू पाथर थिक।

एतबा सुनिते त राजकुमार सन्न रहि गेल। ओ मने मन विचारलक जे हो न हो ओ ओकरे जेठ भाइ छल होएतैक जकरा खोज मे ओ घर सं बहार भेल अइ आ ताकि क संग ल जेबाक वचन मा-बाबू कें देने छैक। राजकुमार कें एना चिन्तामग्न देखि युवती टोकलकैक—हठात् अहां जेना अहां कुनू चिन्ता मे डूबि गेल होइ। कि हम नहि जानि सकैत छी?

राजकुमार बाजल—जखन अहां हमर स्त्री छी त निश्चिते अहां कें सभ जनबाक अधिकार अइ आ हमरो कर्त्तव्य जे किछु नुकाबी नहि किन्तु अहां कें जनने कि समस्याक समाधान भ सकैछ?

युवती बाजलि—बिनु बुझने हम कहबे की करी तखन एतेबरि अवश्ये जे हमरा जे जानो देने अहांक समस्याक समाधान होएत त हम हंसैत-हंसैत द देब। एक नारीक लेल एहि सं पैघ गर्वक बात की होएतैक जे ओ अपन स्वामीक लेल अपन जान अर्पित क देलक।

राजकुमार बाजल—हे प्रिये जं अहांक कथा सत्य त एहि चारू पाथर कें अहां पुनः जीवित बना दियौक कारण हमरा पूरा विश्वास भ रहलए जे ई हमरे जेठ भाइ छथि।

युवती बाजलि—एहि छोट सन बात लेल अहां एते चिन्तित छलौं। हे लिअ हम एखन हिनका लोकनि कें जीवित क दैत छी।

एतबा कहि ओ पोखरि सं चुरुक मे पानी ल मंत्र पढ़ि पाथर पर छीटि देलकैक आ चारू जीवित भ गेल। दुनू भाइ सोझा-सोझी होइतहि चिन्हबो मे विलम्ब नहि भेलैक। एक दोसर कें भरि पांज क धेलनि एमहर पुन बाघ आ दूनू बाझ सेहो धड़ा धड़ी करय लागले।

जेठजन छोटजन सं गाम घर समाचारक संगहि एहिठाक तक केना पहुंचल से जिज्ञासा केलकैक आ ओहो संक्षेप मे सभ कहि सुनलकै। अन्त मे ओहो कहलकै जे केना ओ एइ नगर मे पयर दैते राजाक जमाय बनि गेल आ काल्हि हुनकोओ पर लोक नहि विश्वास केलकैक। आन त आन राजा-रानी धरि ओकरा अपन जमाय बुझल-थिन आ बबलोरी ओकरा अन्दर महल मे सुताओल गेलैक राजकन्याक संग——

अन्दर महल मे सुतबाक बात सुनिते जेठजनके सदेह भेलनि जे हो ने हो ई हमरा पत्नीक संग अनुचित व्यवहार केने होएत। ओ बिनु किछु पूछने तरुआरि खीचि छोटका कें दू टूक करैत ओकरा स्त्री, घोड़ा बाघ आ बाझ सभ कें काटि देलनि आ अपने घोड़ा पर सवार भय विदा भेलाह। ओ जखन राजमहल पहुंचलाह त सांझ पड़ि गेल छलैक। अबिते राजा, कहलथिन हम त फेर चिन्ता मे छलहुं जे सांझ पड़ल जाइत छइ आ अहां फिरलहुं नहि।

भोजन-भात भेलाक बाद राजकुमार अपन सुतबाक घर मे पहुंचलाह। पत्नी कने देरी सं एलथिन आ जाबत केवार बन्द कर-थिन तावत ई पाछा सं जा हुनका भरिपांज क ध लेलथिन। पत्नी व्यंग्य करैत कहल-थिन काल्हि राति कहैया केने छल। हमरा त होइत छल जे बौक भ गेलहुं—एको बेर हंओ हं त लोक कहे छइ कि ने। एते दिन पर फिरलौं आ अहां के हमर मुंहो देखबाक इच्छा नहि भेल जे ओना मुंह झांपि सूति रहलौ। अहां के भलहि इच्छा नहि भेल परञ्च हमरो त अहां अपन मुंह देखय दितौ। एहन कठोर केना बनि गेल रहिए।

राजकुमार पत्नी कें छोड़ि धम्म सं पलंग पर परि रहलाह। हुनका आंखि सं नोर बहय लगलनि आ ओ हिचुक हिचुक कानय लगलाह। हठात हुनकर परिवर्तन देखि पत्नी आर घबरा गेलथिन। ओ अनुनय करय लगलथिन जे आखिर हुनका सं कून एहन गलती भ गेलनि आ जं भेबे केलनि त स्वामी कें अधिकार छनि पत्नी कें डंड देबाक मुदा हुनक ई स्थिति ओ नहि देखि सकैत छथि।

राजकुमार बजलाह अहांक कुनू दोष नहि प्रिय दोष हमर कपारक थिक। आइ एक युगक बाद अपन सहोदर भेटल—ओ सहोदर जे हमरा लेल रने बने बौआइत एहिठाम आएल अपन जानक बाजी लगा कें हमर जान बंचओलक ... तकरा हम ...

पत्नी कें किछु बुझ्हे ने अबनि व्याकुलताक संग पुछलथिन—ई की सभ बाजि रहल छी अहां? कहां छथि अहांक भाइ ... की भेलनि हुनका ...

राजकुमार आर जोर सं कानय लगलाह—आब ओ एहि दुनिया मे नहि अछ, हम अपना हाथें ओकरा हत्या केने छी ... ओकर उपकारक बदला सरिपहुं हम केहन नीच छी जे अपना सहोदरो कें विश्वास नहि क सकलहुं।

पत्नी हुनक पाएर पकड़ैत कहलथिन—दोहाइ अहांक, हमरा किछु ने बुझाइ पड़ि रहल-ए। हमरा साफ-साफ कहू ने त हम बताहि भ जायब।

राजकुमार ओहिना हिचुकैत बजलाह—काल्हि हम नहि रही प्रिये ... काल्हि जे आयल छल से छल हमरा छोट भाइ हम त जाइ दिन शिकार पर गेलौं बाबूजी क मना केलाक पश्चातो दक्षिण दिस चल गेलौं आ तें आइ धरि पाथर बनल पोखरिक कात मे पड़ल छलौं। जखन छोट भाइ पहुंचल त हमरा पुनः जीवित कएलक मुदा ताइ आइ पर अविश्वास कए हम ओकर हत्या कएल ...

राजकुमार जखन सविस्तार सभ कथा पत्नी कें कहलथिन त पत्नी सेहो हुनक छोट भाइ होएबाक [illegible] केलथिन। पश्चात् उएह मन [illegible] कहलथिन—अहां [illegible] जे ने [illegible] मायावती [illegible] देने छथि जे कुनू बाद विपत्ति मे [illegible] केने ओ उपस्थित होएतीह। तखन चिन्ता कथिक? राति पार होमे छैक। घोड़ा तैयार करू—सूर्योदय सं पहिने हमरा लोकनि पोखरि पर पहुंचि जाइ।

राजकुमार धरफरा कें उठलाह। घोड़ा कसलनि आ संग लेलनि बाघ आ बाझ कें। राजकुमारी सेहो अपन घोड़ा कसलनि आ सभ सं नजरि बचा राजमहल सं बहार भ गेलाह। पोखरि पर पहुंचैत छथि त। पूब मे ललिमा द देने रहैक। [illegible] ओहिना राखल रहैक। घोड़ा सं उतरि राजकुमार [illegible] भेलाह आ प्रार्थना केलनि—हे मायावती आइ हम विपत्ति मे छी, अहां छोड़ि दोसर के उबारत। [illegible] आ अपन [illegible] राखू लाज।

[illegible] अद्भुत शब्द भेलैक आ साक्षात [illegible] तखन त गेलैक। राजकुमार [illegible] जे मायावती कहि रहल छथिन—कह हमरा की कहैत छ?

राजकुमार कर जोरि बाजल माँ, अहां त सभ जनिते छी तखन फेर पुछैत की छी। हमर भाइ, भाउजु ओकर घोड़ा, बाघ, बाझ सभ कें जीवन दान द दियौक। एखन एहि सं बेसी किछु ने चाही।

'एहन होहर इच्छा'—एतबा शब्दक संगहि दूर एगो भयंकर शब्द भेलैक आ मायावती अन्तर्ध्यान भ गेलीह। इमहर [illegible] गेलैक आ छोट राजकुमार ओकर पत्नी [illegible] करैत उठि बैसल। घोड़ा, बाघ आ बाझ सेहो उठि कें ठाढ़ भ गेलैक।

बटेकन छोटजन के भरि पांज पकड़ि कनैत बाजल—भाइ हमरा क्षमा क दे—हम जे तोरा पर विश्वास नहि कए महान पाप कएल से त क्षमा योग्य नहि किन्तु तों हमर सहोदर छे ...

छोटका बिहुंसैत बाजल भाइ भाइ अहं बताह भेलौंहें। गलती त लोक सं होइते छैक। देख ने हमही केना भरि राति भौजीक कोठली मे ... की भौजी हमरा माफ नहि करती?

राजकुमारी बिहुंसैत आ लजाइत सन कहलथिन भरि राति भौजीक कोठली मे नहि रहने एहन उद्वेग चित मे पराते ओही ताकए पड़ैत। भौजी सं त एकटा गीतो गेबाक लेहना रहिए गेलनि बाद मे ने पता चलैत। एखन विदा त होइ जाइ जाउ। कते दिन चढ़ले माँ-बाबू चिन्ता मे हेथिन।

सभ अपन-अपन घोड़ा कसलनि—दुनू दियादिनी एक घोड़ा पर बैसि विदा भेली। एमहर नगर मे शोर। भ गेलैक जे राजाक बेटी-जमाए राति विपत्ता भ गेलैक। परञ्च हिनका लोकनि कें पहुंचिते आ अपन बेटीक मुंहें सब बात सुनिते राजा उत्सवक तैयारी मे लागि गेलाह। राजकुमार गामपर पठा-ओल गेलैक। ओहो राजा बरियाती साजि एलाह आ दुनू बेटा-पुतोहू दू जं आनन्द मग्न भए अपन राज फिरला है।

प्रस्तुति—अग्रदूत

पुस्तक समीक्षा ?

विदेशी कविता क 'प्रतिध्वनि'

श्री रामलोचन ठाकुर मैथिली क तेजस्वी रचनाकार छथि। अग्रदूत, कुमारेश काश्यप आदि विभिन्न नाम सं विभिन्न विधा मे लिखि ओ मैथिली साहित्य क श्रीवृद्धि कऽ रहल छथि। हुनक कविता संग्रह 'इतिहासहंता' एवं हास्य व्यंग्य क संकलन 'बेताल कथा' हुनक रचनाधर्मिताक नीक जकां परिचय दैछ। 'प्रतिध्वनि' मे ओ १५ टा विदेशी वामपंथी कवि क छोट-छोट कविता क मैथिली काव्यानुवाद प्रस्तुत केने छथि।

उपासना क क्षेत्र मे सिद्धक लेल विहित दूटा मार्ग मे सं दक्षिण मार्ग दीर्घकालिक साधना ओ सात्त्विक मन क थिक संयमक अपेक्षा करैछ मुदा वाममार्ग अल्पकालिक साधना सं कार्य सिद्धि करबैत छैक। वाम मार्ग तामसिक वृत्तिक पोषक 'सुरस धारा' होइछ—कने को संतुलन बिगड़ला पर या तं जीवन सं हाथ धोमय पड़ैत छैक किंवा विक्षित अथवा छागर बनि कें जीवन बितबऽ पड़ैत छैक। राजनीतिक वाममार्ग मे साहित्यकार कें छागर बनि कें रहऽ पड़ैत छनि। साम्यवादी देश क आधुनिक साहित्य क इतिहास कें यदि तटस्थ भऽ कें पढ़ल जाय तं ई तथ्य स्पष्ट भऽ जाइछ जे वामपंथी व्यवस्था मे साहित्यकार मात्र प्रचार-यंत्र होइछ। ओकरा अपन मान्यता, अपन दृष्टि कोण आ दर्शन स्थिर करबा क कोनो अधिकार नहि छैक। सदिखन ओकरा राजनेता क मुँह ताकऽ पड़ैत छैक। स्वतंत्र चेतनाक अभाव मे वामपंथी रचनाकार अपना भीतर ओ काव्य-गुण विकसित नहिं कऽ पबैछ, जाहि सं रचना सार्वदेशिक आ सार्वकालिक बनैछ।

'प्रतिध्वनि' क कविता एकटा एहन निष्ठावान कार्यकर्ताक दृष्टिकोण सं संकलित कैल गेल अछि, जेकरा प्रत्येक कम्यूनिस्ट रचनाकार क रचणोदक तीर्थजले जकां पवित्र बुझाइत छैक। कविताक अनुवाद एक सीसीक गंगाजल दोसर सीसी मे ढारब जकां कठिन होइछ। यदि अनुवादक कविताक भाषा सं सुपरिचित नहिं होइछ, तखन तें ई काज एतेक कठिन भऽ जाइछ जे अनुवाद केर प्रामाणिकते संदिग्ध भऽ जाइछ। 'प्रतिध्वनि' क कविता सभ अनुवाद क अनुवाद थीक तें मूल कविता सं बहुत दूर चलि गेल अछि। प्लेटो क शब्द मे ई 'नकल क नकल' रहलाक कारण आंशिक सत्ये कें सुरक्षित राखि सकल अछि। एहि तरहक काव्यानुवाद मे मूल कविताक पचीसो प्रतिशत अंश नहिं रहि जाइछ तें मैथिली काव्यानुवाद पढ़ि कें पाठक कें मूल कविता क गुणवत्ताक कतेक परिचय भेटतनि, से कहब कठिन अछि। निस्संदेह श्रीठाकुर अपना दिस सं परिश्रम मे कोनो कोताही नहिं केने छथि, मुदा अनुवाद क जे अभिशाप छै, ताहि सं ओ विमुक्त कोना भ सकताह।

पुस्तक क भूमिका एकटा एहन अपढ़ व्यक्ति द्वारा लिखल गेल अछि, जेकरा ने तं अपना देश क इतिहास सं परिचय छै आ ने साहित्य सं। आदिकवि वाल्मीकि सन यथार्थवादी रचनाकार विश्वभरि मे केओ नहिं भेल अछि। तिनका प्रति भूमिका-लेखक क ई उक्ति जे 'ओहो अलौकिक सत्ता, फुसियाही मर्यादा क पाछां भासि गेहाल' ई प्रदर्शित करैत अछि जे भूमिका लेखक 'वाल्मीकि रामायण' कें देखनहुँ नहिं छथि। भूमिका लेखक क इहो कथन एकटा अर्धविक्षिप्त क अनर्गल प्रलापे बुझाइछ जे 'कविता राजदरबार मे नचैत देवदासी क संग सुर-ताल मिलबैत छल।' राजदरबार मे रहिकें कवि सर्वसाधारण लेल नहिं लिखि सकैत अछि, एहि भ्रमकें काटऽ लेल असकरे विद्यापतिये क नाम पर्याप्त अछि। हिन्दी साहित्य मे शुद्ध कविता क जे विकास रीतिकालीन वातावरण मे भेलै, से परवर्ती काल मे कहियो नहिं भेलै। बिहारी क एक एक दोहा कोनो प्रगतिशील कविक सम्पूर्ण रचनाक तुलना मे अधिक मूल्यवान आ जनप्रिय अछि। राज्यदरबार क प्रति ई जुगुप्सा कम्यूनिस्ट रचनाकार लोकनिक लेल कोनो अर्थ नहिं राखैत अछि, कारण कम्यूनिस्ट देश मे रचनाकार कें या तें राज्याश्रित भऽ कें अन्नदाताक निर्देशानुसार रचना करऽ पड़ैत छैक आ लेनिन क आदेश पर गोर्की सन प्रतिनिधि साहित्यकार कें अपना कथा संग्रह सं 'स्काइ ब्लू' आ 'अनरिकोवायटेऽ लव' सन् कथा कें बुर्जुआ लेखन मानि कें निकालि देमऽ पड़ैत छैक, अथवा कम्युनिस्ट यंत्रणा-शिविर क यथार्थ चित्रण कयला पर सोल्जेनित्सिन सन चेतनाशील आ निर्भीक रचनाकार कें देश त्याग करऽ पड़ैत छैक। तें राजदरबार क कवि क आलोचना करबा क मुँह कोनो कम्युनिस्ट लेखक कें नहि छै।

रहल मंदिर मे उपजल कविताक गप। ताहि संदर्भ मे एतबे निवेदन जे विद्यापति, सूर, तुलसी, कबीर, मीरा आदि क कविता विश्वक श्रेष्ठतम साहित्य मे गनल जइछ। विद्यापति, सूर आ तुलसी क कविताक समादर तथाकथित पूंजीवादी आ तथाकथित साम्यवादी दूनू देश मे भऽ रहल छै। रामलोचन जी कें यदि अपन अज्ञानतेक बदौलत प्रगतिशीलता बुझि पड़ैत छनि, तें वस्तुतः ओ प्रगतिशील लेखक छथि। हुनक ई कहब जे 'अमुक कवि राज्याश्रित वा देवाश्रित नहि, अपन वृत्ता पर आश्रित अइ' मात्र एकटा अनटोटल गप अछि। आफिस अदालत आ खान फारखाना मे काज करऽ वला व्यक्ति कोना 'स्वाश्रित' अछि से हुनके बुझल छनि। वर्तमान व्यवस्था मे यदि सरकार शोषक अछि तं आफिस अदालत ओकर शोषणक माध्यम। तखन आफिस मे काज केनिहार कोना अपना कें 'धवल चरित्र' कहि सकैछ, से स्पष्ट करबाक चाही छल।

भूमिका क तेसर पैराग्राफ कम्युनिस्ट चिन्तन क बमन मात्र थिक। ओहि मे कोनो एहन बात नहि अछि जे बामपंथी चिन्तनके कोनो नव अर्थ दैक। कविता ने तं वारांगना होइछ, आने जीवन संगिनी—ओ मात्र आत्म क अभिव्यक्त रूप थिक—ई बुझबा क लेल रामलोचन जी के गाल बजायब छोड़ि अध्ययन करऽ पड़तनि तखने हुनका इहो स्पष्ट हेतनि जे हिन्दी भाषा मैथिली क लेल सुरसा नहि थीकी भाषा बाग्देवताक भिन्न-भिन्न रूप-रंग कला थीक। तें कोनो भाषाक प्रति वैमनस्य नहि होयबाक चाही। हमरा संघर्ष मात्र ओही प्रवृति क विरुद्ध अछि जे दादी-नानी कें बेटी कहि कें अपन आधिपत्य स्थापित करऽ चाहैत अछि। मैथिली हिन्दी क लेल दादिये-नानियें जकां अछि। तेकरा हिन्दी क बेटी (बोली) कहब दुष्टता क सिवाय आर किछु नहि। हमारा लोकनि ओहि समुदायक विरोध करैत छी जे मैथिली कें हिन्दी क अंग कहिकें मैथिली क हित कें दंशित करबाक कुचेष्टा करैत अछि। हिन्दी भाषा सं हमरा लोकनि कें कोनो वैमनस्य नहि अछि, बल्कि राष्ट्रभाषा तथा तृतीय विश्व भाषाक रूप में ओकरा प्रति हमरा लोकनिक हृदय मे समुचित आदर क भाव अछि।

'प्रतिध्वनि' क पहिल दूटा कविता माओ त्से तुंग क अछि जेकर स्तर आजुक हिन्दी वाजपेयी क 'कैदी कविराय क कुंडलिया' सं अधिक उच्च नहि अछि। कविता क कथ्य प्रथम आ अंतिम पंक्ति सं बुझा जाइछ :

लाल फओज निर्भीक दीर्घपथ
यात्रा बहु बाधाक।
कय गेल पार लाल सेना
विजयक आनंद फराकी

एहि संग्रहक सभ सं बड़का दोष ई अछि जे सर्वसाधारण क दुःख कें बुझबाक दावा केनिहार रूपान्तरकार मैथिली क सामान्य पाठक क कण्ठ कें नहि बुझि सकलाह। नहि तें कविगण क संक्षिप्त परिचय आ 'लुन शुन' 'सिजर' 'उलवार्थ' 'कांगो' 'सुआन युवान' नानकिङ' आदि सन संदर्भपेक्षी शब्द क परिचय अवश्य दितथि। अनुवाद क अप्रामाणिकताक कारण कविता क शिल्प कथ्य आ गुणवत्ता पर विचार करब अन्याय होयत। तथापि एतबा तं कहले जा सकैछ जे 'प्रतिध्वनि' मे संकलित कविता सभ कोनो तेहन नहि अछि जेकरा विश्वस्तर पर छाँटि कें मैथिली पाठक क समक्ष राखल जाय। अधिकांश कविता क स्तर अपना देश मे मुहल्लाक स्तरपर चर्चित कविक रचनाक समतुल्य अछि। संक्षेप मे, एहि प्रकारक संकलन सं अंतरराष्ट्रीय वामपंथी लेखन क छवि धूमिल होइछ।

—बुद्धिनाथ मिश्र

□ ई वस्तुतः पुस्तकक समीक्षा थिक वा व्यक्तिक आलोचना अथवा अने किछु, तकर विचार पाठके लोकनि आ विशेष कें जिनका लोकनि कें चर्चित पोथी पढ़ल छनि, करथि सएह नीक। परञ्च एतेधरि सत्य जे एहि मे कागत टा जियान भेल अछि। तथापि एकरा छपबाक कारण पहिल त लेखक क पुरजी जे 'समीक्षा' क संग संलग्न छल (पाठक लोकनिक जानकारीक हेतु निचा छापल जाइछ) आ दोसर मैथिली मे एहनो साहित्यकार समालोचक होइते छथि जनिका कविता बुझबाक बात किकइय शुद्ध भ कें एक पांती लिखबाक अवगति नहि छनि—से त पाठक लोकनि जनताह। तें 'समीक्षा' 'अक्षरशः छापल गेलइ।

—सम्पादक ॥

□ बंधुवर जनार्दन जी,

आइ एक मास पर 'प्रतिध्वनि' क समीक्षा पूरा कऽ कें पठा रहल छी। हम जनैत छी जे ई अत्यधिक कटु भऽ गेल अछि, लेकिन इहो मानैत छी जे हम बेह लिखलहुँ अछि जे लिखबाक हार्दिक इच्छा भेल। तें निवेदन जे या तं एकरा अक्षरशः छापल या, यथावत् लौटा देल जाय। हमरा कोनो कष्ट नहि होयत कारण अपन आलोचना सुनबाक धैर्य सभ मे नहि होयत छैक।

अहींक
—बुद्धिनाथ

अजगुत अनटोटल

सोन चिड़या नामे विख्यात ई महान भारत, लुटेरा तैमुर लंग सं ल क महानायक सिकन्दर शाह धरिक आक्रमण कें देखि-भोगि चुकल अइ। परञ्च एखन मे थोड़ होइतहुँ, कते कष्टी आ ठीक-ठीक रहि देश कें सिकन्दर शाह चीन्हि सकलइ तते टोकर नहि। हुनक कहब—तते सेल्युकस! कि विचित्र ई देश! तकरे ज्वलंत प्रमाण थिक।

बात २० वर्ष पहिलुक थिक। भारतीय जनता दलक श्री भाइ महावीरक अनुसार १६३० मे अंग्रेज शासक द्वारा बनाओल गेल मैनुअल पंजाब प्रदेश मे एखनो लागू होइछ आ तकरा अनुसार 'गांधीटोपी' पर रोक लागल छैक। गाधीटोपी—जे कि स्वयं त गांधी जी कहियो ने पहिरलनि परञ्च नेता जी ने मात्र अपने पहिरलनि अपितु ओकर नाम गांधीटोपी राखि ओकरा तते सम्मान देखओलनि आ लोक प्रिय बनओलनि जे ओ पराधीन भारत मे स्वाधीनता संग्रामीक चेन्ह बनि गेल आ कांग्रेसदल मे त भरिसके केओ छल होएत जे बिनु 'टोपी' क हो। नेता जीक मुँह सं बहराएल 'जय हिन्द' आ गांधीजी कें 'बापू' क सम्बोधन जकां इहो 'टोपी' लोक प्रिय भेल आ स्वभावतः अंग्रेजक लेल आंखिक कांट आ तें एहिपर आइन बना रोक लगाओल गेल। टोपी पहिरनाहर 'देश द्रोही' मानल जाय शासकक नजरि मे आ अचरज कि जे अंग्रेजक उत्तराधिकारी वर्तमान शासक जं अपन पूर्वजक पदचिन्हक अनुसरण क रहल हो। आजुक शासक मनहि गांधीक माला जपओ परञ्च सत्य इहइ छैक जे देश-देशवासीक शोषणक विरुद्ध आवाज उठओनिहार प्रत्येक गांधी-दुलार एखनो 'देशद्रोही' करार देल जाइत आ अंग्रेजक सेन्ट्रल जेल, तिहाड़ जेल आ 'कालापानी' मे सड़ैत रहैत।

ओना सदनक मुँह [illegible] प्रयास करैत राज्य सभाक उपाध्यक्ष श्री श्यामलाल यादव जवाब मे कहलथिन जे गांधी टोपीक सन्दर्भ जे नियम मैनुअल मे छैक से लागू नहि कएल जाइत छैक। जं से सत्य त कि आई ३५ बर्ख मे सरकार के एते पलखति नहि भेलैक वा एहन उहि नहि भेलैक जे एहि घृणित 'नियम' के काटि सकैत आ स्वतंत्र भारतक अपन जेल मैनुअल बना सकैत? जेना कि उपाध्यक्ष बजलाहए—स्पष्ट अइ जे गांधी टोपीक संदर्भ जे नियम अइ सेटालागू नहि कएल जाइछ बांकी सभ पूर्ववते लागू होइछ। अर्थात अंग्रेज शासक नजरि मे जे 'देशद्रोही' छल आ जे कृयाकलाप देश द्रोहिताक अन्तर्गत अबैत छल वर्तमान स्वाधीनो भारतक शासक नजरि मे से पूर्ववते अइ। 'सत्ते सेल्युकश! कि विचित्त ई देश!'

सभा-समिति

विद्यापति कला परिषद, किरिबुरू, मेघाहातुबुरु क तत्वावधान में अप्रिल "८२" क अंतिम सप्ताह में विद्यापत्ति स्मृति पर्व धूम-धाम सं मनाओल गेल। कार्यक्रमक आरंभ कुमारी मुन्नी, कुमारी रीता, कुमारी, मधु, कुमारी माला तथा कुमारी बेबी क "जय-जय भैरवि मंगलाचरण सं भेल। मंगलाचरणक प्रस्तुतीकरण श्रीमतो इन्दु प्रसादक द्वारा भेल।

निम्नलिखित व्यक्ति विद्यापतिक चित्र पर श्रद्धापूर्वक माल्यार्पण कयलनि।

(१) सर्व श्री जी. डी. सिंह (महाप्रबन्धक किरीबुरु)

(२) एस. के. दास (चीफ सुप्रीन्टेन्डेन्ट, गुआ माइन्स)

(३) एस. सी. चौधरी (कार्यकारी महाप्रबन्धक मेघाहातुबुरु)

(४) जे. एल. भसीन (उपाध्यक्ष स्पोटर्स एण्ड रिक्रियेशन काउन्सिल मेघाहातुबुरु)

(५) यू. के. प्रसाद (अध्यक्ष विद्यापति कला परिषद)

एहि अवसर पर स्वागताध्यक्ष श्री सी. एस. सिंह उपमुख्य कार्मिक प्रबन्धक उपस्थित जन समुदायक स्वागत करैत बजलाह जे कवि कोकिल एक महान विभूति छलाह। विद्यापतिक अनुसरण हुनक काव्य प्रतिभाक कारणें सम्पूर्ण देश मे भेल। बंगाल, आसाम आ उड़िसा तं प्रत्यक्ष रूपें प्रभावित अछि। बंगाल तं ऐतेक प्रभावित अछि जे हाल धरि लोक विद्यापति कें बंगाली बुझैत रहल। तकर कारण ई छल जे विद्यापतिक गीत के प्रचारित करबा मे महाप्रभु चैतन्य सन व्यक्तिक योगदान छल।

ओ इहो बजलाह जे जखन हम विद्यापतिक शृंगारिक गीतक तुलना जयदेवक गीत सं करैत छी तऽ विद्यापतिक गीत बेसी चुस्त आ सभ्य बुझाइत अछि।

सभाक अध्यक्षता करैत श्री जी. डी. सिंह (महाप्रबन्धक किरिबुरु) बजलाह जे विद्यापति एक महान आत्मा छलाह आ हुनक व्यक्तित्व जाति आ सम्प्रदाय विहीन छल। विद्यापति अपन रचनात्मक प्रवृतिक कारणें कोनो खास क्षेत्रक नहि छलाह। विद्यापति पर सम्पूर्ण देशवासी कें समान रूप सं गर्व छनि। प्रसन्नताक बात जे विद्यापति कलापरिषद द्वारा आयोजित ई पर्व जाति आ सम्प्रदाय विहीन अछि।

आगत अतिथि के धन्यवाद दैत संस्थाक अध्यक्ष श्री यू. के प्रसाद (संयुक्त सलाहकारवित्त किरिबुरु) अपन उद्‌गार व्यक्त कयलनि जे स्मृति पर्वक आयोजन मे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपें जे व्यक्ति वा जे संस्था सहयोग देलनि, तिनका सभ कें ई संस्था धन्यवाद दैत अछि। एहि अवसर पर ओ आग्रह करैत बजलाह जे एहिना सहयोग बनल रहय।

एहि अवसर पर स्पोटर्स एण्ड रिक्रियेशन काउन्सिल मेघाहातबुरु के विशेष सहयोगक हेतु विशेष रूपें धन्यवाद देल गेल। संस्थाक दिस सं श्री. जी. आर. सिल, श्री. बी. आर. शाहा श्री ए. एम. भट्टाचार्या, श्री एस. के तरफदार, श्री जी. के. लाहिड़ी तथा श्रीमती डी. अप्पाराव के सराहनीय सहयोगक हेतु धन्यवाः देल गेल।

अंत मे सहयोगी कर्मठ व्यक्तिक जनिक परिश्रमे ई आयोजन सफल भेल चर्चा नहि करब कृतघ्नता होयत।

संस्थाक महा सचिव श्री एस० आर० पी० सिंह, महबूब आलम (उपाध्यक्ष जे० वी० दास (सदस्य) बी० सी० मंडल, सदस्य डा० सी० डी० मिश्र, सत्येन्द्र झा, सी० टेटे, अनिरुद्ध झा, उग्रेश झा, सहदेव सिंह, उग्रमोहन झा, आर० पाठक, दिगम्बर ठाकुर विन्देश्वर झा सहदेव झा, गंगाधर झा, के० बी० तिरिया, टी० चाकी आर० सी० दास, बच्चा सिंह, अशोक कुमार झा, एस० के० झा, बी० के० सिंह, यू० एन० झा, एच० के० चौधरी आदिक सहयोग आ परिश्रम कें नकारल नहि जा सकैत अछि।

—उपेन्द्र मोदी

बाबू भोला लाल दास स्मृति समारोह

विगत १ जून कें साहित्य-संस्कृति कला मंच कौशिकीक तत्वावधान मे एम० एल० एकेडमी लहेरिया सरायक परिसर मे मैथिली दधीचि बाबू भोला लाल दास जीक पुण्य स्मृति मे एक भव्य समारोहक आयोजन भेल। समारोहक प्रारम्भ भगवती बन्दना, गतिकार नवल द्वारा मिथिला-वर्णन आ श्री रमानन्द रेणुक स्वागत भाषण सं भेल। डा० व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म क सभापतित्व में सम्पन्न श्रद्धांजलि कार्यक्रमक उद्‌घाटन करैत श्री बाबू साहेब चौधरी मैथिलीक विकास मे बाबू भोला लाल दास जीक योगदानक चर्चा करैत मैथिलीक वर्तमान दु:स्थितिक दिस उपस्थित श्रोताक ध्यान आकर्षित करौलनि। मुख्य वक्ता डा० शम्भू नाथ चौधरी मिथिलाक सर्वांगीण विकासक लेल सम्पूर्ण मिथिलावासीक एकजुटता कें बाबू भोला लाल दास जीक प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि बतौलनि, मुख्य अतिथि दरभंगा जिला उद्‌योग केन्द्रक महाप्रबन्धक श्री रामेश्वर पाठकं मिथिलाक प्रतिं अपन अपार प्रेमक प्रदर्शन करैत मिथिलाक सांस्कृतिक महत्ताक गुणगान केलनि। बाबू भोला लाल दासजीक सुपुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्ण द्वारा श्रद्धांजलि अर्पणकं उपरान्त अपना अध्यक्षीय भाषण मे श्री मणिपद्‌म दासजीक व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर विस्तार सं चर्चा करैत सम्पूर्ण मिथिलाक जागरणक आह्वान केलनि।

श्रद्धांजलि कार्यक्रमक उपरान्त श्री मणिपद्‌मक अध्यक्षता मे सम्पन्न कवि सम्मेलन मे भाग लेनिहार प्रमुख कवि छला सर्व श्री प्रदीप मैथिली पुत्र, मिहिर शिवाकान्त पाठक गीतकार नवल, चन्द्रमणि, जीतेन्द्र सिंह, कामेश दीपक। एहि अवसर पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन सेहो छल। समारोहक समापन श्री सुरेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन सं भेल।

— सम्पादक रेणु

●

छाया-छवि

जेना कि ज्ञात भेल अइ मिथिला फिल्म्स, दरभंगा एवं बम्बइक बैनर मे 'भीजल आंचर' नामे मैथिली सिनेमा बनि रहल अइ जे अक्तूबर ८२ धरि तैयार भ जायत। एकर निर्माता छथि श्री पुरुषोत्तम बोहरा। स्व० शरचन्द्रक कथा पर बनि रहल एहि फिल्मक सम्वाद एवं गीत रचना केलनिहें प्रो० श्री सोमदेव। संगीत श्री गौरांग व्यास एवं श्री एस०एन० त्रिपाठीक छनि आ निर्देशन श्री मेहुल कुमार क। कलाकार लोकनि मे अरुणा इरानी, किरण कुमार, एस० एम० दूबे, कल्पना दिवान, देवयानी ठक्कर मास्टर विट्टू आदि छथि। गायक-गायिका छथि—महेन्द्र कपूर, अलका याज्ञी ओ चन्द्राणी मुखर्जी। फिल्म सम्पूर्ण रंगीन ३५ एम एम मे वनि रहलए।

मैथिली मे कतेको फिल्म बनबाक चर्च यदा-कदा हमरा लोकनि सुनैत आयल छी, किछु त आधा-छिदा आ किछु सम्पूर्ण बनि कें तैयारो भेल परञ्च दुर्भाग्यक बात जे दर्शक धरि आइधरि नहि पहुंचि सकल। 'कन्यादान' मैथिलीक नाम पर भनहि जते पाइ किएक ने पीटने हो, परञ्च ओ जे मैथिली फिल्म नहि छल से मानवा मे किनको दुविधा नहि होएतनि। 'ममता गावय गीत' क रिलीज हेवाक सोरहा सभ ठाम अबस्से भेल परञ्च रिलीज नहि भ सकल—पता ने कि कारण छैक। एहिना 'ललका पाग' क चर्च छल - परञ्च ओकरो कोनो निस्तुकी नहि ज्ञात होइत अइ। एहना स्थिति मे जे 'भीजल आंचर'क सम्वाद पर लोक विश्वास करत तकरे कून ठीक। परञ्च हमरा लोकनि कें जाइ सूत्र सं सम्वाद प्राप्त भेलए, भरोस अबस्से अइ जे ई दर्शक धरि पहुंचि उकत आ अविश्वासक स्थिति पर यवनिका पति करत।

मैथिली सिनेमाक लेल बड़ नीक 'स्कोप' छैक परञ्च जाधरि एक गोट रिलीज नहि होइछ ताधरि निर्माता लोकनि के विश्वासे केना हेतनि। तें जं ओ लोकनि एहि क्षेत्र मे पदार्पण करबा सं धखाइत छथि त अनुचित नहि, परञ्च ई धरि निर्विवाद जे एक गोट फिल्मक पश्चाते निर्माता लोकनिक 'लाइन' लागि जायत।

आजुक युग मे फिल्मक की महत्व छैक से कहवाक प्रयोजन नहि। आशा करैत छी जे 'भीजल आंचर' मैथिली फिल्म मे गतिरोधक स्थिति कें तोड़त आ मिथिलांचलक हेरायल-मुतिआयल प्रतिभा कें आलोक मे अएबाक अवसर भेटतैक।

—जयदेव लाभ

●

चिट्ठी-पुरजी

'देसिल बयना' खूब नीक बहार भऽ रहल अछि। खूब स्वस्थ। मिथिला-विभूति परिचयमाला बड़ आवश्यक छल छापब। क्रम बन्द नहि करू। कनेक चैन लैत छी तखन अपन रचना पठायब। —सोमदेव

जून अंकक सम्पादकीय बड़ विचारोत्तेजक—मुदा मैथिलीक साहित्यकार लोकनिक लेल नहि। 'गाम सं दूर मिथिलाक मजदूर' ओ 'मिथिला-विभूति' स्तम्भ कें अखन पाठक लोकनि जे महत्व देथि, मुदा एकर सही मूल्यांकन होएत भविष्य मे। ओना ई बात जं सत्य पूछी तऽ एहि पत्रिकेक सम्बन्ध मे कहल जा सकैत अछि। 'बालगीत' आइधरि जे प्रकाशित भेल अछि तकर जते प्रशंसा करी थोड़ होएत। की एहिना 'बालकथा' सेहो नहि देल जा सकैत अछि? चर्चित अंक मे 'लोचन कविराय'क अभाव बड़ खटकल। 'गिरगिट' आ 'लाल बुझक्करक चिट्ठी' पढ़ि लागल जेना राधा बाबू दुनू ठाम विराजमान होथि। ओना हम मानैत छी जे 'गिरगिट' कथाक आयाम निश्चिते पैघ छैक। 'भारत रत्न' इमरजेन्सी कें मोन पाड़ि देलक। बेसी नहि लिखि एतबे कही जे एकर सभ रचना महत्वपूर्ण अछि आ सभ रचनाकार प्रशंसनीय छथि। मुदा 'थेलीनाथ मिश्र प्रकरण' नहि रूचल—एकर कोनो उपयोगिता नहि। मैथिली मे एकटा कहावत छैक—जकरा लेल चोरी करी सेह कहय चोर—से तकरे परि अपनो लोकनिक होयत।

—विष्णुदेव झा

★

कह लोचन कविराय

लाठी जकर महिस तकरे छइ के नहि जानय
भनहि नाम गणतंत्रक ल बलगेंगे ठानय
ल बलगेंगे ठानय सरिपहुं आन ने नेता
लाठीक बलपर जोत कहाबय वोट विजेता
कह लोचन कविराय सत्य-शिव-सुन्दर लाठी
गण-भक्षक तंत्रक रक्षक गणतंत्रक लाठी

अरुणोदय प्रकाशन ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिन्टिर्स ३२बी, वृन्दावन बेशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक—श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्तिमोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसकोस

अङ्क—१-२ जनवरी फरबरी ८४ मूल्य—पचास पाइ

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

देसकोस सँ देसकोसधरि

देसकोस—ई एहन नाम थिक एक पत्रिकाक जकर सम्पादकीय लिखबाक लेल हम बैसल छी। एहिना एक दिन आर बैसल रही, आई सं लगभग अढ़ाइ बर्ख पहिने। ओहो पत्रिकाक नाम छलै देसकोस। मई, १९८१ मे प्रकाशित भेल छल। स्वभावतः ओइ दिनक बात मन पड़ि रहल ए। परञ्च से बात लिखबा सं पहिने हम कहि देब उचित बुझैत छी जे सम्पादक ने त हम ओइ देसकोसक रही आ ने अइ देसकोसक छी ओहू दिन हम नेपथ्य मे रही आ आइयो नेपथ्य मे छी। किन्तु, सम्पादनक भार तहियो हमरहि छल (जे तीन अंकधरि रहल) आ आइयो हमरहि अछि।

मई, १९८१ मे जे देसकोस प्रकाशित भेल छल तकर सम्पादकीय मे पत्रिकाक प्रयोजनक सन्दर्भ मे हम लिखने रही।

'....ई प्रायः सभ मानैत कहैत छथि जे मैथिली मे पत्र-पत्रिकाक प्रयोजन छैक। निश्चित हमरो लोकनि मानैत छी जे मैथिली मे एक नहि अनेको नीक पत्र-पत्रिकाक प्रयोजन छेक—जे अवहेलित मिथिलाक विभिन्न समस्या पर प्रकाश द सकै, तकर समाधानक सूत्र द सकै, जे जातीय चेतना आ एकताक शंख फूकि सकै, आ नवचेतनाक आलोक पसारि सकै, जे मैथिली जाति कें अपन गौरवशाली अतीतक स्मरण करा सकै आ अतीतक त्रिभुवन विख्यात मिथिला कें भविष्यो मे विश्व विख्यात बनेबाक कल्पनाक जन्म द सकै, जे पुनर्जागरणक संवाहक बने आ मैथिल जाति कें नव मिथिला निर्माणक प्रेरणा शक्ति प्रदान क सकै, आ तें देसकोसक प्रयोजन छैक।'

ई बात अहू पत्रिकाक सम्बन्ध हम कहि सकैत छी। अथवा एना कही जे एहि सभ विषय कें ध्यान मे राखिए क हमरा लोकनि देसकोस प्रकाशित करबा लेल बाध्य भेल छी।

पत्रिकाक दीर्घजीवन बहुत किछु पाठक पर निर्भर करैछ। अहि सन्दर्भ मे हम लिखने रही—'जहांधरि पाठकक प्रश्न अछि जे मैथिलो (मैथिली-भुल सं अपढ़-छल) पत्र पत्रिका कीनैत छथि आ पढ़ैत छथि। हुनका जं देश-विदेशक विभिन्न समाचार जे हिन्दी-अंग्रेजी पत्रिका मे भेटैत छैक, अपने भाषाक पत्रिका मे भेटि जाइन त निश्चिते इपसि क किनता आ पढ़ता। देसकोस एहि विश्वासक आधार पर बहार भ रहल अछि तथा पाठक लोकनि कें विश्वास दियबैत अछि जे अन्यान्य भाषाक नीक सं नीक पत्रिकाओ सं नीक पत्रकारिता मैथिली मे देबाक प्रयास करत।' नीक वा बेजायक निर्णय त पाठकक काज थिक परञ्च प्रयास हमरा लोकनि अवश्से केने रही। एहन कारण छल जे प्रवेशांक मे सम्पादकीयक अतिरिक्त-परिवर्तनक पक्षधर चीन, घोषणा बेजाय नहि, मैथिली आन्दोलनः के कतय, आरक्षण, देसकोस विशेष मे गोदावरी देवीक संग साक्षात्कार, थियापुता स्तम्भ लाल बुझक्कड़क चिट्ठीक अतिरिक्त पोथी परिचय, अभिनन्दन सभ हमरा अपनहि लिखय पड़ल छल। एहन कारण छलैक जे लेखकक नाम-कथा / कविता छोड़ि—नहि देल गेल छलैक। जे हो, एहि देसकोसक सन्दर्भ मे से आश्वासन हमरा लोकनि नहि द सके छी, कारण देश-विदेशक विभिन्न समाचारक निमित्त पत्रिकाक जे कलेवर हेबाक चाही आ ताहि लेल जे अर्थक प्रयोजन छैक से हमरा लोकनिक पास नहि अछि। ओनहुना हमर पर्याप्त अर्थ पछिलुके देसकोस मे व्यय भ चुकल अछि। तथापि जाइ प्रयोजन कें ध्यान मे राखि ई पत्रिका बहार भ रहल ए, तकर पूर्तिक प्रयास अवश्से करत। सोझ शब्द मे कही त जेना 'देसिलवयना' अक्तूबर १९८१ सं अक्तूबर १९८२ धरि बहराएल ओही रूप-गुणक संग ई बहार होएत। असल मे देसिलवयना क नव नाम थिक 'देसकोस' जे पंजीकरणक कारणे परिवर्तित भ गेल ए।

आब जखन देसिलवयनाक चर्च भइए गेल त भरिसक इहो कहिये देब उचित जे साहित्य विशेषांक (अक्तूबर १९८२) क बाद ओ किएक बन्न भ गेल। एकर प्रधान कारण भेल रचनाक अभाव, लेखक लोकनिक असहयोग। स्वभावतः अ स श धरि अपनहि लिखय पड़ैत छल। कहियो-काल एक आधटा बाहर सं भेंटि गेल त भेंटि गेल। ओना भाइ धनचक्र, उपेन्द्र दोषी आ जीवकान्तक सहयोग कें बिसरल नहि जा सकैछ। ओना जखन फेर बहार करय जा रहल छी त ई आशा निश्चिते अछि जे लेखक लोकनि सहयोग करता। पाठक लोकनि आ विशेष कें देसिल बयना क ग्राहक। पाठक लोकनिक सहयोग-सद्भाव पहिनहि जकां प्राप्त होएत से विश्वास अछि आ सएह विश्वास हमरा लोकनिक पाथेय थिक।

जय मैथिली
—रामलोचन ठाकुर

देश

शिक्षाक माध्यम आ मैथिली

अपन मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक अधिकार भारतीय संविधानक अनुसार प्रत्येक नागरिकक मौलिक अधिकार छैक। ओतबे नहि संविधान मे आर स्पष्ट रूपें कहल गेल छेक जे सरकार एहन कोनो आइन नहि बना सकैछ जाहि सं एहि अधिकारपर आघात पहुँचै। एहि लेल संविधानक सातम संशोधन द्वारा राष्ट्रपति कें विशेषाधिकार देल गेलैक जे जं सरकार एहि तरहक कोनो प्रयास करय त ओ ताइपर रोक लगावथि। परञ्च एतबा होइतहुँ तथाकथित स्वाधीनताक लगभग छैंतीस बर्खक बादो जं मिथिलांचल मे नेना भुटका कें अपन मातृभाषाक माध्यम शिक्षा नहि देल जाइत छेक आ बलजोड़ी कोठाक भाषाक काढ़ा पिआओल जाइत छैक त तकरा की कहल जाय। असल मे संविधान थिक सरकारक रखेल जकरा ओ जखन जेना चाहए उपयोग क सकैए, व्याख्या क सकैए। परञ्च सभ दोष सरकारेक नहि छेक। हमरा लोकनि सभ सं बेसी जिम्मेदार छी अपन भाषा-संस्कृतिक अधोगतिक लेल। शोषक-शासक सदा सं जनताक भाषा संस्कृतिक विरोधी रहलए। ओ जनताक बौद्धिक रीढ़ तोड़ि अपन पछलगुआ बनेबाक प्रयास करैे करत आ तें ओकर एगो फराकें भाषा होइत छैक। ई भाषा कहियो संस्कृत छल, कहियो उर्दू-फारसी छल। कहियों अंग्रेजी छल, आ आइ कोठाक भाषा हिन्दी अइ। सरकारी भाषा हिन्दीक साम्राज्यवादी आकांक्षा के देखिय-परखि कें भारतक अन्यान्य जाति सभ चेतल आ तकरे परिणाम भेल १९५६क राज्यक पुनर्गठन - भाषाधार प्रान्तक निर्माण। हम मैथिल जाति एहिठाम चुकि गेलहुँ जे महान ऐतिहासिक भूल छल आ तकरे फल भोगि रहल छी।

परञ्च भूल कि हमरा लोकनि एकखेर केने छी। एखनो जखन-तखन माङ कएल जाइए जे मिथिलांचल मे शिक्षाक माध्यम मैथिली हो अथवा मैथिली भाषी नेना के मैथिलीक माध्यमे शिक्षा देल जाय। ई माङ केहन अव्यवहारिक थिक से विचारबाक पद्धति माङ केनिहार लोकनिकें भरिसक नहि छनि अथवा प्रतिक्रियाशील तत्व जे ऊपरे-ऊपर त मैथिली भक्तक स्वांग रचैए परञ्च वस्तुतः ओ मैथिलीक विनास चाहैये तकरे ई माङ छेक। कहबाक प्रयोजन नहि जे वर्तमान मे ई तत्व बेसी सक्रिय अइ।

आब कने एहि माङक व्यवहारिकता पर विचार करू। मानि लेल जे सरकार एहि माङ कें मानि लेल। एहना अवस्था मे एके वर्गक छात्र जे मैथिली माध्यम स पढ़त तकरा लेल अलग शिक्षक चाही, हिन्दी उर्दू, बंगला आदि भाषाक माध्यमे पढ़निहारक लेल अलग-अलग शिक्षक चाही। एहिठाम ई कहय नहि पड़त जे सरकारी रेकर्डक अनुसार मिथिलांचल मे ई सभ भाषाक पढ़निहार रहैए।

दोसर समस्या थिक पोथीक। बिहार मे स्कूली पोथी बिहार टेक्स्ट बूक कार्पोरेशन छपैए जे सरकारी संस्था थिक आ तें हिन्दीक पक्षधर या मैथिलीक विरोधी थिक। स्वाभावतः जँ हिन्दी पोथी सत्रक प्रारम्भ मे बाजार मे आबि जाइत छैक जेना एहू खेप आबि गेल होएत, त मैथिली पोथी तकर ६-७ मास बाद मे पठाओल जाइत छेक। विचारणीय थिक जे जखन बर्खदिन मे आइकालि कोर्स समाप्त नहि भ पबैत छैक तखन ५, ६ मास मे केना होइतेक आ एते दिन छात्र केना प्रतीक्षा करत? एहि संदर्भ किछु संस्था सभ अभिभावक आ शिक्षक लोकनि सं अपील करैत छथि जे बच्चा लोकनि के मैथिलीक माध्यमे शिक्षा दियाबथि। देखि—सेहो कि बकवास नहि थिक? जे अभिभावक एखनो स्कूल बिदा भेल छात्र के पहिने हरवाहक पनपिआइ द एबाक वा महिस के नहा अनवा लेल कहैछ तकरा सं कतेक आशा कएल जा सकैछ? दोसर एतेदिनुका विजातीय भाषा संस्कृतिक प्रभाव मे जे अपन भाषा चेतना मरि सेरायल छैक सेहो कि ककरो सं नुकाएल अइ। जहांधरि शिक्षकक बात अइ—दोसर विषय हुनको संग लागू होइत अछि। दोसर बात जे मिथिलांचल मे शिक्षावृत्ति ओहने व्यक्ति चयन करैत छथि जिनका आन चाकरी नहि भेटैत छनि अथवा खेतीबारी आ अन्यान्य पारिवारिक झमेला बेसी रहैत छनि आ एहि चाकरी मे गामक लगपास रहिओ अनायासे सभ काज सम्हारि लैत छथि। कोल्हुआ बड़द सन एहि शिक्षक समुदायकें हिन्दीए लिख पर घुमैत सहज बुझि पड़ैत छनि आ मैथिलीक नव लिख कष्टकर। तें अचरजक बात नहि जे मैथिलीक चर्च सुनितै अधिकांश शिक्षक लोकनि अपन नाक मुनि लैत छथि— संकीर्णताक गन्ध ने लागि जाइन। मिथिलाक शिक्षक बंगालक शिक्षक नहि थिक जे भाषा लेल हड़ताल करत जुलूस बाहर करत आ अनशन करत। ई बात हमरा लोकनि कें मन राखेक चाहि।

तेसर बात थिक पोथीक दाम। एके विषयक हिन्दी पोथिक दाम जं एकटका रहैत छैक त मैथिलीक चारि टाका। इहो चालि मैथिली विरोधी सरकारी संस्थाक थिक। मिथिलाक लोक जकर बौद्धिकें नहि आर्थिको रीढ़ टूटि चुकल छेक से किन्हु तीन टका बेसी द क अपन भाषा प्रेम नहि देखाओत। एहिठाम ईहो बात लिखब भरिसक आवश्यकें जे जाइठाम पोथी विक्रेता कें हिन्दी, उर्दू पोथिक निमित्त मात्रा एक सए टाका जमा देब पड़ैत छनि ताहीठाम मैथिली पोथीक निमित्त पाँच सए टाका।

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

मिथिला विभूति

याज्ञवल्क्य

प्राचीन ग्रंथसभ मे जाहि मुनिक चर्च सर्वाधिक अइ से आन केओ नहि मिथिलाक सन्तान योगीश्वर याज्ञवल्क्य छथि। अवधी भाषाक महाकवि गोस्वामी तुलसीदास अपन रामचरित मानस मे सेहो हिनक चर्च कएने छथि—याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी, भारद्वाज रहहु पदटेकी।'

ई जे केहन पैघ ब्रह्मज्ञानी छलाह ताहि सम्बन्ध मे वृहदारण्य कोपनिषद् मे कहल गेलए जे एक बेर वैदेह जनक अश्वमेध यज्ञ कएलनि जाइ मे विभिन्न देशक ब्राह्मण सभ इकट्ठा भेलाह। हिनका लोकनि मे विशिष्ट ब्रह्मज्ञानी के छथि से जनबाक निमित्त ओ एक हजार गाय बन्हवा देलथिन आ घोषणा करवा देलथिन जे जे विशिष्ट ब्रह्मज्ञानी होथि से सभ गाय ल जाथु। परदेशी कोनो पंडित के जखन साहस नहि भेलनि तखन याज्ञवल्क्य अपन शिष्य सामश्रवा के गाय सभ हांकि ल जेबाक आज्ञा देलथिन। गाय सभ हंकिते परदेशी विद्वान लोकनि तमसा गेलाह आ शुरु भेल शास्त्रार्थ। विजयी भेलाह इएह मिथिलाक सन्तान योगीश्वर याज्ञवल्क्य आ पराजित प्रदेशी पंडित अपना सन मुँह ल आपस भेलाह। ताहि दिन सं ओइ राजवंशक ई कुलगुरु भेलाह। कहबाक प्रयोजन नहि जे ओइ वंशक राजा लोकनि जे ओहन ब्रह्मज्ञानी होइत गेलाह से हिनकहि प्रसादे।

याज्ञवल्क्य देवरातक पुत्र छलाह। हिनक समयक सम्बन्ध मे एखनहुँ विद्वान लोकनि मे मतान्तर अछि तथापि अधिकांश विद्वानक मतें ई ३०० ई०क पूर्वहि भेल छलाह।

हिनका सम्बन्ध मे जे बात सभसं बेसी फरिछाएल अइ से ई जे ई मिथिलाक छलाह—मैथिल छलाह। एहिठाम ई लिखब भरिसक अनर्गल नहि होएत जे मैथिल जातीक उदासीनताक कारणें अनेको विभूति एखनहुँ हेरायल छथि या आन देशक लोक हुनका अपनेवाक निर्मित प्राणप्रण चेष्टा क रहलए। कविपति विद्यापति पर हेमनिधरि बंगाली लोकनि दावी करैत छलाह आ गोवीन्द दास के त अखनहुँ अपनओनहि छथि। कालिदास के उज्जैनक कहल जाइछ। उदयनाचार्य कें बंगाली कहल जाइत छल। किछुए दिन पहिने एगो निबन्ध पढ़ैत रही जाइ मे कुमारिल भट्ट कें तमिल लिखल गेलए। परञ्च याज्ञवल्क्य संग एहि तरहक विवाद नहि भेल तकर प्रधान कारण जे संहिता मे स्पष्ट लिखल अइ—'मिथिलास्थः स योगीन्द्रः'। मिथिला तत्व विमर्शक अनुसार अधुना नेपाल मे धनुषाजग कुसुमा ग्राम मे याज्ञवल्क्य मुनिक आश्रम अइ।

कहल जाइछ जे याज्ञवल्क्य वैशम्पायन मुनिक शिष्य छलाह परञ्च गुरु सं खटपट भ जेबाक कारणें हुनका सं पढ़ल समस्त विद्या कें ओ त्यागि देल। एही सं प्रमाणित होइछ जे मिथिलाक सन्तान केहन आत्माभिमानी होइत छलाह। तकर बाद ओ सूर्यक उपासना कए शुक्लयजुर्वेद प्राप्त कएलनि आ पश्चात याज्ञवल्क्यस्मृति, योगी याज्ञवल्क्य, योगशास्त्र आदि विभिन्न ग्रंथक रचना कएलन्हि।

भारतक प्राचीनतम स्मृतिकार मे हिनक नाम आदरक संग लेल जाइछ। मनुक अतिरिक्त एहन सामाजिक दार्शनिक दोसर नहि भ सकलाह। इएह कारण 'थिक सर्वाधिक टीका हिनकहि ग्रंथपर लेखल गेल जाइ मे मिताक्षरा बालक्रीड़ा आ दीपकालिका विशेष प्रसिद्ध अइ। एहिठाम इहो उल्लेख केनाई भरिसक आवश्यक जे मनुक अपेक्षा याज्ञवल्क्य बेसी प्रगतिशील आ व्यवहारिक आ स्पष्ट छथि। परवर्तीकाल मे शंकराचार्य जाहि अद्वैतवादक प्रचार कएलथि यद्यपि तकर आधार बादरायण व्यास कृत वेदान्त दर्शन के कहल जाइछ, किन्तु वस्तुतः तकर प्रवर्तक याज्ञवल्क्य छथि।

याज्ञवल्क्य स्मृति जे हेतु सामाजिक दर्शन थिक आ ताइ सामाजक आधार थिक मनुक्ख तें एहि मे मनुक्खक जन्म (गर्भाधान) सं मृत्यु पर्यन्तक काज कला पर्के निरूपित कएल गेलए। ओतबे नहि, मुइलका बादो तकरा निमित्त कएल जाइत श्राद्ध एकोदिष्ट पार्वनादि विषयपर सेहो विस्तार पूर्वक विचार कएल गेलए आ पथनिर्देश कएल गेलए। आइयो मिथिला देश मे प्रचलित आचार व्यवहारक आधार वस्तुतः हिनकहि ग्रन्थ थिक।

एहि ग्रंथ मे आचार व्यवहार प्रायश्चित्त तीनू विषयपर फराक फराक विस्तार पूर्वक स्पष्ट विचार राखल गेलए। समाजक विभिन्न वर्णक लोकक हेतु उचित अनुचित काज पर प्रकाश देल गेलए जे एहि सं पहिने वा पश्चातो भरिसके कोनो विद्वान क सकल छथि। पुरुष स्त्रीक वैवाहिक योग्यता, एक दोसरक प्रति कर्तव्य, पिता पुत्रक सम्बन्ध तथा एक दोसरक प्रति कर्तव्य, राजा प्रजाक सम्बन्ध ओ कर्तव्य आदि सभ विषय विवेचन भेलए। राजा स्वैराचारी नहि होथि तें तकरा लेल उचित योग्यता तथा राजधर्म निरूपति भेलए। मनुस्मृतिक अनुसार जाहि ब्राह्मण कें सर्वोपरि मानि अपराध कएलहु सन्ता दण्डक भागी नहि करैल गेल छल तथा शूद्रक सन्दर्भ मे कठोर दंडक विधान अइ—याज्ञवल्क्यस्मृति ठीक तकर विपरीत विचार रखैछ। एकरा अनुसार आइनक नजरि मे समाजक सभ अंश समान अइ केओ पैघ वा छोट नहि आने केओ एकरा परीधि सं बाहरे छथि। तें वर्णक आधार पर केस कें प्राथमिकता देनाइ तथा दंड मे पार्थक्यक ई खण्डन करैत छथि। कोनो अपराधक लेल दंडादेश वा फैसला सुनेबा सं पहिने अपराधक विवरण अभियुक्तक बयान अभियोगक प्रमाण आदि के आवश्यक शर्तक रूप मे निरूपति कएल गेलए। आइनक समक्ष अवहेलित महिला वर्ग कें पुरुषक समान दर्जा सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य स्मृति द्वारा देल गेलए।

जेना कि पहिने कहि आयल छी, याज्ञवाल्क्य स्मृतिक टीका सभ मे सर्वाधिक चर्चित अइ एगारहम शताब्दीक मिताक्षरा हिन्दू आइन (Hindu Law) क रूप मे सभसं प्रामाणिक इएह ग्रंथ थिक जकर मान्यता बंगाल आ आसाम छोड़ि समस्त भारतीय न्यायालय मे छैक। बंगाल आ असम मे जीमूतवाहनक 'दयाभाग' स्वीकृत अइ। एही आइनक अनुसार सर्वप्रथम पैत्रिक सम्पत्ति मे विधवा स्त्रील हिस्सा स्वीकृत भेलइ। ओतबे नहि एहि आइनक अनुसार मुइनिहारक कोनो बेटी कुमारि होइक तकर विवाहादिक खर्च लेल सम्पत्ति फराक क देबाक सेहो विधान छैक आ बंचल सम्पत्तिएक विभाजन बेटा लोकनिक बीच होएत।

दान विषयक चर्चाक क्रम मे याज्ञवल्क्य स्मृति सभसं पैघ दानक रूप मे ज्ञानदान कें निरूपति कएने अइ।

विद्वान लोकनिक मते याज्ञवल्क्यस्मृति महत्ता कें देखैत गुप्तकाल मे—जकरा कि साहित्य-कला विकासक स्वर्णयुग कहल जाइछ राजकीय मान्यता प्राप्त छलैक आ एही ग्रंथक आधारपर समस्त राजकाज चलैत छल जेना कि मौर्यकालीन शासनक आधार कौटिल्यक अर्थशास्त्र छल।

लेखा-जोखा (१)

हजूर माय-बाप !

जे कहब सत्त-सत्त कहब, सत्त छोड़ि किछु नहि कहब। कलमक सप्पत खा क कहै छी! ओना ई बात दिगर भेल जे हमर सत्त मात्र हमरेटा हो आ अहां के ओइ स कोनोटा सरोकार नहि हो। असल मे सत्त छइ की तकरो त आइधरि निस्तुकी नहिञे भ सकल-ए। जे आँखि सं देखै छी जे सत्त थिक आकि जे कान सं सुनै छी से सत्त थिक? जे अनुभव करै छी से सत्त थिक आकि दिमाग जकरा उचित बुझैए से? तें हजूर, सत्त की छइ से हमहूँ नहि जनै छी। एतबेटा जनै छी जे जे आंखि सं देखल, कान सं सुनल आ हृदय सं अनुभव कएल—सएह कहब। रहल गप्प दिमागक त से हजूर, फैट नामक वस्तुक एहि खोपड़ी मे नितान्त अभाव छइ। तें एहि अभाव के अनठबैत बंदाक गलती के अपन कंठ सं उतारि ली वा माथक उपर सं ससरि जाए दिऐक—बंदा सदा अहांक आभारी रहत।

पाठकक इजलास मे कोनो लेखकक हाजिर भेनाइ तरूआरिक धारपर चलब सन छइ, सीताक अग्नि परीक्षा सन आ विशेष क ओकरा लेल जे कविता लिखैत हो। आर अपने त जनिते छी जे कवि सं बेकार एहि देश मे गदहो के ने बुझल जाइ छइ। हजूर, गदहा तैयो काजक होइए जे घर सं घाट आ घाट सं घर धरि धोबीक कपड़ा ढोइए, किन्तु ओइ कवि कें की कहल जाइ जे ने त घरक अइ ने घाटक। ओना एइ देश मे किछु लोक अवस्से छथि जे यदाकदा कहियो कें दू आखुल घास ओगारि दैत छथि। परञ्च एहन लोक आ एहन कवि छथिहे कतेक?

किछु कवि कें हास्य व्यंग्य अथवा सस्वर पाठ करैक बदौलत कहियोकाल दू-चारि केञ्चा भेटि जाइत छनि, अथवा भल होइक फिलिमवाला सभकें जे कोनो कविक तुकबन्दीपर वाह वाह क दैत छइ किन्तु ताहूठाम कविक कपारे काज करैछ वा गोटी सुतारैवला बात कहि सकै छी। ने त आँखिक सोझे मे त निराला, मुक्तिबोध आ कतेक ने नामी-गिरामी कवि या त बताह भ गेलाह या बिनु औषध-बारीक चलि देलनि। ई बात फराक थिक जे मुइलाक बाद हुनको लोकनिक लेल एकाधटा शोक सभा भ जाइए।

हजूर, हम हुनकै लोकनिक खानदानक एगो कवि छी। कतौ गोटी नहि सुतरल आ ने कपारेक जोरगर छी—तें केओ घासो नहि ओगारलक। पहिने एहि बातक कचोटो हुअए जे केओ किए ने पुछैए? परंच जेना जेना समय बितैत गेलै, बुद्धि ठेकान लगैत गेल। माने हजूर हमरा त कोनो ठर ठेकान नहि भेटल मुदा बुद्धिधरि ठेकान लागि गेल। भेलै एना कि शुरू-शुरू मे जखन कि हम नवे एहि शहर मे आएल रही, हमरा मन मे कविताक समुद्र उमड़ि पड़ल छल आ हम ओइ मे डुब्बी-मारि मोती बहार क क लोक कें देखबितिऐक आ बदला मे वाह-वाहीक इनाम पबितहुँ। ओना हम वाह-वाही चाहैत नहि रहि। चाहैत रही जे जाइ समाजक हेतु हम कविता लिखै छी, हमर संगी सभ सेहो ओइ मे भाग लिअए। परंच भेल कि हजूर, थोड़बे दिन मे हमरा सभक नेताक पता लागि गेल। ओकरा सभकै कविता स कम अपना नाम सं बेसी सिनेह छलैक। ओ सभ कोनो मूल्यपर अपन नाम छपओनाइ आ प्रचारित कैनाइ मे अभिरूचि रखैत छल। एक दिस त ओ सभ लोकक दुख दर्द ल क संघर्षक बात करै छल त दोसर दिस ओकरा लोकनिक सभ समय सुविधा बटोरबा मे बीति जाइत छलै।

हजूर, हम बेसी पढ़ल-लिखल नहि छी। किन्तु नेना मे हम जते पैघ लोक कें पढ़ने छी ताइ सं एत्ते अवस्से बुझलहुँ जे बिनु निष्ठाक जिनगी मे किछु पओनाइ असंभव। परंच जेना-जेना नमहर होइत गेलहुँ—देखलहुँ कि जे केओ किछु हासिल केलनिहें ताइ मे हुनका लोकनिक तोड़-जोड़, गोटी सुतारनाइ बेसी छलनि।

हजूर, हम मानैं छी जे आजुग युग आदर्शक युग नहि थिक। हम इहो मानै छी जे सत्त, ईमानदारी आ मानवीय मूल्य भगवानेसन अगोचर छइ। आजुक युगक संग ओकर कोनोटा सम्बन्ध सरोकार नहि। हमरा इहो बुझल अइ जे लोक उगैत सूर्य के नमस्कार करैए। जे चिन्हार भ जाइए। जकरा कुर्सी भेटि जाइ छइ, जकरा कोनो प्रमाण-पत्र वा पुरस्कार भेटि जाइ छइ—तकरे सभठाम मान्यता भेटैत छैक। किन्तु इहो कि एहिठाम सभ संयोग प्रधान छइ हजूर, चान्सक बात छइ सभ।

अहां सोचैत होयब हजूर जे कि हमरा कतहु चान्स नहि भेटल—तें हम एना कहि रहल छी। हं हजूर, एकदम सत्त छइ जे हमरा कतहु कोनो चान्स नहि भेटल आ भरिसक भेटबो नहि करत। किन्तु हजूर, एक बात पुछू' अपने जवाब देब? की एही लेल हम अपन बाट छोड़ि दी जे सभ भोतिया गेल अइ?

—मुजतबा अली

लाल बुझक्करक चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक जी महोदय !

नमस्कार सह जय मैथिली ।

आशा हाल सुरति की लिखू ? विरहिन जन कें सदा वसन्त—तकरे परि छनि लाल बुझक्कर कें । असल मे जं पुछी त लाल बुझक्कर विदेह भूमिक सुच्चा सन्तान छथि ने, तें तरवा सं टिकासनधरि विदेह छथि । केओ गारि पढ़नु वा आशीर्वाद देउन, वा दू चाट लगाइए देउन—हुनका लेखे धन सन ।

हं, अहाँ लिखै छी जे 'देसिल बयना' क डिक्लरेशन नहि भेटि 'देसकोस'क भेटल, तें ओही नाम सं पत्रिका बहार करय पड़त । एहि मे चिन्ताक कोनो कारण त हमरा नहि बुझि पड़ैए । देसिल बयना हो वा देसकोस—बात एकै भेल । जखने देसकोस अइ त देसिल बयना रहबेटा करत—से एक जगन्नाथ मिश्र के कहए हजारो जगन्नाथ मिश्र ओकरा नहि मेटा सकैत छथि । अहाँ कने ज्ञानभाक जोग द क विचारू आ अपन नाक दाबि स्मरण करू जे आइ सं छ सए वर्ख पहिनहि बाबा विद्यापति की कहि गेल छथि—बालचन्द्र विज्जावइ भाषा

दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ

से दुर्जन सभ जते किएक ने नाङहि पटपटाबओ—बालचन्द्रमा सन हमर ई भाषा चारिकोटि मैथिली भाषीक हृदय रूपी निर्मल आकाशपर आर द्विगुन तेज सं चमचमाइत रहत-जाधरि ई पिरथी रहतैक । तें अहाँ चिन्तामुक्त भ क कान मे गणेश छाप खाँटी सरिसोक तेल द सूति सकैत छी ।

आब अगिला विषय—राष्ट्रपर संकटक सम्बन्ध में । सम्पादक जी, श्रीमती गांधी जखन किछु बजत छथि त तकर ओ अर्थ नहि होइत छैक जे हम—अहाँ बुझैत छी । तें ओ जखन कहैत छथि जे राष्ट्रपर बहरिया आक्रमणक संभावना छैक आ तकर समर्थन करैत महान मार्क्सवादी श्रीमान नम्बूदरीपाद कहैत छथि जे मुहथरि लग युद्धक नगाड़ा बाजि रहल-ए त तकर अर्थ ई कथमपि नहि जे हम सभ गोटे लाठी भाला ल शत्रुक सामना करै लेल बाटपर बहरा जाइ । एकर सोझ अर्थ होइ छइ जे अहाँक आङन मे जे-पथार पसरल अइ वा अन्नक ढेरी लागल अइ, कोठी-बखारी मे जे किछु अइ, पौती-पेटारी मे जे गहना-गुड़िया अइ—से सभ सहर्ष प्रधानमंत्रीक सुरक्षा कोश मे दान द दिऐक । जं ताइ मे कष्ट हो त सोमे घर मे जा कान मे तुरतेल द चद्दरि सं मुंह झांपि सूति रहू—बांकी काज देशक स्वयंसेवक लोकनि अपनहि क लेत । सम्पादकजी जेना कहबी छैक ने जे बुढ़ भ गेला आ नाक लगले छनि से तकरे परि अहूं के अइ । हेओ श्रीमान्, शब्द भनहि ब्रह्म होइत होइक परंच ई कें कहलक जे ओकर अर्थ सेहो ब्रह्म होइत छैक ? अर्थ त देश-काल मानक अनुसार बदलैत रहैत छैक । जं सच पुछी त एहन सभ सोचि क हम राजनैतिक शब्दकोश तैयार करबाक काज हाथ मे लेल ए आ थोड़-बहुत काजो भेलए । असल मे प्रायः वर्ख दिन सं हम श्रीमती गांधीक समस्त भाषणक प्रत्यक्ष श्रोता छी । अहाँ कहू ने जे ई टुटपुजिया विरोधी दलक नेता सभक पाछा घुमनाइ सं श्रीमतीक पाछा घुमनाइ नीक की नहि ? कहबियो छै ने जे सए चोट सोनार के आ एक चोट लोहार के । विरोधीदल सभ कतबो एकड़ा भक चिकरयु—धार लगतनि ओते फूसिए बाजल जते श्रीमतीजी असगर एके मंच सं बाजि लैत छथि । सम्पादकजी-हमरा त पुरे पसेरीभरि विश्वास अइ जे फूसि बजबाक हेतु जं कोनो नोबेल पुरस्कार रहितैक त सर्वप्रथम ओ श्रीमती गांधी के भेटितनि आ जेना कि कहबी छैक जे सुकिरिए नाम कि कुकिरिए नाम—से राष्ट्रक त नाम होइतैक ।

एमहर श्रीमती जी राष्ट्रक अखंडताक रक्षा लेल सेहो बेसी चिन्तित बुझना जाइत छथि आ तें ओ प्रायः लोक कें विच्छिन्नतावादी तत्व सं सावधान रहबाक चेतौनी दैत छथिन । एहि तत्व मे ओ जम्मू-कश्मीरक क्षमताशील दल, नेशनल कान्फरेन्स, आसामक आन्दोलनकारी तथा पंजाबिक अकाली दल कें मानैत छथि । परञ्च जं अहाँक स्मरण शक्ति मिझाएल नहि होत मने हएत जे एहए कनफरेन्स श्रीमतीजीक भंजार छल—विगत चुनावक पूर्व आ जे हेतु विगत चुनाव मे भंजारी टूटि गेलनि । आ कनफरेन्स अपन खेती सम्हारि लेलक आ ई हुसि गेली त ओ विच्छिन्नतावादी आ साम्प्रदायिक भ गेल । तहिना जनता सरकारक अलमदारी मे भड़कल असम आन्दोलन के हिनकेदल ने बसात केने छलैक परञ्च जे हेतु ओ हिनका मुट्ठी सं बाहर भ गेल तें राष्ट्रविरोधी थिक । तहिना पंजाबोक आगि कि हिनके पजारल नहि थिकनि ? एखनो प्रायः कोनो दिन जाम नहि जाइछ जहिया एकाघटा निरपराध हिन्दूक हत्या नहि कएल जाइत होइक—परञ्च, सरकार लेखे धन सन । त्रिपुराक उपजाति संगठन जे कतेको खूनखराबीक जिम्मेदार अछि जे श्रीमती जीक भंजारे छनि ।

असल मे श्रीमती जी तेहन माहिर खेलाड़ी छथि जे घाव कतौ आ प कतौ करैत छथि । किछुए दिन पहिने बिहार भ्रमणक दौरान ओ जखलीइए जे ककरोपर 'हिन्दी' माने कोठाक भाषा लादल नहि जा रहल छैक । अहाँ के छगुन्ता लागि सकैए जे जं श्रीमती जीक कथन ठीक छनि त बिहारक भाषा हिन्दी भेले केना केलै ? तथाकथित आजादी सं पहिने जाइ मैथिलीभाषीक संख्या डेढ़ कोटि छलैक से आजादीक बाद पचपन हजार केना भ गेलै ? प्रश्न आर छैक जे जखन सभ भारतीय समान अइ त देसक भाषा संविधान मे छैक आ समस्त सरकारी सुख-सुविधा पबैए तखन हमरा लोकनिक भाषा मैथिली किएक बारल अइ ? एहि सभ प्रश्नक जवाब लेल कने आर पाछू जाए पड़त । किछु दिन पहिने ओ बाजल छलीह जे भाषा-धर्म-क्षेत्र आदि नगण्य विषय के बिसरि लोक राष्ट्रीय अखण्डताक लेल केन्द्र के शक्तिशाली बनावए । एहिठाम स्मरण रखबाक थिक जे ई बात ओही लोक सं कहल गेलैए जे दोसर स्तरक नागरिक अइ—जकर भाषाभूमिक चर्च भारतीय संविधान मे नहि छैक, कारण ओकरा अधिकार भेटि गेल छैक से त छोड़ि नहि सकैछ । भाषा बिसरबाक सोझ अर्थ भेल पशु बनि गेनाइ आ सुविधाक लेल पशुओ मे गदहा सभ सं उपयुक्त होइए । धर्म बिसरि जाउ—माने माक्षिक—मतलब सरकार अपन इच्छानुसार कखनो अहाँपर कपड़ाक मोटा लादि सकैछ, कखनो ऊस लादि सकैछ आ कखनो अपने चढ़ि सकैछ—अहां कान जुनि पटपटावी । भूमि बिसरि जाउ—माने अहां के पोखरि वा हाट-बजार वा पहाड़ पर ल गेल जा सकैए—घास चरबाक पलखतियो भेटि सकैए ।

अहां के हमर व्याख्या सुनि-पढ़ि अचरज लागि सकैए । अहां कहि सकैं छी जे कोनो देशक प्रधान मंत्री एहन बात केना बाजि सकैछ ? परञ्च सत पुछी त आन देशक बात त हम नहि कहि सकैत छी परञ्च भारत सन विश्वक वृहत्तम गणतांत्रिक देश मे एहन बात प्रधान मंत्रीएटा क सकैछ । जं दोसर केओ लोक कें गदहा बनै लेल कहै त ओकरा मारि रोड़ा सं कपार फोड़ि देल जेतैक, कुकुर हुलका देल जेतैक आ एहो मे जं नहियो ठोकल जाइ त कांके अबस्से पठा देल जेतै । ओना ई बात सत्य होइतहुँ कोनो महत्व नहि रखैय जे श्रीमती जीक अपन कहिकें भूमि-भाषा धर्म-संस्कृत किछुओटा नहि छनि । महत्वपूर्ण त ई छैक जे माटि सं असम्पृक्त रहितहुँ ओ समस्त भारतीय भाषा-संस्कृतिक विशाल फुलवारी पर अमरलती जकां पसरल छैथ ।

हं त जेना कहैत छलहुँ जे ई समस्त लोक जकरा बल पर श्रीमती जी कें राजसिंहासन प्राप्त छनि गदहा बनि जाइछ त राष्ट्रक अखंडता सदा सदा लेल बरकरार रहत । जेना कि देश विभाजित भइयो कें अखंड अइ, किछु भाग पकिस्तान धकिया लेलक आ किछु चीन दबा लेलक, किछु लंका कें दान द देल गेल आ किछु बंगला देश कें दान के अगो मे देशयो कें राष्ट्र अखंडित अइ—तहिना हजार टुकड़ी होइतहु ई अखंडित रहत । जं आर सोझ शब्द मे कही त राष्ट्रक अखण्डताक अर्थ भेल नेहरु परिवारक शासन परम्परा कें अखण्डित रखनाइ ।

बारह जनवरी के अपन दिल्लीक भाषण मे अशोक आ अकबरक प्रशंसा मे पंचमुख श्री मती जी स्पष्टे कहलनि जे जेना अकबर आ अशोक क समय मे केन्द्र शक्तिशाली छल-तहिना ओ चाहैत छथि । ओना ई कथा भिन्न जे महाराणा प्रताप सन देशद्रोही अकबरो क समय मे छलहे । एहि सन्दर्भ मे अशोक महान छलाह जे कलिंग के ठंढा क देलनि ।

अहां के त मने होइत जे बिहारक वर्तमान मुख्यमंत्री श्रीमान चन्द्रशेखर सिंह स्पष्ट शब्द मे घोषणा केलनिहें जे केन्द्रक अर्थ होइछ नेहरू परिवार आ तें केन्द्र के शक्तिशाली बनेबाक अर्थ भेल नेहरू परिवार के शक्तिशाली केनाइ आ नेहरू परिवार के शक्तिशाली बनेनाइ—माने जेना नेहरूक बाद श्रीमती गाँधी तहिना श्रीमति गाँधीक बाद आजुक नेता काल्हुक आशा (Today's leader tomorrow's hope) राजीव गाँधी कें सिंहासनरूढ केनाइ आ राजीव गाँधीक बाद काल्हुक नेता परसूक आशा (tomorrows' leader day after tomorrow's hope राहुल गाँधी के सिंहासन-रूढ़ केनाइ आ राहुल गांधीक बाद ....

आशा अछि जे हमर एहि व्याख्या सं अहुँक राजनैतिक बुद्धिक किछु विकास होएत । ई पत्र नितान्त वैयक्तिक आ गोपनीय थिक—तें एकरा छपबाक कष्ट नहि करी ?

पत्रोत्तर नहि देबाक प्रबल आकांक्षी
श्रीमान् लालबुझक्कर
बुझनुक ग्राम वासी

कविता

देश मगर महान छइ

अपाटक के देश हिन्दुस्तान छइ
आर जे किछु हो मगर महान छइ

बारवधु अइ एतय पटरानी बनल
कुलवधु कलपैत छइ बनवास मे
आइ भरुआ पर एतय अभिमान छइ

जतय कर्जे पर चलै सरकार छइ
शक्तिशाली हाथ सभ बेकार छइ
देश बढ़िते जा रहल आगू मगर
बंचल हड्डीतक ने साबुत राष्ट्र के
की हेतै, साबुत बंचल त शान छइ

गीध-गीदर मनावैए महोत्सव
देश के सेवक बनल जल्लाद छइ
नाक जुनि सिकुड़ी सडांध एतय कहां
बीस सूत्री इत्र के पैगाम छइ
ठीक सं देखू श्मशान न ई थिकै
अरे एकर नाम हिन्दुस्तान छइ

की कहल ? कुकूर जेना भूकैत छइ
अरे ई त छैक भाषा राष्ट्र के
आर ई सभ श्वान नहि छथि राष्ट्र कवि
राष्ट्र नायक के गबै छथि आरती
बात भनहि विचित्र छइ खासियत
तखन ने ई देश हिन्दुस्तान छइ

—रामलोचन ठाकुर

किछु देखल : किछु सुनल

विगत २४ दिसम्बर के अ० भा० मिथिला संघ कलकत्ता, अपन रजत जयन्ती वर्षक उपलक्ष्य में मिथिला-विभूति पर्वक आयोजन कैने छल-स्थानीय रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालयक सभागार मे। एहि अवसर पर एगो स्मारिका सेहो बहार कएल गेल कम सं कम दोसर दिन मंचपर कवि सम्मेलनक समय अपनहि हाथेगोर दसेक स्मारिका बिलहलनि संघक प्रोपराइटर श्री बाबू साहेब चौधरी। स्मारिका देब। सं पहिने लोकक मुंह नीक जकां निहारि लेनाइ आवश्यक छलनिहें—कहीं अपात्रक हाथक हाथ ने पड़ि जाइक। ओना बिलहलाक बाद कहि देलथिन—"हम तैयार नहि भ सकलै।" ओना ई बात दिगर भेल जे स्मारिकाक उपर मे छपल छेल—मिथिला विभूति-पर्वक अवसर पर उपस्थित समस्त मैथिली प्रेमी के सस्नेह।' जे हो स्मारिका मे कार्यक्रम क विवरण नहि छैक। पहिल दिन जे एगो पर्चा बिलहल गेल छलैक तकर नमूना देखू—अखिल भारतीय मि० संघ कलकत्ताक रजत जयन्ती आ' मिथिला विभूति पर्वक कार्य-क्रम। ३-१२-८३ शनि ४ बजे सं। १. मनोनीत अध्यक्ष ओ अन्य अतिथि कें मंचपर स्थान ग्रहण २. माल्य प्रदान ३. गोसाउनिक गीत ४. स्वागताध्यक्षक भाषण ५. संघ अध्यक्षक भाषण ६. उपाध्यक्षक भाषण ७. प्रधान अतिथिक भाषण ८ प्रधान वक्ताक भाषण ९. मान-पत्र अर्पण १०. विशिष्ट व्यक्तिक भाषण ११. अध्यक्षीय भाषण १२. कवि सम्मेलन १३. कंठ संगीत :—(अ) चन्द्रमणि (ब) सरस-रमेश (स) पवन गोविन्द (द) रमण (प) प्रदीप (क) रवीन्द्र महेन्द्र। मनमोहन-विजय ब्रह्मनारायण झा।

पर्चा मे छपल तिथि कें बाद द देल जाए सएह नीक, कारण इएह कार्यक्रम प्रायः दुनू दिनक छल। दोसर दिन अतिरिक्त मे नृत्यक आयोजन छल आ से नीक छल त रमण, प्रदीप, मनमोहन-विजय आ ब्रह्मनारायणक कंठ संगीतक लोक बाट तकिते रहि गेल। कविलोकनि कें पहिल दिन विजहो नहि कराओल गेलनि।

जेना देखल, मिथिला विभूति में किरण जी मणिपद्म मिथिलेन्दु जी देवनारायण बाबु आ विन्देश्वर मंडल सम्मानित भेलाह। जेना सुनल, मधुप जी आ उदित बाबू के सम्मान भी० पी० सं पठा देल जेतनि।

दोसर दिन जे कवि सम्मेलन भेल तकर अध्यक्षता केलनि श्रद्धेय किरण जी आ भाग लेलनि सर्व श्री मायानन्द मिश्र वीरेन्द्र मल्लिक, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, रमण प्रदीप मैथिलीपुत्र, उदयचन्द्र झा 'विनोद' राम लोचन ठाकुर, विभूति आनन्द, लक्ष्मण झा सागर अर्जुन लाल करण, विनोद कुमार झा, सरस, चन्द्रमणि, रमेश, सनेही प्रेमानन्द दास, कृष्णकान्त झा आदि।

भाषण कर्त्ता मे प्रमुख छलाह श्री भोगेन्द्र झा, श्री शिवचन्द्र झा, श्री वैजू आदि।

एहि विभूति पूर्वक विशेषता छल—जे पर्चा सं भाषण धरि 'विभूति' लोकनिक नाम चर्चे नहि भेल। मान पत्र भेटि गेलनि बस।

जे आइ मैथिल कुलदुषण डॉ० जगन्नाथ मिश्रक लेल ई आयोजन छल से नहि एलाह आ आयोजक लोकनिक स्थिति गाछ स खसल सनक भ गेलनि।

जे आइ मिश्र बन्धुक चर्च स्मारिका सं आयोजक लोकनिक ठोरधरि चकमाउर देत छल ताइ मे एगो त एबे नहि केलाह आ दोसर मृत्युंजय नारायण मिश्र जं एलो केलाह त तिनका दर्शक श्रोता लोकनि तेहन सम्मान केलकनि जे बिनु वक्तता बघरनहि अपन गेटहाउसफीरि गेलाह। पन्द्रह हजार टका पानि मे।

जे कलकत्ता मे पहिले-पहिले मैथिलीक मंच सं हिन्दी मे भाषण भेल। जे व्यक्ति पाटनाक चेतना समितिक मंच सं हिन्दी भाषणक विरोध कैने छलाह—अपना मंच पर बेश मनोयोग सं सुनैत रहलाह—कानो नहि पटपटओलनि।

जे कलकत्ता मे सभदिन जय मिथिला, जय-मैथिली, जय मैथिलाक आवाज सुनल जाइत छल एहि बेर जय भारत आ जय हिन्दी बेसी ध्वनित भेल।

—जयदेव लाभ

☐

शिक्षाक माध्यम....

की ई मैथिलीक विरुद्ध बिहार टेक्स्ट बुक कॉर्पोरेशनक षड्यंत्र नहि?

तें हमरा लोकनिक माङ हेवाक चाही मिथिलांचल मे निम्नतम स्तर सं उच्चतम-स्तरधरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो, जेना प० बंगाल, उड़ीसा, तामिलनाद आदि विभिन्न प्रान्त मे छैक। जं मिथिलाचल मे दोसर भाषा-भाषी छात्र छथि त एक पत्र हुनक मातृभाषाक अवश्से पढ़ाओल जाएत—छठम वर्ग सं जखन कि मैथिली भाषी छात्र सेहो एकटा अपर भाषा हिन्दी वा. अंग्रेजी वा अन्ये कोनो—पढ़ता—जेना आन प्रान्त मे अछि।

—मुजतबा अली

☐

बालमंच

अटकन मटकन

अटकन मटकन दहिया चटकन
बजै छौ हिन्दी त मार द चटकन

मिथिला मे रहि क हिन्दी बजै छौ
खा तोरे अन्न अपमानो करै छौ
सहै चुपचाप लगौ लाजो ने कनियों
गरदनि पकड़ि क लगा दही पटकन

बिनु राज्य मिथिला शिथिल भेल रहबे
भाषा विहीन भेल बोके तों मरबे
मायक ई लाज काज तोरे से जानि ले
जाति पाँति भेद बिसरि आबो त बढ़बे

आइ नवि बिगार गीत प्रीतक प्रयोजन छइ
रणचंडीक आह्वान करै मने मन

— रामलोचन ठाकुर

मैथिली पोथी/पत्रिका कीनू आ पढ़ू

इतिहासहंता (कविता संग्रह)	—	२/४ टाका
बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य)	—	४ टाका
जादूगर (अनुदित नाटक)	—	५ टाका
प्रतिध्वनि (अनु० कविता)	—	४ टाका
अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास)	—	२५ टाका
मुन्शी रघुनन्दन दास : (व्यक्ति ओ कृतित्व)	—	७ टाका
मैथिली लोककथा	—	५ टाका

सम्पर्क करू :—

अरुणोदय प्रकाशन

कलकत्ता

मिथिलावासीक मांग :—

१. मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
२. केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
३. मिथिलांचल मे निम्नतम सं उच्चतम स्तरधरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
४. मैथिली बिहारक दोसर राजभाषा हो तथा मिथिलांचल मे एकरा प्राथमिकता देल जाइक।
५. आकाशवाणी दड़िभंगा तथा भागलपुरक प्रसारणक माध्यम भाषा मैथिली हो।
६. समस्तीपुर सं जयनगर धरि बड़ी लाइन बनाओल जाय।
७. मिथिलांचल मे यातायातक सुव्यवस्था हो।
८. मिथिलांचल मे कृषिक अवस्था मे सुधार हो तथा रौदी दाही सं बचबाक उपाय हो।
९. मिथिलांचल मे कृषिपर आधारित सरकारी उद्योग-धंधाक विकास हो।
१०. मुजफ्फरपुर दूरदर्शन केन्द्रक प्रोग्राम मे मैथिली कें प्राथमिकता देल जाइक।

मैथिली मुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

अरुणोदय प्रकाशन ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता ७०००३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिन्टिर्स ३२ बी, वृन्दावन बैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित।

मैथिल संस्कृतिक आधार स्तम्भ

(प्रोफेसर हरिमोहन झा)

मिथिलाक संस्कृति अत्यन्त प्राचीन आ त्मिक अछि। सरल जीवन आ उच्च चार एकर विशेषता। शील, संतोष शास्त्र-चिन्तन एवं धर्मनिष्ठता एकर नैसर्गिक गुण। रस विद्या-विनोद, मधुर परिहास एवं आतिथ्यपरायणता एकर भूषण। एहि संस्कृति'क आधार-शिला थीक आध्यात्मिक दृष्टिकोण। औपनिषदि के युग सं मिथिला अपना दार्शनिक विचारधाराक लेल प्रसिद्ध अछि। जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम प्रभृति महर्षि अही भूमि पर उत्पन्न भेलाह। एहने-एहने मनीषि'क पुनीत साधना सं एहिठामक सांस्कृतिक जीवन अनुप्राणित भेल अछि।

राजर्षि जनक जीवन-मुक्तिक प्रतीक छलाह। हुनका विषय मे ई उक्ति एखनहुँ प्रसिद्ध अछि—"मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दह्यति किंचन।" एहि सं बढ़ि कऽ अनाशक्ति-योगक उदाहरण और की भ सकइए? दूर-दूर धरिक जिज्ञासु हुनका सं ब्रह्मज्ञान सिखबालेल अबैत छलाह। वृहदारण्यक उपनिषद मे सेहो हुनकर सुयश-वर्णन भेटइए—"जनक जनक इति वै जनाः धावन्ति (२।१।१)" देवी भागवत मे कहल गेल छइ—वंशेऽस्मिन् येऽपि राजानस्ते सर्वे जनकास्तथा। विख्याताः ज्ञानिनः सर्वे विदेहाः परिकीर्तिताः।"

(अर्थात् जनकक वंश मे जत्ते राजा भेलाह, सभ हुनके जकाँ आत्मज्ञानी। देह कें तुच्छ बुझबाक कारनें हिनका सभ कें 'विदेह' कहल जाय लागल)।

मात्र राजादिके नईं, मिथिलाक साधारणो जनता आध्यात्मिक रंग सं रंगल छल। एकर प्रमाण श्रीमद्भागबत मे भेटइए—"एते वैं मिथिल्ल राजन, आत्मविद्या-विशारदाः। योगेश्वर प्रसादेन, द्वन्द्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि।" जल मध्यक कमल जकाँ, संसार मे रहितउं संसार सं निर्लिप्त रहब एहि भूमिक आदर्श रहल अछि। इएह आदर्श भारतीय संस्कृतिक आत्मा थीक।

याज्ञवल्क्यक आत्मवाद दार्शनिक साहित्य मे विशिष्ट स्थान पाओल अछि। हुनकर श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन सम्बन्धी उपदेश सहस्राब्दि सं एहि देशक सांस्कृतिक चेतना कें जगबैत आबि रहल अछि। ओहि कालक मैंथिल स्त्रिओ तत्वदर्शिनी होइ छलीह। याज्ञवल्क्यक स्त्री मैत्रेयीक वचन छनि "येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्?" (अर्थात् जे अमृत, अमरज्ञान नहि अछि, से लऽ कऽ हम की करब?) दार्शनिक गार्गी ब्रह्म विषयक गूढ़ प्रश्नादि सं याज्ञवल्क्यो कें चकित कए देने छलीह। न्यायशास्त्रक रचियता गौतम सेहो मिथिलेक विभूति छलाह। स्कन्द पुराण मे गौतमक निवास-स्थानक वर्णन एना अछि "आसीद् ब्रह्मपुरी नाम्ना मिथिलायां विराजिता, तस्यां वसति धर्मात्मा गौतमो नाम तापसः।" एखनउं मिथिला मे गौतम स्थान आ गौतम कुण्ड प्रसिद्ध अछि। गौतम प्रणीत न्याय

सत्यतः मिथिला तर्क, शास्त्रक जननी कहल जा सकइ छथि। प्राचीन न्यायक प्रणेता गौतम आ नव्यन्यायक प्रवर्तक गंगेश—दुनू मिथिलेक संतान। अहिना, मीमांसा दर्शन अभिवृद्धिक श्रेय सभ सं अधिक मिथिले कें अछि। पूर्वमीमांसाक तीनू शाखा (कुमारिल, प्रभाकर तथा मुरारि मिश्रक) एत्तइ प्रादुर्भूत एवं प्रस्फुटित भेल। मिथिला मे न्याय ओ मीमांसाक अधिक उत्कर्षक कारण इहो भेल जे मिथिला कें बौद्धदर्शनक पाथर बिहाड़ि सहए पड़लैक। बौद्ध तार्किकादिक आक्रमण सं वैदिक कर्मकांड आ ईश्वरादि कें बचएबा लेल मिथिला मे एक पर एक उद्भट मीमांसक नैयायिक होइत रहलाह। ई परम्परा कइएक शताब्दि धरि रहल।

मंडन मिश्र मीमांसाक सभ मे अग्रगण्य छलाह। हिनकर प्रकांड विद्वत्ता सुनिकऽ शंकराचार्य हिनका सं शास्त्रार्थ करए हिनकर गाम (वर्तमान सहरसा जिलाक सुप्रसिद्ध ग्राम महिसी। महिषी अथवा महिष्मती। महर्षि वशिष्ठ अहीठाम भगवती उग्रताराक आराधना कएने छलाह।) आएल छलाह। तहिया मिथिलाक बौद्धिक स्तर केहेन ऊंच छल, से 'शंकर-दिग्विजय' सं ज्ञात होइए। जखन गामक कोनो इनार पर शंकराचार्य कोनो पनिभरनी सं मंडन मिश्रक विषय मे पुछलथिन तऽ उक्त पनिभरनी उत्तर देलकनि—"स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं वीरांगना यत्र गिरो गिरन्ति। द्वारस्थनी ड़ान्तर सन्निरुद्धाः जानीहि तन्मंडन पंडितौकः।" (अर्थात जइ दरवज्जा पर टांगल पिंजड़ा मे सुग्गा-सुग्गी 'ब्रह्म अप्पन प्रमाण अपनइ थीक आ ब्रह्मक प्रमाण ई विश्व थीक' अइ महान वाक्यक आवृत्ति कए रहल होइथ, तकरे मंडन मिश्रक स्थान बूझि लेब।) मिथिलाक स्त्री केहेन होइत छलीह, एकर ज्वलन्त उदाहरण मंडन मिश्रक पत्नी सरस्वती देवी छथि, जे ओहि एतिहासिक शास्त्रार्थ, मे मध्यस्थक कार्य कएलनि।

भारतीय दर्शनक इतिहास मे वाचस्पति मिश्रक बड़ आदरणीय स्थान अछि। छबो दर्शन पर समान अधिकार रखबा कारने हिनका षडदर्शवल्लभ कहल गेल छनि। ई दरभंगा जिला, ठाढ़ी गामक रहनिहार छलाह। उद्योतकरक न्याय वार्तिक पर ई अप्पन सुप्रसिद्ध 'तात्पर्य टीका' रचलनि, जकर आरम्भ मे ई लिखइ छथि—इच्छामि किमपि पुण्यं दस्तरं कुनिबन्धपंकमग्नानाम् उद्योतकरगवीनामतिजरतीनां समुद्धरणात्।' (अर्थात्, उद्योतकरक बूढ़ि गाय सभ दल-दल मे फंसल छथि, तनिकें उद्धार कए थोड़बो पुण्य करए चाहैत छी।) वाचस्पति मिश्र बौद्ध तार्किक सभक खंडन करैत, एहेन विद्वता सं न्याय शास्त्रक तात्पर्य सिद्ध कएलनि जे ई 'तात्पर्याचार्य' कहबए लगलाह। शांकर भाष्य पर हिनक सुप्रसिद्ध 'भामती' टीका वेदान्त क्षेत्र मे गौरवपूर्ण स्थान रखैत अछि। 'भामती' हिनकर विदुषी पत्नीक

उदयनाचार्यक नाम सेहो अग्रगण्य। हिनकर 'न्याय-कुसुमांजलि' ईश्वर विषयक अद्वितीय ग्रन्थ अछि। नास्तिक बौद्ध सभ संगें युद्ध कए आस्तीकवादक स्थापना करब, हिनके सन धुरंधर आचार्यक काज छल। हिनक सम्बन्ध मे एक किंवदन्ति अछि जे एक बेर ई कोनो कष्ट मे पड़ि गेलाह तऽ ईश्वर कें सम्बोधित करैत बजलाह—"ऐश्वर्य मदमत्तोऽसि मामवज्ञाय वर्तसे, उपस्थितेषु बौद्धेषु ममाधीना तव स्थितिः।' (अर्थात् हे ईश्वर, अहाँ ऐश्वर्य-मद मे मत्त भऽ हमर उपेक्षा करैत छी। मुदा, बूझि राखू, यदि हमर अस्तित्व अहाँ पर निर्भर अछि तऽ अहूँक अस्तित्व बौद्ध सभक मध्य मे हमरे पर निर्भर अछि।) एहन छल मैथिल पंडित सभक आत्माविश्वास मैथिल पंडित सभक इहो गर्वोक्ति प्रसिद्ध अछी—
"वयमिह पदविद्यां तर्क मान्वीक्षिकीं वा यदि पथि विपथे वा वर्तयामः स पन्थाः। उदयति दिशि यस्यां भानुमान सैव पूर्वा नहि तरणिरुदिते दिक पराधीनंवृत्तिः॥"
(अर्थात् भाषा ओ तर्क कें हमसभ जिम्हर लऽजायब, सएह मार्ग बनि जएतइ। सूर्य जइ दिशा मे उगइए, सएह पूर्व दिशा कहाबइए) ई सूर्य दरभंगा जिला, करियन ग्राम मे उदित भेल छलाह।

जइ प्रकार आठम आ दसम शताब्दि मे मंडन, बाचस्पति आ उदयनक प्रकाश मिथिला मे जाज्वल्यमान रहल तहिना तेरहम आ सोलहम शताब्दिक मध्य गंगेश, पक्षधर आ शंकर देदीप्यमान नक्षत्र जकाँ चमकैत रहलाह। गंगेश उपाध्याय नव्यन्यायक जन्मदाता छलाह। हिनकर निवास दरभंगा जिला, मंगरौनी गाम मे छल, ई करियन गाम मे अप्पन विद्यालय स्थापित कएने छलाह, तकरा डीह पर एखनउँ किछु चिह्नादि छैक।

मिथिलाक नव्यन्याय परम्पराक इतिहास गौरवपूर्ण अछि। तीन-चारि शताब्दि मिथिला सौंसे भारतक प्रमुख ज्ञानपीठ-विद्यापीठ बनल रहल। दूर-दूर सँ आबि कऽ विद्वान सभ एतए अवच्छेदकता, प्रकारता आदिक ज्ञान प्राप्त करए अबैत छलाह।

गंगेश उपाध्यायक नव्यन्याय परम्परा मे सभ सं प्रसिद्ध भेलाह पक्षधर मिश्र। हिनका विषय मे प्रसिद्ध अछि—'शंकर-वाचस्पत्योः शंकर-वाचस्पती सदृशौ, पक्षधरप्रतिपक्षी लक्ष्मी भूतो न च क्वापि।" (अर्थात्, शंकर आ वाचस्पति, शिव अ वृहस्पतिक तुल्य छथि।) परन्तु पक्षधरक समक्ष तऽ किओ ने देखइ मे अबैत अछि। कहल जाइए जे ई जइ पक्ष कें धरइ छलाह तकरा सिद्ध कऽ दइ छलाह।

लाह आ हिनका सं 'मणि' 'आलोक' प्राप्त कए नव द्वीप लए गेलाह।

मैथिल संस्कृतिक ओहि स्वर्ण युग मे मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन केहेन छल, तकर उदाहरणस्वरूप पंडित भवनाथ मिश्रक नाम गौरवपूर्णक लेल जा सकइए। ई दरभंगा जिला, सरिसब गामक निवासी दरिद्र ब्राह्मण छलाह। मात्र सवा कट्ठा जमीन छलनि। ओइ मे जे साग-पात उपजइ छलनि ताहि सं निर्वाह करैत छलाह। एहेन स्वाभिमानी छलाह जे कहिओ ककरो सं कोनो याचना नहि कएलनि। तइँ ई 'अयाची मिश्र' नाम सं विख्यात भेलाह। ई आजीवन विद्यादान कएलनि आ अन्त मे गंगालाभ कएलनि। गंगा सँ विदा होइकाल ई श्लोक पढ़लनि—"अधीतमध्यापितमर्जितं यशः न सोचनीयं किमपीह भूतले, अतः परं श्रीभवनाथशर्म्पणः मनोमनोहारिणी जाह्नवीतटे।"

हिनकर पुत्र शंकर मिश्र एहेन संस्कारी भेलाह जे पाँच वरखक अवस्था मे ई श्लोक रचि कऽ मिथिला नरेश कें सुनौलनि—"बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रम्।"

ई श्लोक एखनउँ धरि गाम-गाम मे प्रसिद्ध अछि आ छोट-छोट बालक सभकें शैशवावस्थे मे कण्ठस्थ कराओल जाइत अछि। शंकरक विद्या सँ प्रसन्न भऽ मिथिलेश हुनका प्रचुर पुरस्कार देलथिन। मुदा हुनकर माता भवानी तऽ अयाची मिश्रक पत्नी छलथिन। ओ शंकरक जन्मेकाल एक चमइन कें वचन देने छलथिन जे शंकरक पहिल कमाइ ओकरा नेछाओरक रूप मे देल जएतैक, ई प्रतिज्ञा स्मरण अबितइ ओ सभटा सम्पति ओहि चमइन कें दऽ देलथिन। मुदा ओहो चमइन तऽ मिथिलेक माटि-पानि पर जनमलि छल। तइँ सभटा धन सं एकटा सार्वजनिक पोखरि खुनवा देलक जे आबहु धरि चमइनिआँ पोखरि नामे विख्यात अछि। आइं सं किछुए पीढ़ी पूर्व मिथिलाक जातीय चरित्र एतेक महान छल।

एहेन छल मिथिलाक संस्कृति, जे त्याग, संतोष आ स्वाभीमानक अदम्य ज्योति सं जगमगा रहल छल। अही सांस्कृतिक विशेषताक कारने मिथिला सहस्रोवर्ष पर्यन्त तीर्थ भूमि बनल रहल।

कहल जाइए जे पहिने मिथिलाक भूमि जलक आधिक्य कारने बड़ड़ आर्द्र छल। वैदिक युग मे आर्य सभ एतए आबि नदी-नदक काते-कात यज्ञ करैत एहि भूमि कें रहवाक योग्य शुष्क बनौलनि। तइँ एकर नाम 'तीरभुक्ति' पड़ल, जे आब तिरहुत अछि। एहिठामक एक-एक

हजुर माइ-बाप!

अपने सम्बन्ध मे कहनाइ शुरु करी, सएह ठीक हएत। किएक त जखन हम दोसराक सम्बन्ध मे कहैत छी त कतहु ने कतहु अपने परिचय प्रस्तुत करैत छी। खाहे हम दोसराक प्रशंसा करैत होइ वा निन्दा। दोसराक गुण-स्वभावक किरण आबि. कें अंतःकरण सं टकराइए आ फेर हमर प्रतिक्रियाक शक्ल अख्तियार क लेए। भरिसक तेँ कुनू दार्शनिक कहने छथि जे मनुक्खक तीन रूप होइ छइ। पहिल ओ, जे ओ स्वयं अपना बारे मे जनैए। दोसर ओ, जे

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

मैथिली मुक्तिमोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसकोस

अङ्क—३-४ मार्च-अप्रील ८४ मूल्य—पचास पाइ

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

सम्पादकीय

प्रो० हरिमोहन झा

२३ फरबरी १९८४ क मनहूस दिन हमरा लोकनिक प्रिय साहित्यकार हरिमोहन बाबू कें हमरा लोकनि सं छीनि लेलक। मनुक्ख कतबो बुधियार आ बरियार किएक ने हो—ओ जे कतेक असहाय अइ तकर ज्ञान एहने एहने घड़ी मे होइ छइ। तें अपन प्रियजन कें दिन मास वा बर्ख नहि—सदाक लेल बिछुरैत देखियो कें मओन रहैछ, अपन अक्षमता पर नोर बहा संतोष करैछ। निष्ठुर काल ओकर कमजोरी पर हंसैछ, अपन विजय पर ठहाका लगबैछ।

परञ्च कालो जतेक शक्तिशाली अपना कें बुझैछ ततेक अइ नहि ओ मनुक्ख कें समाप्त क सकैछ मुदा ओकर कृति आ कीर्ति कें नहि समाप्त क सकैछ आ असल मे सही मनुक्ख त अपन कृतिये मे जीवैए। आत्मा का अमरता भनहि विवादास्पद हो परञ्च कृतिक अमरता सर्वमान्य थिक आ तें जं कही जे हमरा लोकनिक प्रिय हरिमोहन बाबू, श्रद्धेय हरिमोहन बाबू मुइला नहि, ओ मरियो नहि सकै छथि त अनगल नहि होएत। हरिमोहन बाबू जीवै छथि अपन खट्टर ककाक तरंग मे, ओ जीवै छथि रंगशाला मे, ओ जीवै छथि कन्यादान आ द्वीरागमन मे।

प्रो० हरिमोहन झा माने वर्तमान युगक सर्वाधिक पठित साहित्यकार, प्रिय साहित्यकार हरिमोहन बाबू, हास्य सम्राट हरिमोहन बाबू, मिथिलाक दार्शनिक परम्परा प्रबल स्तम्भ हरिमोहन बाबू जीवैत छथि आ ताधरि जीवैत रहता जाधरि मैथिली भाषा-साहित्य। कहबाक प्रयोजन नहि जे हरिमोहन बाबूक प्रति उचित सम्मान / श्रद्धांजलि मैथिली भाषा साहित्यक कें समृद्ध केनाइ ओकर विकासक पथ प्रसस्त केनाइए टा होएत आर किछु नहि, किछुओटा नहि।

दही चूड़ा चीनी

—प्रो० हरिमोहन झा

खट्टरकका दलान पर बैसल भांग घोंटैत छलाह। हमरा अबैत देखि बजलाह हाँ-हाँ ......ओम्हर मरचाइ रोपल छैक, घूमि कऽ आबह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, आइ जयवारी भोज छैक, सैह सूचित करय आयल छी।

खट्टरकका पुलकित होइत बजलाह—वाह-वाह। तखन सोझे चलि आबह। दू एकटा धंगेबे करतैक त की हेतैक ?....हं, भोज मे हेतैक की सभ।

हम—दही चूड़ा चीनी।

खट्टर—बस, बस, बस। सृष्टि मे सभ सँ उत्कृष्ट पदार्थ यैह थीक। गोरस मे सभ सँ मांगलिक वस्तु दही—अन्न मे सभक चूड़ामणि चूड़ा—मधुर मे सभक मूल चीनी! एहि तीनूक संयोग बूझइ तँ त्रिवेणी संगम थीक। हमरा त त्रिलोकक आनन्द एहि मे बूझि पड़ैत अछि। चूड़ा भूलोक। दही भुवर्लोक। चीनी स्वर्लोक।

हम देखल जे खट्टर कका एखन तरंग मे छथि। सभटा अद्भुते बजताह। अतएव, काज अछैतो गप्प सुनबाक लोभे बैसि [illegible]

हम चकित होइत पुछलिऐन्ह—ऐं! दही चूड़ा चीनी सँ सांख्य दर्शन! से कोना ?

खट्टरकका बजलाह—एखन कोनो हड़बड़ी त ने छौह ? तखन बैसि जाह। हमर विश्वास अछि जे कपिल मुनि दही चूड़ा चीनीक अनुभव पर तीनू गुणक वर्णन कऽ गेल छथि। दही सत्वगुण। चूड़ा तमोगुण। चीनी रजोगुण।

हम कहलिऐन्ह—खट्टरकका, अहांक त सभटा कथा अद्भुते होइत अछि। ई हम कतहु नहि सुनने छलहुँ।

खट्टरकका बजलाह—हमर कोन बात एहन होइ अछि जे तों आनठाम सुनि सकबह ?

हम—खट्टरकका, त्रिगुणक अर्थ दही चूड़ा चीनी, से कोना बहार केलिऐक ?

ख०—देखह, असल सत्व दहिए मे रहैत छैक, तैं रज। चूड़ा रूक्षतम होइछ, तें तम। देखै छह नहिं, अपना देश मे एखन धरि 'तमहा' चूड़ा शब्द प्रचलित अछि।

हम—आश्चर्य! एहि दिस हमर ध्यान [illegible]

भऽ जाइ छैक। जखन उज्जर दही ओहि पर पड़ि जाइ छैक तखन प्रकाशक उदय होइ छैक। तें सत्वगुण कें प्रकाशक कहल गेलैक अछि। 'सत्वं' लघु प्रकाशक मिष्टम्।. तैं दही लघुपाकी की तथा सभ कें इष्ट (प्रियगर) होइत अछि। चूड़ा कोष्ठ कें बान्हि दैत छैक। तें तम कें अवरोधक कहल गेल छैक। और बिना रजोगुणें त क्रियाक प्रवर्तन हो नहिं। तें चीनीक योग बेत्रेक खाली चूड़ा-दही नहिं घोंटा सकैत छैक। आब बुझलहक ?

हम कहलिऐन्ह—धन्य छी खट्टरकका! अहाँ जे ने सिद्ध कऽ दी!

खट्टरकका बजलाह—देखह, सांख्यक मत सँ प्रथम बिकार होइत छैक महत् वा बुद्धि। दही चूड़ा चीनी खेला उत्तर पेट मे फूलि कय पसरैत छैक। यैह महत् अवस्था

देश

नकल करू आ नष्ट होउ

मैट्रिक परीक्षा समाप्त भऽ गेल अछि। एहि बेर बिहार परीक्षा समितिक एहि परीक्षा मे पाँच लाख सं उपर परीक्षार्थी सम्मिलित भेल छथि। ई परीक्षा आ एकर परीक्षाफल अनेक अर्थ मे महत्वपूर्ण अछि, मुदा एहि परीक्षाक कोनो विश्वसनीयता नहि रहि गेल अछि।

परीक्षा मे चोरि करब रहू-रहाँ भऽ गेल अछि। मूर्ख-चपाट सभ नीक नंबर सं पास करबा लेल मोचंडी पर उतरि गेल अछि। जे लोक एहि चोरि कें रोकबाक प्रयत्न करत, से मारि खायत।

एहि बर्ख अनेक नव बात भेल अछि। मिथिलांचल क थोड़ेक उदाहरण लेल जाय। दरभंगा जिला मे दू गोट केन्द्राधीक्षक (सुपोल आ दरभंगा मारवाड़ी स्कूल) गिरफ्तार भेलाह आ कदाचार (परीक्षामे चोरि) क आरोप मे दण्डित भेलाह। मधुबनी जिला मे दू गोट केन्द्राधीक्षक ड्योढ़ आ बरही-फुलपरास केन्द्र पर कदाचार मे गिरिफदार भेलाह। हाजीपुरमे एक दण्डाधिकारी गिरिफदार भेल छथि। सहरसा मे एक दिन एक दण्डाधिकारी चोरि करैत परीक्षार्थी कें पकड़लनि आ प्रत्येक कें एक-एक सय टाका जुर्माना कयलनि आ एहि जरिबाना सं सुनैत छी जे सत्तरि हजार टाका जमा भेल। एहि बेर नव बात ई भेल अछि जे कदाचार मे केन्द्राधीक्षक लोकनि दण्डित कयल गेलाह अछि।

चोरि किएक होइत अछि ?

एकर उत्तर सोझ अछि। लोक परीक्षा मे नीक नम्बर आनऽ चाहैत अछि जाहिसँ ओ कम नम्बरवला सभ कें पछाड़ि आगाँ बढ़ि सकय। नीक नम्बर अनबा लेल परिश्रम सँ पढ़ब एक तरीका अछि जे आब पुरान भऽ गेल अछि। नव तरीका अछि जे नीक नम्बर पैरवी, पाइ आ मोचंडी सँ आनल जाय।

बोर्ड परीक्षा लैत अछि। जतऽ नम्बर बढ़ायब आ फेल के पास करायब कठिन बात नहि छैक। पाइक भूखल कर्मचारी हरियर देखौलासँ सभ किछु उनटा-पुनटा कऽ सकैत अछि।

एहि बेर परीक्षा बोर्डो कमाल कऽ देलक अछि। दू पेपरक प्रश्न-पत्र बजार मे बिकायल। प्रश्नपत्रक 'फोटोस्टेट' अखबार सभ छपलक, ओहि पेपरक परीक्षा बाद मे भेल। मुदा ई खबरि परीक्षासँ पहिने जग-जानित भेल, तें ओकर मार्जन कयल गेल।

बोर्ड परीक्षा खतम होइत,होइत पटना क दैनिक सभमे खबरि आयल जे प्रत्येक पत्रक प्रश्नपत्र आउट छल आ पटना तथा अन्य स्थान सभ पर नोट देलापर भेटैत छल।

सभ किछु जनैतो बोर्ड क अधिकारी तथापि परीक्षा करयबे कयलनि।

आब एहेन परीक्षा क कापी सभ जाँचल जायत आ तकरा आधार पर परीक्षा फल कयल जायत।

एहि देश मे परीक्षो अशुद्ध भऽ गेल अछि। परीक्षा फलो अशुद्ध भऽ गेल अछि। अशुद्ध लोक कें उत्पन्न कऽ शुद्ध आचरण क आशा करब अशुद्ध थिक।

मिथिलांचल क लोक एहि भेड़िया-धसान मे ककरो सं पाछाँ नहि छथि। एकर फल मुदा की होयत ? की एहि सं मिथिलांचल अगुआयत ? प्रगति करत ?

मिथिलांचलक मुख्य उद्योग थिक नौकरी। नौकरीक आधार डिग्री आ योग्यता दुनू थिक। साधारण नोकरी पयबा लेल सर्टिफिकेट पर्याप्त थिक। श्रेष्ठ नोकरी पयबा लेल सर्टिफिकेटक संग योग्यता आवश्यक। ताहिमे योग्यता सभ सं आवश्यक। एहि योग्यता क जाँच लेल प्रतियोगिता परीक्षा सभक आयोजन होइत अछि। मैथिल नोकरी मे बड़ बेसी सन्हिआयल छथि, मुदा नीक नोकरी मे कम छथि।

एहेन नकली परीक्षा क सर्टिफिकेट वला लोक कोन नोकरी पौताह ?

परीक्षामे नकल होइत अछि, तं विद्यार्थी माष्टर सभकें घास बूझऽ लगैत अछि। ओ किताब सभकें अछोप बूझऽ लगैत अछि। ओ अपना सं पैघ हर व्यक्ति कें टकदरुआ बूझऽ लगैत अछि।

मोचंडी आ उदंडता, हिंसा आ अपराध बढ़यबा मे परीक्षा आ परीक्षाफल क बड़ पैघ हाथ छैक।

समाज नीचाँ मुँहे रुड़कि रहल अछि।

पिता : मृत्युसज्जा सँ / □ विभूति आनन्द

□□

यंत्रणापूण जिनगीक सभटा ऊ ंच-नीच
हमरा अंगेजल अछि बाउ !
हम एकटा सोहिजनक गाछ भऽ जीलहुँ
जकर सर्वांग भूआ सं आक्रान्त रहैत आयल
हारल ई देह - गाछ तहिये ने कोकनि चुकल
जहिया सँ एकर देह पर दोसर गाछ अपन अस्तित्व बनावऽ लागल ।

□

बाउ !
हम अपन एहि मानसिक सहरजमीन कें
लाख व्यापक बनयबाक प्रयास करैत अयलहुँ अछि,
ई चाहे तऽ फूसि-फटक भऽ जाइत रहल अछि
अथवा, शून्य मे विचरैत कोनो नीरा-जीवी
अथवा, विजया-सेवी मनुक्खक बकवास भऽ कऽ
एहि समाज द्वारा मान्यता प्राप्त करैत रहल अछि ।

□□

आ तें,
जीवनक एहि सांध्य वेला मे
परिवर्त्तनक ओर हेरैत बितल सम्पूर्ण वय
आइ पुनः ओही प्रश्नवादी मुद्रा मे
जुमुत बन्हने ठहाका लगा रहल अछि ।

□□

हमरा लगैए,
अपन संस्कृतिक मोह आ बड़प्पनक कटाह जंगल मे
अनेरे बौआइत रहलहुँ
स्मृति मे जीबाक हमर-अहांक ई आम मानसिकता
मोहाच्छन्न कऽ कऽ लोक कें तोड़ि कऽ लुंज कऽ दैत छै बाउ !

□□

अपन पितरक तर्पण करैत
आकि
मनुवादी परम्परा मे पलैत
कुल, गोत्र आ मूलक ओर-छोर मिलबैत
अथवा
गौरवपूर्ण इति-वृत्तिक बीच झिल्हरि खेलाइत
आइ जें कि हम वर्त्तमान सँ कटल रहलहुँ—
जीवनक सभ सँ अधलाह शब्द पर
स्वीकारक मोहर मारबा पर बिर्त छी !

□□

आइ हम
हिमालयक कोरा मे बसल अपन गामक
बीच चौबट्टी पर ठाढ़
आंखि मध्य विराट शून्य कें लदने
शरीरक असह्य भार कें
टूटा कमजोर पयर पर
सम्हारि रखबा मे विफल भऽ रहल छी ।
ई एकटा मुद्रा थिक पश्चातापक
जे हमर दीर्घ जीवनक सोझ निष्कर्ष अछि ।

□□

हम आर अधिक ई पीड़ा नहि सहि सकब
हम जा रहल छी बाउ !
अहां सभ द्वारा उठल ई असंख्य तर्जनी
कखनो हमरा खौंछबैत सन बुझाइत अछि,
कखनो बेधैत सन लगैत अछि मीत ।

□□

हम जीवनक सार्थकता मादे सोचियेटा सकलहुँ —
कऽ नहि पौलहुँ किछु ।
जहिया जुआनी क उठान पर रही—
गबदी मारब नीक लगैत छल
जहिया अनीतिक विरोध कऽ सकैत रही—
दृष्टि-लज्जा सं लीबल रहलहुँ
वैचारिक स्तर पर जतबे साकांच रही
व्यवहार मे ततबे शिथिल होइत रहलहुँ
हमरा अहां सभ किन्नहुँ माफ नहि करब
अहां सभ जे आइ
विकलांग स्थितिक भोग भोगि रहल छी ।
सभक भागी हमहीं छी/हमहीं टा छी ।

× ×

हम जा रहल छी प्राण,
मुदा संघर्षक ई प्रवाह चलैत रहबाक चाही !
मरनि ने भऽ जाय ई धार
हमरे जकां अहुँक संतति ने दिअय ई उपराग
मनुक्ख स्वयं होइए अपन भाग्य विधाता
से जानब हे हमर जान
बेरागी ने भऽ पायब ई मोन-प्राण !

× ×

रामनामी चद्दरि ओढ़ि जीयब, चाहे
मंदिर-मस्जिद भऽ कऽ रहब, चाहे
पाग, पगड़ी आ पयजामक कोर तकैत रहब
तऽ रहि जायब मैथिल माने मिथिला बासी

× ×

अहां सभ कें एकटा सौंस मनुक्ख बनबाक अछि
मिथिला आ मारिसस क दर्द भोगबाक अछि समान रूपें ।
एकेटा होइछ
वियतनाम सँ भटसिम्मरि धरिक कथाक मूल कथ्य
से जानब हे हमर मीत
मुदा कानब नहि गीत
बाउ ……हे हमर मीत …… विदा …………

× × ×

लाल बुझक्करक चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक जी !

नमस्कार सह जय मैथिली ।

आगा हाल-सुरति की लिखू ? अहांकें त बुझले अइ जे दिनानदिन मिथिलाक बिगड़ैत हाल-रति सं मनभरि मनदुक्खी बारहो मास छबीसो दिन लाल बुझक्कर कें घेनहि रहैत छनि । ओना ओ बेर-बेर महाकवि मालिबक फार्मूला द मन कें बुझेबाक प्रयास करैत छथि जे—

दिले नादां तुझे हुआ क्या है
आखिर इस दर्द की दवा क्या है
तुमको उनसे वफा की है उम्मीद
जो नहीं जानते वफा क्या है

किन्तु तैयो अबूझ मन बुझनिहारे नहि । आ ताइ पर सं कहै छी सम्पादकजी पटनाक एक मासिक पत्रिका मे कलकत्ताक कोनों छबीस बर्ख सं बुलकुनिया कटैत नेतानी क साक्षातकार पढ़ि त आर छितनी भरि छगुन्ता मे पड़ल छी । सम्पादक जी अपने त नहिञे पढ़ने होएब कारण मैथिली पोथी-पत्रिका कीनने-पढ़ने कहांदन अपने लोकनि कें पतिया लगैत अछि, परञ्च जं पढितौं त जानथि उगिलाहा जे मिसियोभरि फूसि कहैत होइ अहींक सप्पत …… त अहूं कम स कम अवस्से कहितौं—बलिहारी सम्पादक लोकनिक विवेकक जे जे एहन वर्ण शंकर वक्तव्य कें प्रामाणिक घोषित क देलनि । सम्पादक जी अपन पहिलुक चिट्ठी मे हम अहां कें शीर्षासन करबाक सुझाव देने रही । अहांके बुझले अइ जे हम ने त बिखा यतनक पटिया छी आ ने मुनि समाज क प्रचारक । तखन एहन बात लिखबाक कारण खाली अपनेक स्मरण शक्ति कें मजबूत केनाइ छोड़ि आन की भ सकैछ ? आ जं अपने हमर सुझाव मानि अभ्यास करैत होएब त नाक दाबि स्मरण करैत चलू, जेना जेना हम कहैत जाइत छी ।

नेता जीक अनुसार कलकत्ता जे किछु कएलक तकर श्रेय मात्र छओ गोटे कें छैक जाइ मे तीन गोटे हुनक विरोधी खेमामे छलथिन, जनिका लोकनिक संग नेता जी हाईकोर्ट धरि मुकदमा लड़ल छथि आ महाजाति सदनक आयोजन मे बम-छूरा धरि चलल अछि । एक जन हुनकें कथानानुसार ढुलमुल छथि आ एक जन प्रायः बीसो वर्ख सं दिल्लीक बासिन्दा छथि । की, छइ ने छगुन्ताक गप्प ? जे महेन्द्र नारायण झा मिथिला-मैथिलीक पाछा अपना कें चौपट्ट क लेलनि बैद्यनाथ झा, शुकदेव ठाकुर आदि क चर्चो नदारद ।

सम्पादक जी अपने कें त बुझले होएत जे मैथिली मुक्ति मोर्चाक बैसार मे मिथिला राज्यक प्रश्न पर नेता जीक बकार बन्न भ गेल रहनि परञ्च एहिठाम ओ अनका ढुलमुल बना अपना कें दोषमुक्त क लेलनिहें ।

मैथिली पोथीक प्रकाशन जं मैथिलीक काज भेल सम्पादक जी तखन कलकत्ता सं आइधरि जतबा पोथी प्रकाशित भेलए तकर दशांसो हुनका द्वारा नहि भेल छैक परञ्च बांकी जे संस्था सभ छपलक तकर नामो चर्च नहि ।

१७ दिसम्बर १६७० कें जे प्रतिनिधि मंडल दिल्ली गेल छल ताइ मे त अहूं रही सम्पादक जी । तें अहां के कायाक सप्पत— जं हम फूसि कहैत होइ त कहू हं—कि ओइ प्रतिनिधि मंडल कें हजारक-हजार टाकाक संग फूल माला सं लाद हवड़ा टीशन पर एही दुआरे लोक विदा केने छले जे ओ लोकनि ललित बाबूक डेरा पर राज भोग पाबि श्रीमतीजीक संग फोटो छपा घुरि आबथि—आकि आमरण अनशन अथवा मैथिली कें सविधान मे स्थान दिएबाक लेल ? मुदा ताइ विश्वासघात कें, जकरा मुक्ति मोर्चाक आन्दोलनक बादे एहिठामक लोक बिसरि सकल, नेता जी अपन कृतित्व बघारैत छथि ।

नेता जी कहै छथि जे मैथिल समाजक ओ ऋणी छथि जे बेटी-भतीजीक कन्यादानक भार नहि देलकनि । आशा अइ

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

दही चूड़ा चीनी....

थिक। परन्तु एकरा हेतु सत्वगुणक अधिक्य होमक चाही अर्थात् दही बेशी होमक चाही।

हम - अहा ! सांख्य दर्शनक एहन तत्व दोसर के कहि सकैत अछि।

खट्टरकका बजलाह—यदि एहिना निमंत्रण दैत रहह त क्रमशः सभ दर्शनक तत्व बुझा देबौह। त्रिगुणात्मिका प्रकृति द्रष्टा पुरुष कें रिझबैत छथि। एकर अर्थ जे ई त्रिगुणात्मक भोजन भोक्ता पुरुष कें नचबैत छथि। तें नृत्यन्ति भोजनेविप्राः।

हम कहलिऐह—परन्तु खट्टरकका ! पछिमाहा सभ त दही चूड़ा चीनी पर हँसैत छथि।

खट्टरकका अंगपोछा सँ भांग घोटैत बजलाह—हौ, सातु लिट्टी खेनिहार दधि चिपटान्नक सौरभ की बुझताह ! पश्चिमक जेहन माटि बज्जर, तेहने अन्न बजरा, तेहने लोको बज्र सन। अपना देशक भूमि सरस, भोजन सरस, लोको सरस ! चूड़ा पृथ्वी तत्व। दही जल तत्व। चीनी अग्नि तत्व। तें कफ पित वायु—तीनू दोष कें शमन करबाक सामर्थ्य एहि मे छैक। देखह, अनादि काल सँ दही चूड़ा चीनीक सेवन करैत-करैत हमरा लोकनिक शोणित ठण्ढा भऽ गेल अछि। तें मैथिल जाति कें आइ धरि कहियो युद्ध करैत देखलहक अछि ?

हम - खट्टरकका कहाँ सँ कहाँ शाह चला देलहुँ ! बीच-बीच मे तेहन मार्मिक व्यंग कऽ दैत छिऐक जे....

ख०—व्यंग नहिं, यथार्थ कहैत छिऔह। देखह, भोजन सं प्रकृति बनैत छैक। चाली माटि खा कऽ माटि मेल रहैत अछि। साँप बसात पीबि कऽ फनकैत अछि। साहेब सभ डबल रोटी खा कऽ फूलल रहैत अछि। मुर्गा खेनिहार मुर्गा जकां लड़ैत अछि। और हम सभ साग-भाँटा खा कऽ साग-भाँटा मेल छी। हमरा लोकनि भक्त (भात) क प्रेमी थिकहुँ, तें एक दोसरा सं विभक्त रहैत छी। ताहू पर की त द्विदल (दालि) क योग भेले ताकय ! तखन एक दल भऽ कऽ कोना रहि सकैत छी ?

हम --अहा ! की अलंकारक छटा !

ख० --केवल अलंकारे नहिं, विज्ञानो छैक। कोनो जातिक स्वभाव बुझबाक हो त देखी जे ओकर सभ सं प्रिय भोजन की थिकैक ? देखह, बंगाली ओ पछिमाहाक स्वभाव मे की अन्तर छैक ?....जेह भेद रसगुल्ला ओ लड्डू मे छैक। रसगुल्ला सरसओ कोमल होइछ, लड्डू ओ कठोर। रसगुल्ला पूर्वक प्रतीक थीक, लड्डू पश्चिमक। तें हम कहैत छिऔह जे ककरो जातीय चरित्र बुझबाक हो त ओकर प्रधान मधुर देखी।

हम — खट्टरकका, अपना सभक प्रधान मधुर की थीक ?

ख० —अपना सभक प्रधान मधुर थीक खाजा। देहात मे मिठाइ कहने ओकरे बोध होइछ। खाजा ने रसगुल्ल जकाँ स्निग्ध होइछ, ने लड्डू जकाँ ठोस। तें हमरा लोकनि मे ने बंगालीवला स्नेह अछि, ने पंजाबीवला दृढ़ता।....तखन खाजा मे

लालबुझक्कड़....

सम्पादक जी जे एहि वक्तव्य सं अहूं सहमत होएब जं ओ गप्प बिसरि जाइ जे कहियो नेताजीक संस्थाक मंत्री बनबाक विशेष योग्यता मानल जाइत छलैक-ओकरा सर सम्बन्धी मे वा प्रभाव मे कोनो नीक बर रहनाइ। १६७२ ई० क 'दर्शन' जं अपने स्मरणक उलटाबी आ खास कें अगस्त मासक त विषय आर स्पष्ट भ जाएत।

जहाँधरि नेता जीक नाट्यकार होएबाक बात थिक से त पोथी छपि गेने सभ जनैछ। कहबाक प्रयोजन नहि जे लाल बुझक्करक सेहो ई नैतिक आ वैधानिक दायित्व भ जाइत छनि जे नेता जी के नाट्यकार मानि लेथि। परञ्च अहां त ओही नगरक लोक छी आ नाटक सं सेहो जुड़ल छी तें हम अहीं सं निस्तुकी पुछए चाहै छी—कि सरिपहुँ ई नाटक नेता जी अपने लिखने छथि ? एकटा गप्प आर—कतेक संस्था के षड्यंत्र क क तोड़बाक श्रेय नेता जी कें छनि तकरो पता लगेनाइ जुनि बिसरी। तें ने कहै छे सम्पादक जी जे—भड़कल मुंह भसनहि नीक, मुदा एहि नेता जी कें के कहतनि। सरपहुं बुढ़ भेने लोक कि एना दुरि जाइए ?

प्रत्येक परत फराक-फराक रहैत छैक, से अपनो सभ मे रहिते अछि।

हम—वाह ! ई त चमत्कारक गप्प कहल ! मौलिक !

ख०—ऐंठ वा बासि बात हम बजि नहिं ने छी।

हम—वास्तव मे खट्टरकका ! अहाँ ठीक कहै छी। गाम-गाम मे गोलेसी, घर-घर मे पट्टीदारी झगड़ा। कचहरी मे पागे-पाग देखाइत अछि। से किऐक ?

ख०—एकर कारण जे हमरालोकनि आमिल-मरचाइ बेसी खाइत छी। तीख-चोख भेले ताकय। तीतो मे कम रुचि नहि। नीम-भाँटा, करेल, पटुआक झोर....। हौ, जेह गुण कारण मे रहतैक सेह ने कार्य मे प्रकट हेतैक। कटुता, अम्लता ओ तिक्तता हमरा लोकनिक अंग बनि गेल अछि। खाइत हम सभ अपना मे एतेक कटाउझ करैत छी।

हम—परन्तु बंगाली सभ मे एतेक प्रेम किऐक ?

खट्टरकका भांग मे एक आँजुर चीनी मिलबैत बजलाह ओ सभ प्रत्येक वस्तु मे मधुरक योग दैत छथि। दालिओ मीठ, तरकारिओ मीठ, माछो मीठ, चटनियो मीठ तखन कोना ने माधुर्य रहतैन्ह ? अपनो जाति मे एहिना मीठक व्यवहार होमऽ लागय तखन ने। तें हम कहैत छिऔह जे अपना जाति मे जौं संगठन करबाक हो त मधुरक बेसी प्रचार करह। केवल सभा कैने की हेतौह ? 'भोज ने भात, हरहर गीत ! गाम सं दुगोला दूर करबाक •हो त 'दही चूड़ा चीनी लवण कदली बाङू बरफी'क भोज करह।

ई कहि खट्टरकका भांगक लोटा उठौलन्हि और दू-चारि बूंद शिवजीक नाम पर छीटि घट्ट-घट्ट कय सभटा पीबि गेलाह।

(खट्टरककाक तरंग सँ)

ई, बेचू, भाषा छूट ले मे बाहर छल।

बेटी-भतीजीक चर्च त नेता जी केलनि परञ्च बेटा भातिज बेर मे चुप्पी किएक ? कहवी छइ ने जे उचित कहने संग बिधुआए नेत हम अवस्से पुछितियनि जे श्रीमान सोभे छूबी वा घुरा क छूल त गेल नाके ने ? आकि नहि ?

सम्पादक जी कर्त्ते कहू—एकटा अजगुत अनटोटल रहै तखन ने। नेताजीक अनुसार बर्ख दसेक सं कलकत्ता मुइल अइ। आब अहीं कने ज्ञान झाक जोग द क बिचारू जे राजभोग पओनाइ त महान आन्दोलन थिक परञ्च मैथिलीक इतिहास मे सर्वप्रथम राजधानीक राजपथ पर अपन मातृभाषाक न्यायोचित अधिकार लेल जे मैथिल सन्तान शोणित बहओलनि आ लाठीक मारि खेलनि तकर उचावचों नहि। एकरे ने कहैत छइ जीबिते गाय गीड़नाइ। मुक्ति मोर्चाक दड़िभंगा अधिवेशनक समय जे ई नेता जी पीठ मे छूड़ा भोंकलनि से लोक भने बिसरि जाओ मुदा सम्पादक जी हमरा त पुरे पसेरी भरि विश्वास अइ जे अहां नहि बिसरल होएब।

नेता जी आर एगो नव गप्प कहलनिहें—सम्पादक जी। अयरने कें त बुझले होएत जे कुम्हारक कुकुर जकरे हाथ मे माटि ब्रागल देखैत छइ तकरे पाछू लागि जाइए। से नेता जी तहिना कहादन राजनैतिक गंध पाबि पटनियां संस्था आ महासंस्था सं जुड़ि गेलाहए। जे व्यक्ति मैथिली अकादमी कें पटनियें कोना दोसर संस्था कहि आलोचना नेने छथि तथा डा० जगन्नाथ मिश्र तें मैथिली प्रेमी छथिये नहि बल्कि जाहि राजनीतिक दल सं सम्पर्कित छथि वैह दल सभ सं बेसी मैथिलीक क्षति आइ धरि केलक अछि।' लिखने छथि से जे आइ एहि संस्था क प्रोपराइटरक पाछा नाङड़ि डोलबैत फीरै छथि ते तकर कारण त अवस्से छैक। आ से छैक 'उजरा खाम' जे प्रेसे धरि नहि कलकत्ता हाँसपिटलक बेड धरि पहुँचि जाइत छैक। आ से उजरा खाम जकरा हाथ मे नेता जी देखैत छथिन तकरे पाछा लागि जाइत छथि। ओना जं एकरा नेता जी साफे स्वीकार क लितथि त लालबुझक्कर कें आपत्ति के कहए, पथियाभरि प्रसन्नता होइतनि। कहबियो छइ जे देथि पाकल आम सेह ने भेलाह ईल झा। आ कि नहि ? आ तें जं नेता जी अपन चेला चामुन्डाक संग हवाइ अड्डापर जा कें ओही जगन्नाथ मिसर कें फूलक माला पहिरओलाह त अचरजे की ? बिन पेनक लोटा त मिथिला मे रहरहां पाओले जाइए।

सम्पादक जी पत्र अनावश्यक रूप सँ दन्तार भेल जा रहल-ए, तें समाप्त केनाइए उचित। अपने सं हमर बेर-बेर पादबद्ध प्रार्थना जे एकरा अपनहि धरि राखी। कम सं कम चर्चित पत्रिकाक सम्पादक लोकनिक गीद्ध-दृष्टि सं अवस्से बचाबी अन्यथा हुनको लोकनिक प्रामाणिकता ने कहीं संदिग्ध भ जाइए।

प्रत्योत्तर नहि पेबाक प्रबल आकांक्षी
श्रीमान लालबुझक्कर
बुभुक्षुक ग्रामवासी

देखा-ओखा........

लोक ओकरा बारे मे जनै छइ आ तेसर ओ जे कि ओ सरिपहुँ होइए।

किन्तु हजुर, एइ तीनू रूपक अलावे एक चारिम रूप सेहो मनुक्खक होइ छइ। ओ ई, कि जे ओ नञि होइए, माने जे ओ बनबाक इच्छा रखैए, जाइ सं ओकरा आगा बढ़बाक वा उन्नति करबाक आकांक्षा जनमै छइ। संभवतः इएहओ चारिम आयाम छइ जकरा द्वारा मनुक्ख जिनगी मे किछु क लैए। हजुर जहिया हमरा होश भेल तहिया अपना के एक समृद्ध परिवारक दुलरुआ बच्चाक रूप मे पाओल। तहिया सभ तरहक सुविधा छलैक। पिता रसिक मन छलाह। मां परम संस्कारी। बाबा कट्टर सनातन धर्मी। नाना आर्य समाजी। दाइक हुकुम परिवार मे चलैत रहैक आ हम ओकर एकलौताक पहिल सन्तात। माने दाइक अधिनायकवादक उत्तराधिकारी। आ फेर समय करोट फेड़लक जे रहैक से नञि रहलै। टूटल लोक छल आर ओकर अतीतक याद। हजुर यादक एक नम्मा सिलसिला छइ जे शुरु भ गेल त बिलमैक नाम नञि छिए। संक्षेप मे एतबे कही जे खिस्सा एक नञि ओकर भीतर आ ओकर संग चलैत कतेको खिस्सा।

तें माइ-बाप अपनो बारे मे कहनाइ बड़ सहज नञि। किएक त जखन केओ अपना बारे मे कहैछ त ओ भीतरे-भीतर फौरन अपना के 'थर्ड पर्सन' मे तब्दील क लैए। बड़ खतरनाक काज छइ ई। किन्तु आदमी त जनमिते अइ खतरा उठाबे लेल। खाहें ओ स्वयं कें कतरबाक हो वा दोसरा कें कटबाक किंवा अपना-आप कें परिवार, मित्र, समाज वा देश मे बंटबाक—हो। हालांकि घटना कखनो अहां कें असल्यित धरि पहुँचय नञि देत, किन्तु कतौ ने कतौ पहुँचाओत धरि अवस्से।

ई पहुँचनाइ विशेष अर्थ रखैछ। खास कें तखन जखन कि अहां अपना बारे मे कहैत दोसर कें समेटि रहल होइ।

हजुर, दोसरा कें समेटबाक सेहो बड़का लुतुफ होइ छइ। आख़िर जिनगी, अलावे अपन फिरीशानी, दुखःसुख कें एक लुतुफेक रूप लैत छइ।

कसूर माफ हो. हजुर माइ-बाप, जं हम कही जे एइ समाज मे बढ़िया लोकक कहियो ने खगता भेलै। जं होइतै त अहांक वा हमरा देखैत एइ समाज मे पाइ ल कें 'करप्शन' नामक जे दिनाय पसरि रहल छइ ओ कहिया ने खतम भ गेल रहितै। किन्तु जहिना दिनायवला कें करुएबाक आदति पड़ि जाइ छइ आ करुएनाइए मे ओकरा परमानन्द प्राप्त होइ छइ — ठीक इएह हाल हमरा सभक अइ। शिकाइत करबाक ठीकदारी त लोक नेने अइ परञ्च जान-अनजान मे आइ 'करप्शन' केर हिस्सेदारो बनैत जाइए।

आओर अहां त जनिते छी माइ-बाप, शिकाइत बेबस लोकेटा करैए।

अरुणोदय प्रकाशन ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता ७०००३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स ३२ बी, वृदावन बैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्तिमोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसकोस

अङ्क – ५६   मइ-जून ८४   मूल्य – पचास पाइ

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जाड़ि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

अपना दिस सँ

मैथिली आन्दोलन आ मैथिलीक साहित्यकार

'मैथिली आन्दोलन' कहिया आरंभ भेल से निस्तुकी त नहि कहल जा सकैछ, तखन एतेधरि त अवस्से जे तीस-पैंतिस बर्ख सं एकर चर्च चलि रहल अछि । जं ६, दिसम्बर १९८० प्रदर्शन, जे मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता आ निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ, पटनाक सम्मिलित प्रयास सं भेल छल आ पहिले-पहिल मैथिल सन्तानक शोणित सं राजपथ भीजल छल – कें बाद द देल जाय त मैथिली आन्दोलन आइधरि नाच-गान आ प्रस्ताव पारित केनाइ धरि सीमित अछि आ इएह कारण छैक जे चारि कोटि मैथिली भाषी एहि तथाकथित स्वाधीन भारत मे पराधीन अछि, गुलाम अछि । भाषा सन प्रमुख आ पवित्र अधिकारो सं ओकरा बंचित राखल गेल छैक तखन आन अधिकारक चर्चे की हो ? स्पष्ट छैक जे अधिकार भीख मङने नहि भेटैत छैक – लड़ि कें लेमय पड़ैत छैक । एहि लेल शोणित बहाबय पड़ैत छैक, बलिदानक प्रयोजन पड़ैत छैक । जे हेतु हमरा लोकनि अपन अधिकारक हेतु संघर्ष नहि क पओलहुँ – तें बंचित छी । जे जाति अपन अधिकारक प्रति सचेत छल वा अछि से संघर्ष क क सरकार कें नाको दम क देलक फलतः ओकर समस्त मांग मानि लेल गेलैक ।

प्रश्न उठि सकैत छैक जे एही भारत मे जखन आन जाति सभ साल-दू साल मे अपन मांग कें ल क संघर्षक पराकाष्ठा पर पहुँचि जाइछ तखन मैथिल जाति आइ तीस-पैंतीस साल सं मात्र प्रस्तावे धरि किएक सीमित अछि ? हमरो जनतबें, एकर सोझ उत्तर छैक जे कोनो लड़ाइ हुब्ब द राताराती नहि आरंभ भ जाइत छैक । एहि लेल तैयारी करय पड़ैत छैक, जाइ मे बरखो लागि जाइत छैक । एहि तैयारी कें हम जातीय संघर्षक भूमिका कहि सकैत छी जकर निर्माण मे सभ सं पहिल आ प्रधान भूमिका साहित्यकारक होइत छैक । ई भूमिका संघर्ष निमित्त ओहने महत्वपूर्ण होइछ जेना कि मकानक लेल ओकर नींव । साहित्यकार लोकनि सर्वसाधारणक अपेक्षा बेसी सचेतन, आत्माभिमानी, निर्भिक ओ संवेदनशील होइत छथि । ओ अपन रचनाक माध्यमे अपन जातिक गौरवशाली अतीत कें सर्वसाधारणक सोझा उपस्थित करैत छथि जाइ सं लोक मे ओकरा प्रति मोह जगैक, गौरव बोध होइक । एक भाषा-संस्कृति, भौगोलिक वास्तविकता कें प्रतिपादित करैत जातिक विभिन्न समुदाय कें एक सूत्र मे बन्हैक प्रयास करैत छथि तथा रौदी-दाही महामारी सं ल कें विदेशी आक्रमण धरि मे केना सभ केओ समाने प्रभावित होइछ – एहि तरहक विषय कें प्रतिपादित करैत लोक कें संग मिलि रहबाक तथा अपन अस्तित्व रक्षार्थ संगठित भ संघर्ष करबाक लेल प्रेरित करैत छथि । एकरे दोसर शब्द मे जातीय चेतना कहल जा सकैछ । जे हेतु मैथिली मे एहन काज नहि भेल तें सर्वसाधारण कें इहो नहि पता छैक जे ओ मैथिल थिक आ मैथिल एक जाति थिक तथा जाति आ वर्ण सर्वथा भिन्न वस्तु थिकै । इएह कारण छैक जे लोक अपने मुँहे बिहारी बनि जाइछ वा दोसरोक मुँहे ई शब्द सुनि लज्जित नहि होइछ तमसाइत नहि अछि अपितु 'महराजी सुरि' जकाँ गौरवान्वित होइत अछि । तँ उदयनाचार्यक गर्वोक्ति ओकरा लेल कोनो महत्त्व नहि रखैछ, कोरिक, सल्हेस, बेठा चमार आ गोरैयाक सन्तान, पेट भरै लेल बंगाल सं पंजाबधरि बौआइत अछि । तँ जँ एक वाक्य मे कहीं त कोनो जातिक अस्तित्व रखबाक नहि ओकर विकासक मूलाधार थिक इएह जातीय चेतना जकरा अभाव मे पेंच स पेंच जाति विनास कें प्राप्त होइक आ इतिहासो ओकरा मन नहि रखैत छैक ।

एहि सन्दर्भ मे हम जखन मैथिली साहित्य दिस तकैत छी त पूर्णतः निरास होमय पड़ैछ । स्पष्ट छैक जे साहित्यक सिरजनहार भेलाह साहित्यकार, आ से साहित्यकार जं अलूरि, अपाटक आन्हर हो, चेतनाहीन हो, श्वान प्रवृत्तिक हो–त साहित्यक स्थिति जे केहन होएत से ककरो सं नुकाएल नहि । इएह कारण थिक जे मैथिलीक साहित्यकारक लेल देश मिथिला नहि, भारत भ जाइछ कारण मिथिला कें देश लिखनाइ मे हुनको संकीर्णताक बोध होइत छनि, राष्ट्रद्रोहक गंध लगैत छनि । ओना हमरा बुझल अछि जे 'आमार सोनार बाङला' (भारत नहि) लिखि रवीन्द्रनाथ कवि गुरु आ विश्व कवि बनि गेलाह । इएह कारण थिक जे मैथिलीक साहित्यकार जखन कलम पकड़ै छथि त सर्वप्रथम कोठाक भाषाएक अभ्यास करैत छथि परञ्च जखन ओइठाम कोनो पुछारि वा मोजर नहि होइत छनि अथवा लतिया कें दूर क देल जाइत छथि – तखन हारने मिआ सुग्गर खाए जकाँ मैथिली मे लिखनाइ प्रारम्भ करैत छथि । जं एकाध गोटे कें कोठावालीक सरण मे स्थान भेटियो जाइत छनि – त ओहो थारी खाली क कें नहि उठाबक संस्कारक वशीभूत

मिथिला राज्य कहिया धरि !

मिथिला राज्यक गप होइत अछि । येह गप जखन आत्म विश्वासक अभाव मे कहल जाइत अछि, तँ मिथिला राज्यक स्थान पर ओकरा मिथिलांचल कहल जाइत अछि ।

ई गप जखन कोनो नेता बजैत छथि, तँ हुनक निराशा सूचित होइत अछि । जखन कखनो एहेन नेता दंडित होइत छथि तँ निराशा मे मिथिला राज्य आ मिथिलांचलक गप करैत छथि । कोनो सार्थक कार्यक्रम आ उद्देश्य लऽ कऽ ओ एहेन गप नहि करैत छथि । निराशा या कुण्ठाक पीड़ा मे मनोविकारक अवस्थामे एहेन जल्पना करैत छथि ।

ई गप जखन कोनो सांस्कृतिक संस्था करैत अछि, तँ ओकरा नजरिमे गीत-नाद रहैत छैक, चंदा-चिट्ठा रहैत छैक । कोनो कार्यक्रम आ नीति नहि रहैत छैक ।

मिथिलांचलक चर्चा जखन मैथिलीक कोनो लेखक करैत छथि, तँ ओ हमेशा कोनो देवी चमत्कारक आशा करैत छथि जे आकाश सँ कोनो अवतार उतरताह आ ग्लानि मे डूबल मिथिला या मैथिली कें उबारि लेताह ।

एहि ठामक छोट-पैघ नेता कोनो अखिल भारतीय राजनैतिक दलक सदस्य छथि, जतऽ मिथिला आ मिथिलांचलक बात करब राष्ट्रद्रोह बूझल जाइत छैक । तें जाधरि दल हुनका उघैत रहैत छनि ओ मिथिला-मैथिलीक बात ठोर पर नहि अनैत छथि । कोनो प्रकारक गर-हत्था पड़ला पर ओ आवेश मे मिथिला क माला जपऽ लागैत छथि ।

मिथिलाक लोक संगठित नहि अछि, तें मिथिलाक कोनो नेता नहि अछि ।

एहि ठामक लोक अपन एम० एल० ए०, अथवा एम० पी० अथवा मिथिलाक कोटापर बहाल मंत्री सँ जहिया कहियो भेंट करैत अछि, तँ अपन वैयक्तिक स्वार्थक गप करैत अछि अथवा ककरो वैयक्तिक स्वार्थक पूर्तिक लेल दलाली करैत अछि । ककरो नौकरी लेल, ककरो बदली लेल सेहो पैरवी करैत अछि । जकरा सँ झगड़ा भेल, तकर बदली लेल सेहो पैरवी करैत अछि । एहन लोक जे पटना-दिल्ली बेसी काल दौड़ैत अछि । साल मे दस-बीस हजार कमाए चाहैत अछि । ई लोक कोनो गामक विकास लेल कहियो पैरवी नहि करैत अछि । एहेन

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

भ मैथिलीयोक निमित्त किछु नेरा दैत छथि । आ एही दुनू वर्गक लोक द्वारा सिरजल जाइछ मैथिली साहित्य । ओना कहल जाइछ जे कोठा वालीक शरण मे गेने बेसी नाम यश होइत छैक – आ पेट चलैत छैक, परञ्च जं बिसारल जाय त ब्लाइक मलाम लन इहो निराधार धुमिल पड़त । कविपति विद्यापति अपन मैथिलीएक रचना द्वारा मिथिलाक सीमा पार कए नेपाल, बंगाल, उड़ीसा स आसामधरि पहुँचि गेलाह । हुनका ने त कोनो कोठावालीक वा ने अनुवादक आश्रयक खगता भेलनि । रवीन्द्र नाथ बंगले मे लिखि विश्व कवि बनलाह आ हुनक बंगले रचना एहि महान भारतक राष्ट्रीय सगीतक पद पर आसीन भेल । जहाँधरि पेटक प्रश्न अछि, हमरा जनैत पेटक लेल जेना लोक चास वा चाकरी करैछ तेना लेखन नहि । ई भिन्न बात भेल जे लेखने सं जावत लोक कें पर्याप्त पाइ भेटए लगैत छैक तावत ओ चाकरी वा आन धन्धा छोड़ि दैछ अथवा कसो पाइ अनैत छैक पछत आन धन्धाक रोजगार नहि भ सकैत छैक त ओही पर निर्भर करैत अछि ।

स्पष्ट अछि जे श्वान प्रवृत्तिक मैथिलीक साहित्यकारक निमित्त मान सम्मान, इज्जति प्रतिष्ठा कोनो महत्व नहि रखैछ । ओ एक कओर भात वा एक टुकड़ी रोटी देखि नाङड़ि डोलाबए लागै छथि, टूटा पाइक लेल मैथिली कें हाट चढ़ा दैत छथि । आ तें मैथिलीक महान नेता/साहित्यकारक उपस्थिति मे सर्वसम्मति सं प्रस्ताव पारित भ जाइछ जे मैथिली कोनो स्वतंत्र भाषा नहि अपितु कोठाक भाषाएक अंग थिक आ तें एकरा साहित्य अकादमी सं निष्कासित क देल जाय । तें मैथिलीक कोनो महाकवि मैथिलीक प्रतिनिधित्व करैक लेल आमंत्रित रहितहुँ कोठाक भाषा मे सोजरा प्रस्तुत करै लेल आतुर भेल रहैत छथि । तँ कोनो मैथिलीक महाकवि [illegible] मैथिलीक मंच सँ कोठाक भाषा बकरए लगैत छथि । तँ कोनो महाकवि अपन फेकल थूक अपनहि चाटि लैत छथि, तँ कोनो मैथिलीक महाकवि अपन मातृभाषा कोठाक भाषा लिखैत छथि । एहि सन्दर्भ मे [illegible] अंक मे प्रकाशित श्री [illegible] मैथिलीपुत्रक चिट्ठी आ 'देसकोस'क एहि अंक मे श्री धनचक्रक 'प्रसंगवश' विशेष उल्लेखनीय अछि । अचरजक बात जे एहि बिन्दु पर आबि कें अति परम्परावादी सं ल कें अति उग्रवादी–मार्क्सवादी कहओनिहार साहित्यकार मे कोनो पार्थक्य नहि । तें आश्चर्य नहि जे स्वर्ण मंदिर मे सेनाक प्रवेशक विरोध मे बहराएल सिखक जुलूस मे जे कट्टर मार्क्सवादी दल भाग लैत अछि उएह मैथिलीक नाम पर नाक सिकुड़ैए । ओकरा लेल धर्मीय आन्दोलन प्रगतिशील आ मातृभाषाक मान्यताक आन्दोलन बुर्जुआ आन्दोलन बुझाइत छैक ।

एहिठाम ई कहि देब आवश्यक जे जाहि मैथिलीक साहित्यकारक हम चर्च कएल–ए तकर अपवादो अवस्से छथि–परञ्च अपवाद त अपवादे थिक । ओना हमरा सन हेहड़ लोक एही आशा मे जीवि रहल–ए जे आइ ने कालि इएह अपवाद नियमक रूप लेत आ तखने मिथिला-मैथिल-मैथिली अपन समस्त न्यायोचित अधिकार प्राप्त क सकत ।

— अग्रदूत

प्रसंगवश

– घनचक्र

मात्र अपना सभक भारते टा मे नहि, अपितु संपूर्ण विश्व मे जतऽ-जतऽ शासनक लेल जनतांत्रिक पद्धति कें स्वीकार कएल गेलेक अछि, ओतऽ वृहत स्तर पर दू टा चीज समान रूपें परिलक्षित होइत छेक – जनता द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रकारक 'मांग' आर सरकार द्वारा निःधोख रूपें देल गेल किसिम किसिमक आश्वासन। परिणामक तुलना करला पर कतहु कम-वेश भने भऽ सकेछ मुदा 'मांग'क 'स्तर' आ सरकारी 'आश्वासन'क 'प्रकृति' मे सर्वत्र समानता मेटत। जनताक मांग पर सरकारी, आश्वासनक समीकरण कें हल करबा मे लागल, प्रशासन-तंत्र सभठाँ व्यस्त देखबा मे आओत मुदा समीकरणक दूनू पक्ष मे मात्र संख्येक वृद्धि टा होइत देखल गेलेक अछि, आर किछु नहि। ई 'मांग' आर 'आश्वासन'क चोरा-नुकी कोनो नव वस्तु वा घटना नहि छियेक वरन् साबिके सँ चल आबि रहलेक अछि परन्तु एहि मे एकटा बात तथ्यपरक छेक. ओ ई जे अपाहिज / असमर्थक मांगक लेल देल गेल आश्वासनक निःसारता कें लक्ष्य कऽ लेत छेक तँ ओ दँतखिस्टी पर उतरि अबैत छेक आर तखन ओकरा जे किछु प्राप्ति भऽ जाउक (कुकुरक काड़ा स्वरूप) ओ ओहि मे तृप्तिक अनुभव करऽ लगैत छेक वा दुतकारि देल गेला पर अपन नांगरि सटका सधरि जाइत छेक मुदा समर्थ एवं सक्षमक औचित्यपूर्ण मांगक निमित्त देल गेल आश्वासनक अवहेलनाक फलस्वरूप स्थिति विस्फोटक रूप धारण कर लेत छेक — केकटा कुरुक्षेत्र मे व्यूह-रचना प्रारंभ भऽ जाइत छेक, ई एकटा ऐतिहासिक तथ्य थिक जकरा नकारल नहि जा सकैत अछि। ओना एहि तथ्य कें सेहो अस्वीकार नहि कैल जा सकेछ जे अपाहिज / असमर्थक समग्र मांग नाजायजे होइत छेक वा ओकार कोनो औचित्ये नहि रहैत छेक वरन् सरकार एवं प्रशासन-तंत्र अपाहिज। असमर्थ लोक सभक चरित्र कें चीन्हने रहैत छेक तें ओकरा सभक जायजो मांग कें लटका देत छेक—ओकर निमित्त देल गेल आश्वासन पर ध्यान नहि देत छेक — ने कहियो ध्यान देलकैक आने देतैक।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य मे जँ हम सभ अपन-अपन स्थितिक पर्यवेक्षण करी तँ पलक हेतु ई निर्णय करबाक लेल प्रायः सभकें थमकि जाय पड़त जे वस्तुतः हम सभ कोन गोल सँ सम्पर्कित छी? अर्थात् असमर्थ / अपाहिजक गोल सँ वा समर्थ/सक्षमक गोल सँ? ओना हमरा जनैत मैथिल तँ असमर्थ / अपाहिज भइये नहि सकैत अछि????? आ जँ हम सब दोसर गोल सँ सम्पर्कित छी अर्थात् अपना कें सक्षम / समर्थ बुझैत छी तँ मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक लेल न्यायोचित एवं औचित्यपूर्ण मांगक एहन भीषण उपेक्षा किएक भऽ रहल अछि? हम सभ धकियाओल किएक जा रहल छी?? एहि तथ्यक अन्वेषणक लेल हमरा सभ कें सभ सँ पहिने अपन-अपन आत्म निरीक्षण (Self Introspection) करऽ पड़त पछाति अपन मांगक औचित्यक विश्लेषण करऽ पड़त आर विफलता अवफलताक कारण ताकऽ पड़त।

एहि तथ्य कें अस्वीकार नहि कैल जा सकैछ जे अपना कें जागरूक कहनिहार मैथिल समाजक नब्बे सँ पंचानबे प्रतिशत मैथिल सिद्ध नहि भऽ सकैत छथि। अतएव, हुनका लोकनिक 'मांग' मे हुनका लोकनिक निहित स्वार्थ : स्व-प्रचारक आकांक्षा एवं स्वयं कें दोसरा पर आरोपित करबाक अतिरिक्त आर की भऽ सकैछ। हम अपन व्यक्तिगत अनुभवक आधार पर ई कहबाक साहस कऽ सकैत छी जे मिथिला-मैथिल आर मैथिलीक हृदइ समुदाय अछि जे मुखौटा लगा कऽ जीबि रहल अछि— ई समुदाय मैथिल जनताक सभ वर्ग मे विद्यमान अछि खाहे ओ कृषक समुदाय हो श्रमजीवी हो, चाकरी पेशाक वर्ग हो; वणिक सम्प्रदाय हो; राजपुरुष वा राजनीतिज्ञ हो। जँ निष्पक्ष भावें देखल जाय तँ आजुक मैथिल समाजक स्वरूप सर्वथा परिवर्तित देखबा मे आओत जे पूर्णतया सुविधावादी एवं अवसरवादी भऽ गेलेक अछि, जकरा अपना पर विश्वास नहि छेक. जकरा अपन माटि-पानि; अपन संस्कृति, अपन भाषा आर लूरि-भासक प्रति स्नेह नहि रहि गेलेक ममत्वक बाते कोन। गाम-घर सँ लऽकऽ महानगर धरि छिड़िआएल मैथिल समाज कें ई महामारी वृहत स्तर पर ग्रसित कएने छेक आ जँ समय रहैत एहि रोगक उपचार नहि कैल गेलेक तँ एकर परिणाम भीषण भऽ सकेछ। गाम-घर बौआ-टहना आउ. कतहु एहि बातक आभास नहि मेटत जे मिथिलाक लेल सेहो कोनो समस्या छेक। खेतिहर सभ कृषि कार्य मे लीन; मध्यम वर्गीय समाज मामिला-मोकदमा मे बाझल; चाकरी पेशा बलासभ अपने मे अलमस्त; वणिक-व्यापारी समाजक लेल नोन-तेलक भाव मे उतार-चढ़ावक अतिरिक्त कोनो संसारे ने छेक; शिक्षक-छात्र कें सरकारी आज्ञाक पालन / उल्लघन मे लागल अपना भाषा मे बातो करबाक लेल ककरो पलखैत नहि!! ओ तऽ धन्य अछि मिथिलाक स्त्रीगण समाज जे एखनो धरि मैथिली आ मिथिलाक लोक कला कें जिओने अछि!! सौंसे मिथिला बौआ आउ, कतहु कोनो समस्याक चर्च नहि भेटत मुदा तैयो मैथिलीक जे पत्र-पत्रिका अछि ओहि सभ सँ ज्ञात होइछ जे 'समस्या' मिथिलाक पर्यायवाची शब्द बनि गेलेक अछि। अन्यान्य भाषाक पत्र-पत्रिका सभ मे सेहो यदा-कदा एहि तरहक समाचार पढ़बाक लेल भेटि सकैछ। प्रश्न उठैछ जे मिथिलाक लेल जखन कोनो प्रकारक समस्ये नहि, मैथिलक लेल जखन एकर कोनो औचित्ये नहि ··· ········· ··· अपन माटि-पानि सँ जखन ककरो मोहे नहि ····· अपन मातृभाषा सं जखन ककरो अनुरागे नहि तं ई समस्याक प्रति जिज्ञासा भाव की? ई जिज्ञासु लोकनि के?? हिनका लोकनि के चीन्हब आवश्यके नहि अनिवार्य बुझबाक चाही।

हमर कहबाक आशय ई कथमपि नहि जे हमरा सभक समक्ष कोनो प्रकारक समस्या नहि अछि। गर सँ बाहर धरि विभिन्न प्रकारक समस्या सब सुरसा जकाँ मुँह बौने ठाढ़ अछि। भारत सन अर्द्ध विकसित देश मे समस्या आर अभाव नहि रहतैक तँ आर कतऽ रहतैक – आ जतऽ धरि मिथिलाक प्रश्न अछि ओतऽ समस्या आर अभाव नहि रहबाक तँ प्रश्ने नहि रहैत छेक परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे की वस्तुतः मैथिल सम्प्रदाय कें अपन समस्या आर अभावक पूरा ज्ञान छेक? की मिथिलाक जनता कें ई बात ज्ञात छेक जे ओकरा सभक सब सँ पैघ समस्या की छियेक? कोन प्रकारक अभाव ओकरा सभक जीवन मे व्याप्त छेक जाहि लेल सरकारक समक्ष 'मांग' राखल जा सकेछ? अभाव आर समस्याक संगे सटल रहैत छेक 'मांग" (Demands) जकर समुचित ज्ञान मांग केनिहार के रहैत छेक जे ओकरा सभकें एक जुट भऽ अपन दल नायक चुनबाक लेल प्रेरित करेत छेक। आर दल-नायक ओहि अभावग्रस्त, समस्याग्रस्त समाज कें शिक्षा बोध देत छेक—युद्ध-नितिक निर्धारण करेत छेक। सरकारक समक्ष क्रमवद्ध रूपें 'मांग' रखेत छेक जे व्यक्तिपरक नहि भऽ स्वभावतः समष्टिक क कल्याणक निमित्त होइत छेक। आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सरकारके कतहुँ भिड़रबालाक स मना करऽ पड़ैत छेक तँ कतहुँ लालडें गाक। एहि परिप्रेक्ष्य मे जं अपन मिथिला क्षेत्रक 'मांग' पर विचार करी तं देखबा मे आओत जे मिथिलाक जन समुदाय कें अपन 'अभाव' आर समस्याक समुचित जानकारी नहि छेक, उचित ज्ञान नहि छेक - अर्थात् जे अभावग्रस्त अछि ओकरा एहि बातक कोनो चिन्ता नहि छेक जे ओ अभावग्रस्त अछि वरन् एहि प्रकारक अभावग्रस्तता आर समस्यादिकें ओ अपन नियति मानि नेने अछि। मिथिलाक मुख्य जनता कें अपन अभाव आर समस्याक प्रति कोनो प्रकारक चिन्ता नहि छेक आर ओकरा एहि अनभिज्ञता (Ignorance) कें अपन स्वार्थसाधनक आधार बना रहल छेक किछु गनल-गुँथल राजनीतिज्ञ, राजपुरुष, किछु मध्यमवर्गीय तथा कथित जागरूक लोक किछ साहित्य सेवी आर किछ एहिप्रकारक चलता-पुर्जा लोक। किछु स्वार्थी तत्व द्वारा क्रान्तिक नारा सतत देलजाय रहलेक अछि मुदा ओ कतहुँ जोर नहि पकड़ि रहलेक अछि आने पकड़तेक. कारण अधिकांश मैथिल कें एहि स्वार्थी तत्व सभक दुरभिसंधिक ज्ञान भऽ गेलेक अछि। किछु बौद्धिक वर्ग एवं किछु साहित्यकारक चेतौनी पर ओ सुगबुगायल अछि। तँ मिथिला के एकटा पृथक राज्य बनेबाक मृगमरीचिका देखाओल जाउक वा मैथिली के बिहारक द्वितीय राज-भाषा बनेबाक आन्दोलनक आह्वान कएल जाउक वा मिथिला कें औद्योगिक परिवेश दिएबाक लेल क्रान्तिक बिगुल बजाओल जाउक, मैथिल समाज तावत्धरि नहि जागत यावत् धरि ओकरा ओकर 'समस्या' आ 'अभावक' ज्ञान नहि कराओल जाइत छेक, एहि प्रकारक आन्दोलन सँ समवद्ध स्वार्थी तत्व सभकें निष्कासित नहि कएल जाइत छेक। मुदा एहि समस्याक समाधान हैब औतेक सरल नहि। हमरा सभक समक्ष सभसं पैघ समस्या अछि नेतृत्वक – सफल नेतृत्वक अभाव मे मिथिलाक जन-मानसक मनोबल टूटि गेलेक अछि ओकर सौर्य आ सामर्थ्य छिड़िया गेलेक अछि – आवश्यकता छेक टूटल मनोबल कें जोड़बाक ··· ··· छिड़िआसल सौर्य आर सामर्थ्य कें बटोरि कऽ एकत्रित करबाक आवश्यकता छेक मैथिल कें मिथिला राज्यक सब्जबाग देखा कऽ 'वोट' बटोरऽवाला महापुरुष सभक तिरस्कार करबाक – स्खलित राजनीतिज्ञ द्वारा शासन मे पुनः प्रवेशक लेल मैथिल जनताक समक्ष पसारल माया जाल कें छिन्न-भिन्न करबाक।

मुदा ई कार्य सभ के करत? मैथिल समाज फोंफ काटि रहल अछि। राजनीतिक सभ भ्रष्ट भऽ गेल छथि!! राजनीतिक दल सभ मात्र शासन हथिएबाक प्रयास मे व्यस्त अछि, बुद्धिजीवी वर्ग अलहदा अलहदा गोल बना एक दोसरा कें पछाड़बाक दाव पेंच लेखा मे व्यस्त अछि ··· ··· अन्ततः एकर निदान की???

देशक आधुनिक परिवेश मे आर्थिक, राजनैतिक वा कोनो प्रकारक समस्याक समाधान सरकार द्वारा तावत धरि नहि केल जाइत छेक यावत् धरि समस्या सभकें संगठित भऽ क्रमबद्ध रूपें सरकारक समक्ष नहि राखल जाइत छेक —सरकार पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपें दबाव नहि देल जाइत छेक। आई द्रष्टव्य अछि जे एहि सब कायक निमित्त जनता कें इच्छापूर्वक वा अनिच्छा सं कोनो ने कोनो राजनीतिक दल पर निर्भर करहि पड़ैत छेक कारण राजनीतिक दल सभ एहि सभक लेल प्रारंगत संगठन कहल जाइत छेक—सक्षम होइत छेक। भारतीय राजनीति मे राजनैतिक दल सभक छवि यद्यपि विकृति भऽ गेलेक अछि तथापि ई सभ कार्य ओकरें सभक माध्यमे भऽ रहलेक अछि। तँ, हमरा सभकें अपन समस्याक प्रति देलगेल सरकारी आश्वासनक पूर्ति लेल भाइ ने कालिह, कोनो ने कोनो दलक शरण मे जाइयें पड़त वा कोनो एहन राजनैतिक दलक संगठन करय पड़त जकरा लेल मिथिला मैथिल मैथिलीक समस्या सर्वोपरि होइक। देशक प्रतिष्ठित राजनैतिक पार्टी 'कांग्रेस' सँ कोनो प्रकारक आशा करब व्यर्थ हैत खाहें ओ इन्दिराजीक कॉंग्रेस होति वा जगजीवनजीक वा अन्य किनको क। लोकदल — चौधरी चरण सिंहक व्यक्तिपरक नीति सँ आक्रांत भऽ छटपटा रहलेक अछि भारतीय जनता पार्टी अटल बिहारीजीक चरणपादुकाक परिक्रमा कऽ रहलेक अछि जनता पार्टी अपने भीतरका ओझराहटि आ ससरफानी मे फँसल प्राण वायुक लेल प्रणायाम कऽ रहलेक अछि तखन बाँचल बामपंथी पार्टी सभ. से भारतीय साम्यवादी पार्टी (सी॰पी॰आइ॰) के घृणित चरित्र देखि लोक सभकें आब साम्यवादी विचार धारा सँ सेहो अनाशक्ति उत्पन्न होमय लगलेक अछि – तथापि दू एकटा एहन बामपंथी पार्टी सभ छेक जे निष्ठापूर्वक अपन कार्य करबाक प्रयास करेत छेक—जकरा जन समर्थन भेटैक तऽ किछु आशा ओकरा सँ कहल जा सकेछ। तें एहन विषक परिस्थिति मे साकांक्ष भय जं हम सभ कोनो एहन पार्टी विशेषक चुनाव कऽली तथा ओकर संग दियेक तँ हमरा सभ कें बहुत किछु सफलता भेट सकेछ। मिथिलाक जनमानस कें झकझोड़ि कऽ उठाबऽ मे, मिथिलाक छात्र समुदाय कें जगाबऽ मे जँ हमसब निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठावान पार्टी कें सहयोग करियेक तं एकल कार्य आर जल्दी भऽ सकैत अछि मुदा ई सब करबा सँ पूर्व हमरा सभकें एहि बातक खेयाल सतत् राखए पड़त जे हमर सभक चुनाव

प्रसंगवश

– घनचक्र

मात्र अपना समक भारते टा मे नहि, अपितु संपूर्ण विश्व मे जतऽ-जतऽ शासनक लेल जनतांत्रिक पद्धति कें स्वीकार कएल गेलक अछि, ओतऽ वृहत स्तर पर दू टा चीज समान रूपें परिलक्षित होइत छैक – जनता द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रकारक 'मांग' आर सरकार द्वारा निःशोक रूपें देल गेल किसिम किसिमक आश्वासन। परिणामक तुलना कएला पर कतहु कम-बेसी भने भऽ सकैछ मुदा 'मांग'क 'स्तर' आ सरकारी 'आश्वासन'क 'प्रकृति' मे सर्वत्र समानता भेटत। जनताक मांग पर सरकारी, आश्वासनक समीकरण के हल करबा मे लागल, प्रशासन-तंत्र सभठाँ व्यस्त देखबा मे आओत मुदा समीकरणक दूनू पक्ष मे मात्र संख्येक वृद्धि टा होइत देखल गेलैक अछि, आर किछु नहि। ई 'मांग' आर 'आश्वासन'क चोरा-नुकी कोनो नव वस्तु वा घटना नहि छियैक वरन् लागिके सँ चल आबि रहलैक अछि परन्तु एहि मे एकटा बात तथ्यपरक छैक, ओ ई जे अपाहिज / असमर्थक मांगक लेल देल गेल आश्वासनक निश्तारा कें लक्ष्य कऽ देत छैक तँ ओ दैतखिल्ली पर उतरि अबैत छैक आर तखन ओकरा जे किछु प्राप्त भऽ जाउक (कुकुरक फाड़ा इसरूप) ओ ओहि मे तृप्तिक अनुभव करऽ लगैत छैक वा दुतकारि देल गेला पर अपन मांगरि सटका सघरि जाइत छैक मुदा समर्थ एवं सक्षमक औचित्यपूर्ण मांगक निमित्त देल गेल आश्वासनक अवहेलनाक फलस्वरूप स्थिति विस्फोटक रूप धारण कर लैत छैक—कटो कुरुक्षेत्र मे स्थूल-रक्त प्रारम्भ भऽ जाइत छैक, ई एकटा ऐतिहासिक तथ्य थिक जकरा नकारल नहि जा सकैत अछि। ओना एहि तथ्य के सेहो अस्वीकार नहि कैल जा सकैछ जे अपाहिज / असमर्थक सभटा मांग नाजायजे होइत छैक वा ओकर कोनो औचित्ये नहि रहैत छैक वरन् सरकार एवं प्रशासन-तंत्र अपाहिज / असमर्थ लोक सभक चरित्र के चीन्हने रहैत छैक तें ओकरा सभक जायजो मांग कें लटका दैत छैक—ओकर निमित्त देल गेल आश्वासन पर ध्यान नहि देत छैक—ने कहियो ध्यान देबाक आने देतैक।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य मे जँ हम सभ अपन-अपन स्थितिक पर्यवेक्षण करी तँ पलक हेतु ई निर्णय करबाक लेल प्रायः सभकें थमकि जाय पड़त जे वस्तुतः हम सभ कोन गोल सँ सम्बन्धित छी? अर्थात् असमर्थ / अपाहिजक गोल सँ वा समर्थ/सक्षमक गोल सँ? ओना हमरा जनैत मैथिल तँ असमर्थ / अपाहिज भइये नहि सकैत अछि ??????? आ जँ हम सभ दोसर गोल सँ सम्बन्धित छी अर्थात् अपना कें सक्षम / समर्थ बुझैत छी तँ मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक लेल न्यायोचित एवं औचित्यपूर्ण मांगक एहन भीषण उपेक्षा किएक भऽ रहल अछि? हम सभ भकियाओल किएक जा रहल छी?? एहि तथ्यक अन्वेषणक लेल हमरा सभ कें सभ सँ पहिने अपन-अपन आत्म निरीक्षण (Self Introspection) करऽ पड़त पश्चात् अपन मांगक औचित्यक विश्लेषण करऽ पड़त आर विफलता अवफलताक कारण ताकऽ पड़त।

एहि तथ्य कें अस्वीकार नहि कैल जा सकैछ जे अपना कें जागरूक कहनिहार मैथिल समाजक नब्बे सँ पंचानबे प्रतिशत मैथिल सिद्ध नहि भऽ सकैत छथि। अत-एव, हुनका लोकनिक 'मांग' मे हुनका लोकनिक निहित स्वार्थ; स्व-प्रचारक आकांक्षा एवं स्वयं कें दोसरा पर आरोपित करबाक अतिरिक्त आर की भऽ सकैछ। हम अपन व्यक्तिगत अनुभवक आधार पर ई कहबाक साहस कऽ सकैत छी जे मिथिला-मैथिल आर मैथिलीक इएह समुदाय अछि जे मुखौटा लगा कऽ जीवि रहल अछि— ई समुदाय मैथिल जनताक सभ वर्ग मे विद्यमान अछि चाहे ओ कृषक समुदाय हो, श्रमजीवी हो, चाकरी पेशाक वर्ग हो; वणिक सम्प्रदाय हो; राजपुरुष वा राजनीतिज्ञ हो। जँ निष्पक्ष भावें देखल जाय तँ आजुक मैथिल समाजक स्वरूप सर्वथा परिवर्तित देखबा मे आओत जे पूर्णतया सुविधावादी एवं अवसरवादी भऽ गेलैक अछि, जकरा अपना पर विश्वास नहि छैक। जकरा अपन माटि-पानि; अपन संस्कृति, अपन भाषा आर लूरि-भासक प्रति स्नेह नहि रहि गेलैक ममत्वक बाते कोन। गाम-घर सँ लऽकऽ महानगर धरि छिड़िआएल मैथिल समाज कें ई महामारी वृहत स्तर पर ग्रसित कएने छैक आ जँ समय रहैत एहि रोगक उपचार नहि कैल गेलैक तँ एकर परिणाम भीषण भऽ सकैछ। गाम-घर चौआ-टहना आउ, कतहु एहि बातक आभास नहि भेटत जे मिथिलाक लेल सेहो कोनो समस्या छैक। खेतिहर सभ कृषि कार्य मे लीन; मध्यम वर्गीय समाज मामिला-मोकदमा मे बाझल; चाकरी पेशा क्लासभ अपने मे अलमस्त; वणिक-व्यापारी समाजक लेल नोन-तेलक भाव मे उतार-चढ़ावक अतिरिक्त कोनो संसारे ने छैक; शिक्षक-छात्र कें सरकारी आज्ञाक पालन / उल्लघन मे लागल अपना भाषा मे बातो करबाक लेल ककरो पलखैत नहि !! ओ तऽ धन्य अछि मिथिलाक स्त्रीगण समाज जे एखनो धरि मैथिली आ मिथिलाक लोक कला कें जिओने अछि !! सौंसे मिथिला घौआ आउ, कतहु कोनो समस्याक चर्च नहि भेटत मुदा तैयो मैथिलीक जे पत्र-पत्रिका अछि ओहि सभ सँ ज्ञात होइछ जे 'समस्या' मिथिलाक पर्यायवाची शब्द बनि गेलैक अछि। अन्यान्य भाषाक पत्र-पत्रिका सभ मे सेहो यदा-कदा एहि तरहक समाचार पढ़बाक लेल भेटि सकैछ। प्रश्न उठैछ जे मिथिलाक लेल जखन कोनो प्रकारक समस्ये नहि, मैथिलक लेल जखन एकर कोनो औचित्ये नहि ··· ····· ····· ··· अपन माटि-पानि सँ जखन ककरो मोहे नहि ····· अपन मातृभाषा सं जखन ककरो अनुरागे नहि तं ई समस्याक प्रति जिज्ञासा भाव की? ई जिज्ञासु लोकनि के ?? हिनका लोकनि के चीन्हब आवश्यके नहि अनिवार्य बुझबाक चाही।

हमर कहबाक आशय ई कथमपि नहि जे हमरा सभक समक्ष कोनो प्रकारक समस्या नहि अछि। घर सँ बाहर धरि विभिन्न प्रकारक समस्या सब सुरसा जकाँ मुँह बौने ठाढ़ अछि। भारत सन अर्द्ध विकसित देश मे समस्या आर अभाव नहि रहतैक तँ आर कतऽ रहतैक — आ जतऽ धरि मिथिलाक प्रश्न अछि ओतऽ समस्या आर अभाव नहि रहबाक तँ प्रश्ने नहि रहैत छैक परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे की वस्तुतः मैथिल सम्प्रदाय कें अपन समस्या आर अभावक पूरा ज्ञान छैक? की मिथिलाक जनता कें ई बात ज्ञात छैक जे ओकरा सभक सब सँ पैघ समस्या की छियैक? कोन प्रकारक अभाव ओकरा सभक जीवन मे व्याप्त छैक जाहि लेल सरकारक समक्ष 'मांग' राखल जा सकैछ? अभाव आर समस्याक संगे सटल रहैत छैक 'मांग'' (Demands) जकर समुचित ज्ञान मांग केनिहार के रहैत छैक जे ओकरा सभकें एक जुट भऽ अपन दल नायक चुनबाक लेल प्रेरित करैत छैक। आर दल-नायक ओहि अभाव-ग्रस्त, समस्याग्रस्त समाज कें शिक्षा बोध दैत छैक—युद्ध-नितिक निर्धारण करैत छैक। सरकारक समक्ष क्रमवद्ध रूपें 'मांग' रखैत छैक जे व्यक्तिपरक नहि भऽ स्वभावतः समष्टिक क कल्याणक निमित्त होइत छैक। आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सरकारके कतहुँ भिड़रवालाक स मना करऽ पड़ैत छैक तँ कतहूँ लालडँगाक। एहि परिप्रेक्ष्य मे जं अपन मिथिला क्षेत्रक 'मांग' पर विचार करी तं देखबा मे आओत जे मिथिलाक जन समुदाय कें अपन 'अभाव' आर समस्याक समुचित जानकारी नहि छैक, उचित ज्ञान नहि छैक अर्थात् जे अभावग्रस्त अछि ओकरा एहि बातक कोनो चिन्ता नहि छैक जे ओ अभावग्रस्त अछि वरन् एहि प्रकारक अभावग्रस्तता आर समस्यादिकें ओ अपन नियति मानि नेने अछि। मिथिलाक मुख्य जनता कें अपन अभाव आर समस्याक प्रति कोनो प्रकारक चिन्ता नहि छैक आर ओकरा एहि अनभिज्ञता (Ignorance) कें अपन स्वार्थसाधनक आधार बना रहल छैक किछु गनल-गुँथल राजनीतिज्ञ, राजपुरुष, किछु मध्यमवर्गीय तथा कथित जागरूक लोक किछ साहित्य सेवी आर किछ एहिप्रकारक चलता-पुर्जा लोक। किछु स्वार्थी तत्व द्वारा क्रान्तिक नारा सतत देलजाय रहलैक अछि मुदा ओ कतहु जोर नहि पकड़ि रहलैक अछि आने पकड़तैक कारण अधिकांश मैथिल कें एहि स्वार्थी तत्व सभक दुरभिसंधिक ज्ञान भऽ गेलैक अछि किछु बौद्धिक वर्ग एवं किछु साहित्यकारक चेतौनी पर ओ सुगबुगायल अछि। तँ मिथिला के एकटा पृथक राज्य बनेबाक मृगमरीचिका देखाओल जाउक वा मैथिली के बिहारक द्वितीय राज-भाषा बनेबाक आन्दोलनक आह्वान कएल जाउक वा मिथिला कें औद्योगिक परिवेश दिएबाक लेल क्रान्तिक बिगुल बजाओल जाउक, मैथिल समाज तावत्धरि नहि जागत यावत् धरि ओकरा ओकर 'समस्या' आ 'अभावक' ज्ञान नहि कराओल जाइत छैक, एहि प्रकारक आन्दोलन सँ समवद्ध स्वार्थी तत्व सभकें निष्कासित नहि कएल जाइत छैक। मुदा एहि समस्याक समाधान हैब ओतेक सरल नहि। हमरा सभक समक्ष सभसँ पैघ समस्या अछि नेतृत्वक — सफल नेतृत्वक अभाव मे मिथिलाक जन-मानसक मनोबल टूटि गेलैक अछि ओकर सौर्य आ सामर्थ्य छिड़िया गेलैक अछि – आवश्यकता छैक टूटल मनोबल कें जोड़बाक ···· ···· छिड़िआयल सौर्य आर सामर्थ्य कें बटोरि कऽ एकत्रित करबाक आवश्यकता छैक मैथिल कें मिथिला राज्यक सब्जबाग देखा कऽ 'वोट' बटोरऽवाला महा-पुरुष सभक तिरस्कार करबाक – स्खलित राजनीतिज्ञ द्वारा शासन मे पुनः प्रवेशाक लेल मैथिल जनताक समक्ष पसारल माया जाल कें छिन्न-भिन्न करबाक।

मुदा ई कार्य सभ के करत?, मैथिल समाज फोंफ काटि रहल अछि। राजनीतिक सभ भ्रष्ट भऽ गेल छथि !! राजनीतिक दल सभ मात्र शासन हथिएबाक प्रयास मे व्यस्त अछि, बुद्धिजीवी वर्ग अलहदा अलहदा गोल बना एक दोसरा कें पछाड़बाक दाव पेँच चलेबा मे व्यस्त अछि ··· अन्ततः एकर निदान की ???

देशक आधुनिक परिवेश मे आर्थिक, राजनैतिक वा कोनो प्रकारक समस्याक समाधान सरकार द्वारा ताबत धरि नहि कैल जाइत छैक यावत् धरि समस्या सभकें संगठित भऽ क्रमबद्ध रूपें सरकारक समक्ष नहि राखल जाइत छैक —सरकार पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपें दबाव नहि देल जाइत छैक। आ ई द्रष्टव्य अछि जे एहि सब कार्यक निमित्त जनता कें इच्छापूर्वक वा अनिच्छा सँ कोनो ने कोनो राजनीतिक दल पर निर्भर करहि पड़ैत छैक कारण राज-नीतिक दल सभ एहि सभक लेल पारंगत संगठन कहल जाइत छैक—सक्षम होइत छैक। भारतीय राजनीति मे राजनैतिक दल सभक छवि यद्यपि विकृति भऽ गेलैक अछि तथापि ई सभ कार्य ओकरें सभक माध्यमे भऽ रहलैक अछि। तेँ, हमरा सभकें अपन समस्याक प्रति देलगेल सरकारी आश्वासनक पूर्ति लेल आइ ने काल्हि, कोनो ने कोनो दलक शरण मे जाइये पड़त वा कोनो एहन राजनैतिक दलक संगठन करय पड़त जकरा लेल मिथिला मैथिल मैथिलीक समस्या सर्वोपरि होइक। देशक प्रतिष्ठित राजनैतिक पार्टी 'कांग्रेस' सँ कोनो प्रकारक आशा करब व्यर्थ हैत चाहें ओ इन्दिराजीक कॉंग्रेस होनि वा जगजीवनजीक वा अन्य किनको क। लोकदल – चौधरी चरण सिंहक व्यक्तिपरक नीति सँ आक्रांत भऽ छटपटा रहलैक अछि भारतीय जनता पार्टी अटल बिहारीजीक चरणपादुकाक परिक्रमा कऽ रहलैक अछि जनता पार्टी अपने भीतुक्का ओझराहटि आ ससरफानी मे फँसल प्राण वायुक लेल प्रणायाम कऽ रहलैक अछि तखन बाँचल वामपंथी पार्टी सभ मे भारतीय साम्यवादी पार्टी (सी॰ पी॰ आइ॰) के घृणित चरित्र देखि लोक सभकें आब साम्यवादी विचार धारा सँ सेहो अनासक्ति उत्पन्न होमय लगलैक अछि – तथापि दू-एकटा एहन वामपंथी पार्टी सभ छैक जे निष्ठापूर्वक अपन कार्य करबाक प्रयास करैत छैक—जकरा जन समर्थन भेटैक तऽ किछु आशा ओकरा सँ कएल जा सकैछ। तेँ एहन विषक परिस्थिति मे साकांक्ष भय जं हम सभ कोनो एहन पार्टी विशेषक चुनाव कऽली तथा ओकर संग दियैक तँ हमरा सभ कें बहुत किछु सफलता भेट सकैछ। मिथिलाक जनमानस कें झकझोड़ि कऽ उठाबऽ मे, मिथिलाक छात्र समुदाय कें जगाबऽ मे जँ हमसब निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठावान पार्टी कें सहयोग करियैक तं एकछ कार्य आर जल्दी भऽ सकैत अछि मुदा इ सब करबा सँ पूर्व हमरा सभकें एहि बातक खेयाल सतत् राखए पड़त जे हमर सभक चुनाव

मैथिला राज्य....... ....

लोक कोनो प्रखण्ड कोनो जिला अथवा कोनो राज्यक विकास लेल ने कहियो बाजल आने बाजऽ चाहैत अछि।

एहेन स्वार्थांध जनताक संगठन नहि भऽ सकैत अछि।

एहेन लोभातुर जनताक बात पटना आ दिल्लीक छोटका नेता सभ किएक सुनैत छथि ? ओ अपन निर्वाचन-क्षेत्र कें 'हाउ' बुझैत छथि। बिना काज कयने ओ चुनाव जीतऽ चाहैत छथि। दस-बीसटा भोटक ठीकेदार कें ओ मिला कऽ राखऽ चाहैत छथि जे हुनक क्षेत्र मे जयकार करैत रहैन।

हमरा ओहि ठामक नेता लोकनि मिथिलाक नेता बनियो ने सकैत छथि। ओ अपन निर्वाचन क्षेत्रक नेता छथि आ ओकरे नेता बनऽ रहल चाहैत छथि।

अपना ओहि ठामक नेता लोकनि अपन चुनाव क्षेत्र टाकें देश राज्य, जिला-सरकार बुझैत छथि। ओतबे दूर ओ पक्की सड़क बिजली आ पुलक बात करैत छथि।

जे सियरी-बख्तियारपुरक नेता छथि, ओ जयनगरक बात नहि सोचैत छथि। जे पंडौलक नेता छथि, से बाँकाक बात नहि सोचैत छथि।

अपना-अपना निर्वाचन क्षेत्रमे दही पर चीनी परसनिहार नेता मिथिलांचलक बात करैत छथि, तँ लगैत अछि जे ओ ठकैत छथि आ कोनो मनोविकृति क कारणो बड़-बड़ा रहल छथि।

ई लोकनि एम० एल० ए० क भोट जीतबा लेल जनताक खुशामद करैत छथि, बाकी बात लेल हिनका लेल जनताक कोनो मोजर नहि अछि।

भोट जीतब आ तकर बादक काज लेल ई लोकनि जगदम्बाक कृपा पर अवलम्बित छथि, योग-टोन आ भाग्य पर आश्रित छथि।

जतऽ नेताक दृष्टि एतेक एकांगी हो ततऽ मिथिलांचलक बात करब पाखंड बुझाइत अछि। स्वतंत्रता भेटलाक एतेक बरखक बादो मिथिलांचलक विकास नहि भेल अछि आ ने ताहि दिशामे कोनो प्रकारक सूर-सार देखबा मे अबैत अछि।

एखन दिल्ली दूर अछि।

बिना जागरण आ संगठन कयने ई दिल्ली एहिना दूर रहत।

बालगीत

करिया झुम्मरि खेलै छी
ढोल पटापट मारै छी
लीख पटापट मारै छी
शोषित पीड़ए जे मनुक्ख के
तकरे मारे जारै छी॥

एके धरती सभतरि बहिना
बाँटल कहाँ अकास छइ
एके चान सुरुज छइ तहिना
एके बहै बसात छइ
भेद-भाव के बात करै जे
तकरे मारै-जारै छी॥

इर्षा-द्वेष हटाबै छी
घृणा-विभेद मेटाबै छी
बुद्धि-विवेकक दीप लेसि हम
प्रेमक ज्योति पसारै छी॥

—राम लोचन ठाकुर

मैथिली पोथी आ पत्रिका कीनू आ पढ़ू

		मूल्य
१	इतिहासहंता रामलोचन ठाकुर	२/४ टाका
२.	बेतालकथा—कुमारेश काश्यप	४ ,,
३.	प्रतिध्वनि (अ०) रामलोचन ठाकुर	४ ,,
४	जादूगर रामलोचन ठाकुर	५ ,,
५.	मैथिली लोककथा रामलोचन ठाकुर	५ ,,
६.	अर्द्धनारीश्वर—मणिपद्म	२५ ,,
७	मुन्शी रघुनन्दन दास : व्यक्तितत्व ओ कृतित्व (संकलन)	६ ,,
८	निष्कलंक - जनार्दन झा	३ ,,
९.	जुआएल कनकनी—महेन्द्र मलंगिया	३ ,,

अरुणोदय प्रकाशन सं भेटि सकैछ

शिक्षा मंत्रीक नाम पत्र

सेवा मे,
प्रो० श्री नागेन्द्र झा,
शिक्षा मन्त्री,
बिहार सरकार, पटना।

महाशय,

अपने के ज्ञाते होएत जे प्राथमिक स्तर धरि मातृभाषाक माध्यम सं शिक्षाक अधिकार संविधान स्वीकृत छैक आ ई अधिकार भारतीय नागरिकक मौलिक अधिकारक अन्तर्गत अबैत छैक। खेदक बात जे सैंतीस वर्ख देश स्वाधीन भेलाक उपरान्तो बिहार सरकारक मैथिली विरोधी नीतिक कारणें मैथिली भाषी छात्र अपन एहि प्रमुख आ पवित्र अधिकार सँ वंचित राखल गेल अछि। एकरा कागजी मान्यता भनहि देलगेल होइक परञ्च वास्तविकता इएह छैक जे मात्र पहिल आ दोसर वर्गक पोथी मैथिली मे उपलब्ध छैक दोसर वर्ग धरि मैथिली आ तेसर वर्ग सँ हिन्दीक माध्यमे पढ़नाइ जे कतेक असुविधाजनक ओ अव्यावहारिक छैक से कहबाक प्रयोजन नहि। स्वभावतः कोनो नेता आ तकर अभिभावक मैथिली माध्यम कें नहि चूनैत अछि। तें आवश्यक छैक जे अनतिविलम्ब वर्ग आठ धरिक समस्त विषयक पोथी मैथिली मे उपलब्ध कराओल जाइक। अपने स्वयं मैथिली भाषा छी, मिथिलांचलक प्रतिनिधि छी तथा ई विभागो अहींक अधीन अछि तें निवेदन जे शीघ्र एकर व्यवस्था कराओल जाय। एहि संदर्भ मे हम अपने कें स्मरण दिआबय चाहैत छी जे नवम्बर १९८० मे जखन हमरा लोकनि पटना मे अपनेक निवासस्थान पर अपने सं भेंट केने रही त अपने अपन असमर्थता देखओने रही परञ्च से असमर्थता त आइ नहिञे अछि, वरन एहि विभागक अपने सर्वेसर्वा छी।

ज्ञातव्य जे एहि सन्दर्भ मे हम राष्ट्रपति कें सेहो पत्र लिखने छलियनि संविधानक सातम संशोधन (१९५६) द्वारा प्रदत्त विशेष अधिकार क अन्तर्गत बिहार सरकार कें निर्देश देबाक आग्रह केने छलियनि। जेना कि हमरा ज्ञाप संख्या ११०/रा० दिनांक २२ जून ८४ द्वारा सूचित कएल गेलए उचित करबाइ हेतु राष्ट्रपति सचिवालय बिहार सरकार कें लिखि चुकल छैक (पत्र संख्या—३९५-पी १११३११८४ दिनांक २४-१-८४)।

आशा अछि जे अपने यथा शिघ्र एहि सन्दर्भ मे उचित कार्य क साढ़े तीन कोटि मैथिली भाषीक दीर्घ आकांक्षाक पूर्ति क सकब।

जय मैथिली।
भवदीय—
राम लोचन ठाकुर
संयोजक
मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता

लेखा-जोखा.......

एक परिवारक सभ बच्चा एके रंग नहि होइत छैक। वंशानुगत कोनो चीज होइत छैक से हम नहि मानैत छी आ ने संस्कार सन वायवीय भावना में हमरा कहियो विश्वास भेल।

हजूर माइ-बाप, हम कबूल करैत छी जे हमर ज्ञान वा जानकारीक परीधि बड़ छोट अछि, तें जे अतीन्द्रिय छैक, तकरा सम्बन्ध मे हमर कोनो वक्तव्य नहि। ज्ञानक अथाह सागरक असंख्य लहरि छैक। के कते जानि पओलक तकरे पता कतेक के छैक ? खाली एक बातक पता अछि हमरा कि हमर बाल मनपर जे प्रश्न अंकित भेल छल से आइयो अनुत्तरित अछि। हमर पहिल रचना शाप ग्रस्त अहिल्या छल। ओकरा संग छल केने छलथिन। गौतम इन्द्र कें शाप देने छलथिन से त बुझय जोग होइछ परञ्च अहिल्या निरपराध होइतहुँ शाप ग्रस्त भेलीह। एना किएक माइ-बाप ? ई छलनामयी व्यवस्था आजुक देन नहि युगों सं एहिना होइत एलै-ए। जे शोषित अइ तकर आर शोषण होइत छैक। जे शासक अइ ओ दुष्चक्र चलबैए आ ओकर प्रतिद्वन्द्वी ओकर दमनक अभियान। किन्तु निरपराध अहिल्या, शासक पक्ष आ विपक्षक दुष्चक्रक बीच निरन्तर पिसाइत रहैछ। कि अहां के एहन नहि बुझि पड़ैछ, हजूर माइ-बाप ?

※

कह लोचन कविराय

माइक, हत्या करैत अछि, कंठ मोकि कए पुत
श्राद्ध करए पुनि वैदिकी, कनियों नहि अजगुत
कनियों नहि अजगुत करए पुनि भोज जबारी
मुंह देखि कें दान, करैत छि लोटा-थारी
कह लोचन कविराय विलक्षण बुद्धि जगाइक
पाचक भेल मघाइ, सधल सभ कर्जा माइक

अरुणोदय प्रकाशन ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स ३२ बी, वृन्दावन वैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—१ अंक—१ अक्टूबर, १९८१ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

बालचन्द विज्जावइ भाषा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ
देसिल बयना सभ जन मिट्ठा
तें तइसन जम्पओ अवहट्ठा

— विद्यापति

आइ स ६ सए वर्ख पूर्व, जखन कि भाषा चेतना नामक वस्तु कम सं कम भारत मे नहि छल, ताइ समय मिथिलाक सन्तान कविपति विद्यापतिक ई घोषणा निश्चिते हमरा लोकनिक लेल गर्वक विषय थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे आगा चलि कें सूर तुलसी आदि विभिन्न कवि कें अपन भाषा मे काव्य रचनाक प्रेरणा एतहि सं प्राप्त भेलनि।

विद्यापति जाइ दृढ़ता आ विश्वासक संग ई घोषणा केलनि, तहिना एकर पालन सेहो आ तकरे परिणाम भेल जे मिथिलाक भाषा-साहित्य चन्द्रमाक आलोकहि जकां देश-कालक सीमाक अतिक्रमण करबा मे सफल भेल, मैथिली मे काव्य रचना परम्परा नेपाल सं आसाम धरि आ उड़ीसा सं बंगाल धरि बनि गेल, जकर शेष कड़ीक रूप मे बीसम शताब्दीक बंगालक 'भानुसिंदेर पदावली' थिक।

ई जनकवि विद्यापतिक जनवादी चेतनाक परिणाम छल जे जनगणक कथा व्यथाक चर्चा साहित्य मे भेल, जनभाषा साहित्यिक भाषाक गरिमा प्राप्त केलक। इएह कारण छल जे विद्यापति जनगणक कंठहार बनि गेलाह, हुनक रचना मात्र हमरधार्मिक सांस्कृतिक नहि दैनन्दिन जीवनक अंग बनि गेल। ई विद्यापतिक लेखनी शक्तिक फल छल जे 'बहलोल'क सैनिक शक्ति कें परास्त केलक आ मिथिलाक स्वाधीनताक रक्षा केलक। तें विद्यापति मैथिलीक पर्याय बनि गेल छथि।

खेदक विषय जे आइ पुनः मिथिलाक माथ पर दुर्दिनक मेघ मरड़ा रहल-ए। मैथिली पर राहुग्रस्त भेल छथि। मैथिल सन्तान अवचेतनावस्था मे पड़ल अछि, साहित्यकार (अपवाद कें छोड़ि) श्वानवृत्ति मे लागल छथि आ शिवसिंहक स्थान पर कतेको 'बहलोल' जनमि गेल ए। एहना अवस्था मे खगता अछि एक नहि अनेको विद्यापतिक जे नवचेतनाक शंख फूकि सकथि, भैरवीक आराधना क पुरुषक निर्माण क सकथि, बहलोलक लोल दागि मैथिली कें राहुमुक्त क सकथि आ आकाश के मेघमुक्त क नव आलोक पसारि सकथि। 'देसिल बयना' हुनके स्वागतार्थ प्रतीक्षारत अछि।

शक्ति-पूजा

भगवती दुर्गा शक्तिक प्रतीक छथि। आसुरी शक्ति प्रवृत्तिक विनाश आ दैवी शक्ति प्रवृत्तिक प्रतिष्ठाक निमितहिं हिनक प्रादुर्भाव भेल छल। ई अपन कर्म मे सफलीभूत भेल छलीह आ तें युगों सं हमरा लोकनि उत्सव मनबैत आबि रहल छी। शक्ति स्वरूपा भगवतीक पूजार्चना करैत आबि रहल छी।

भगवती दुर्गा मातृरूपा छथि। माइक रूप मे हिनक पूजा-ध्यान हमरा लोकनि करैत आबि रहल छी। मां अपन नेना कें सिनेह करैत छेक, शक्ति-सदबुद्धि प्रदान करैत छेक, हमरो लोकनि तकर आकांक्षा रखैत छी।

आब प्रश्न उठैए जेकि हमरा लोकनि एहि पूजाक अधिकारी छी? पूजाक निमित्त जे पवित्रता, दृढ़ता, सत्यनिष्ठा आ समर्पणक भावना आवश्यक—से हमरा लोकनि मे अइ? रामायणक अनुसार मैथिली कें रावण अपहरण क क ल गेल छल। मर्यादा पुरुषोत्तम राम प्रण ठनलनि जे एहि काजक निमित्त रावण कें उचित शिक्षा द क ओ मैथिली कें आपस अनताह। रामायणक कथा संग महाकवि निरालाक 'राम की शक्ति पूजा' बला कथा जोड़ि दी त आर नीक होएत। तदनुसार राम अपन प्रण कें पूरा करबाक निमित्त शक्तिक पूजा केलनि, पूजाक समय हुनक फुलडाली सं एगो फूल लिपत्ता भ गेल, जकर अर्थ भेल पूजा भंग भेनाई वा अपूर्ण रहि गेनाइ। रामचन्द्र कनिओ विचलित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरलाल जे ओ कमलनेत्र छथि आ तें तुरन्त अपन आंखि

****

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

—रामलोचन ठाकुर

****

बाढ़ि : अइ नदिया के यैह बेबहार

मिथिला मे एक बड़ प्रचलित कहबी छेक जे 'दैवो दुर्बल घातकः। कारण मिथिला एकर भुक्तभोगी अछि। बेर बेरक प्राकृतिक विपर्यय एकर रीढ़ कमजोर कऽ देने छेक। भाग्यवादी मिथिला आर बेसी भाग्यवादी बनल जा रहल अछि। एहि वर्ष पहिने रौदीक प्रकोप छलैक आ समस्त मिथिला धू धू कऽ जरि रहल छल। खेत सबमे लहलहाइत बीया-बालि जरि गेलैक। घर खाली आ बाहर साफ। जखन वर्षा होमय लगलैक तऽ लोकक मन मे एक उल्लास एलैक आ ओसब अपन सम्पूर्ण शक्ति सं चास-बास मे लागि गेल छल। ठीक एहने समय मे बाढ़ि एलैक आ लोक त्राहि त्राहि करय लागल, ओकरा सामने रोजी-रोटीक समस्या चकभाउर देमय लगलैक।

मिथिलाक भरिसके कोनो एहन अंचल हेतैक जाहिठाम नदी नहि होइक। एहि देशाक प्रायः समस्त ग्रामांचल नदीक परिसर मे बसल अछि। ओना तऽ नदी प्राकृतिक सम्पदा थिक आ खास कऽ ओहि देशाक हेतु जाहिठाम लोक-जीवन कृषि पर आधारित होइक ताहिठाम एकर आर बेसी उपयोगिता आ महत्ता छेक। परंच इहो तहिना सत्य जे सम्पत्तिक संगे विपत्ति सेहो रहैत आयल अछि। सम्पत्तिक सुरक्षा आ उचित उपयोग नहि भऽने विपत्ति कें टारल नहि जा सकैछ। वर्षाकाल मे ई नदी सभ भरि जाइत छेक आ उछलय लगैत छेक आ संगहि ताण्डवनृत्य करय लगैत छेक। ई नृत्य मिथिला वासीक हेतु केहन विनाशकारी भऽ जाइत छेक तकर प्रत्यक्षरूप एखन बहुतो ठाम भेटि सकैत अछि।

मिथिलाक पैघ पैघ नदी मे गंगा, कोशी, कमला, बलान, गंडक, करेह, बागमती आदि अछि। बाढ़ि मे एहि नदी सबहक भूमिका रहैत छेक बाध बोन मे लागल जजात के डूबायब, गाम-घर कें दहायब आ माल-जाल कें भसियायब। कोशी एखनहुँ मिथिलाक लेल अभिशाप बनले अछि। एहि बेरक बाढ़ि सं ओना तऽ समस्त मिथिला प्रभावित भेल अछि मुदा कटिहार, सहरसा, पूर्णिया, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर जिला सभ मे बहुत अधिक एकर विभिषिका रहलैक आ तें सबसं अधिक क्षतियो भेलैक अछि। एहि सं लाखों लोकक जान-मालक क्षति भेलैक अछि आ ओसब आश्रय विहीन भऽ गेल अछि—धीया-पुताक संग लोक नट जकाँ बाटे-घाटे बौआ रहल अछि। अयाचीक सन्तान आइ पावभरि अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रक लेल विकल भऽ रहल अछि। व्यवस्थाक तरफ सं जे अनुदान भेटि रहल छेक तकर कथे कोन? ई तऽ ओतुका लोकक दारुण व्यथे गवाही दऽ रहल अछि जे ओकरा सबहक एहि अव्यक्त कष्ट कें दूर करबा मे ई अनुदान कतेक सहायक भऽ सकलैक अछि। अनुदानक विशेषांश अफसरक कोष कें निश्चिते भरलकैक अछि आ अल्पांश ओहि दुःखक समुद्र मे छीटल गेलैक अछि।

बाढ़ि मिथिलाक लेल कोनो नव घटना नहि। नदी-मातृक देश मिथिला अदौए सं एकर कोपभाजन रहल अछि आ तें एहिठामक लोक एहि सं अभ्यस्त भऽ गेल अछि। दोसर उपाइयो ने छेक? सरकारी अवहेलना आ मैथिल जातिक अवचेतना-दूनू एहि लेल समानरूप सं दायी। तें प्रतिवर्ष बाढ़िक ताण्डव लीला होइत छेक। प्रतिवर्ष लोक मरैत अछि, घर आंगन खसैत छेक आ चास-बास भसैत छेक आ एकरे पीठ पर अबैत छेक नाना रंगक रोग ब्याधि। लोक मरैत अछि, घिसियोर कटैत अछि। कतय छेक ओकर एहि सम्स्याक निदान? समाधान के करतैक? देश तऽ आजाद भेल मुदा ३३ वर्षक बादो एहिठामक ई समस्या समस्ये बनल रहि गेलैक। किएक?

— जयदेव लाभ

कनिओ विचलित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरलाह जें ओ कमल नेत्र छथि आ तें तुरन्त अपन आंखि बहार कय भगवती पर शेष पुष्पक रूप मे चढ़ेबाक हेतु उद्यत भेलाह। भगवती तेखन प्रकट भेलथिन विजय वर प्रदान केलथिन।

आइ फेर मैथिली अशोक वाटिका मे बन्दिनी छथि आ हम चारि कोटि मैथिल सन्तान चुप-चाप हाथ पर हाथ धेने बैसल छी। कि हमरा लोकनि माइक दूध नहि पीने छी? कि हमरा लोकनिक देह मे शोणित नहि? कि हमरा लोकनि बहिर छी जे बंगला देश, असम, दक्षिण अफ्रिका, फिलीस्ताइन वा आयरलैंडक गर्जन नहि सुनाइ पड़ैए? आ कि हमरा लोकनि नपुंसक छी? आ जं से छी त की अधिकार अइ शक्ति पूजाक? आ जं से नहि छी त आउ—एहि पवित्र आ शुभ अवसर पर हमरा लोकनि अपन मातृभाषाक उद्धारक शपथ ली तेखन शक्ति पूजाक सार्थकता आ उत्सवक उपयोगिता।

गाम सं दूर मिथिलाक मजदूर

कलकत्ताक रिक्सा बाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे श्रमक महत्ता आहिए काल सं बुझल गेल-ए आ मात्र बुझले टा नञि गेल-ए एकरा बड़ पैघ स्थान देल गेले-ए। ई गौरव मिथिले देश कें टा छइ जे माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे लागनि धेने कुनू राजा हरवाहि केने छथि। राजर्षि जनककें दृष्टान्त इतिहास मे अप्रतीम अइ। तें मिथिला धन धान्य सं भरल-पुरल छल। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नञि छल, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल। इएह कारण छइ 'जे' एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छल, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। कें नञि जने-ए जे भारतीय ६ गोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन थिक। पश्चात आबि कें स्थिति बदलि गेलैक। लोक श्रम कें अवलाइ नजरिञे देखय लागल आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक लोकक रूप मे बुझल जाय लागल। श्रमविभाजनक आधार पर बनल समाज व्यवस्थाक स्वस्थ्य-सबल देह मे व्रण बारक गान्ही लागि गेलै। ब्रह्माक कथन जे 'गुण आकर्मक आधार पर हम चारि वर्णक सिरजन कएल ए' बिसरा देल गेल आ तकरा स्थानपर ब्रह्माम मुंह सं ब्राह्मण आ बांहि सं राजपूत आदि बनबाक कथा कें मटि देल गेल राजर्षि जनकक हर जोतबाक काज के नून तेल लगा मिथक बना देल गेल। तथा कथित उंच वर्णक हेतु आब लागनि धेनाइ पाप भ गेलै आ एही-ठाम सं मिथिलाक अधोगतिक इतिहासक आरंभ होइए।

श्रम कें हेय बुझनाइ तथा एहि सं विमुख भेनाइ विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति कें जन्म देछ आ ई प्रवृति पुनः शोषण प्रवृति कें जन्म देए। स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बंटि गेल—शोषक ओ शोषित। एक दिस शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लगलैक त दोसर दिस शोषित श्रमिक वर्गक अभाव यातनाक बीच। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छइ आ धन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नग्न नृत्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या वृद्धि आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानुदिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहुं ओइ मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कएल गेलैक। करबे के करेत ? भूस्वामी अइदी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोसर दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छल। ताइ पर सं रौदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलैक। जीविकाक अन्यान्य साधन रहलैक नञि। एहि यंत्रायुगहुं मे मिथिला मे कलकारखानाक विकास नञि भ सकल। एकरो कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा घृणित राजनीति आ बंचक मिथिलाक राजनेतागण छथि। आजुक राजनीतिक पहिल शर्त होइ छइ जनता कें मुर्ख बनाकए रखनाइ तथा अभाव मे रखनाइ, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक भाषा, ओकर सभ्यता-संस्कृति कें नष्ट क देनाइ। राजनेतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिस श्रमिक वर्ग कें दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि वस्त्र नञि उपलब्ध भ पओलकै। पेटक ज्वाला मे ओ स्वर्ग हुं सं पैघ अपन जननी-जन्मभूमि कें, अपन भाइ-बहिन, पत्नी आ नेना कें परिजन - पुरजन कें तेजि शहर दिस पड़ाएल।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुनू शहर सं बेसी बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अइ। एहिठामक जूट मील हो वा गंजीमील वा छापाखाना सभ ठाम मैथिल श्रमिकक बहुलता छइ। झाका वाला, ठेलावला आ रिक्सावला मे अस्सी प्रतिशत् मैथिल अइ।

रिक्सा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छइ पहिल त साइकिल रिक्सा जे आनोठाम पाओल जाइए परंच दोसर तरहक रिक्सा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइए ओ थिक 'टाना—रिक्सा'। 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल खीचनाइ। एहि मे रिक्शा चालक नहि रिक्सा खिचनिहार होइए। एकर आकृति एनमेन टमटम सन होइत छइ आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुक्ख रहैए—मनुक सन्तान। घोड़ाक गरदनि मे घंटी रहै छइ आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारेत गाड़ी आ बस सं बचेत ओकर संग दौड़त।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिक्शा छइ आस्वभावतः एगारह हजार परिवारक नून-रोटी एही सं चले छइ।

एहि रिक्सा पर बैसत काल प्रायः अपना कें अमानुष सोचवा लेल बाध्य भेल छी। बैसाखक टहाटही दुपहरिया मे जखन सुरुज गोसांइ आगि वोकरे छथि आ नीचा बाटक पीच घमि जाइ छइ तखने खाली देह आ खाली पएरे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौड़वा मे जे की परिश्रम होइ छइ तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ ने क सकैत छी। तहिना अखाढ़ मे जखन मुसलाधार बर्खो होइत रहै छइ बाट पर पानि जमि जाइ छइ आ खाधि-खुधिक पता नहि चलै छइ, आंकड़-पाथर लागि जाइ छइ—जेहन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाएरे चलवी असंभव तेहना स्थिति मे सवारी लय दोड़नाइ क परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ। आ एहन जीतोड़ परिश्रम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छइ। एइ मे दू टाका रिक्सा मालिक कें देमय पड़ै छइ। बांकी मे अपन खेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिआडर।

ओना त छ से तक मे एगो रिक्शा भेटि जाइ छइ, परन्च सेहो बुत्ता एकरा लोकनि कें नहि रहै छइ जे अपन रिक्सा कीनि सकल। दोसर बात जे खाली रिक्सा कीनिते लेला सं त होइ नञि छइ। रस्ता घाटक जे स्थिति छइ ताइ मे सदिखन किछु ने किछु मरम्मति लगलै रहै छइ आ ताइपर सं पुलिसक खर्च आप क छइ। तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा लैनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छइ ? आतें मालिक कें द 'क' जे बचे छइ ताइ मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र सपनाए बनल रहि जाइ छइ। तैया—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, लोरिक सलहेस—श्रम सं विमुख नञि होइछ। ओ श्रमक महत्ता, मां बाप आ परिवारक प्रति अपन कर्त्तव्य कें नीक जकां बुझैए। तें एक टा पांव रोटी आ एक कप चाह पीवि दिनभरि रिक्सा नेने घंटी वजबेत दोड़ेत रहैए।

एमहर बंगाल सरकार बाट जामक बहन्ना क कें बिनु लाइसेंसक रिक्सा कें बन्न करवाक योजना बना रहले ए। कइबाक प्रयोजन नञि जे वास्तव मे जाइ ट्रक-टेम्पूक कारणे आ ट्राफिक पुलिसक बढ़ी ओसूलीक कारणे बाट जाम होइ छइ ताइ पर सरकारक किछु चलि नञि सके छइ आ तें अपन 'पामार'क उपयोग एही असंगठित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अइ। एहि ठाम मात्र पांच हजार रिक्सा कें लाइसेन्स छेक आ बांकी विनु लाइसेन्सक अइ। बंगाल सरकार नव लइसेन्स बनेब नञि अइ। एहि महगीक युग म बेसी दिन एही 'बहरिया' बोझ लेल तैयार नञि अइ सं कारण किएक ने होउ, परन्च एत छइ जे एकर बन्न भ गेने छ हज बेकार बनि जायत। एकरा लोक 'युनियन' (संगठन) नञि छइ। संगठनक प्रहसन भेल रहैक। नेत निश्चिते रिक्सा खिचनिहार नां पड़ा गेले आ प्रदर्शनकारी रिक्सा सभक पुलिस नीक जकां पीटाइ एकरा लोकनिक लेल बजनिहार छइ। फलतः वेकार मजदूर के अ धुरि गेनाइ छोड़ि दोसर कुनू द्वार छइ। परन्च समस्या छइ जे गामे ई सभ की करत ? की खाएत-पी केना गुजर चलते ? कहादन देश भेल छइ आ इहो सभ ताइ अजाद नागरिक छी। संविधान मे लिखल सभ नागरिक समान छइ। सभ कें रंग अधिकार छइ आ एके रंग सुविधा भेटते। ओना इहो नीके से बात एकरा लोकनि कें नञि बुझल एकरा लोकनि कें नञि बुझल छइ जे उन्नति लोकक उन्नति होइ छइ आ सभ ताही लोकक अंश थिक। मुद अवस्से बुझल छइ जे ई सभ बिहारी आ बिहारक मुख मंत्री बाबू श्री जग मिसर छथिन जे एकरे गाम-घरक छथिन। चुनावक समय मे गामे जाइ—छथिन आ गरिबहा लेल म रास की कहांदन करवाक गप्प कहै छ कि से गप्प खाली चुनावेधारी रहै आने सरिपहुं हुनका लग एकरा लोक समस्याक निदानक कुनू योजना छनि !

—मुजतबा अ

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आजुक युग मे सिनेमा कें प्रचार वा लोक शिक्षाक सभ सं सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छैक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीन गोट प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ महगी एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कएकटा सिनेमा बनवो केलकैं अछि आ नीक जकां चललेक अछि। मगही मे सेहो सप्पत खाय लेल सिनेमा बनल छलेक परञ्च सभ सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमहर कएकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परञ्च आइधरि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९७८ मे हमहूँ एहि क्षेत्र मे पदावर्ण कएल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग। ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजेत अछि भारतीय नारीक आदर्श सीत प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि कथ वर्तमान समय मे बड़ बेसी आवश्यकता उपयोगिता छेक। तें हम एहि कथ चयन कएल।

सिनेमा संसारमे यद्यपि हमर प्रथ पदावर्ण छल परञ्च नाट्य-मंचक दीर्घ पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जगतक ख्या तिनामा कलाकर लोकनिक संग सहयो हमरा प्राप्त छल। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे जं ई फिल्म बनि सकल त निश्चिते टक्कर के होइत। प्रमाण मे एकर गीतसभ जे रेकडिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छेक आ गीत रेकडिंगक अतिरिक्त कलाकार-चयन आ दृश्य चयनक काज सेहो शेष क लेल गेल छेक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ जं अर्थ लगाओनि-

शेषांश पृष्ठ ४ पर

गाम सं दूर मिथिलाक मजदूर

कलकत्ताक रिक्सा बाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे श्रमक महत्ता आहिए काल सं बुझल गेल-ए आ मात्र बुझले टा नञि गेल-ए एकरा बड़ पैघ स्थान देल गेलै-ए। ई गौरव मिथिले देश कें टा छइ जे माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे लागनि धेने कुनू राजा हरवाहि केने छथि। राजर्षि जनकक दृष्टान्त इतिहास मे अतीम अइ। तें मिथिला धन धान्य सं भरल-पुरल छल। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नञि छल, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल। इएह कारण छइ 'जे' एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छल, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। कें नञि जने-ए जे भारतीय ६ गोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन थिक। पश्चात आबि कें स्थिति बदलि गेलैक। लोक श्रम कें अवलाइ नजरिञे देखय लागल आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक लोकक रूप मे बुझल जाय लागल। श्रमविभाजनक आधार पर बनल समाज व्यवस्थाक स्वस्थ्य-सबल देह मे व्रण बारक गान्ही लागि गेलै। ब्रह्माक कथन जे 'गुण आकर्मक आधार पर हम चारि वर्णक सिरजन कएल ए' बिसरा देल गेल आ तकरा स्थानपर ब्रह्माम मुंह सं ब्राह्मण आ बांहि सं राजपूत आदि बनबाक कथा कें मटि देल गेल राजर्षि जनकक हर जोत-बाक काज के नून तेल लगा मिथक बना देल गेल। तथा कथित उंच वर्णक हेतु आब लागनि धेनाइ पाप भ गेलै आ एही-ठाम सं मिथिलाक अद्योगतिक इतिहासक आरंभ होइए।

श्रम कें हेय बुझनाइ तथा एहि सं विमुख भेनाइ विलासिता आ संचयक प्रवृति कें जन्म देछ आ ई प्रवृति पुनः शोषण प्रवृति कें जन्म देए। स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बंटि गेल—शोषक ओ शोषित। एक दिस शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लगलैक त दोसर दिस शोषित श्रमिक वर्गक अभाव यातनाक बीच। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छइ आ धन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नग्न नृत्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या वृद्धि आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहुं ओइ मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कएल गेलैक। करबे के करेत ? भूस्वामी अइदी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोसर दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छल। ताइ पर सं रौदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलैक। जीविकाक अन्यान्य साधन रहलैक नञि। एहि यंत्रयुगहुं मे मिथिला मे कलकारखानाक विकास नञि भ सकल। एकरो कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा घृणित राजनीति आ बंचक मिथिलाक राजनेतागण छथि। आजुक राजनीतिक पहिल शर्त होइ छइ जनता कें मुर्ख बना-कए रखनाइ तथा अभाव मे रखनाइ, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक भाषा, ओकर सभ्यता-संस्कृति कें नष्ट क देनाइ। राजनेतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिस श्रमिक वर्ग कें दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि वस्त्र नञि उप-लब्ध भ पओलकै। पेटक ज्वाला मे ओ स्वर्गहुं सं पैघ अपन जननी-जन्मभूमि कें, अपन भाइ-बहिन, पत्नी आ नेना कें परिजन - पुरजन कें तेजि शहर दिस पड़ाएल।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुनू शहर सं बेसी बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अइ। एहिठामक जूट मील हो वा गंजीमील वा छापाखाना सभ ठाम मैथिल श्रमिकक बहुलता छइ। झाका वाला, ठेलावला आ रिक्सावला मे अस्सी प्रतिशत् मैथिल अइ।

रिक्सा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छइ पहिल त साइकिल रिक्सा जे आनोठाम पाओल जाइए परंच दोसर तरहक रिक्सा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइए ओ थिक 'टाना—रिक्सा'। 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल खीचनाइ। एहि मे रिक्सा चालक नहि रिक्सा खिचनि-हार होइए। एकर आकृति एनमेन टमटम सन होइत छइ आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुक्ख रहैए—मनुक सन्तान। घोड़ाक गरदनि मे घंटी रहै छइ आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारेत गाड़ी आ बस सं बचेत ओकर संग दौड़त।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिक्सा छइ आस्वभावतः एगारह हजार परिवारक नून-रोटी एही सं चले छइ।

एहि रिक्सा पर बैसत काल प्रायः अपना कें अमानुष सोचवा लेल बाध्य भेल छी। बैसाखक टहाटही दुपहरिया मे जखन सुरुज गोसांइ आगि बोकरै छथि आ नीचा बाटक पीच घमि जाइ छइ तखने खाली देह आ खाली पएरे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौड़बा मे जे की परिश्रम होइ छइ तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ ने क सकैत छी। तहिना अखाढ़ मे जखन मुसलाधार बर्खा होइत रहै छइ बाट पर पानि जमि जाइ छइ आ खाधि-खुधिक पता नहि चले छइ, आंकड़-पाथर जागि जाइ छइ—जेहन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाएरे चलबी असंभव तेहना स्थिति मे सवारी लय दोड़नाइ क परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ। आ एहन जीतोड़ परि-श्रम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छइ। एइ मे दू टाका रिक्सा मालिक कें देमय पड़े छइ। बांकी मे अपन खेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिआडर।

ओना त छ वे तक मे एगो रिक्सा भेटि जाइ छइ, परञ्च सेहो जुत्ता एकरा लोकनि कें नहि रहै छइ जे अपन रिक्सा कीनि सकल। दोसर बात जे खाली रिक्सा कीनिते लेला सं त होइ नञि छइ। रस्ता घाटक जे स्थिति छइ ताइ मे सदिखन किछु ने किछु मरम्मति लगले रहै छइ आ ताइपर सं पुलिसक खर्च आप क छइ। तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा लेनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छइ ? आतें मालिक कें द 'क' जे बचे छइ ताइ मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र सपनाए बनल रहि जाइ छइ। हेया—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, लोरिक सल्हेस—श्रम सं विमुख नञि होइछ। ओ श्रमक महत्ता, माँ बाप आ परिवारक प्रति अपन कर्त्तव्य कें नीक जकां बुझेए। तें एक टा पांव रोटी आ एक कप चाह पीवि दिनभरि रिक्सा नेने घंटी बजबेत दोड़ेत रहैए।

एमहर बंगाल सरकार बाट जामक बहन्ना क कें बिनु लाइसेंसक रिक्सा कें बन्न करबाक योजना बना रहले ए। कइबाक प्रयोजन नञि जे वास्तव मे जाइ ट्रक-टेम्पूक कारणे आ ट्राफिक पुलिसक बड़ी ओसूलीक कारणे बाट जाम होइ छइ ताइ पर सरकारक किछु चलि नञि सके छइ आ तें अपन 'पामार'क उपयोग एही असंगठित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अइ। एहि ठाम मात्र पांच हजार रिक्सा कें लाइसेन्स छेक आ बांकी बिनु लाइसेन्सक अइ। बंगाल सरकार नव लइसेन्स बनेबाक प नञि अइ। एहि महगीक युग मे ओ बेसी दिन एही 'बहरिया' बोझ कें ढो लेल तेयार नञि अइ सं कारण जे किएक ने होउ, परञ्च एत धरि छइ जे एकर बन्न भ गेने छ हजार बेकार बनि जायत। एकरा लोकनिक 'युनियन' (संगठन) नञि छइ। एक संगठनक प्रहसन भेल रहैक। नेता सभ निश्चिते रिक्सा खिचनिहार नञि छ पड़ा गेले आ प्रदर्शनकारी रिक्सा मज सभक पुलिस नीक जकां पीटाइ केलकै एकरा लोकनिक लेल बजनिहार केओ छइ। फलतः बेकार मजँदूर के अपन गा घुरि गेनाइ छोड़ि दोसर कुनू द्वारा न छइ। परञ्च समस्या छइ जे गामे जा ई सभ की करत ? की खाएत-पीत अ केना गुजर चलते ? कहादन देश अजा भेल छइ आ इहो सभ ताइ अजाद देशक नागरिक छी। संविधान मे लिखल छइ जे सभ नागरिक समान छइ। सभ कें एके रंग अधिकार छइ आ एके रंग सुख-सुविधा भेटते। ओना इहो नीके छइ जे से बात एकरा लोकनि कें नञि बुझल छइ। एकरा लोकनि कें नञि बुझल छइ जे देशक उन्नति लोकक उन्नति होइ छइ आ इहो सभ ताही लोकक अंश थिक। मुदा एते अवश्से बुझल छइ जे ई सभ बिहारी छी आ बिहारक मुख मंत्री बाबू श्री जगन्नाथ मिसर छथिन जे एकरे गाम-घरक लोक छथिन। चुनावक समय मे गामेगाम जाइ—छथिन आ गरिबहा लेल मारिते रास की कहादन करबाक गप्प कहे छथिन कि से गप्प खाली चुनावेधारी रहै आने सरिपहुं हुनका लग एकरा लोकनिक समस्याक निदानक कुनू योजना छनि ?

—मुजतबा अर्ल

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आजुक युग मे सिनेमा कें प्रचार वा लोक शिक्षाक सभ सं सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छेक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीन गोट प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ महगी एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कएकटा सिनेमा बनबो केलकैं अछि आ नीक जकां चललेक अछि। मगही मे सेहो सप्पत खाय लेल सिनेमा बनल छलेक परञ्च सभ सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमहर कएकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परञ्च आइधरि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९७८ मे हमहूँ एहि क्षेत्र मे पदार्पण कएल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग। ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजेत अछि भारतीय नारिक आदर्श सीताक प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि कथाक वर्तमान समय मे बड़ बेसी आवश्यकता आ उपयोगिता छेक। तें हम एहि कथाक चयन कएल।

सिनेमा संसारमे यद्यपि हमर प्रथम पदार्पण छल परञ्च नाट्य-मंचक दीर्घ आ पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जगतक ख्याति-नामा कलाकर लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छल। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे जं ई फिल्म बनि सकल त निश्चिते टक्कर के होइत। प्रमाण मे एकर गीतसभ जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छेक आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कला-कार-चयन आ दृश्य चयनक काज सेहो शेष क लेल गेल छेक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ जं अर्थ लगओनि-

शेषांश पृष्ठ ४ पर

लोककथा

महाकाली

(मिथिलाक बेटी सीता भारतीय नारीक आदर्शक रूप मे मानल जाइ छथि। अपना ओइठाम कहबी छइ—सीता जन्म वियोगे गेल, दुख छोड़ि सुख कहियो ने भेल। परञ्च, धैर्य, करुणा आ त्यागक प्रतिमूर्ति सीताक आत्माभिमान पर जखन चोट पहुंचलनि त ओ महाकालीक रूप धारण केलनि। मिथिला मे प्रचिलित लोककथाक आधार पर प्रस्तुत अइ उएह चिरन्तन कथा—महाकाली।)

लंका विजयक उपरान्त अपन वनवासक अवधि शेष कए राम जानकी आ लक्ष्मणक संग अयोध्या फिरलाइ। कतेको दिन तक हुनका लोकनिक सकुशल फिरबाक आनन्द मे उत्सव चलैत रहल। जखन ई क्रम शेष भेलैक त किछु दरबारी सभ प्रस्ताव केलनि जे रावण सन पराक्रमी के जय करबाक उपलक्ष्य मे महाराज रामक बांहिक पूजा हेबाक चाही। विरोधक प्रश्ने ने उठि सकैत छलै। पूजनोत्सवक तैयारी बड़ जोर-सोर सं चलय लागल। सीता कें सेहो एकर भनकी लगलनि। तेयो ओ एकदिन राम सं पुछि देलथिन—फेर कून उत्सवक आयोजन भ रहल छइ? महाराज राम अचरज सं प्रतिप्रश्न केलथिन—अहां कें नञि पता? सीता व्यंग्य सं बिहुंसैत बजली—जखन केओ कहबे ने केलनि त पता रहत कोना? असलमे तकर प्रयोजने अहां लोकनि नञि बुझैत छी। स्त्री त मात्र आदेश पालनक निमित्त होइत अइ। ओकरो जे आत्मा होइ छइ, ह्रदय होइ छइ, से सोचबाक पलखतिए अहां लोकनि के कहां अइ। राम बजलाह—हमरा खेद अइ जे अहां सं विचार नञि लेल। प्रजागणक विचार छनि जे महापराक्रमी राजा रावण के जय करबाक उपलक्ष्य मे हमर बांहिक पूजा हो। प्रजाक विचार मे हम तेना भ कें बहि गेलहुं जे जनिका द्वारा पूजा होएत तिनको मत लेनाइ बिसरि गेलहुं। परञ्च आब जाधरि अहां अपन स्वीकृति नञि देब—ई पूजा नञि होएत।

सीता कहलथिन—इम स्वीकृति नञि देब से अहां किएक सोचि लेलहु? काजो बहुत अगुआ गेल-ए।

राम—से जते किएक ने अगुआ जाओ—तकर चिन्ता हमरा नञि।

सीता—अहां हमर विचार पुछै छी अथवा स्वीकृति चाहै छी?

राम—निश्चिते विचार पुछैछी। जं अहांक विचारें ई काज उचित हो तखन स्वीकृति दिय'।

सीता गंभीर स्वर मे कहलथिन—अहां के पता अइ जे रावणो सं बेघ पराक्रमी आर एगो रावण अइ। जाइ देशक महिलागण कोतुकवश रावण के पकड़ि ओकरा दसो माथपर दीप जरओने छलीह आ बड़ अनुनय विनय केलाक बादे ओकरा मुक्ति भेटल छलैक। ताही पताल लोकक राजा सहस्रबांहु रावण एखनो जीबैए। राम गंभीर भ गेलाइ आ घर सं चुप्पे बहरा गेलाइ। प्रात भेने भरिनगर मे डिगडिगया पीटवा देल गेलै जे जाधरि महाराज राम सहस्रबांहु रावण पर विजय नञि पओताइ ताधरि ई उत्सव स्थगित रहत।

जखन लक्ष्मण कें ई बात पता चललनि त ओ फनकि कें राम लग पहुंचला आ अर्जी केलथिन—भाइ हमरा आज्ञा देल जाओ हम आइए सांझधरि ओकरा परास्त कए बन्दीबना आपस आबि जायब। उत्सवक आयोजन स्थगित नञि हेबाक चाही।

महाराज राम बिहुंसैत कहलथिन लखन ई अहांक शक्ति सं बाहरक बात थिक। हमरो शक्ति सं बाहरक। एहि निमित्त हमरा दुनू भाइक संग वैदेहीक रहनाइ परमावश्यक अइ। जाउ हनुमान कें कहियनु रथ तैयार करथि आ वैदेही कें सेहो तैयार हेबाक निवेदन करबनि। हमरा लोकनि आर देरी नञि कय शिघ्रे विदा होइ।

लक्ष्मण रामक मुंह तकैत चुपचाप विदा भेलाइ। कनिञे कालक बाद रथ तैयार भेल। रामक बामदिस जानकी आ दहिना मे लक्ष्मण बैसल। सारथी हनुमान।

जखन रथ सहस्रबांहु रावणक राज्यक सीमा मे पहुंचलै त गुप्तचर द्वारा ओकरा खबरि लगलैक। ओ ओहीठाम सं तीर छोड़लक आ समदिया द्वारा समाद लेलक त पता चललैक सारथी बानर निपत्ता भ गेलैक। रावणक वांण सं हनुमान सातसमुद्र पार फेका गेलाइ। ओ दोसर वाण छोड़लक त लक्ष्मण के सएह गति। तेसर मे राम मुर्छित भय रथ पर टरि गेलाइ। तकर बाद ओ कतेको वाण छोड़लक परंच सभ व्यर्थ गेलैक। सीता बिकलशून्य जकां रथ पर बैसल छलीह। रावण के जखन सभ पता चललैक त ओ ध्यानस्थ भेल। ओकरा बुझबा मे देरी नहि लगलैक जे रथ पर बैसलि महिला दोसर केओ नञि आदि शक्ति थिकीह। शक्ति उपासक हेबाक कारणे ओ मनेमन हुनका नमस्कार केलक आ अपन भूलक लेल क्षमा याचना केलक।

एमहर देवलोक मे खलबली मचिगेल आं सभ देवाधि देव महादेवक ओतय पहुंचलाइ जे कुनू द्वारा घराउ ने त अनर्थ भ जायत। देवगणक आकुलता देखि महादेव प्रस्थान केलनि। ओ सीताक समीप अपन रूप बदलि पहुंचलाइ आ हुनका खिसिएबाक हेतु नाना तरहक व्यंग्य वाण छोड़य लगलाइ—धन्य छी हे देवी स्वामी मुइल पड़ल लक्ष्मण सन देयोर मरल, हनुमान सन सेवक मरल जकरा अहां अमर, हेवाक वरदान देने छलियनि तेयो अहां ठेखे धन सन। ई त अहीं सक हो। मानव रूप मे आबि मानव के कलंकित किएक करैत छी।

एवं प्रकारे बहुत कहलाक बाद सीताक ध्यान भंग भेलनि। क्रोधमे अबिते हुनक शरीर कारी भ गेलनि ओ खोपा बान्हल केश खुजि फहराय लगलनि। ओ रथ सं उतरि सोझे विदा भेली आ जे सामने मे पड़नि ताहि मे बहुतो त हुनक भंयकर रूप देखि आतंके सं प्राण त्यागि देलक। एक राक्षस हुनका पर प्रहार केलकनि ओ तकर हाथ पकड़ि कत्ता छीन लेलथिन आ पेर स मदरि आगा बढ़ि गेलीह। ओ कत्ता सं सभक माथ छोपैत अगुआइत रहली आ जखन सहस्रबांहु रावणक नगर शून्य भ गेल त दोसर दिस घुरली। सीताक रणचंडी रूप सं पुनः देवगण घबरेला ओ सोचलनि ज एना मे त धरती लोक विहीन भ जाएत। ओ सभ फेरि महादेव लग पहुंचि अनुनय विनय केलनि। अदरन दरन महादेव एहिबेर आबि महाकालीक बाटमे पड़ि रहलाइ। उर्द्धमुखी कालीक नजरि नञि पड़लनि आ हुनक पएर महादेवक छातीपर पड़लनि। ओ कत्ता सवधानि नीचा तकलनि त महादेव कं चीन्ह लाजे जी कूचि लेलनि आ पुनः अपन पूर्वक रूप मे आबि गेलीह। सीताक इएह रूप महाकालीक रूप मे सर्वत्र पूजित होइ-ए। सीता आपस रथपर एलीह आ अपन कनगुरिया आगुंर चीरि अमृतपान करा रामके चेतन अवस्था मे अनलनि। फेर लक्ष्मण आ हनुमान के खोजि जीवित केलनि आ सभ अयोध्या फिरलाइ। रामक बांहिपूजाक बदला सीताक बांहिपूजाक प्रस्ताव उठल परंच मैथिली तकरा अस्वीकार केलनि ताहि दिन सं सीताराम माने राम सं पहिने सीताक नामक परिपाटी चलय लागल।

कविता

वसन्त गीतक मादे

(कवि जीवकान्तक लेल)

एक गोट
स्पन्दनहीन-उदास
पतझड़ वन मे
भेल छल हमर जन्म
आ
छत्तीस बर्ख बीतलाक बादो
स्थिति ओहिना छइ
ओना
सूनल त हमरो अइ जे
कहियो एहिठाम रहैत छल
बारहोमास छतीसो दिन
वसन्त बहार
आ ताही आशा मे हम
पटबैत आएल छी साध्यानुसार
एहि पतझड़ वन कें
वसन्ते सन
पावस सेहो दन्तकथा बनि चुकल-ए
एहना स्थिति मे
हमरा सं वसन्तगीतक आशा
करबे होएत अनुचित
भाइ हे!
आउ ने
हमरा लोकनि संग मिलि पटाबी
(कारण
गाछ सभ एखनो अइ प्राणवंत त
हमरा विश्वास अइ
आइ ने कालि
एहि मे होएतैक नव पल्लव
रंग-बिरंगक फूल
जकर मादक गंध सं महमह करत सर्वत्र
पोबि मधु मातल मधुप गुंजन करत
तखन
हमहूं लिखब आ
निश्चिते लिखब
वसन्त-गीत जे
अकाशक नहि
परिवेशोक उपज थिक

—रामलोचन ठाकुर

बालगीत

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबै छी
तोरा ले किछु लबै छी
जतय बहै छइ गंगा-कमला-
तकरे गीत सुनबै छी॥
जाहि माटि सं जनमलि सीता
सएह हमर ई धरती
याज्ञवल्क्य गौतम, कपिल के
भूमि रहत नञि परती
सुग्गो शास्त्रक गप्प करै छल
तकरे गोत सुनबै छी॥
ई लोरिक-सलहेसक धरती
ई शिवसिंहक धाम छइ
महादेव बनि चाकर अएला
मिथिला देश महान छइ
जाधरि चान-सुरुज ता रहतै
सहए शपथ दोहरबै छी॥

— रामलोचन ठाकुर

मैथिली सिनेमा ...

हार प्रोड्यूसर भेटि जाथि त ६ मासक अन्दरे फिल्म बनि कें तैयार भ जायत। ओना एहि लेल हम बिहार सरकार सं सेहो सम्पर्क करबाक प्रयास कएल परञ्च सरकार दिस सं पत्रक उत्तरो तक नहि आबि सकल।

फिल्म आइ आनो दृष्टि सं उपयोगी अछि। आइ बेकारिक जे समस्या छैक तकर बहुतदूरधरि समाधान एहि माध्यमे भ सकैत छैक। कतेको युवा वृद्ध कलाकार मे त कमिशियन के रोजी-रोटीक संगहि अपन प्रतिभा विकासक सुयोग भेटि सकैत छनि। बम्बइया फिल्म सभ, जे विशेष कें सस्त मनोरंजक होइछ, लाखक लाख टाका मिथिलांचल सं ल जाइछ। मैथिली फिल्म भेने ताइपर रोक लगतैक आ घरक पाइ घरे मे रहत। मिथिलाक व्यवसायी लोकनि देखा-देखी एहिमे अग्रसर होयताह। फिल्म उद्योग कें आर्थिक सहयोग लेल एगो केन्द्रीय संस्था छैक—एन० एफ० डी० सी० (National Film Development Corporation) जे राज्य सरकार माध्यमे फिल्म उद्योग कें अर्थ सहयोग देत छैक। महाराष्ट्र, प० बंगाल, तामिलनाडु, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-सरकार एहि सं प्रचूर टाका लय अपन-अपन राज्यक फिल्म उद्योग कें बढ़ा रहल अछि परञ्च बिहारक अकर्मण्यताक कारणे बिहार राज्य एहि सं वंचित अछि। एकर हिस्साक टाका बम्बइ मे फुका रहल छैक। बिहार सन पैघ आ सम्पत्तिशाली प्रदेश मे एगो फिल्म स्टूडियोतक नहि भेनाइ केहन लज्जास्पद विषय थिक से सहजहि सोचल जा सकैछ। कहबी छैक जे बरे बुरिबक त जेतुक के लेत? पता ने बिहार सरकारक ई बुरिबकै छैक अथवा ओ बिहारक विकास नहि चाहैत अछि। परंच स्थिति यैह छैक आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक लेखक, कलाकार, तक निशियन सरकार सं ई अपेक्षा रखैत अछि जे ओ आबहुं एहि दिशा मे सतर्क होअओ आ समुचित प्रयास करओ'।

—श्री कान्त मंडल

आन्दोलन समाचार

दड़िभङ्गा—हमरा लोकनिक दड़िभंगा प्रतिनिधि सूचित केलनिहें जे स्थानीय मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा नवम्बरक दोसर सप्ताह मे एगो दुदिना सम्मेलनक आयोजन करय जा रहल-ए। पहिल दिन मिथिलाक सर्वांगिण विकास पर विचार-विमर्श होयत। एहि मे समस्त मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेथि तकर प्रयास चलि रहल ए। दोसर दिन विराट प्रदर्शन होएत जाहि मे लगभग पचास हजार लोक कें भाग लेबाक बात अइ।

जनसंघर्ष मोर्चा इहो निर्णय लेलक ए, जे मार्च १९८२ मे जनकपुर मे एकटा अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन आयोजित करत। कार्यक्रमक सफलता लेल 'देसिल बयना'क शुभकामना।

× × ×

दिल्ली—हमरा लोकनिक दिल्ली प्रतिनिधि सूचित केलनिहें जे अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्लीक तत्वावधान १४ सितम्बत कें होमयवला प्रदर्शन। १४४ भंगक कार्यक्रम तत्काल स्थगित भ गेलए। ई कार्यक्रम कहिया धरि हैत से अज्ञात अइ। ज्ञातव्य जे श्री भोगेन्द्र झा, एम० पी० एहि संस्थाक पृष्ठ पोषक छथि तथा राजेन्द्र यादव, हुकमदेव नारायण यादव, शिवचन्द्र झा (सांसद) आदिक सहयोग एहि संस्था कें प्राप्त छइ। देशक राजधानी मे हेबाक कारणे तथा राजनैतिक नेता लोकनि छात्रछाया मे रहबाक कारणे ई संस्था निश्चिते मिथिला मैथिली निमित्त बहुत काज क सके-ए आ हमरो लोकनि तकर आशा करेत छी। बेसी त भविष्ये कहत।

मैथिली मुक्ति मोर्चाक अपील

मिथिला मे दुर्गापूजाक परम्परा बड पवित्र आ प्राचीन अइ। लाख दिकदारो अछैतो निश्चिते एइ खेप समस्त मिथिला मे पूजनोत्सव होएत आ बहुतोठाम सांस्कृतिक कार्यक्रम होएत। मोर्चा समस्त प्रबुद्ध युवावर्ग सं निवेदन करेए जे समस्त सांस्कृतिक कार्यक्रम मैथिली मे कएल जाय। जतय कतौ नाटक मंचस्थ हो से निश्चितरूपे मैथिली मे हेबाक चाही। माइक अर्चना माइक भाषा मे हो—कोठक भाषामे किन्नहुं नहि। गंगाजलक बदला तारीदारूक उपयोग सर्वथा अनुचित—से ध्यान राखल जाय।

मिथिलाक छी—मैथिल छी
मैथिली बचाउ—हिन्दी हटाउ
मैथिली बाजू, पढ़, लिखू। सभकाज मैथिली मे करू।

चन्दाक दर—

एक प्रति	पचास पाइ
सलियाना	पांच टाका
पांच सालक	बीस टाका

विपत्ति असगरे नहि अबैछ

समाचार सुत्र सं ज्ञात भेलए जे दड़िभंगा अंचल मे हैजाक प्रकोप छैक। बाढ़िक बाद एहि तरहक महामारिक पसरनाइ कुनु नव घटना नहि थिकैक। बाढ़िक समय वातावरणक संगहि पैय जलक दुषित भ गेनाइ स्वाभाविक छैक आ ई महामारीक जन्म प्रायः एहीठाम सं होइत छैक। परंच अचरजक बात त ई छैक जे एहि सं बचबाक लेल सरकार द्वारा कुनु तरहक प्रयास पहिने नहि भेल—नहि होइत छैक। जखन रोग पूर्णतः पसरि जाइ छइ तखन सरकारी यंत्र सक्रिय होइत अइ लोकके ठकवा-फुसिहवा लेल। ओना सरकार के बीमारी रोकनाइ सं बीमारी पसरनाइ मे लाभ छैक कारण ओकरा चमचा सभ के कमेबाक स्वर्ण-सुयोग भेटेत छैक आ सरकारक पाया सक्त होइत छैक। हाय रे अभागल मिथिलाक लोक! कि आबहुं ओ सभ नहि चेतत आ एहि कृतिम रोग-यातना सं मुक्ति पेबाक प्रयास नहि करत? ओना ई बात त भविष्ये मे स्पष्ट होयत परञ्च एतेबरि स्पष्ट छैक जे जं आबहुं ओ नहि चेतत त 'ओकर दुखक नहि ओर' लागि सकेत छैक।

वितरक लोकनि सं—

'देसिल बयना' क एजेन्सी लेल सम्पर्क करू—
वितरण व्यवस्थापक,
अरुणोदय प्रकाशन,

विज्ञापन दाता लोकनि सं —

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाउ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
अरुणोदय प्रकाशन,

लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

१. अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाउ।
२. 'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना कें अग्राधिकार देल जायत।
३. मिथिला-मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाउ।
४. 'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

कह लोचन कविराय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगहा छान
खइ उमकी झाड़य सतत निर्घिन कएल बथान
निर्घिन कएल बथान माल ई सरकपताली
अप्पन कें खाएत सोचत शुभ अनके खाली
कह लोचन कविराय बजा नट जल्दी लगबू नाथ
बेचू बरु कसाइक हाथें ई अलच्छ जगन्नाथ

अरुणोदय प्रकाशन, ११, सुल्तान आलम रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, वृन्दावन बेशाख स्ट्रीट, कलकत्ता ५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

बालगीत

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबै छी
तोरा ले किछु लबै छी
जतय बहै छइ गंगा-कमला-
तकरे गीत सुनबै छी॥
जाहि माटि सं जनमलि सीता
सएह हमर ई धरती
याज्ञवल्क्य गौतम, कपिल के
भूमि रहत नञि परती
सुग्गो शास्त्रक गप्प करै छल
तकरे गीत सुनबै छी॥
ई लोरिक-सलहेसक धरती
ई शिवसिहक धाम छइ
महादेव बनि चाकर अएला
मिथिला देश महान छइ
जाधरि चान-सुरुज ता रहतै
सहए शपथ दोहरबै छी॥

— रामलोचन ठाकुर

आन्दोलन समाचार

दड़िभङ्गा—हमरा लोकनिक दड़िभंगा प्रतिनिधि सूचित केलनिहें जे स्थानीय मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा नवम्बरक दोसर सप्ताह मे एगो दुदिना सम्मेलनक आयोजन करय जा रहल-ए। पहिल दिन मिथिलाक सर्वांगिण विकास पर विचार-विमर्श होयत। एहि मे समस्त मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेथि तकर प्रयास चलि रहल ए। दोसर दिन विराट प्रदर्शन होएत जाहि मे लगभग पचास हजार लोक कें भाग लेबाक बात अइ।

जनसंघर्ष मोर्चा इहो निर्णय लेलक ए, जे मार्च १९८२ मे जनकपुर मे एकटा अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन आयोजित करत। कार्यक्रमक सफलता लेल 'देसिल बयना'क शुभकामना।

× × ×

दिल्ली—हमरा लोकनिक दिल्ली प्रतिनिधि सूचित केलनिहें जे अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्लीक तत्वावधान १४ सितम्बर कें होमयवला प्रदर्शन। १४४ भंगक कार्यक्रम तत्काल स्थगित भ गेलए। ई कार्यक्रम कहिया धरि हैत से अज्ञात अइ। ज्ञातव्य जे श्री भोगेन्द्र झा, एम० पी० एहि संस्थाक पृष्ठ पोशक छथि तथा राजेन्द्र यादव, हुकमदेव नारायण यादव, शिवचन्द्र झा (सांसद) आदिक सहयोग एहि संस्था कें प्राप्त छइ। देशक राजधानी मे हेबाक कारणे तथा राजनेतिक नेता लोकनि छात्रछाया मे रहबाक कारणे ई संस्था निश्चिते मिथिला मैथिली निमित्त बहुत काज क सके-ए आ हमरो लोकनि तकर आशा करेत छी। बेसी त भविष्ये कहत।

मैथिली मुक्ति मोर्चाक अपील

मिथिला मे दुर्गापूजाक परम्परा बड पवित्र आ प्राचीन अइ। लाख दिकदारो अछेतो निश्चिते एइ खेप समस्त मिथिला मे पूजनोत्सव होएत आ बहुतोठाम सांस्कृतिक कार्यक्रम होएत। मोर्चा समस्त प्रबुद्ध युवावर्ग सं निवेदन करेए जे समस्त सांस्कृतिक कार्यक्रम मैथिली मे कएल जाय। जतय कतौ नाटक मंचस्थ हो से निश्चितरूपे मैथिली मे हेबाक चाही। माइक अर्चना माइक भाषा मे हो—कोठक भाषामे किन्नहु नहि। गंगाजलक बदला तारीदारूक उपयोग सर्वथा अनुचित—से ध्यान राखल जाय।

मिथिलाक छी—मैथिल छी
मैथिली बचाउ—हिन्दी हटाउ
मैथिली बाजू, पढ़, लिखू। सभकाज मैथिली मे करू।

चन्दाक दर—

एक प्रति	पचास पाइ
सलियाना	पांच टाका
पांच सालक	बीस टाका

विपत्ति असगरे नहि अबैछ

समाचार सुत्र सं ज्ञात भेलए जे दड़िभंगा अंचल मे हैजाक प्रकोप छेक। बाढ़िक बाद एहि तरहक महामारिक पसरनाइ कुनु नव घटना नहि थिकेक। बाढ़िक समय वातावरणक संगहि पेय जलक दुषित भ गेनाइ स्वाभाविक छेक आ ई महामारीक जन्म प्रायः एहीठाम सं होइत छेक। परंच अचरजक बात त ई छेक जे एहि सं बचबाक लेल सरकार द्वारा कुनु तरहक प्रयास पहिने नहि भेल—नहि होइत छेक। जखन रोग पूर्णतः पसरि जाइ छइ तखन सरकारी यंत्र सक्रिय होइत अइ लोकके ठकबा-फुसिएबा लेल। ओना सरकार के बीमारी रोकनाइ सं बीमारी पसरनाइ मे लाभ छेक कारण ओकरा चमचा सभ के कसेबाक स्वर्ण-सुयोग भेटेत छेक आ सरकारक पाया सक्त होइत छेक। हाय रे अभागल मिथिलाक लोक! कि आबहुं ओ सब नहि चेतत आ एहि कृतिम रोग-यातना सं मुक्ति पेबाक प्रयास नहि करत? ओना ई बात त भविष्ये मे स्पष्ट होयत परञ्च एतेधरि स्पष्ट छेक जे जं आबहु ओ नहि चेतत त 'ओकर दुखक नहि ओर' लागि सकेत छेक।

मैथिली सिनेमा...

हार प्रोड्यूसर भेटि जाथि त ६ मासक अन्दरे फिल्म बनि कें तैयार भ जायत। ओना एहि लेल हम बिहार सरकार सं सेहो सम्पर्क करबाक प्रयास कएल परञ्च सरकार दिस सं पत्रक उत्तरो तक नहि आबि सकल।

फिल्म आइ आनो दृष्टि सं उपयोगी अछि। आइ बेकारिक जे समस्या छेक तकर बहुतदूरधरि समाधान एहि माध्यमे भ सकेत छेक। कतेको युवा वृद्ध कलाकार मे त कमिशियन के रोजी-रोटीक संगहि अपन प्रतिभा विकासक सुयोग भेटि सकेत छनि। बम्बइया फिल्म सभ, जे विशेष कें सस्त मनोरंजक होइए, लाखक लाख टाका मिथिलांचल सं ल जाइछ। मैथिली फिल्म भेने ताइपर रोक लगतेक आ घरक पाइ घरे मे रहत। मिथिलाक व्यवसायी लोकनि देखा-देखी एहिमे अग्रसर होयताह। फिल्म उद्योग कें आर्थिक सहयोग लेल एगो केन्द्रीय संस्था छेक—एन० एफ० डी० सी० (National Film Development Corporation) जे राज्य सरकार माध्यमे फिल्म उद्योग कें अर्थ सहयोग देत छेक। महाराष्ट्र, प० बंगाल, तामिलनाडु, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-सरकार एहि सं प्रचूर टाका लय अपन राज्यक फिल्म उद्योग कें बढ़ा रहल अछि परञ्च बिहारक अकर्मण्यताक कारणे बिहार राज्य एहि सं बंचित अछि। एकर हिस्साक टाका बम्बइ मे फुका रहल छेक। बिहार सन पेघ आ सम्पत्तिशाली प्रदेश मे एगो फिल्म स्टूडियोतक नहि भेनाइ केहन लज्जास्पद विषय थिक से सहजहि सोचल जा सकेछ। कहबी छेक जे बरे बुरिबक त जेतुक के लेत? पता ने बिहार सरकारक ई बुरिबके छेक अथवा ओ बिहारक विकास नहि चाहैत अछि। परंच स्थिति येह छेक आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक लेखक, कलाकार, तक निशियन सरकार सं ई अपेक्षा रखेत अछि जे ओ आबहुं एहि दिसा मे सतर्क होअओ आ समुचित प्रयास करओ'।

—श्री कान्त मंडल

लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

१. अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाउ।
२. 'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना के अग्राधिकार देल जायत।
३. मिथिला-मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाउ।
४. 'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

कह लोचन कविराय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगहा छान
खइ उमकी झाड़य सतत निघिन कएल बथान
निघिन कएल बथान माल ई सरकपताली
अप्पन कें खाएत सोचत शुभ अनके खाली
कह लोचन कविराय बजा नट जल्दी लगबू नाथ
बेचू बरु कसाइक हाथें ई अलच्छ जगन्नाथ

अरुणोदय प्रकाशन, ६१, सुल्तान अलाम रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, बृन्दावन बेशाख स्ट्रीट, कलकत्ता ५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—१ अंक—२ नवम्बर, १९८१ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

विद्यापति स्मृति-पर्व

कोनो जातीय विभूतिक स्मृति पर्व मनेबाक पाछा निर्विवाद रूपें एक गोट महान आ पवित्र उद्देश्य रहैत आयल अछि। हमरा जनतबें, ओ उद्देश्य थिक ओइ विभूतिक व्यक्तित्व आ कृतित्व सं शिक्षा लेनाइ हुनक स्मरण सं जातीय गर्वबोध आ चेतना जाग्रत केनाइ आ जातीय एकता कें सशक्त केनाइ जे कोनो जातिक सर्वाङ्गिण विकासक मूलाधार थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे जहिया कहियो विद्यापति स्मृति पर्वक शुभारंभ जे कोनो मनीषी कएने होएताह तिनका मोन में इएह पवित्र भावना सन्निहित छल होएतनि।

ओना त मिथिला मे एक सं एक विभूति भ चुकल छथि आ सभक स्मृति पर्व मनओनाइ संभवो नहि बुझना जाइछ। तथापि कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर, कविप ति विद्यापति, महाकवि डाक, महाकवि चन्दा झा, महाकवि लालदास, महाबली लोरिक, लोकसेवक महावीर राजा सलहेस आ दीनाभद्री आदि विभूतिक स्मृति पर्व मनओनाइ वर्तमान संदर्भ मे बड़ बेसी महत्व रखैत अछि। किन्तु, खेदक विषय जे वर्गवादी दृष्टिकोणक कारणे विद्यापति कें छोड़ि आर समस्त विभूति लोकनि कें बिसरा देल गेल आ विद्यापति स्मृति पर्व सेहो अपन उद्देश्य-पूर्ति मे पूर्णरूपेण असफल प्रमाणित भेल अछि।

आजुक विद्यापति-स्मृति पर्वक जे रूप अछि से मिथिला-मैथिलीक नाम पर कलंक छोड़ि आर किछु नहि थिक। सांस्कृतिक कार्यक्रमक नाम पर हिजराक नाच होइत अछि, कवि सम्मेलनक नाम पर गाहीक गाही भांट सभ फकड़ा पाठ करैत अछि आ भदवरिया बेंग सन कंठ फारि-फारि भूंइफोड़ लोक सभ अपना कें मैथिली सेवक कहि प्रचारित करैत अछि। ओतबे किछुक मिथिलाक मिरजाफर-जयचंद सभ सेहो एहि मंच पर पूजित होइत अछि। आ एहि मद मे लाखो टाका फूकि देल जाइत अछि। एकमात्र पटनाक चेतना समिति एहि मद मे लाख टाकाक लगभग खर्च करैत अछि। जं स्पष्ट कही त आइ जे विद्यापति-स्मृति पर्वक विकृत रूप अछि तकर पूर्ण श्रेय एही संस्था कें छैक।

कविपति विद्यापति महान विद्रोही-प्रगतिशील कवि छलाह, वीर कवि छलाह, लोक कवि छलाह आ छलाह महान दार्शनिक, राजनीतिवेत्ता, समाज सुधारक। परञ्च दुखक बात अछि जे आइधरि मात्र शृङ्गारिक कवि या कखनोकाल भक्त-कवि कहि हिनका अपमानित कएल जाइत रहल अछि आ ताइ हेतु सभ सं उपयुक्त मंचक रूप मे प्रयोग कएल जाइत रहल अछि हिनके स्मृति पर्वक मंच। मैथिलीक नाम पर जे सतापिक संस्था बनल अछि ओ सालभरि भनहि मुइल पड़ल रहओ परञ्च एहि अवसर पर ई पर्व मना अपन जीवंतता के प्रमाणित करबेटा करत।

आइ समय आबि गेल अछि जे एहि घृणित आयोजनक मात्र बहिष्कारेटा नहि खुलि कें विरोध हो। एहि मे खर्च होमयबला पाइ सं मैथिली पोथी-पत्रक प्रकाशन हो तथा मैथिलीक सरकारी मान्यता लेल संघर्षक मद मे खर्च हो। इएह विद्यापतिक प्रति सभ सं पैघ आ पवित्र श्रद्धांजलि होएत। जय मैथिली

निज भू-भाषा हित मरय
मरय ने, अमर जीवित अछि
तकरे गाथा विश्व ई
गाओत, सदा गर्वित अछि

—मैथिली मुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
छाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

बुढ़ारी-भत्ता बनाम सत्ताक राजनीति

अन्यान्य प्रान्तीय सरकारे जकां बिहार सरकार सेहो बुढ़ारी-भत्ता योजना चालू केलक अछि। ई भत्ता बुढ़ लोक कें भेटैत छैक जे काज करैक जोकर नहि रहैत अछि तथा गुजर-बसर करैक दोसर द्वारा नहि रहैत छैक। स्वभावतः लोक एहि योजनाक स्वागत केलक। परञ्च प्रश्न उठैत अछि कि सरिपहुं ई भत्ता असक्त-असहाय बुढ़-पुरनियां कें भेटैत छैक? भत्ता-दानक पाछा कोन भावना काज क रहल अछि—लोक सेवाक आ ने स्वजन पोषणक? कि एतौ तने घृणित राजनीतिक गुटबन्दी काज क रहल अछि?

देसिल बयनाक घनस्यामपुर संवाद प्रतिनिधिक अनुसार एहि भत्ताक नाम पर खुलि कें स्वजन पोषण आ राजनीतिक दलबाजी चलि रहल अछि तथा अगिला चुनावक आधार क्षेत्र तैयार कैल जा रहल अछि। ई भत्ता ओकरे भेटैत छैक जे मुखिया सरपंचक सम्बन्धित हो, सत्ताधारी दलक समर्थक हो। भनहि ओकर उमेर तीस-पैंतिसे किएक ने होइक आ लगानी भीरानी किएक ने करैत हो। किछु ओहनो व्यक्ति कें भेटैत छैक जकरा सं अगिला चुनाव मे नीक सहयोगक उमेद सरकार कें छैक। दोसर दिस जे सत्ते असहाय अछि तकरा संग पूर्ण अन्हेरमेल कैल जा रहल छैक। डाली-हारी चढ़ेबाक पश्चात किछु लोकक मनोकामना त पूरा भ जाइत छैक परञ्च जे दोसरदलक समर्थकक रूप मे चिन्हार अछि अथवा डाली-हारी चढ़ेबा मे असमर्थ अछि—तकरा लेल कोनो द्वारा नहि छैक। बी०डी०ओ० सं एस० डी० ओ० तक दौड़-बड़हा केलाक बादो छुच्छ आश्वासन छोड़ि आर किछु प्राप्त नहि होइत छैक। एहि अजगुत-अनटोटलक विरुद्ध जं कतो केओ बाजल त ओकरा पाछा सरकारक वर्दीधारी सं बिना वर्दी बला सिपाही धरि लागि पड़ैत छैक आ भुस्साथरि बैसा दैत छैक।

एहन एकटा घटना अछि मनीगाछी ब्लौकक पूर्वी क्षेत्रक। कुसौं हाइस्कूल मे विशाल जनसमावेश छलैक। ब्लॉकक सभ कर्मचारी, थाना-प्रभारी आ क्षेत्रक एम० एल० ए० प्रो० श्री नागेन्द्र झा उपस्थित छलाह। टाका बांटल जा रहल छल। महावीर पासमान पंक्ति मे ठाढ़ छलाह। नाम स्वीकृत भेल छलनि तें पाइ भेटबाक पूर्ण आशा नेने। परञ्च जखन दाता लग पहुंचलाह त आकाश-पतनक स्थिति। तीन पीढ़ी सं दोसरक जमीन मे बसल महावीर पासमान मे आब बोनि करैक बुत्ता नहि छनि। हुनक अपराध छलनि जे ओ सी०पी० आइ कें 'वोट' देने छलथिन। महावीर पासमान बइमान नहि छथि। जमीन्दार जखन हुनका उजारय चाहलकनि त सी० पी० आइ० मदति केने छलनि आ अखनो विपत्तिक समय मदति करैत छनि। तें सी० पी० आ० इ० के वोट देनाइ हुनका उचित बुझेलनि।

महावी पासमान टाका नहि भेटला सं हताश नहि भेलाह। ओ बी० डी० ओ० लग अपन फरियाद पहुंचओलनि। परञ्च ताइ सं किछु नहि भेलनि। स्थानीय युवके सभ एहि अनीतिक विरोध केलक त सरकारी अफसरक कोपभाजन बनि गेल। अन्ततः पूर्ण समर्थन अभाव मे ओहो सभ चुप्पी साधि लेलक। बी० डी० आ साहेब कें एतबे सं संतोष नहि भेलनि त दरोगा पुलिसक संग एकरा लोकनिक घरपर आक्रमण केलनि। सरकारी अधिकारी लोकनिक आंगन मे प्रवेश अन्ततः लोक कें असहोहात लगलैक आ कर्त्तव्य बोध जगलैक। आरंभ भेल थापर-मुक्का सं हिनका लोकनिक स्वागत सं उबरि नहि सकलाह। स्थितिक गंभीरता देखि सशरी एम० एल० ए० साहेब प्रकट भेलाह आ अपन दाव सं सरकारी अफसर लोकनि कें भगेबा मे सफल भेलाह। संवाद पठेबाक समय धरि दरोगा साहेब अपन क्षेत्र सं फरार छथि। ओना ओहो बैसल नहि छथि आ एकटा फरजी केश दर्ज क कें युवक लोकनिक नामे वारंट जारी करा देने छथिन। एहिना छथि केदू पासमान। टाकाक बदला हुनक घर उजारि देबक षड़यंत्र नीक जकां रचल जा रहल अछि।

बी० डी० ओ० एस० डी० ओ सं एम० एल० ए० आ मंत्री धरि गुप्त समझौता भेल अछि तें शिकाइत जतै होइछ ततै चपा जाइछ। दोसर एहना स्थिति मे शिकाइत वा विरोध करबे के करत? येह थिक बुढ़ारी-भत्ताक वास्तविक स्थिति।

—जयदेव लाभ

नव पोथी

सुविख्यात लेखक डा० ब्रजकिशोर वर्मा
मणिपद्मक सामाजिक उपन्यास
अर्धनारीश्वर
कीनू आ पढ़ू

संस्कृतक सारापर सत्ताक बबूर

संस्कृत भाषा मात्र मिथिलेटा मे नहि, समस्त भारतवर्ष मे देवभाषाक नामे ख्यात अइ आ एकर लिपि, जे वर्तमान मे मैथिली, हिन्दी, नेपाली आदि लेखन में प्रयोग होइए—देवाक्षरक नामे। ओना त देवताएक अस्तित्व संदिग्ध अइ तखन हुनका लोकनि द्वारा कुनू भाषाक प्रयोगक प्रश्ने उठओनाइ अनर्गल, परञ्च एतबाधरि सत्य जे हिन्दूक समस्त धर्म ग्रंथ एही भाषा मे छेक। ओतबे किएक, एकर जे विशाल साहित्य भंडार छेक आ दीर्घ परम्परा छेक से एखनो कुनू भाषाक हेतु इर्ष्याक विषय भ सकेछ। किन्तु सभ होइतहु ई भाषा मृतावस्था कें प्राप्त भेल आ तकर एकमात्र कारण छेक जे ई कहियो लोक भाषा नहि बनि सकल।

एमहर बर्ख दिन सं मिथिलांचलक संगहि समस्त बिहार मे संस्कृत प्रेमक बाढ़ि सन आबि गेल-ए। भरिसके कुनू गाम छुटल हो जांइठाम संस्कृत विद्यालयक स्थापना नहि भेल हो से भनहि कागतेपर किएक ने भेल हो। ई भिन्न कथा जे ओइ गामक लोक संख्या हजारो सं थोर छेक आ ताइठाम पहिनहि सं अंग्रेजी अपर वा मिडिल स्कूल विद्यमान छेक। एहिठाम ई लिखि देब अनुचित नहि होएत जे अंग्रेजी स्कूल मे सेहो संस्कृत पढ़ेबाक पूर्ण व्यवस्था छेक, भनहि से ऐच्छिक किएक ने होइक। एहने एक गोट गाम अइ मधुबनी जिलाक करमाैली। एहिठाम प्राचीन संस्कृत पाठशालाक अतिरिक्त अंग्रेजीक मिडिल स्कूल पहिनहि सं रहलाक बादो दू गोट नव पाठशाला खुजलए। एगो संस्कृत प्राथमिक सह माध्यमिक विद्यालय आ दोसर संस्कृत प्राथमिक सह माध्यमिक बालिका विद्यालय। एहि गाम सं आध कोस उत्तर अवस्थित पाली मोहन गाम मे सेहो दू गोट प्राथमिक-सह-माध्यमिक संस्कृत विद्यालयक स्थापना भ चुकल-ए। एतौ पहिने सं एगो अपर प्राइमरी स्कूल विद्यमान छेक आ घरक अभाव मे मिडिल स्कूल नहि बनि पओछेक जखन कि विद्यार्थी बड़ बेसी छैक। जे स्कूल छेक से प्राचीन गुरुकुल जकां गाछी मे चलि रहल छेक आ मेघ देखिते गुरुजी लोकनि छुट्टीक घंटी टुन-टुना देत छथिन। अबोध चटिया सभ खुशी सं कुदैत फनैत घर चल जाइए। घरक चिन्ता ने गामक, लोक कें छेक ने सरकार के। आ लगभग एहने स्थिति मिथिलाक सभ गामक छेक, अपवाद कें छोड़ि।

बिहार सन खिचरि प्रदेश मे आ खास कें मिथिला मे, जाइठाम जातीय चेतना नामक वस्तु नहि छेक अपन भाषा-संस्कृति सं लोक पूर्ण उदासीन अइ आ अपन अधिकार प्राप्तिक लड़ाइ मे नपुंसकताक परिचय द चुकल-ए ताइठाम हठात् संस्कृत-प्रेमक बाढ़ि देखि ककरो छगुन्ता लागि सकेत छेक। की सरिपहुं ई संस्कृत प्रेम थिके आ ने आन किछु?

एहि प्रश्नक सठीक उत्तर पेबा लेल हमरा लोकनि कें कनेक पाछा जाय पड़त। १० जून १९८० कें बिहारक वर्तमान मंत्री मण्डल अपन पहिल बेसार मे उर्दू कें बिहारक दोसर राजभाषा बनेबाक निर्णय लेलक। पहिने ई कहि देब आवश्यक जे उर्दू सेहो बिहारेक किएक समस्त भारत मे कुनू मुसलानक मातृभाषा नहि छेक। भाषा धर्मक नहि क्षेत्रक होइत छेक आ स्वभावतः जे जाइ क्षेत्र मे स्थायी भावें निवास करेछ ताही क्षेत्रक भाषा ओकर मातृभाषा होइत छेक। परञ्च इहो सत्य छेक। जे संस्कृत जेना हिन्दूक लेल तहिना उर्दू मुसलमानक लेल आ खास कें तथाकथित हिन्दी प्रदेशक मुसलमानक लेल धर्मक भाषा थिकेक। मुसलमानक समस्त धर्म ग्रंथ एही भाषा मे छेक। ई भिन्न कथा जे संस्कृतक पंडित वर्ग जकां मुल्ला-मौल्वी कें छोड़ि सर्वसाधारण के ई भाषा अबितो ने छेक। किन्तु धर्मक प्रति कने बेसी कट्टर हेबाक कारणे लोक कें एकरा प्रति मोह छेक आ बिनु जनने बुझने एकर समर्थक बनि जाइए। बिहार सरकार एही कट्टरता सं लाभ उठओलक।

धर्म भनहि जे कुनू किएक ने हो एकर उत्तरत्तिए सत्ताक कवचक रूप मे भेल छेक। ई मानव जाति कें विभिन्न टुकड़ी मे बांटि ओकरा अब्बल बना देने अइ जाइ तं ओ एकबद्ध भय शोषणक विरोध नहि क सकेए। धर्म सर्वसाधारणक विरुद्ध महान षड़यंत्र थिक जे सत्ता द्वारा अबाध शोषणक पथ प्रसस्त करेए। आ सत्ता भनहि राजतंत्र वा तथाकथित प्रजातंत्र जे किएक ने हो ओकर चरित्र एके छेक। उर्दूक मान्यता-धर्मक आधार पर जनताक विरुद्ध एक घृणित षड़यंत्र छोड़ि आर किछु नहि थिक। जन कंठरोध आ भइयारी मे कलह बढ़ेबाक एहि षड़यंत्र मे बिहार सरकार अपन कुशल नायक डा० जगन्नाथ मिश्रक नेतृत्व मे किछु समयक लेल सफल अवस्से भेलाह। एहि नीति सं एतेबरि अवस्से भेले जे आब मिथिलाक कुनू मुसलमान अपन मातृभाषा मैथिली नहि पढ़त ओकरा बदला मे उर्दू पढ़त। मैथिली पढ़ने ओकरा नोकरीक आशा नहि छेक जे उर्दू सं छेक। ई दिगर बात जे उर्दूओ नोकरी नहि दिया सकेत छेक—पहिल खेप मे भनहि पांच-दस हजार कें जीविका भेटि गेलेक। परञ्च प्रत्यक्षक सामने लोक प्रमाण नहि तकेत अइ।

आइ भाषा विचारक जाहनेटा नहि जीविकोपार्जनक साधनो अइ। अंग्रेजी पढ़ब लोक एही दुआरे आरंभ केलक आ एखनो पढ़ेए जे एकरा द्वारा जीविका भेटब सहज छेक। मैथिलीक सरकारी मान्यताक मांगक पाछा इएह कारण छेक। दोसर मातृभाषाक माध्यमे जातीय चेतनाक विकास तथा जातीय एकता सशक्त होइत छेक जे देशजातिक सर्वांङ्गिण विकासक मूलाधार थिक। इएह कारण छेक जे १० जूनक पश्चात् मैथिली आन्दोलन एकटा नव मोड़ लेलक आ पहिल खेप मैथिल सन्तान अपन शोणित सं पटनाक राजपथ कें डुबा देलक। ई आन्दोलन नकारात्मक नहि सकारात्मक छल, ककरा विरोध नहि अपन न्यायसंगत अधिकार प्राप्तिक छल आ तें एकर आगि एखनो प्रज्वलित अइ जे समय पाबि कखनहुं दावानलक जन्म द सकेए। ओना मिथिलाक जयचन्द-मिर्जाफर एकराप्रर अवस्से संकीर्णताक लेबुल लगेबाक प्रयास केलक आ असफल भेलापर लोक कें दिगभ्रमित करबा लेल संस्कृत शिक्षा-विकासक षड़यंत्र रचलक!

सरकारक एहि घोषणाक पाछा दू गोट उद्येश छेक। पहिल त मैथिली आन्दोलन कें दिगभ्रमित केनाइ कारण महराजी मान्यता एखनो लोकक मन सं नहि हटले-ए ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ कें छोड़ि आन वर्ण रखनो अपना के मैथिल कहबा मे संकोच बोध करेए आ अपन मातृभाषा के मातृभाषाक रूप मे स्वीकार करबा सं हिचकिचाइए। लोकदलक उदय एहि विभेद कें बढ़ेबा मे आगि मे घीक काज केलक। फलतः मैथिली आन्दोलन मे बहुसंख्यक ओही वर्गक लोक छल जे संस्कृतक पोषक रहल-ए आ संस्कृतक द्वारा ई सुविधा भोगी वर्ग अपन स्वार्थपूर्ति होइत देखि आन्दोलन सं विमुख भ जायत। दोसर एहि वर्गक सरकारी चमचा सभ कें मास्टरी नामक 'कौरा' भेटि जेतेक आ ओ सदा सरकारक पाछा नाङड़ि डोलबैत रहत। मुस्लिम समुदाय मे जे सरकारी चमचा छल तकरा उर्दूक माध्यमे 'गर' धरा देल गेलेक। एंहि तरहे शासक दलक पाया मजबूत बनि जेबाक पूर्ण संभावना छेक। ओना हेतेक की से त भविष्ये कहत परञ्च एतेबरि निःसंकोच कहल जा सकेए जे अपन समस्त कृतित्वक अछेतो मिथिला-मैथिलीक अधोगतिक लेल पूर्ण जिम्मेवार इएह ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थ रहल-ए।

से जे हो परञ्च सरकारी घोषणाक पश्चात आन्हागाहीस' संस्कृत विद्यालय खुजय लागल। ओना त एकर अवधि बहुत पहिने समाप्त भ गेलेक मुदा स्कूल एखनो खुजि रहल-ए। दू-तीन बर्ख पहिने सं खाता-पत्र तेयार कएल जाइछ आ पटना जा कें 'बेक डेट' मे लोक दरखास्त द अबेए। 'इन्सपेक्शन चार्ज' सरकार मात्र तीन से टाका रखने छेक आ सेहो से-पन्नास उपरी देने 'बेक डेट' मे जमा होइत छेक। आर किछु बेसी देने 'इन्सपेक्शन' केनिहारक चयन करबाक अधिकारो लोक कें भेटि जाइत छेक। पैरबी लेल अपन क्षेत्रक कांग्रेसी एम० एल० ए० वा पराजित नेता छथि। हिनका अगिला चुनाव मे 'वोट'क गारंटी चाही।

माध्यमिक विद्यालय लेल ओकरा नामे परती-परांत जे कुनू तरहक आठ कट्ठा जमीन रजीष्ट्री हेबाक चाही। खाता मे छात्रक नामक अभाव नहिएं जे होइत छेक। असली स्थिति देखबे के करेछ? सलामी जीन्दाबाद! वोट जीन्दाबाद!! गामक जते जे अवंड छौड़ा छल आ खास कें 'इन्दिरा-लॉकेट वला, जे मैट्रिक त नहि पास क सकल मुदा कुनू तरहें माध्यमिकक प्रमाण पत्र उपर क लेने अइ—एहि स्कूल मे शिक्षक बनि गेल। ई भिन्न बात भेले जे ओकर, संस्कृतक हिज्जय तक नहि करय अबेत छेक। एगो शिक्षक महोदय बिगत बर्खक, खाता खाता तेयार करेत छलाह जाइ में हमरा सोझे मे लिखलनि 'ग्रीष्मा अवकास'। एहि तरहें संस्कृतक केहन विकास होएत से त बूझले अइ तखन मैथिलीक अहित अवस्से हएत। हमरा लोकनि संस्कृत पाठशाला मे पढ़ने छी मैथिलीक माध्यमे। संस्कृत पाठशाला मे व्याकरण, ज्योतिष वा न्याय सभ मैथिलीक माध्यम सं पढ़ाओल जाइत छल। आजुक एहि स्कूलक भाषा हिन्दी छेक संस्कृत एक विषय अनिवार्य, अवस्से रहतेक परञ्च आन विषय सभ अंग्रेजी स्कूले सन रहतक आ तें त्रिभाषा फार्मूलाक अन्तर्गत छात्र मैथिली नहि पढ़बा लेल बाध्य कएल जाएत। एक शब्द मे कही त संस्कृतक सारापर सत्ताक बबूरक गाछ रोपबाक ई षड़यंत्र थिक।

—अग्रदूत

गाम सं दूर : मिथिलाक मजदूर-२

कलकत्ताक ठेलावला

महानगर कलकत्ता सन विशाल विकसित आ व्यस्त' शहर मे बाट-बाट जाम रहनाइ साधारण बात छेक ओ पथयात्री कें जेना रेहल-खेहल भ गेल छेक। ट्राम-बस, ट्रक टेम्पू टेक्सी प्राइवेट कारक बीच रिक्सा ठेलाक अस्तित्व अनायासे ककरो ध्यान अपना दिस आकर्षित क लेबा मे पूर्ण रूपेण सकल होइए। ई जेना कहैत हो जे मनुक्ख सर्वोपरि थिक मशीन ओकरापर विजय नहि पाबि सकेछ, ओकर स्थान नहि ल सकेछ। पेंच सं पेंच कलकारखाना भनहि अते किएक ने पसरि जाओ गृह उद्योगक अस्तित्व ओ नहि मेटा सकेछ। संविधानक पोथा जते मोट किएक ने हो विदेशी वातानुकूलित गाड़ी मे बेसल लोक आ ठेला घिचेत लोक समान नहि भ सकेए।

ठेलागाड़ी माने ओ गाड़ी जकड़ा ठेल कें ल गेल जाय। ई बेल्गाड़ीक विकृतरूप थिक जाइ मे जुआ अथवा वाला नहि होइत छेक। एकर मुहरा बेल्गाड़ी जकां सठल नहि रहैए अपितु दुनू बांठक बीच हाथ डेढ़ेक जगह खाली रहैत छेक जकर मुंह मोट रसी सं मिलाओल रहैछ। एहि मे

(शेषांश पृष्ठ ३ पर)

मैथिली आन्दोलन

मैथिलक आन्दोलन बनब' पड़त

भारत आ नेपालक समृद्धिशाली भाषा परिवारक सदस्य होइतो मैथिली कें अपन वाजिब अधिकार नहि भेटलेक अछि। चौदहम शताब्दी सं आठम शताब्दी धरि ल' गेलहुं मैथिली सम्मानित भाषा सूची मे स्थान नहिपावि सकल अछि। भारत नेपाल मिला तीन करोड़क दावा वजनिहारक होइतो आइ शासकीय निकाय सं उपेक्षित पड़ल अछि आखिर की कारण छै एहि अवहेलनाक?

एकर पृष्टमे खोजवाले मैथिली भाषा क' संग कएलगेल वर्ग वादी वलात्कारी सभ क' कलई खोल पड़त। मैथिली कें पौती पेटारी किंवा पोथी-पतराक परिधिमे समेटिक' रखनिहार पुरना संस्कृताह पंडित लोकनि एकरा जन जीवन सं काटिदेल छीन्ह। ब्राह्मणेत्तर वर्गक लोक एकरा अपन भाषा मानवा पर तैयार नहि भेलाह। हुनक मानसिकता मे अटकल पचल जे सन्देह रहन्हि से क्रमिक व्यवहार सं पुष्ट होइत गेलन्हि आ ओ लोकनि अपनाकें मैथिली भाषासं फराक राखि लेलन्हि। आ जेकि ओ वर्गजे दावा कयनिहार वर्गक शतप्रतिशत वेसी छल, एहि दीशि रूचि नहि देखौलक एकर विराट भाषाभाषीक सूची होइतो एकरा अल्प वर्गक भाषा हयवाक सरकारी ठप्पाक मारि भोग पड़लैक मैथिली कें।

भारतेमे नहि, नेपालो मे सरकारी स्तर किंवा उच्च सरकारी ओहदाक लोक सभ सत्तरि ई० धरि इएह धारणा बनओने छलाह जे मैथिली एक वर्गक मात्र भाषा थीक। मुदा तकर परिवर्तन एत्त भ'गेलैक अछि एत्त वहुअंशमे लोक एहिदोष सं मुक्त अछि।

भारतीय क्षेत्रमे हमदेखेत छी मैथिल वर्गमे विराट असमानता। भाषा ल' क' एखनो लोक मैथिली अहंक भाषा अछि से कहवाले' आन्दोलन करेत अछि। सभा करेत अछि-पत्र पत्रिकामे विचार छपैत अछि। ई दुर्भाग्य नहि तं आर की भेल।

पटना दरभङ्गा सहर्षा, खजौली, जयनगर, रहिका, कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई-सभठाम मैथिली भाषाक मान्यताले' संगठन आ कार्यकर्त्ता सक्रिय छथि। बरोबरि कार्य क्रम सभ घोषित रहल अछि। लोक सभ अमल सेहो करेत रहलाह अछि। मुदा, हमरा जनिते हिनका सभकें बाहिरूपमे सहियोग भेटवाक चाही ताहिरूपमे कोनो कोन सं भेटैत नहि होयतनि से हमरा अंरे विश्वास अछि। एकरो मूल मे उएह भाषा सम्बन्धी असम्बद्धता प्रमुख कारण मानल जा सकेछ।

मैथिली पत्र-पत्रिका निकलेत अछि। एखन तं आखादर्जन पत्रिका आ पत्र हमरा आगांमे राखल अछि। जहिना खुशी होइत अछि ई जागरणक दौर देखिक। तहिना कत्तौ दखक भान सेहो अछि-ई दीर्घ जीवी नहि रहिसकत! एहि निराशाक की कारण मैथिली भाषाक प्रति समवेत आकर्षणक अभाव?

मैथिलीक पुस्तक सभ निकलैत अछि। मैथिली अकादमी सन-सन मात्र सरकारी संस्था निकालि पावि रहल अछि। सेहो ओकर तीनगोट लक्ष्यमे एकगोट मात्र पुरा भ' रहल छैक। मुदा एहि सं अतिरिक्त मैथिली पोथी प्रकाशनक की हलित छैक। एक तं प्रकाशकक अभावें छपा नहिं सकत। जं छपियोगेल तं कीनत नहि। एकर मूल मे सेहो सम्पूर्ण मैथिल कें भाषा साहित्यप्रति लगावक अभाव मानल जयवाक चाही।

आखिर मैथिली सम्बन्धी कोनो विकासक काज मे सम्पूर्ण मैथिलक असहयोग कियाक महत्पूर्ण बाधा अछि? अपन भाषा आ साहित्यक प्रति विराग कथी लेल? तं हम कहब कहियो बनाओल अन्हरजाली मे फंसल लोक अन्हरागेल अछि। भोतिआ गेल अछि।

तएं मैथिली आन्दोलनकें दू दिशामे मोरू। एकटा गाम दीशि-दोसर अधिकार दीशि। एकटा महत्त्वपर्ण दिशा भेल, गाम-गाम, घर-घरमे पेसू। मैथिली भाषा अहांक भाषा थीक से ओकर चिनवारमे लिखाउ। ओकरा वालबच्चा, से समाज दे-दीआद सभक दीमागमे भरू। ओकरा महत्वदीऔ। ओकर पढ़ल लिखल समाज कें मंचदीऔक, हाथमे झंडा दीऔक, नेतृत्व दीऔक! अहमकें जगवियौं ओहिवर्गक। ओ वर्ग जागत मैथिल जागत आ जखन मैथिल जागत सम्पूर्ण मैथिली जागत। मैथिली आन्दोलनकें मैथिलक आन्दोलन बनाउ।

—रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

कलकत्ताक ठेलावला

ओतवा जगह रहैत छैक जे एक आदमी-ओइ मे पेसि कें ठाढ़ भ सकै। बड़दक स्थान मे इएह आदमी गाड़ी घीचैए। नाभिक नीचा रस्सी पर जोर देत आ हाथ सं दुनू बांस पकड़ने। पाछा सं एक आदमी ठेलेत रहैत छैक। भरिगर बोझ भेने खगता अनुसार एक अथवा दू आदमी दुनू कात पहियाक पाछा सं जोर लगवैत छैक। कोनो कोनो ठेलामे जुआम स्थान पर हाथ दु-एक बांस रहैत छैक जकरा दुनू दिस दू आदमी पकड़ि कें घीचैए।

कलकत्ता मे लगभग १० हजार ठेला छैक जकर बेसी भाग बड़ा बाजार मे छैक। बड़ाबाजार व्यापारक केन्द्र हेवाक कारणें काज भेटब सहज होइ छैक। आन अंचलक ठेलावला कें कहियो काज भेटैत छैक कहियो नहि भेटै त छैक। जाइ बाट मे ट्रक टेम्पू नहि जा सकैछ ठेला ताहू बाटे चलि जाइछ। दोसर सामानक मात्रा कम रहने ट्रक टेम्पू क' भाड़ा मे लाभ नहि भ सकैत छैक-स्वभावतः ठेलाक प्रयोजन।

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

कविता

बहिनदाइक नाम एगो चिट्ठी

बहिन दाइ!
अहांक चिठ्ठी भेटल छल –
मुदा उतारा देबा मे भेल बड़ बिलम्ब
फुसि किए कही जे/छलहुं बड़ व्यस्त
सरिपहुं की लिखी/वा किएक लिखी
तकरे नञि क पओने छलहुं निर्णय
तें बहिन दाइ!
उतारा देबा मे भेल विलम्ब।
बहिन दाइ!
हम बनेत छी जे अहां एहूबेर
बनओने हएब शामा-चकेबा
तकने हएब हमर बाट
लगलापर आगि बिरदाबन मे / आ नञि पावि हमरा
भेल हएब उदास / बहल हएत आंखि सं दहो-बहो नोर।
किन्तु बहिन दाइ!
अहां मानी वा नञि मानी
थिक धरि ई सत्य / जे
कुन दावानल कें नञि मिझाओल जा—सकेछ
सोवर्नी लोटा सं/आ,
जेना अहां लिखने छी—
ठीके हम बड़ बदलि गेलौहें
हम बुझेत छी / जे बिरदावन / ओ बिरदावन नञि रहि गेल-ए
आइ / एकटा नञि
हजारक हजार चुगिला जनमि गेल-ए / आ
इएह बिरदाबन थिक ओकरा सभक स्थायी आवास
एकर पुरान गाछ सभक धोधरि मे
एक सं एक अजोध विषधर करेए निवास
आइ
एहिठामक वसातो अइ विषयुक्त / सांसो लेवाक अनुपयुक्त
तें
हमरा विचारें / एकरा जरिए गेनाइ थिक नीक
मिझेवाक प्रयास सर्वथा अनुचित
शक्तिक अपव्यय / जे करवाक थिक संचय
आगामी कालिक निमित्त
जखन कि हमरा लोकनि लगाएब
निश्चिते लगाएब / एगो नव बिरदावन
पटाएब / कुनू डबरीक पानि सं नञि
अपन घाम सं / आ फुलाएब
रंग-विरंगक फूल / अपन आशाक अनुकूल
अपन कल्पना कें देब वास्तव रूप।
बहिन दाइ!
हम मानेत छी / आ अहूं मानब
जे आइ / अपनने गाम मे
हम सभ छी अनठ्या-अनचिन्हार
जकर नञि छइ कुनू पता-ठेकाना—
सरिपहुं कतेक असह्य थिक ई पीड़ा
मुदा/ताइ लेल
कथमपि उचित नञि कानब / बरन्
चीन्हब अपन शक्ति आ
बाहरोक शब्द कें अकानब—आ
एगो प्रण ठानब
त कालि—आगामी कालि
हमरो एगो परिचय रहत
बिरदाबनक हम—हमर बिरदावन।

—रामलोचन ठाकुर

चिट्ठी पुरजी

देसिल बयनाक प्रवेशांक भेटल। कतेक नीक लागल से वर्णन नहि कए सकइत छी। वास्तव मे पत्रिकाक भाषा, विषय आओर सम्पादन बेस सुन्दर आर उपयोगी भेल अछि। एहि प्रयास हेतु अपना दिसि सं आर "मैथिली समाचार" परिवार दिसि सं शतशः अभिनन्दन आओर शुभकामना स्वीकार करू।

—डा० रुद्रकान्त मिश्र, इलाहाबाद

देसिल बयना पहुँचल। मन प्रफुल्लित भए गेल। हम हार्दिक शुभकामना व्यक्त करैत छी ओ पत्रिका फलए फुलए से कामना करैत छी।

'देसिल बयना' जन जीवनक प्रतीक बनए से हमर इच्छा अछि आ तखने विद्यापतिक भाषाक समुचित समादर होएत।

'बिनु भाषाक लोक अछि
जानू मृतक समान
चरैत घास पीबैत पानि
मात्र पशुक समान'

हमरा आशा अछि ओ पूर्ण विश्वास करैत छी जे अपने लोकनि जाहिरूप सं मैथिलीमाक सेवा करैत छी तकर मूल्य भावी पीढ़ी पेबे करत।

—डा० मदन मिश्र, भट्टपुरा

जहिना देसिल बयना सब जन मिट्ठा तहिना ई पत्रिका सभ मैथल पुत्र कें मीठ लगैत रहैन आ ई अनवरत प्रकाशित होयत रहए इएह हमर विचार अछि। हमर सभ शुभकामना आ सहयोग बनल रहत।

—सूर्य नारायण मंडल, नई दिल्ली

देसिल बयना लेल बहुत रास शुभकामना। भरिसक सहयोग देबा मे पाछू नहि हटब, विश्वास राखी। अगिला अंक सं न्यूज आपूर्ति करब।

अपने लोकनि मैथिली लेल जान-प्राण लगा देने छी। हमरो छात्र लोकनिक किछु कर्त्तव्य भय जाइत अछि जकर निर्वाह करब, से आशा अछि।

—वीरेन्द्र झा, दड़िभंगा

देसिल बयना'क पहिल अंक देखलौं। जौं ई 'मैथिली मुक्ति मोर्चा कें प्रमुख मासिक पत्र थिक तखन एकरा एतेक सामान्य ढंग सं छपने मुक्ति मोर्चाक अयश हैत।

हमर निवेदन जे एकर प्रकाशन स्तरीय ढंग सं केल जाए। मुक्ति मोर्चा एखनधरि की सभ कयलक आ भविष्य मे की सभ करबाक योजना बना रहल अछि से ईमानदारी सं छापि देल जाए। ओहि अंकक एक प्रति श्री धर्मेन्द्र कुमरक पता सं पठा देल जाए। 'मिहिर' मे एक बेर ओ मुक्ति मोर्चाक प्रति किछु अपमानजनक शब्द-सभक प्रयोग कएने छलाह, जकर जबाव हम 'मिहिर' मे पठा देने छलौं।

—नवीन चौधरी, हबड़ा

देसिल बयना आजुक आन्दोलनात्मक कार्यक्रम मे जाहि सं मैथिली ओ मिथिला कें नव स्फूर्ति आ मृतप्राय आत्मा मे संजीवनीक संचार करय एहि लेल हमर हार्दिक कामना अछि। पत्र-पत्रिकाक पृष्ठ पर कोनो भाषाक सांस चलैत अछि। देसिल बयनाक प्रथम अंक देखि कने-मने सन्तोष अछि। मुदा एकर प्रभाविता पर सन्देह बुझना जाइछ। कारण एकरा संगे एकटा पृष्ठक अभिवृद्धि आवश्यक। देसिल बयना अपन मेघ मन्द्र स्वर मे सुतल-सिहरल, डूबल-पिछड़ल, भांग-ताड़ी-गांजा मे डुबकी लेत मृतप्राय मैथिल जनमानस कें उद्वेलित करय एहि लेल हमर आह्वान अछि। हमरा जे सहयोग कहब से देब।

—वैद्यनाथ बिमल, गलमा

☐ प्रिय पत्रलेखक बन्धुगण !

जय मैथिली।

सुझाव आ सहयोगक आश्वासन लेल आभारी छी। एक खेप फेर कहि दी जे 'देसिल बयना' आन्दोलनक पत्र थिक, फेशनक नहि। एकर उद्देश आन्दोलनात्मक चेतना जाग्रत केनाइ थिक—टेबुल शोभा बढ़ओनाइ नहि। एकरा ताही दृष्टिसँ देखल जाय। जं एहि मे कोनो खागि बुझना जाय तं निःसंकोच लिखी, ताइ तरहक रचना पठाबी— –हमरा लोकनि तकर स्वागतेटा नहि करब– –आभारी सेहो रहब। पत्रिका अपन उद्देश्य मे सफलीभूत तखन होएत जखन कि एकर प्रवेश गाम-गाम मे होइक—ई जन-जन लग पहुंचि सकए। एहि कार्य मे अपने लोकनिक सहयोगक अपेक्षा अछि आ आसे प्राप्त होएत–ताही विश्वासक संग—

—संपादक

मिथिला एक्सप्रेसक सामने धरना

हमरा लोकनिक उत्तर कलकत्ता प्रतिनिधि जनओलनिहें जे गत २५ अक्टूबर कें विशाल संख्या मे मैथिल युवक लोकनि हावड़ा टीशन पर जमा भेलाह आ पश्चात् रेल पटरी पर धरना दय मिथिला एक्सप्रेस कें पचास मिनट धरि अंटकओने रहलाह। बाद मे अधिकारीक आश्वासन भेटलाक बादे पटरी मुक्त भेल आ स्वभावतः गाड़ी घंटाभरि विलम्ब सं प्रस्थान केलक। युवक लोकनिक मांग छलनि जे उत्तर बिहारक लेल मात्र दू गोट गाड़ी हेबाक कारणे बड़ दिकदारी होइत छैक तें गाड़ी बढ़ाओल जाय। पूर्व रेलवेक मैनेजर महोदय अपन आश्वासन पूरा करबा लेल छठि पाबनधरि हावड़ा बरौनीक एगो स्पेशल गाड़ी देबाक घोषणा तकर पराते क चुकल छथि। ओना त उचित छलैक जे गाड़ी समस्तीपुर तक जाइत आ रोज जाइत, परञ्च....

मिथिला आ नार्थ बिहार एक्सप्रेस—इएह दू गोट गाड़ी हावड़ा सं पहिने समस्तीपुर जाइत छल आ आब गोरखपुर तक जाइए। गोरखपुर चल गेने एतेधरि अबस्से भेलैए जे भीड़ बढ़ि गेलैए आ संगहि धुरतीकाल लोक कें मुजफ्फरपुर वा समस्तीपुर मे चढ़ि पओनाइ असंभव भ गेलैए। एक त गेट पहिने सं बन्न रहैछइ आ जं कोनहुना एक-आध टा घुसबो केलैए त मारि-पीट बझिएटा जाइत छैक लोक दू दू, तीन-तीन दिन तक प्लाटफारम पर बैसल रहैछ - भुखल-पियासल। आफिस फेक्टरी मे काज केनिहार कें नागा भेला सं से फिरीशानी होइत छैक तकर अनुमान त भुक्तभोगीए क सकैए।

लगभग बीस बर्ख पहिने सं इएह दू गोट गाड़ी छैक जाइपर सम्पूर्ण उत्तर बिहार नेपाल आ उत्तर प्रदेशक एक पैघ भागक लोक कें निर्भर करय पड़ैत छैक। तहिना ई दिकदारी सेहो नव नहि छैक। ओना लोक संख्या एइ बीस बर्ख मे कते बढ़लैक तकर अनुमान सहजे कएल जा सकैछ। तें खगता त ई छलैक जे गोरखपुर तक जं लाइन गेबे कएल त ताइ लेल आर कम स कम दू गोट गाड़ी देल जइतैक आ ई दुनू गाड़ी समस्तीपुर तक रहैत। दड़िभंगा तक बड़ी लाइन भेने ओतय तक जाइत। परञ्च उचित सं सरकार के की मतलब ? केदार बाबू गोरखपुर क्षेत्र कें गाड़ी देलथिन सेह की थोड़ ? मिथिलांचलक लोक मुइल अइ तें सीमांत क्षेत्र होइतहुँ जयनगर के कहय दड़िभंगाक बड़ी लाइन सेहो गतालखाता मे पड़ल छैक। एहि निमित एक नहि अनेक बेर रेल मंत्रालय के लिखल गेल-ए, परञ्च जबाबो नदारद। कम स कम जनता सरकार मे ई भद्रता अबस्से छलैक जे जनताक अभाव अभियोग सुनैत छल—पत्रोत्तर देत छलैक। कांग्रेस सरकार त गोर माउग गौरबे आन्हर। तें आवश्यकता छैक जोरगर आन्दोलनक। हिरबा छुबि लैने स्थायी समाधानक अपेक्षा नहि कएल जा सकैछ। आशा अइ जे युवकगण अगिला दिन लेल तैयार रहता। देसिल बयनाक शुभ कामना।

कलकत्ताक ठेलावाला

ठेलावलाक मेहनति सेहो रिक्सावलाक अनुरूपे छैक। बड़ा-बाजार अंचल मे एक ठेलाक दैनिक आमदनी ५० सं १५० तक होइत छैक जाइ मे तीन स चारि आदमी तक रहैत अइ' एहि मे चालिस टाका महिनवारी थानाक सलामी लगैत छैक। ताइपर सं दिन मे ५-१० टाका ट्राफिक पुलिस के देमय पड़ैत छैक। पुलिसक गारि आ दुरबचन उपस्करे मे भेटि जाइत छै।

एहि तरहें जे उपार्जन करैए, ताइ मे अपन खर्च आ परिवार कें मनिआडर। खेना इक लैल एकरा लोकनि कें बेसी चिन्ता नहि रहैत छैक। जत' तत' मोड़ पर सतुआ' वला बैसल रहैत छैक। सातुखा' पानि पीबि तृप्त भ जाइए। राइत मे ठेलैपर सुति रहल। दिकदारी होइ छइ, बरिसकाल मे। परञ्च घर भाड़ा लेबाक दस्म रहैत नहि छैक। केहनो टुटली मड़ैया लेत केहनो अंचल मे लेत से डेढ़ सं स कम मे भेट निहार नहि। दुरस्थ गेने काज मे असुविधा हैतैक। फलतः कठिन परीश्रमक पश्चातो खान पानक ठीक नहि रहैत छैक आ तें इएह लोकनिक देह पर कहियो माउस नहि होइत छैक।

एहि धंधा मे बेसी लोक भोजपुरी क्षेत्र क अइ। मिथिलांचलक मुंगेर, मुजफ्फरपुर चम्पारनक मजदूर सभ अइ। मधुबनी दड़िभंगा आदि क्षेत्रक मजदूरक संख्या रिक्शा मे बेसी छैक ठेला मे बड़ थोड़। से जे कुनू धंधा मे किएक ने हो सभक-श्रम आ आर्थिक स्थिति समाने छैक। सभक संग अपन डीह डाबर छोड़बाक विवसता छैक' जीवनक प्रति मोह छैक आ श्रमक प्रति निष्ठा छैक।

—मुजतबा अली

बाल गीत

हुक्का-लोली

हुक्कालोली खेलै छी हम
मच्छर कें भड़कावै छी हम
भ्रष्टाचार भगावै छी हम
मैथिल-पुत्र कहावै छी हम॥

महगी के ललकारै छी हम
दुराचार कें जारै छी हम
अन-धन-लक्ष्मी घर करैछी
निर्धनता बेलावै छी हम॥

भेद-भाव कें मेटवै छी हम
दंभ-द्वेष के घटवै छी हम
बाट-घाट मे दीप जरा कें
घर-घर ज्योति जगावै छी हम॥

परिजन, अरिजन हो वा हरिजन
सभ सं हाथ मिलावै छी हम
हुक्कालोली गीत गवै छी
नव उल्लास पसारै छी हम॥

—सूर्य नारायण मंडल

कह लोचन कविराय

चमचा गुण कें खान थिक कहैछ वेद-पुराण
जकरा चमचा छइ जते से ततबैक महान
से ततबैक महान राजनेता युग चेता
प्रगतिशील कवि, कथाकार, शिल्पी, अभिनेता
कह लोचन कविराय करथ सभ संभव चमचा
भारत भाग्य विधाता जय-जय-जय हे चमचा

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३६ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, वृन्दावन बैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—१ अंक—३ दिसम्बर, १९८१ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

६ दिसम्बर

बर्ख मे तीन सए पएंसठि दिन होइत अछि। बेरा-बेरी एक बेर क सभ अबेत अछि आ चल जाइत अछि। दोसर तरहेँ कही त बीति जाइत अछि। कालक्रमे लोक ओकरा बिसरि जाइत अछि। फेर दोसर बर्ख अबेत छेक आ ओहिना बीति जाइत छेक। ई नियम आदि कालहि सं चलेत आबि रहल अछि आ जाधरि बिस्व-ब्रह्माण्ड रहत चलेत रहत।

परञ्च जे कोनो नियमक अपवाद होइत छेक। एहू नियमक अपवाद छेक। अपवाद होइत अछि ओ दिन जे कोनो व्यक्ति, समाज वा जातिक मानस पटल पर एगो अमिट छाप छोड़ि जाइत अछि। ई दिन जखन अबेत अछि त अपना संग ओहि विशेष घटनाक कथा-गाथा कें नेने अबेत अछि आ लोकक मानस पटल परक बिस्मृत प्राय स्मृति कें पुनः नव क जाइत अछि। ६ दिसम्बर मैथिल जातिक लेल एहेने एगो दिन थिक, गौरवोज्ज्वल दिन। बर्ख रूपी आकाशक तीन सए चओसठिटा नक्षत्रक बीच सूर्य सन प्रखर प्रचण्ड, देदीप्त।

ई उएह दिन थिक जहिया ग्रामांचल सं प्रवासधरिक मैथिल पटना में जमा छल। भेल छल अपन संविधान सम्मत अधिकार प्राप्तिक संघर्ष लेल। जमा भेल छल मायक दूधसन पवित्र अपन मातृभाषाक न्यायोचित सम्मान-अधिकार प्राप्तिक संघर्ष लेल। ई उएह दिन थिक जहिया मैथिलक सिंहनाद सं गगन गुंजायमान भेल छल, शहर दलमलित भेल छल। ई उएह दिन थिक जहिया न्यायक बोरखाधारी अन्यायी जगन्नाथ मिश्रक सरकारक बोरखा उतरि गेल छलेक, आसन डगमगा गेल छलेक। सरकारी बर्दीधारी गुंडा सभ आतंकित भ उठल छल। लाठी गोलीक बल पर बनल आ चलेत सरकार कें फेर लाठी-गोलीक सहारा लेमय पड़ल छलेक। परञ्च तैयो सिंह शावक सन निडर मैथिल सेनानी सभ अपन लक्ष्यपथ पर बढ़ेत गेल छल। ओकरा पर लाठीक प्रहार होइत रहलेक, ओकर रक्तक धार बहैत रहलेक किन्तु पएर पाछू नहि भेलेक, मुंह सं आह नहि बहरेलेक। बहरेलेक त उएह ओजस्वी नारा—हिन्दू मुसलिम बीर जवान। हम सभ छी मिथिला सन्तान॥ हमरा चाही माइक बोल। आनक बोली दूरक ढोल॥

आ तें ६ दिसम्बर अन्यान्य तिथि सं फराक अछि, महत्वपूर्ण अछि, अविस्मरणीय अछि। ई उएह दिन थिक जे मैथिली आन्दोलन कें नव मोड़ देलक, सही रूप देलक आ मैथिल जाति कें एहि कलंक सं मुक्ति दिअओलक जे ओ अपन अधिकार प्राप्ति लेल संघर्ष नहि क सकेत अछि, 'शोणित नहि' बहा सकेत अछि। आ तें मिथिला-मैथिलीक इतिहास मे ई दिन अमर रहत। अमर रहत कलकत्ताक मैथिली मुक्ति मोर्चा। अमर रहत पटनाक निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ। अमर रहताह मैथिली पुत्र नथुनी झा, सुशील, विजय पाठक तथा अन्यान्य समस्त मैथिली सेनानी लोकनि।

६ दिसम्बर अमर रहत। ई प्रतिबर्ख आओत आ जाधरि मैथिली कें समस्त न्यायोचित अधिकार नहि भेटि जाइत छेक-जाइ लेल कि आन्दोलन भेल छल—मैथिल जाति कें अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक उद्धारक लेल, अपन मायक दूधक लाज राखेक लेल उसकबेत रहत। ई प्रतिबर्ख आओत आ मैथिल जाति कें अपन सहोदरक शोणितक बदला लेबाक लेल उत्साहित करेत रहत। ई प्रति बर्ख आओत आ मैथिल जाति कें ओकर अग्रजक बीरताक कथा-गाथा कहि-कहि प्रोत्साहित करेत रहत, कर्त्तव्यक स्मरण करबेत रहत। ई प्रतिबर्ख आओत आ मिथिलाक अभिनव जयचंद-मिर्जाफरक स्मरण दियबेत रहत, ओकरा प्रति घृणा भरेत रहत आ मिथिला कें एहि जयचंद-मिर्जाफर रूपी कलंक सं मुक्त करबाक पाठ पढ़बेत रहत।

६ दिसम्बर मिथिलाक लेल ओहिना थिक जैना बंगालक लेल २१ फरबरी। फर्क एतबाधरि अवस्से छेक जे २१ फरबरीक इतिहास बंगालक बच्चा-बच्चा कें जानल छेक—स्मरण छेक आ तें बच्चा-बच्चाक कंठ सं सूनल जाइत अछि—आमार भाइएर रक्ते रंगा एकुशे फेब्रुआरी, आमि कि भुलिते पारी? ठीके बंगाली जाति एकरा नहि बिसरि सकेत अछि। २१ फरबरीक परिणति थिक बंगला देश। ६ दिसम्बरक परिणति एखन सामने नहि आयल अछि। एकर ख्याति २१ फरबरीसन नहि भ पओलकेक अछि। परञ्च ताइ मे ६ दिसम्बरक कोन दोष? ई दिन मैथिलीक साहित्य कारक अवचेतनताक परिचायक थिक।

६ दिसम्बर १९८० क मैथिली आन्दोलनक बर्ख पूरा भ रहल छेक। बंगाल जकां हमरा लोकनि एहि अवसर पर कोनो सभा समावेश नहि क रहल छी परञ्च एहि पावन अवसर पर फेर अपन शपथ कें दोहरबेत छी जे जाधरि मैथिली कें अपन समस्त न्यायोचित अधिकार-सम्मान नहि भेटि जाइत छेक, हमरा लोकनिक संघर्ष जे ६ दिसम्बर १९८० कें आरंभ भेल छल, चलेत रहत। 'देसिल बयना' एहि मुक्ति चेतनाक संवाहक बनत। एहि लेल ओ मैथिलक जातीय चेतना कें जगाओत, जातीय एकता कें सशक्त करत आ संघर्ष चेतनाक निर्माण करत। मिथिलाक सर्वांगिण विकासक, अतीतक त्रिभुवन विख्यात मिथिला कें भविष्यों मे विश्वविख्यात बनेबाक कल्पना कें उजागर करत, ओकरो साकार बनेबाक पथ प्रशस्त करत। एहि पुनीत कार्य मे हमरा लोकनि समस्त लेखक—पाठक लोकनिक सहयोगक अपेक्षा करेत छी।

जय मैथिली

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

मैथिली आन्दोलन

एकांगी इतिहासक कुफल

जहिया कहियो आ जतय कहियो मैथिली आन्दोलनक चर्च चलत त केओ केओ बाजिए देताह-थइ, मैथिलो सं कतहु आन्दोलन भेलेए? ई गप्प ततेक सहजताक संग बाजल जाइए जे एहि मे संदेहक जेना कुनू गुंजाइसे ने रहैक, विचार करबाक कुनू खगते ने होइक। विद्वान-बुद्धिमान लोकनि अपन बातक सत्यता सिद्ध करबा लेल मिथिलाक भौगोलिक-ऐतिहासिक स्थिति पर व्याख्यान देताह, मनहि लोक जिज्ञासा करओ वा नहि। परञ्च जं सत्य पुछल जाय त आइधरि केओ महानुभाव एहिपर नीक जकां विचार नहि क पओलनि अथवा विचार करबाक खगता नहि बुझलनि। तें आइ एकर बड़ बेसी खगता छेक जे आर विलम्ब नहि क एहि विषय पर नीक जकां विचारल जाय। विभिन्न दृष्टिएं विभिन्न कोन सं विचारल जाय.

हमरा जनतबें ई गप्प बिल्कुल निराधार अइ जे मैथिल जाति आलसी होइए, डेरबुक होइए आ तें ओ मेहनति नहि क सकेए, आन्दोलन नहि क सकेए। ई गप्प सत्य जे जाइठाम जीवन-यापनक साधन सुलभ रहैत छेक ओ थोड़बे श्रम मे उपलब्ध भ जाइ छेक ताइ ठामक लोक बेसी परीश्रम नहि करेए। कृषिप्रधान मिथिला-देशक माटि ततेक ने उपजाउ छेक, प्राकृतिक सम्पदा तते बेसी उपलब्ध छलेक जे निर्विवाद लोक कें थोड़ मेहनति वेनहि सन्ता सहजता सं जीवन निर्वाह भ जाइत छलेक। पूर्व मे लोकक संख्याक संगहि खगता सेहो सीमित छलेक आ संचयक प्रवृति आइ कालिसन प्रबल नहि छलेक। तें जं लोक थोड़ श्रम करेत छल त ओकरा अहदी वा कोढ़ि किन्नहुं नहि कहल जा सकेए। राजस्थान मे पीबाक पानि लोक के दू कोस तीन कोस दूर सं आनय पड़ेत छेक-तें परीश्रम बेसी हेबेटा करतेक। किन्तु ओकरो जं दरबजेपर उपलब्ध भ जाइ त मात्र परीश्रमक हेतु परीश्रम नहिञेटा करत आ जं करबो करतत से मुर्खताए हेतेक।

जं आजुक संदर्भ मे विचार कइल जाय त मैथिल समुदाय अन्यान्य कुनहु जाति सं कम परीश्रम नहिञेटा करेए। तैयो जं ओकर आर्थिक स्थिति अधलाह छेक त ताइ लेल सम्पूर्णरूपे ओकरा दोषी नहि कहल जा सकेए। तीन-तीन खेप लोक धान रोपि आयल परञ्च दहा गेलेक। फेर रोपलक त एखन रौदी मे जरि रहल छेक। ई त निश्चित रूपें सरकारक उपेक्षाक फल छेक जे ओकर समस्त प्राकृतिक सम्पदाए आइ विपदाक मूल बनि गेल छेक। कलकत्ता, पटना, दिल्ली, पंजाब—जतहि देखू मिथिलाक मजदूर दिन-राति अपन घाम चुआ रहल-ए। रिक्सा, ठेला, झाका हो वा चटकल, गंजीकल, प्रेस, ट्राम, बस वा अन्यान्य कारखाना मैथिल मजदूरक भरमार छेक। परञ्च जे पाइ ओ उपार्जन करेए तकर सिंहभाग परदेश मे खर्च भ जाइ छैक। जं ओकरा अपने देस-कोस मे चाकरीक सुविधा रहितेक त निश्चिते ओकर आर्थिक स्थिति आइ दोसर तरहक रहितेक।

जहांधरि दोसर आरोपक प्रश्न अइ जे मैथिल जाति वीरबंका नहि होइए। ओ लड़ाकू जाति नहि अइ सेहो निराधार

(शेषांश पृष्ठ ७ पर)

गाम सं दूर : मिथिलाक मजदूर—३

कलकत्ताक झाकावला उर्फ मोटिया

[illegible] संग रहल जाय। तेखन न-ठ बकां ओकरा सभक दिन चर्याक, सुविधा-असुविधाक, आशा-आकांक्षाक पता चलि सकैत छेक। ई बात जनितो एहि स्तम्भक आरंभ करबाक पाछां इएह उद्देश छल जे एकर खगता छैक। परञ्च इहो गप्प सत्य जे तखन मिसियोभरि एकर आभास नहि छल जे ई कार्य एतेक कठिनाइ छैक आ ने इएह अनुमान छल जे एते विशाल संख्या मे मिथिलाक सर्वहारा वर्ग एहि महानगर मे रहि रहल-ए। विद्यापति पर्वक मंच सं कएक बेर कएकटा नेताक मुंहे सुनने छी जे कलकत्ता मे लाखोक संख्या मे मैथिल छथि। ई गप्प त उएह लोकनि कहताह जे हुनका लोकनिक मैथिल सूची मे ई वर्ग सामिल अइ वा नहि परञ्च एतेक हम अवस्से कहि सकैत छी जे ई सर्वहारा वर्ग जे कहियो कुनू मैथिलीक नाच-गान मे नहि गेलए, जकरा इहो ने पता छेक जे मैथिल ककरा कहैत छेक आ ओहो मैथिल थिक—जं तकर हिसाब लगाओल जाय त एक लाख नहि तकर चौबर मैथिल एहि एहि महानगर मे रहि रहल-ए।

एहि सं पहिने हमरा किछु रिक्सा चालक सभक संग परिचय-सम्पर्क छल। सम्पर्क छल किछु कल-कारखानाक मजदूरक संग। ओकर अतिरिक्तो आन-आन धन्धा मे मिथिलाक मजदूर अइ से पता छल—परञ्च तकर संख्या जे एते विशाल छेक से निश्चिते नहि ज्ञात छल। एकरा लोकनिक हेंड़ मे जाइत, गप्प-शप्प करेत बंगलाक सुप्रसिद्ध साहित्यकार शंकरक पोथी 'कतो अजाना रे' बेर-बेर मन पड़ि जाइत अइ। सरिपहुँ अपन भूमि सं दूर पेटक ज्वाला मे बौआइत हमरा लोकनि एक दोसर सं कतेक फराक भ गेल छी। कतेक अपरिचित भ गेल छी।

झाकावला आ मोटिया मे फर्क छेक। झाकावला अपन समान झाका मे (एक तरहक पथिया) राखि माथपर उठबेए आ नियत स्थान पर पहुँचा देत अइ। मोटिया खाली हाथ रहै-ए। एकटा तौनी अवस्से रहैत छेक—मुरेठा बन्हलक आ खास कें बक्सा ढोइए। ओना झाकावलाक लेल ई सुविधा होइत छेक जे छटगोना समान छोट-छीन लोहा-लक्कड़ सभ झाका मे राखि सकेछ। मोटिया कें से सुविधा नहि छेक। ओकरा बान्हल-छेकल मोटा चाहिऐक आ एहिठामक मोटा की—बक्सा—लकड़ीक बक्सा, जाइ मे छोट छीन मशीन, मशीनक पाट-पुरजा वा अन्य वस्तु 'पेक' रहैत छेक [illegible] क लेरक। तें झाकावला आ मोटिया मे फर्क आब नहि छेक—दुनू एके थिक। दुनूक मजूरी, समस्या समाने छेक।

ठेला, ट्रक व टेम्पू जोगर समान जखन नहि रहैत छेक, तखने झाकावलाक प्रयोजन पड़ेत छेक। ओनहुना दोकान सं उठा कें ठेला वा अन्य बाहन पर लदनाइ/उतारनाइ काल एकर प्रयोजन पड़ेत छेक। कुनू-कुनू गली मे त मोटिया छोड़ि आन उपायो ने रहैत छेक। महानगर कलकत्ता मे एहि वर्गक मजजूरक संख्या लगभग दस-एगारह हजारक बीच छेक जाइ मे सात हजारक लगभग मिथिलाक अइ आ बांकी भोजपुरी अंचलक। एकर पेघ संख्या ठेलेवला सन बड़ाबाजार मे छेक। किछु अन्यत्रो अइ। कुनू बजार मे बीस-पचीसक संख्या मे झाकावला उपलब्ध भइए जायत जे झाका मे बाबू-बबुआनक तीमन तरकारी, आश्रमी वस्तु-जात ढोइए। चालिस नम्बर स्ट्रान्ड रोडक एकटा मकान—मोडेल हाउस मे दुनू श्रेणीक मजदूरक संख्या साठि छेक। 'मार्शल हाउस' मे एकर संख्या लगभग अस्सीक छेक। एही सं अनुमान कएल जा सकेछ जे एकर सही संख्या एहिठाम कतेक हेतेक—जखन कि एहि तरहक व्यवसायक केन्द्र मकानक संख्या एहिठाम हजारोक छेक।

झाकावला के सुविधापूर्वक दू श्रेणी मे विभक्त कएल जा सकेए। पहिल श्रेणी मे ओहि तरहक लोक अइ जे कुनू दोकान घेने अइ—ओइ दोकानक कुनू समान बिकेले, कतौ पार्सल भेले त पहुँचा आओत। ओकरा अछैत दोसर कें ओ काज नहि देतेक—नियमतः। दोसर श्रेणीक मजदूर अइ जे कुनू दोकान सं सम्पर्कित नहि अइ—जखन जे कहलके, भाड़ा पटलेक त काज क लेलक। दोकान सं सम्पर्कित मजूरक भाड़ा मोटामोटी निर्धारित रहैत छेक—परञ्च छुट्टा मजूरक लेल तकर कुनू ठीक नहि। ई भिन्न बात जे दोकानदार बेसी त नहिञे देमय चाहतेऽ—कमे मे काज चलेबाक प्रयास करत, परञ्च बेर पड़ने बेसियो देवहि पड़ेत छे।

एकटा मजदूरक दैनिक कमाइ दस-पन्द्रह टाकाक बीच छे। विभिन्न अंचलक चौंतीस गोट मजदूरक संग सम्पर्क केला पर हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ। असुविधा स्वाभाविक। एक त ई लोकनि किछु कहब सं पहिने मारिते रास प्रश्ने पुछय लगेछ। फेर कहत जे हम किएक कहब? कहला सं हमर समस्याक की समाधान भ सकेए? ओना एकरा लोकनिक संदेह, विराग आ तामस स्वाभाविके छेक। से जे हो, कुनू हाट-बजारक मोटिया कहियो पांच टाका त कहियो दस टाका कमाइए। पन्द्रह टाका बढ़िया भ जाइ छइ निश्चिते कुनू नीक लोकक मुंह देखि उठल रहैए—से एकरा लोकनिक कहनाम छेक। एहि मे बड़ाबाजारक मोटिया लोकनिक स्थिति ठीक छेक। ओना ई बारि सते से कहियो जं ओहो लोकनि २५-३० टाका कमा लेलक त कहियो भरि दिन हाथ पर हाथ धेने बेसले रहि जाय पड़ेत छेक। छुट्टीक दिन दोकान सभ बन्न रहैत छेक आ तें एकरो सभक छुट्टी। एहि तरहें हिसाब केने हरा-हरी पओने चारि सेए महिनवारी एकरा लोकनिक कमाइ भेलेक। परीश्रमक त प्रश्ने ने हो। माथ पर एक-एक मनक बोझ लेने छ-सात आ दस तल्ला पर चढ़नाइक परीश्रम अनुमान हमरा लोकनि केना क सकेत छी—जे ओनहुना पांच-छ तल्ला चढ़वा मे तीन बेर सुस्ताइए। आ एहि कठीन श्रमक पश्चात जे कमाइ होइ छइ ताइ मे अपन खेनाइ-पीनाइ, पहिरन-ओढ़न आ फेर गाम पर क मनिआडर।

पैंतीस बर्खक महाबीर साहु कोठी बंगड़ा (कमतौल) गामक रहनिहार छथि। मिथिलाक सर्वहारा वर्गक स्वच्छ-सुन्दर संस्कार-व्यवहार हिनक विशेषता थिक। मैथिलक बाजब मधुर—स्वाभाविके—महावीर जी एकर प्रत्यक्ष प्रमाण। हमरा संबंध मे माड़े-बहुत जिज्ञासा केलाक बाद ओ बड़ सहजता सं हमर सभ प्रश्नक जबाव देलनि। हुनके देखादेखी आनो समाङ सभ अगुएलाह आ हमर मदति कएलनि। ई मोडेल हाउसक एगो छोट-छीन कम्पनीक संग सम्पर्कित छथि। कहलथि जे पचास किलोक एगो पेटी लगभग आध कोस धरि ल जेबाक भाड़ा चारि टाका बान्हल छेक। हिनका गाम पर आठ आदमीक परिवार छनि। छोट-छीन गृहस्थी छनि। कने मने खेत, सामान्य उपजाबारी। आन समाङ सभ गामेपर छनि। ई असगरे बाहर छथि। कुनूना चलि रहल छनि। पुछेलापर खुशी होइत कहलथि जे अपन देस-कोस मे जं काज भेटय त किएक लोक बेद तेजि एते दूर पर रहब।' एहने सन भावना प्रायः सभ समाङक छलनि।

रजौन पालीक भगेलन साहु (पचीस बर्ख) छुट्टा मजूरी मे छथि। तहिना छथि छबीस बर्खक जुआन रामचन्द्र साह जन्म स्थान छनि शिमरिया। गामपर छ आदमीक आश्रम। कमौआ असगरे। नैने मे बाबूजीक देहान्त भ गेलनि आ तें परिवारक बोझ हिनके कन्हापर। रामचन्द्र जी कने बेसी तेज छथि। स्पष्ट रहलनि बिहारो मे त कलकारखान खुजबे केलेए मुदा के देत हमरा सभ के नोकरी? सभ अपन-अपन गोटी सुतारय पर लागल अइ। बाहरक—लोक के काज भेटेत छेक मुदा ओइठामक लोक के पुछनिहार केओ नहि। रामचन्द्र साहु पहिने खिचड़ी भाषा मे बाजब आरम्भ केने छलाह परञ्च हमर मैथिली मे जिज्ञासक बाद अपनहि मैथिली मे उत्तर देमयलगलाह।

दहिमा गामक बिन्देश्वर साहु 'छतीस बर्ख सं गप्प करैत रही त बड़फराइतें पहुंचलाह बासुदेव साहु। बेंगड़ा निवासी जुआन। 'हम बारह बरिस सं प्रिमियर इन्टप्राइज मे काम करेछी मुदा पाइ नञि देइ।' महावीरजी डटलथिन—ई कि कुनू युनियन के लोक छथिन वा नेता जे हिनका ई सभ कहै छहुन। ई की करथुन। ई त पत्रिका मे छपथिन तें पुछै छथिन।' बासुदेव साहु बिधुआसन गेल। पत्रिका मे की हेतै से छपने।

प्रायः एइ सं बेजाय स्थित छनि सदन मार्केटक जुगेश्वर मंडलक। लगभग साठिक उमेर भेलनि। डांड़ लीबि गेल छनि परञ्च कमेता नहि त खेताह की? घर आश्रम केना चलतनि। बारह-तेरह बर्खक फेकन महतो आ ओकर दोस लगभग ओही वयसक अवध यादवक स्थितिक चर्चे की कएल जाय। एहि वयस मे मोटा झाका उठौबाईक कल्पनाए भयावह थिक। परंच एहि दुनू यारक लेल बन-सन। झाका मे बेसल मस्ती मे हंसी-मजाक क रहल छल जखन हम पहुँचलहुं। ठीके, एहि मस्तीक बिनु जीनगी त भार भ जेतेक ने। एहि सभ सं फराक कथा-व्यथा छेक सुलेमानक। सुलेमान हमरा ध्यानो पर नहि चढ़ैत, जं ओ अपन बेटीक संग अपन भाखा मे गप्प नहि करेत। उनटिक तकलहुं त झाका मे बेसल, तौनी सं पीठ आ दुनू ठेहुन के लपेटने, जेबी सं बेरियाक कमाइ दू टाका बहार क अपन बेटीके रातुक भानस लेल देत। गामघरक प्रति घृणा सं मन भरल छेक। गाम मे निवाफ नहि छेक। गामक नामो लेमय ओ नहि चाहेछ। गामो पर जथा-जाल नहि छलेक। मात्र दू कठा बारी छलेक, जाइमे तीमन तरकारी उपजबेत छल आङनवाली गामे-गामे घुमि बेचेत छलेक। अपने हरो घेनेछल। मुदा पचास टाकाक कर्ज मे सभ स्वाहा भ गेलेक। आइ फूट-पाथ पर आबि गेल अइ। बरख साते-आठे भेल छेक गाम छोड़ना। एहिठाम ठीके अइ कुनू हाहे बेरवा नहि। जतबे कमाइए ततबे खाइए। ककरो बेगार नहि खटय पड़ेत छेक गाढ़ि गंजनि नहि सुनय पड़ेत छेक। भाषा सं बुझना गेल जे सुलेमान मधुबनी अंचलक रहनिहार छथि। सामान्यतः एइ एकरा लोकनिक स्थिति छेक। जीविकाक सुरक्षा उचित मजूरी आदिक देखभाल लेल कुनू संगठन नहि छेक। संगठन भेल छलेक परंच नेता त एहि वर्गक लोक होइत नहि छेक। नेताक फराके वर्ग होइत छेक आ ओ अपने हाथ सुतारय मे लागल रहैछ। एकरो लोकनिक संग सएह भेल छे। तखन परिवेश लोक के बहुत किछु सिखादेत छेक। इहो सभ एक

(शेषांश पृष्ठ ७ पर)

मैथिली आन्दोलन

६ दिसम्बर, १९८० : एकटा अमिट संस्मरण

ई कहऽ नहिं पड़त जे कोनो आंदोलनक पृष्ठभूमि बुद्धिजिवी वर्ग तैयार करैत छैक। कोनो सामूहिक समस्या लेल ई वर्ग अनायास एक जुट भऽ जाइत अछि। ई मानऽ पड़त जे मिथिला मे सेहो एना भेलैक अछि। समय-समय पर गोष्ठी, सभा मंच आ पत्रिकाक माध्यम सं आवाज उठाओल गेलैक अछि। मुदा एहि सब मे नीहित स्वार्थक प्रमुखता रहलैक। तथा कथित मैथिली सेवी मैथिली मिथिलाके आगू मे राखि अपन उल्लू सोझा करबा मे व्यस्त रहल। कोनो ने-कोनो तरहें अपन स्थान समाज में बना लेबाक लेल लोक कें ठकैत रहल। एहि सं मैथिली मिथिलाक काज पछुआइत गेलैक। आ मिर्जाफरक पताका फहराइत रहलैक। एकर ज्वलंत उदाहरण अछि बर्तमान बिहार सरकार आ ओकर मिथिलाक प्रति क्रिया कलाप, मुदा मैथिल एहि लफुआ सभ सं कहिया तक ठकाइत रहत?.....आ तकरा जबाब देलकैक ६ दिसम्बर, १९८० क दिन।

६ दिसम्बर, १९८० क पहिने तक लोकक धारणा रहैक छे मैथिल आंदोलन नहिं कऽ सकैत अछि, अर्थात् खून नहिं कऽ सकैत अछि। मैथिल पनिमरू होइत अछि, तें ओकर जोश आ गर्म-गर्म अभिव्यक्ति चिनमार आ घूरे तक रहैत छैक, ओकर साहस आ पैरूख टाट घुसकाबऽ आ आरि छांटऽ तक रहैत छैक, ओकर बुधियारी ममिला आ परीक्षा पास करऽ तक रहैत छैक। मुदा, ६ दिसम्बर, १९८० एहि धारणाकें मिथ्या प्रमाणित कऽ देलक। तथा कथित मैथिली मिथिला सेवी कें दांते आंगुर काटऽ पड़लनि। मैथिली कें मजा कऽ खायबला निर्लज्जक माथ ठनकि उठलैक। गोलैसी आ तिकम लगाकऽ मंच पर सुशोभित होबऽ बलाक होस ठेकान पर आबि गेलैक' आ सभसं बेसी 'लोक-प्रतिनिधि' तथा मिर्जाफरछक्का छूटि गेलैक, ओकर कुर्सी डोलऽ लगलेक।

जुलूस गांधी मैदानसं आरम्भ भेलैक। बिश्वास रहैक जे पटनाक बुद्धिजिवी मैथिलक अमार लागि जेतैक, मैथिलक भीड़ गांधी मैदान सं ब'कऽ आर कऽौंक धरि ठेकि जेतैक। एहेन विश्वास कऽ लेबा मे आशंकाक कोनो प्रश्ने नहिं उठेत छलैक। कारण एहि सं पूर्व जनता सरकारक समय पटना मे भेल एकटा आर प्रदर्शन जाहि मे पटनाक सूट आ टाइ धारीसभ सेहो मैथिलीक सपूत कहबऽ मे लाजक अनुभव नहिं कयने रहथि। मुदा एहि प्रदर्शन मे हुनका लोकनि कें कोन भय, केहेन बाधा त्रस्त केलकनि नहिं जानि सरकार ककर आ ककरा लेल? तकर ज्ञान नहिं रहलनि? स्पष्ट अछि जे एखनों तक मैथिलक अर्थ ओ लोकनि किछु मुट्ठी भरि तथा कथित सभ्य लोक तक सीमित राखबाक चेष्टा में छथिमुदा, एहि गलत धारणाक निराकरण ६ दिसम्बर, १९८० क दिन कऽ देलक। असली मैथिल-पुत्र सभ मांटिक रंग लाल कऽ देलक। जौं आबो अपहत सभ हेहर बनल रहय त जनताइ ओ, आ जनतनि हुनकर भविष्य। ई बात अवस्स छेक—ने अपहत मरय ने छुतहर फुटय अर्थात अपहत लगले नहिं मरेत अछि। मुदा ओ मरत अवस्स ताहि मे संदेह नहिं।

ओहि दिन चोटाएल संतान सभ कें दबाइ-बीरोक जरूरति छलेक। ओम्हर किछु लोक चिन्हार होबऽ लेल प्रेस मे पतियानी मे ठाढ़ छल। एम्हर ओकर संगी कुहरि रहल छलेक, ओम्हर ओ सभ अखबारक पन्ना मे अपन-अपन नाम छपबऽ लेल बेहाल छल। एहि सँ बेसी निर्लजता आर की भऽ सकेत छेक? एहि सं बेसी धृष्टता आर की भऽ सकेत छेक जे सुच्चा आंदोलकारी लाठीक मारि सं ओघवाघ भेल छल, आ ओम्हर किछु लोक सत्ताधारीक ओतऽ चिन्हा-परिचय करबा मे, हुनकर स्तवन करबा मे लागल छलाह।.... वाह रे विवेक।

जे होइत छे से नीके होइत छेक। बहुत कें चिन्हबाक मौका लोक कें भेटलेक। ओकर छल-बल-कल देखबाक अवसर भेलेक। एकटा कहबीयो एहने सन छेक—कुक्रिये नाम्रों, कि सुक्रिये नाओं।.... केहन हास्यास्पद बात—जे एगो बन्धु हमर दर्दक जीगेशा नहि कऽ, कहलनि—हमही हुसि गेलौं तऽ कहुना नाओं छपेत। हमरा लागल जेना ओ आर ब्लाकक पुलिसक हैंड़िया होथि।........मुदा, तें कि लोक एहि सं हतोत्साह भ जाएह? तें कि हम अपन संवेधानिक अधिकार छोड़ि देब? जौं मर'बत मांटि लेल जाहि सं हमर सभक शरीर बनल अछि। हमरा शरीर पर मात्र ओकरे अधिकार छेक जकर दूध पीबि हमरा सभक जीवन संचरित भेल अछि। ६ दिसम्बर, १९८० एकर पक्का सबूत छेक। ओ दिन मैथिल संतानक जीवटक दस्तावेज छेक।

माय के माय कहबा मे लाज कथीक? वयोवृद्ध शेखर जी, सर्वश्री भीम भाइ, प्रवासी भाइ गोकुल नाथ जी, पूर्णेन्दु जी एवं भाइ राजमोहन जी अपन कर्तव्य नीक जेकां निमाहैत रहलाह। मुखिया जी आ विरंचि जी? श्री चंद्रकांत खाँ आ श्री पीताम्बर पाठक पूर्ण सक्रिय छलाह कि केलौं से किछु नहि, आ कहलक त बड़े अधलाह। एकदिस प्रजातंत्रक रक्षार्थ पत्र-पत्रिकाक निष्पक्षता पर जोर आ दोसर दिस प्रेस पर आन्तरिक दबाव। प्रेस बन्न कऽ देबाक धमकी। मांटि-पानिक सन्तानक खून आर-कऽौंक चौरास्ता पर बहल, से झूठ, निहत्था शांत प्रदर्शनकारी पर ताड़मतोड़ लाठीक प्रहार झूठ: मैथिली तीन करोड़क भाषा, से झूठ, मिथिलाक मुसलमानक भाषा मैथिली, से झूठ, अर्थात् सीता, जनक आ विद्यापतिक मिथिला झूठ।....तखन सत्य को?.... सत्य मात्र बिहार सरकार घोषणा, आ सत्य मात्र सरकारी कुकूर द्वारा प्रेस मे समाचार के तोड़िमरोड़ि कऽ छापि देबाक बलात्कार/रेडियो प्रसारण मे मनमाना हस्तक्षेप। समठाम हस्तक्षेप।........जे मायक नहि भऽ सकल से आन ककर?........तकर अविस्मरणीय भेल ६ दिसम्बर, १९८० जकर मुख्य नारा छलेक :—

हिन्दू-मुस्लिम वीर जवान,
हम सब छी मैथिल संतान।

जाहि सरकारक गणतंत्रक खाल ओढ़ि लोक हितक हनन करब कर्त्तव्य छेक, जे ओ संविधान मे ताख पर राखि शासन कर'त, जे ओ गोली डंडा हाथे निरीह बच्चा, कृशकाय वृद्ध अबला स्त्री पर निर्मम प्रहार कर'त, ओकरा पर भरोसा कयनाइ कोनो तरहक औचित्य नहि रखेत अछि। जे नेता लोकनि भूतपूर्व सरकारक समय अपना कें मैथिली-भक्त साबित करेत छलाह, जे प्रतिनिधि लोकनि आश्वासन देत छलाह जे सत्ता मे अबेत देरी लोक मांग के पूरा अवस्स करताह, हुनका लोकनिक चरित्रक कोन विश्वास? सरकार मातृभूमिक संतान कें एहेन कुख्यात संघ आ दल सं सम्बन्धित होयबाक निराधार घोषणा कऽ सकेत अछि जाहि दलक एक भाषा फर्मूला मे विश्वास छेक, जे दल मैथिलीक घोर विरोधी अछि, मिथिला सपूत कें कहां तक अरघऽतें? आ जें नहि अरघऽले तें ६ दिसम्बर, १९८० क दिन एकटा जगबियार अमिट चेन्ह इतिहास मे सदा सदा के लेल अंकित करेत मायक मुक्ति लेल संघर्षक शुभारम्भ कयकल।

- सुशील

शोणित दे शोणित मैथिलार्थ

मिथिला गौरव डा० लक्ष्मण झा मिथिला-मैथिलीक उद्धारक लेल आन्दोलशंख फुकने रहथि आ क्रान्तिदर्शी वीर कवि राधवाचार्यक कलम क्रान्तिक चिनगी उगिलय लागल। मिथिलांचल सं प्रवासधरि पसरल मैथिलक बीच राघवाचार्यक सिंहनाद सुनाइ पड़लेक—शोणित दे शोणित मैथिलार्थ, प्यासें तकथल अछि खड्ग हमर। किन्तु गाम-घरक सुतल स्वनामधन्य मैथिल बंधु लेल घन सन। शोणित त दूर रहओ, घाम पर्यन्त देवाक कृपा नहि केलनि।

कारण स्पष्ट अछि। क्रान्ति बाघ-बोनक फसिल नहि थिक कोनो गाछ-बिरीछक फलफूल नहि थिक। ओ तं अदम्य जीवनी शक्ति, पौरुष पुञ्ज सं निःसृत लाल लाल, गरम-गरम चिनगी थिक जे अनुकूल वातावरण पबिते धधकि उठेत अछि। एहि लेल समर्पित भावना, एकाग्र निष्ठा, धैर्य, साहस आ संयमक संग मोन मे उत्ताल तरंग जकां उमंगक लोल लहरि उठनाइ आवश्यक। किन्तु एतय त विद्यापति पर्वक मंच सं उत्ताल तरंग उठेत अछि। विद्यापतिक पदावलीक संग उर्मिला नागरक आंचर, गोदइ महाराजक तबला आ अवसरक पारखी राजनेताक मेघ-गर्जन (वर्षा नहि) सं उत्ताल तरंग उठेत अछि। गुटबन्दी मे व्यस्त स्वार्थ लोलुप, क्षुद्र स्वाभावक कतिपय कविक किल्लोल मे उठेत अछि—क्रान्तिक आह्वान....

डा० लक्ष्मण झा कें गारि पढ़ब, राघवाचार्य कें कुहरेत छटपटात छोड़ि देब, दामोदर लाल दास कें बेहाल देखब आ विद्यापति-पर्वक मंच सं मैथिलक गर्वक कमाल देखब।

आब ई स्पष्ट भ गेल अछि जे मैथिलक दूटा वर्ग अछि—समर्पित सेवीक आ सौदागरक। दुनूक अलग-अलग उद्देश छेक। मैथिली के अपने बपौती बुझयबला सौदागर वर्ग सदिखन मधुर झड़बारू ताक मे बकध्यान लगौने रहैत अछि त दोसर दिस समर्पित लोक दिन-राति रचनात्मक कार्य मे व्यस्त। जं साहित्य के बात कएल जाय त आइधरिक मैथिलीक प्रकाशित साहित्य सं बहुत बेसी अप्रकाशित अन्हारक दुनियां मे पड़ल अछि। जं मूल्यांकन कएल जाय त निश्चिते ई अप्रकाशित साहित्य प्रकाशित साहित्य सं बेसी विलक्षण आ स्तरीय अछि। परञ्च एकर रचयिता सभ स्वाभिमानी आ भाषा प्रेमी हेबाक कारणे सदा असुविधा मे रहला अछि, अनचिन्हार रहलाह अछि। ई बुझितहुं तथा कथित मैथिलीक कर्णधार लोकनि गुम्मी लधने छथि। सौदागार वर्ग समस्त सुख-सुविधा हथिया अपना स्वार्थ सिद्ध क रहल अछि। आ एहि दूटा विपरीत बिन्दुक बीच ठाढ़ छथि विद्यापति' एक दिस ताकि हंसेत छथि त दोसर दिस घुरिते आंखि सं नोरक धार बहर लगेत छनि।

जय-जय भेरवि हजारो वर्षधरि सुनला आ गयला सं की हेतेक? जाधरि शुद्ध

शेषांश पृष्ठ ६ पर

कथा

डकैती

आइ दू टा घटना घटले।

मेसक नोकर चाउर-दालि, तीमन-तरकारी कीन' बराकर गेल रहए। ओकरा छूरा भिराक, चौरस्ता पर सबटा छीनि लेलके आ तकर एक्के घंटाक बाद, माने एगारह बजे एकटा छोड़ा पोखरि मे नहाए गेले आ डूबि गेले।

× × ×

एतुक्का हाल-बेहाल छे। चोरी, डकैती, छिनारी, हत्या, छुटि प्रभृतिक खबरि सं आब ककरो कोनो तरहक उत्तेजना, कि आश्चर्य, कि तामतस नें होइ छे। यंह किछुए दिन पहिने सात बजे साँझ मे दू गाटे कें घेरि क स्कूटर, घड़ी, रुपैया छीनि लेऊके। जेना चीजक दाम बढ़ने लोक कम स-कम समान कीन' लगेए तहिना एहन समाचार सुनि-सुनि मिर-मिरा क रहि जाइए आ सांझ मे घर सं बहरेनाइ बन्द केने जाइए। ओना कहल जा सके छे जे सबठाम त इएह रामा एएह खटोला छे। मुदा लोक जत' रहत ततुक्के सूर-ताल गोल-माल हेबाक बेसी चिन्ता हेते ने।

जीवन—जेना बुझी चलैत रहै छे।

पेशा अइ, अंक सं कुश्ती लड़बाक। ने बाझल रहो आंही मे। बरख समाप्त मेलेए से काज माने लेखा बढ़ि गेनाइ स्वाभाविक छ—ताइ पर सं एक त दाइ गोरे बड़ दोसर नहेलीहे। अर्थात् इहो देखबाक रहै छे जे लाभ ओतबे हो जाइ सं कम-स-कम टेक्स लगे, कम-स-कम बोनस देब' पड़े, इन्क्रीमेट देब' पड़े, अन्य सुविधा देब' पड़े। मुदा एकरो आवश्यकता कहाँ रहि पैते भविष्य मे। बियरर बांड जिन्दाबाद। काजुक सरकारक एहने समाधान सब जं होइत रहले त मुनीमी-कला त जेत गताल खत्ता मे खेर·······से लागल रही अंक स अंक मिलाब' मे। तखने ओ पहुंचल।

—अरविन्द बाबू!

—की छी?

मूड़ी झुकौनहि पुछे छिऐ, अइ पेशा मे लोकक मुखमंडल स बेसी महत्वपूर्ण आ ध्यानाकर्षक बुझा'इ छे केल्कूलेटरक स्क्रीन पर उगेत-डूबेत हरियरका अंक सब।

—सुलोचन स सब किछु छीने लेलके।

—की?

एकबेर किछु बूझ' मे ने आएल, जेना बेटरी अब्बल भ गेला पर अगरम-बगरम अंक सब स्क्रीन पर आब' लगे छे।

—सबटा छीनि लेऊके।

—की छीनि लेलके?

अंकाभ्यास एक खास मोड़ पर आबि गेल छल। मूड़ी उठा सके छलौं से उठल। ओकरा दिस ध्यान गेल। विलोचन छल—सुलोचनक छोट भाइ। पछिला मास एक नंबर महुआ एक पौआ आनि देने रहए हमरा लेल। एक कनमा पीबि क चौबीस घंटा सुतले रही। आश्चर्य लगेए जे लोक बोद्का पर एत्ते जोर किए दे छे?··· सुलोचन-विलोचन हजारीबागक महतों अइ। ओना ई दुनू त क्रमशः मेसक नोकर आ करखाना मे ठीका-मजूर अइ मुदा बेसी महतो सब पानि उघबाक काज करेए। महतो, पानि उघनिहारक पर्याय छे एत' करु तेलक दू टा टीनक एक भार पानि, पुरान गहिं ी छ रुपैया मास, नव आठ रुपैया मास, खुदरा आठ आना स ल'क एक रुपैया भार आ कम्पनी रेट बारह भारक एक हाजरी माने सवा छ रुपैया पानिक अकाल छे एत'।

—तों केना एलें एत'?

विलोचनक ड्यूटी दोसर शिफ्ट मे रहै छे, अर्थात् दू बजे दिन स दस बजे राति धरि। एखन एगारह बाजि रहल छे।

—भोर मे बजौने छल भैया।

सहकर्मी चौंकिया गेला। प्रश्नक बरखा होब' लागल, सुरक्षित वातावरण मे जे स्वभाविक छे से जिज्ञासा, उत्कंठा, आश्चर्य व्यग्र होब' लागल।

—की मेले?

—की छिनलके?

—कत' छिनलके?

—कत्ते गोटे रहै?

—केना?

सबटा क्रमशः वक्तव्य, वक्तव्य क्रमशः शिकाइत आ से अंततः समर्पणक मुद्रा ध' लेलक।

—दस बजे दिन मे एहन कुकांड।

—राति-बिराति जे नें हो सेइ अनर्थ।

नागार्जुन जेना अही क्षेत्रक लेल लिखने होथि' टके सेर तो बम बिकता है' से बम, अल्लुक भाव स बिकाइ छे एत' एक तरहें कुटीर उद्योग भ गेल छें बम बनौनाइ सांझ होइत देरी ओइ पार स माने लाइनक ओइ पार स धूम धड़ाम आरम्भ भ जाइ छे भोर सुनबे जे डाका पड़ले की दू दलक संघर्ष छले की टेस्टिंग होइ छले की रखले-रखले फुटि गेले एक रातुक बात कहै छी एक्केस टा आवाज भेले बेरा-बेरी। भोरे दूधक दाम साढ़े तीन रुपैया भ गेले। राति मे दूधक विक्रेता सबहक बेसार रहै, सर्वसम्मति स आठ आना प्रति सेर दाम बढ़ेबाक प्रस्ताव पास मेले ओ एक्केस बमक सलामी अही परित प्रस्तावक लेल ठोकल गेल रहै से एहिना होइत रहै छे, आ लोक हतप्रभ मेल जा रहलए। लगे मे त चेक पोस्ट छे।

—ओइ चौक स आगू बंगाल विहारक सीमा छे। सीमा पर चेक-पोस्ट छे। अस्सी वर्ग माइलक क्षेत्रफल मे एकटा साधारण पुलिस चौकी सेहो छे अपन समस्त सर्वज्ञात विशेषताक संग। चौक पर सेहो एकटा ने एकटा खाकी धारी रहिते छे—सबदिन।

—पुलिसके त अपन हिस्सा स ने मतलब छे। ओकरा कोन गर्ज छे हस्तक्षेप करबाक?

एहना मे घटना पर घटना मोन पड़ लगे छे, किछुए दिन पहिने एकटा ट्रक बला मने चौअन्नी ने देलके से चौक पुलिस ओकरा ट्रक पर लटकि गेल ड्राइवर केबिन दिस आ बहस 'कर' लागल ड्राइवर सेहो गाड़ी आस्ते अवस्स केलक मुदा रोकत किए? चौअन्नियौं पाटी स डर कथीक? अंततः कहांदन पुलिस स्टिअरिंग पकड़ि लेलके संतुलन बिगड़ले आ लगेक स्टुडिओ स बहराइत एकटा परिवार पर चढ़ि गेले ड्राइवर आ पुलिस संगहि पड़ाएल मर्द आ बेटी त तत्काल मरि गेले-स्पॉट डेड। पत्नी के लादि के अस्पताल ल जाइ्याले ओकरो रस्ते मे प्राण छुटि गेले। पेट मे बच्चा रहै, जान मालक आसुरक्षाक दोसर नाम छे जी० टी० रोड,

—सोझा बला पूल त हरदम जामे रहै छे।

—खेहारला पर त अवस्से पकड़ल जा सके छले.

—सुलोचना के हल्ला कर चाहे छले ...

सीमा पर दइ छे बलुआइ दह अही बलुआइ दइ पर पूल छे महावृद्ध पूल बिहार दिस एकटा बोर्ड ठोकल छे अधिकतम भार पांच टन' खालियों ट्रक पांच टन स भारी होइ छे दिन मे कम स कम दू बेर पूल जाम होइ छे माल ट्रक सबहक दू बगली लाइन, रिक्शा, कार, टेम्पो आ लोक। पूल मलेरियाक रोगी जकां थरथराइत रहै, पूल जाम रहै छे। खेहारला पर डकेत पकड़ल जा सके छले। सुलोचन हल्ला ने केने हेते।

—मुदा हल्ला केनहु स लोक सब दौड़िते?····

—लोक सब दिन प्रति दिन कायर डेरबूक मेल जा रहलए।

....—सबके अप्पन जान के मोह छे.

—के डकेत स दुश्मनी मोल लेत ग हं, आन त जहान। अप्पन गरदनि आ पेट बांचल रहक चाही भनकर घावक चिन्ता केला स अपनों लसेढ़ लगबाक सोरहन्नी आशंका त रहिते छे।

—जीवन अवग्रह मे पड़ल जा रहल छे

—लोक कोना बांचत, कोना संसार चलाओत····?

—बात-बात पर बम-बाजी होब' लगे छे, चक्कू चमक लगे छे गोली चल लगे छे।

विलोचन कननमूंह छले, हकबका गेल ओ हमरा दिस देखेत रहल, हम ओकरा दिस देखेत रहलियै। संभवतः ओ चाहै छल जे अरविन्द बाबू किछु एहन करता आ की बजता जाइ स अइ स्थिति स उबास हैत हमरा ने बुझा रहल हल जे की चाबी अथवा करी मैटेरियल कंजम्पशन, युटिलाइजेशन परसेंटेज, प्राफिट रेशियो, लंच डकेती एक्के मे मिझर भेल माथ मे घोलमारि कर' लागल रहए।

—कत' छौ सुलोचन?

एकटा सहयोगी हमर सहायता करे छथि ओना असल मे हमर सहायता ने छल ई। सहकर्मी लोकनिक वक्तव्य उदाहरण मेल जा रहल छले केना ककरा संगे की घटित भेले रेल मे रस्ता पर, बाजार मे, किछु दिन पहिने किछु साल पहिने, आँखिक देखल, कानक सूनल, देहक भोगलछौंहा। क डूबनाइ सेहो मिझर मेल जा रहल छले बहस मे तखन ओकरो उदाहरण सब अबिते कखन, ककरा गाम मे, के डूबले तखन कथा अबिते लहास जराब' पर, पुलिस स मोट-माट कर' पर, सबके, अइ सबहक कहबाक लेल एकटा क कथा त रहिते टा छे, मुदा ई कोनो सरकारी कार्यालय त छिए ने जे काज के तिलांजलि द, चाह पिबि-पिबि एहन एहन कथा सबहक पारायण केल जाए की सूनल जाए। से बात समाप्त केनाइ आवश्यक छले, कखनो मैनेजर आबिक गरजनाइ आरंभ क सके छले हमरा किछु फुराइए ने रहल-जेना बधजर लागल हो। सहयोगी अइ स्थिति के भंग करे छथि। एकरे कहै छे पूरान चाउर।

—गेट पर।

विलोचन आर मिरमिरा गेल जेना इएह साधारण सन प्रश्न कचहरीक सम्मान होइ। हम केलकुलेटर के ऑफ करे छी। एत्ते काल स चालुए छल।

—चलबही।

आइ काम के जत्ते जल्दी संभव हो खतम केनाइ आवश्यक लाग' लागल लंचक व्यवस्था सेहो देख' पड़त। लग-पास मे नीक होटल ने छे। दूर जाए पड़त जेबी टोबिक, देखि लेलौं।

× × ×

—बात मुदा बड़ बिचित्र बूझा रहलए।

—हमरा त मुदा संदेह भ रहलए।

—संदेह हमरो भ रहलए। सुलोचना सत्य ने बाजि रहलए।

—सरासर बदमाशी क रहलए, नमरी खच्चर अइ।

—घड़ी साइकिल बेचि लेलकए अथवा ककरो बारने छले सेह छिनि-छोड़ि लेलके।

—एत' हमरा सबके नाटक देखा रहलक। सार के फूटानी ने देखे छी।

एहन त ई ने बूझाइए।

हमर क्षीण प्रतिवाद छल। दू बरख स त देखि रहल छिए कहियो कोनो तरहक गड़बड़ी ने केने छल कम-स-कम कम नजरि पर ने आएल छल।

एकरा सब के अहाँ ने चिन्है छिऐ अरविन्द बाबू, ई चकरचालि सब अहां ने बूझबे रग-रग बूझल अइ हमरा।

—अरविन्द बाबू त जकरे तकरे पर विश्वास क ले छथिन। एकरा आब मक्खन लगेनाइ बुझिऔ अथवा ने मुदा सब आगं-

आइ प्रोफेशन मे अपना स सुपिरियर के चिक्कनवेत रहनाइ आवस्यक बुझाइ बाइ छे से जहने अवसर भेटइ तखने।

—एकटा आर बात छे। सुलोचनमा परद् हमरा स पाइ मांग' आएल छल।

—देलियै ?

—नै।

रुपैया ओ हमरो स मंगने रहए। ओकर सार आ बाप आएल रहै। सरबेटीक बियाह छलै। तीन सौ रुपैया मंगलक, हमरा नै छल-सत्ते नै छल। कहलियै, आन ठाम कोशिश कर। संभवतः सेहो नै भेलैत साँझ मे डेरा पर आएल कहलिऐ एक सौक ब्यवस्था क देबौ बांकीक जोगार धराले। से ओ रुपैया एखनो जेबी मे अइ।

—सेह त नै केलकै।

—निश्चित रूप स साइकिल-घड़ी बेचि क' रुपैया घर पठा देलकए पता लगा लिअ ओकर बाप आ सभ चलि गेल हेते।

—तखन त एकरा छुत' देनाइ उचित नै हैत।

—कने सोचिक देखियौ जे दिन देखार डकैती करतै से दू-तीन सौके लेल ? घड़ी फाल्तूए छलै की औ तिवाड़ी जी ?

हं त डेढ़ सौ मे नव अनने रहियै कत्ते बरख चलौलियै भा जी ?

—साइकिल भा जी बला छलै-सेकेण्ड हैंड। ओकर कत्ते देतै तिवारी जी ?

—साढ़े पांच सौ मे नव अनने रहियै। कत्ते बरख चलौ लियै भा जी ?

—तीन साल। डाइरेक्टर साहेबके सनक सवार भेलनि आ ओकरा दिया देलथिन अइबेर त फाल्तू साइकिल अनलौंए अहाँ.

—चल, नै आबए त अंगने टेढ़ ? साइकिल राख' जने छी अहाँ ?

बात-बात पर उतराचौरी केनाइ दुनू क विशेषता छनि। ओही बिच मे तिवारी जी स्वीकार केलनि जे ओइ साइकिल के दू सौ-अढ़ाइ सौ स बेसी नै देते केओ ओना ओ इहो जोड़लनि जे भा जी एक-दम्मे झरफंडी बना देने रहथिन साइकिल के। अही बात पर दुनू मे फेर आरम्भ होव' लगलनि मुदा तखने दरबान आबि गेल,

—तैयो कम स कम तीन सौ त भेये गेल हेते ओकरा।

—पाइ मारि लेलक आ झूठे के नेप चुआ रहलए।

एक मिनटक लेल मानि लिअ जे सत्ते छिनि लेलकै त एकर अप्पन की गेलै ? घड़ी साइकिल रहै कम्पनीक आ चाउर-दालि मेसक। तीमन-तरकारीक जे पाइ देने रहियै सेहो मेसक दू चारि थापर जं देने होइ सेह टा भेलै ओकर हिस्सा।

ई छला मेस इंचार्ज। हिनका मेसक मील चार्ज बेसी भ जेवाक चिन्ता घ लेलकनि संभवतः मुदा ठीके ओकर अप्पन कहां किछु छिनेलै। अत्ते बेर मेसक चर्चा होइ छे लंच मोन पड़ि जाइए भूख आर जोर स लागि गेल।

× × ×

दरवान आबि क' सुचित केलक जे एकटा लगक देहातक दस बारह बरखक छौंड़ा पोखरि मे डूबि गेलै। कम्पनीक गाड़ी स ओकरा लोक सब अस्पताल ल जाइत गेलै।

आइ गर्मी बेसीए छलै। बुझाइ छलै जे उसिन क राखि देत चिरिक, सुखाए दे बला जे कहबी छे तेहने रौद। कम्पीनिएक एरियाक पोखरि छे नहेबाक आ यत्र कुत्र काज करबाक लेल पानि सप्लाइ होइ छे ओइ पोखरि स। चाकर त कम्मे छे मुदा बड़ बेसी गहींर छै। छौंड़ा उमंग मे कने आगू बढ़ि गेलै आ डुबि गेलै कहूना क' लोक ओकरा बहार केलकै।

—कोनो गड़बड़ त नै हेतै साहेब ?

दरवान कम्पनीके इन्चार्ज भ जेवाक शंका ग्रसित छल

—नै, एहन कोनो बात त नै हेवाक चाही ! हम ओकरा आश्वस्त केलिऐ।

—पूछलकए नै ?

दरबान पूर्णरूपेण आश्वस्त होब' चाहै छल।

—नै पुछि क त नै गेलए मुदा एहना हाल मे पूछबाक होस रहै छे लोकके। तों जाह।

सुलोचन आबि गेल ओ आएल छल दरबानक संगहि मुदा पाछूए ठाढ़ छल. संभवतः प्रतीक्षा क रहल छल जे दरबानक बात खतम होइ तखन सोझा आइ। टग हनैत आएल मन्हुआएल लटुआएल ठाढ़ भेल।

—की भेलौ सुलोचन ?

—बाबू। सबटा छीनि लेलक।

—कैना छीनि लेलकौ ?

—समान लक चौक पर एलियै त एकटा जान-पहिचानी भेटा गेलै। ओ अप्पन बेग हमरे घरा क गेलै पान खाइ लै। तखने तीनि गोटे आबिक घेरि लेलक आ पेट मे चक्कू भिरा देलक।

—हल्ला किए नै केलही ?

—कहलक 'हल्ला करबे त फाड़ि देबौ। कलेमचे निचा मूहे तकैत रह एम्हर-ओम्हर तकलें त बुझि जो।

—तखन ?

—झोरा, साइकिल आ घड़ी ल लेलक किछु खुदरा पाइ रहए से आ जेबी स चाभी बहार क लेलक ताबत ओ जान-पहिचानी सेहो आएल। ओकर बेग त पहिनहि हमरा स छिनि नेनहि रहै। चक्कू भिरा क ओकरो जेबी हंसोथि लेलकै। लगे मे एकटा ट्रोक ठाढ़ रहै, ओही पर चढ़िक भागि गेल।

—चाभिओ ल लेलकौ ?

—हं

—तोहर जान-पहिचानीक की सब लेलकै ?

—आठ सौ रुपैया रहै बेग मे बैंक मे जमा कर' आएल रहै। जेबीयो मे बीस पच्चीस रुपैया रहै, घड़ी रहै।

—मेसक ताला तोड़' पड़तौ ?

सुलोचन चुप्पे रहल। चाभी हेरा गेलं त ताला तोड़हि पड़तैं।

—ई साफे एकर लापरवाही छिऐ।

हिनकर टिपनाइ हमरा नीक नै लागल सुलोचन के डंटलथिन ताइ दुआरे नै, हमरा वार्तालाप मे अपन सुपिरियर हेबाक अंदाज मे मुखक्षेप केलनि तें असल मे, हिनकर चालि हमरा एक्कोरत्ती नै सोहाइए।

—हमर की लापरवाही भेलै ?

सुलोचन मिरमिराएल।

—चाभी ल क किए गेलै बाजार ?

—त की करितिऐ ?

—दरवान लग जमा क क जेबाक चाहै छलौ कोनो ओ तोहर घर छिऔ जे लाट साहेब जकां चलऔं चाभी नचबैत बजार ! हजार बेर कहि चुकल छी। सब काज मे नबाबी। पांचो ताला आब बेकार भ गेलै ? डेढ़ सौ त लागबे करतै। की औ तिवारी जी ?

—बत्तीस रुपैये अनने छलिऐ। गोदरेजक छलै।

—लगौलही कम्पनीक सात-साढ़े सात सौ मे हरदिच्चून।

ओ बरसि रहल छलथिन आ हम खौंझा रहल छलौं। नोकरक सोझां मे हिनका स झगड़ो नै केल जा सके छल। अपने राजदूतक चाभी संगे ल जाइ छथि कलकत्ता आ अलीगढ़। ओना हमहूं स्कूटरक चाभी जमा क क नहिए जाइ छिऐ....बात खतम करक चाही। समय सेहो भेल जा रहल छलै आ भूख तेज भेल जा रहल छल। बातक सूत्र पकड़लौं।

जो मेस ताला तोड़बाक उपाय कर आ देखही जे लंचक कोनो व्यवस्था भ सके छे की नै।

—कहाँ छे कोनो समान ?

—किछु नै छौ ?

—भात आ दालि बना क गेल छलियै। ओकरा जेना भक् द मोन पड़ल होइ।

—अच्छा। तो जो गेट पर स ड्राइबर के पठा दे ग।

—दूनू गाड़ो त गेल छे ओम्हरे।

—किए ? एक्केटा स नै ल जाइत गेलए छौड़ा के अस्पताल ?

—दोसर गेलेए अपना डाक्टर साहेब के बजाब'।

—ओहो। हो....

साढ़े एगारह बाजि रहल छेलै। आन दिन पिउन साढ़े बारह बजे मोन पाड़े छल तखन होइ छल जे आब उठक चाही। आइ एखने स अकच्छ बूझा रहल छल। खेबाक लेल जाए पड़त होटल। मुदा गाड़ी आओत तखन नै। पता नै कत्ते देरी लगतै।

सब अपन-अपन काज मे लागि गेल छल। मेस मेंबर सब मुदा अनमनाएल सन। रहि-रहि क हमरा दिस देखैत आ गाड़ीक स्वर अकानैत। हमहूं कागत-पत्र सरिआब लागल रही। दरबान दौड़ल आएल। सब साकांक्ष भ गेल।

—छौंड़ा त मरि गेलै साहेब।

एँ।

सबहक स्वर एक्के बेर उठले आ निस्तब्धता पसरि गेलै। मात्र मशीनक स्वर आबि रहल छलै। जेना सब मनुख बौक भ गेल हो। गाड़ी आब मे त आरो बिलम्ब भ जेतै।

अइ खचराइ छौड़ा के आइए, सेहो एखने डूबबाक छलै ! चूप्पी भंग होइ छे। एकटा मेस-भुक्ता के नहिए रहल गेलनि।

× × ×

मोन-मेष निकालैत, मिमांशा करैत बारह बजाओल। मेस पहुंचलौं। एखन पांच गोटे की किछु सदस्य बाहर गेल छथि। सुलोचना ताला तोड़ि चुकल छल। एक्केटा तोड़' पड़लै। बांकी क डुप्लीकेट चाभी भेट गेलै। दिन मे आटा-रोटी आधा भात चलै छे से ताही अनुपात मे बनल रहै। ओकरा उदरस्थ केल गेलै। आइ केओ, कोनो तरहक शिकाइत नै केलकै। भात-दालि मे शिकाइतो की भ सकै छलै।

—मोटका चाउरक भात छौ ?

मोटका चाउर सुलोचनक लेल रन्हाइ छै।

—नै, काल्हिए सधि गेलै। आइ अनै छलियै।

× × ×

एकटा गाड़ी आबि गेल रहै। ड्राइबर डाक्टर साहेब के घर तक छोड़ि एलनि तैं देरी भेलै। पांचो जन सवार भ क पांच माइल दूर होटल इंद्रनिवास गेलौं। सीजनक पहिल बियर-सेशनक उद्घाटन भेलै। अप्रेल आरम्भ छे तैं पहिल। टोटल एक सौ पाचासी रुपैयाक बिल उठलै। मेस इन्चार्ज देलथिन। पान खेबाक लेल फेर एक माइल आगू गेल गाड़ी।

घुरती काल मेस इंचार्ज पूछलाइ।

अइ रुपैयाक, माने एक सौ पचासी रुपैयाक की करबै ?

मेस खर्च मे देखा दिऔ। खाता त झोरे मे छलै नै ?

अइ बेर त जत्ते जे एडजस्ट क सकी।

पानक पीक सम्हारैत हमर उत्तर छल।

सम्मिलित ठहाका मे इंजनक आवाज एक बेर डुबि गेलै

—कुणाल

*

रेल डकैती

प्रशासने डकैत अछि

रेल-दुर्घटना तथा रेल डकैती आइ-काल्हि भारतीय रेलक दिनचर्या जकां भ गेल अछि। समाचार पत्रक पाठक लोकनि सेहो एहि तरहक घटनाक समाचार या त पढ़िते नहि छथि वा जं पढ़बो केनि तं बड़ सामान्य ढंग सं। स्वभावतः हुनकापर कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छनि। घटना भनहि छोट स' छोट हो वा १२ नवम्बरक साठा अगत सन भा ६ जूनक बदलाघाट सन पेंघ सं पेंघ किएक ने हो। तें भरिसक लोक ई नहि जानय चाहैछ जे जखन एकटा बगी थकुचा भ गेलेक तखन छ-ए आदमी केना मुइल हेतेक जखन सात सात टा बगी कोशीक पेट मे समा गेलेक तखन सतरिह आदमी केना मुइल हेतेक? तें लोकक मन मे भारतीय समाचार पत्रक प्रति जकर समाचार मे मिसियो भरि सत्यता नहि रहैत छक घृणा नहि जगैत छेक। लोक नहि जानय चाहैत अछि जे प्रेस-स्वाधीनताक जाहि लेल प्रेस वला सभ चिचिया रहल अछि असली अर्थ 'बलात्कार' 'वर्णयुद्ध' 'धर्मयुद्ध' आदि जनविरोधी समाचारक उत्पादन प्रसारणे टा किएक होइ छइ। परञ्च एकटा भुक्तयोगी कें एहितरहक समाचार पढ़ि प्रतिक्रिया अवश्य होइत छेक आ सेह प्रतिक्रिया हमरा लिखबा लेल बाध्य केलक अछि।

घटना बड़ छोट अछि समाचार पत्रक भाषा मे। घटनाक एगो समाचार पत्रक अनुसार लगभग आधादर्जन लोकक सामान डकैत ल गेलेक। लगभग शब्दक अर्थ अहां स्वयं लगा ली से हमर अनुरोध। ओना अहां अगो सोचि सकैत छी जे डकैतक दल मे छलेक कतेक लोक आ ओकर सभक आवश्यकता कतेक सीमित छलेक जे मात्र लगभग आधा दर्जन लोकक सामान लय बौंकीक जी-जान बकसि देलकेक। सत्ये संतोष नामक वस्तु एखनों कम सं कम डकैत मे त छेक।

घटना विगत ८ नवम्बरक थिक। गाड़ी टाटा मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस। थ्रीटायर क एकटा डिब्बा लगभग १२५ व्यक्ति, जाहिमे गोट दशक महिला छलीह अपन-अपन जगह देने जखन गाड़ी खुजैत अछि। गाड़ी जखन बरौनी मे रुकैत अछि त डिब्बाक लोकक संख्या दोबर भ जाइत अछि। ठीक-ठीक त नहि कहि सकैत छी, परञ्च किछु दूर गेलाक बाद गाड़ी फेर बिलमैछ आ फेर चलि पड़ैछ। रातिक लगभग साढ़े एगारह बजे जखन राजेन्द्र पूलपर प्राय, बीच-बीचमा मे गाड़ी पहुँचैछ त डिब्बा मे एगो दबल आंतक मिश्रित कोलाहल सुनाइ पड़ैछ। पश्चात् देखल जाइछ जे छुरा पिस्तोल सं लेछ गोर दसेक लोक पसिंजर कें मारैत पीटैत नगदी घड़ी रेडियो तथा अन्य जेवर छीनि रहल अछि। हमरो पेटी के छुरी सं फाड़ि रेडियो तथा टेबुल घड़ी ल लेलक। संयोगवश हम शेष मे रही आ ओकरो सभ कें उतरबाक हड़बड़ी रहैक तें हाथक घड़ी कोनहुना बंचि गेल गाड़ी बरहिया टेशन पर दुनू प्लेटफर्मक बीच रूकबाक अवस्था मे मेलेक। डकैतक दल उतरि गेल आ संगहि गाड़ीक गति तेज भ गेलेक। गाड़ी ऐकबेर क्यूल मे रुकलेक त हमरा लोकनि स्टेशन मास्टर कें कहलिऐक तखन एक व्यक्तिक पेट मे छुरा लागल छलेक तकरो दवाइ बिरो मेलेक। फेर पुलिसोक आगमन मेलेक आ हमरा लोकनि लगभग बीस आदमी सं बयान लेल गेल।

आब जं समाचार पत्रक रिपोर्टर विचार करी त स्पष्ट भ जायत जे प्रकाशित रिपोर्ट पूर्णतः मनगढ़न्त अछि, फूसि अछि। एहि तरहक रिपोर्ट छपबाक पाछा निश्चित उद्देश्य छेक असामाजिक तत्व कें बढ़ावा देनाइ, रेल प्रशासनक अक्षमता पर झांपन देनाइ। आ येह थिक भारतीय पत्रकारिताक असली चरित्र।

आब कने घटना पर विचार करू। सुरक्षित डिब्बा मे प्रवेशाधिकार मात्र ओतबे लोक के रहैत छेक जे स्थान सुरक्षित करओने हो। तेहना अवस्था मे जं बरौनी मे ओतेक लोक ढूकि गेल त निश्चिते टी० टी० साहेहक अनुकम्पा सं कारण हुनको आमदनीक जरिया त वेह छनि। ओना डकैतक दल बरौनी मे उठल वा तकर बाद जखन गाड़ी बिलमले ततय से निस्तुकी त नहि कहि सकैत छी—परञ्च बरहिया मे जेना गाड़ी थमकल आ तुरते स्पीड पकड़ि लेलक—ताइ पर विचार करी त स्पष्ट भ जाइछ जे ड्राइवरक साठि-गाठि डकैत दलक संग छलेक। स्वयं टी० टी० महोदय सेहो घटनाक समय उपस्थित नहि छलाह। हुनके बयानक अनुसार भीड़क कारणे ओ गाडक डिब्बा मे छलाह। डिब्बा मे पुलिसक कोनो व्यवस्थाए ने छल आ जं रहबे करैत त ओहो टी० टी० जकां घटनाक समय बाहरे रहैत। विचारणीय इहो थिक जे एहि अंचलक ई पहिल घटना नहि छल।

स्पष्ट छेक जे रक्षके भक्षक अछि। रेल प्रशासने डकैत अछि। जं उपरका कोनो अधिकारी एकर अपवाद होथि आ रेल प्रशासन कें एहि कलंक सं मुक्त करय चाहथि—त प्रेसबलाक अनुकम्पा सं हुनका लग सही रिपोर्ट जाइए ने पाओत। जनता मे अस्त्रक सामने प्रतिरोध करबाक मनोबल रहैत ने छेक संगहि आनो व्यवधान रहैत छेक! कोनो आवश्यक काज सं नियत समय पर पहुंचनाइ वा नोकरीक हाजरी। तें सम्पत्ति गमायो कें झमेला सं छुट्टी चाहैत अछि। आ एहि तरहें ई घटना विदेशी कर्ज सन दिन दुन्ना राति चौगुन्ना बढ़ल जा रहलए।

—उदय कान्त मिश्र

शोणित दे शोणित मैथिलायं

अन्तःकरण मे भैरवीक नाद, कल-कल निनाद नहि होयत।

हर्षक विषय जे एमहर दू वर्ष सं जन सामान्य मे चेतना आयल। मातृभाषा प्रेमी प्रवासी मे यत्र खूब जोर-शोर लगौलनि अछि मुदा प्रवासी मैथिलक आन्दोलनक बात, हुनक गर्जन कि गाम धरि पहुंचि सकत? मैथिली मुक्ति मोर्चा अथवा अन्य कोनो संस्थाक मेघ मन्द्र स्वर सं तखने गाम-घर जागत जखन गाम घरक सरजमीन पर मैथिलीक हेतु संगठन होमय। मुदा से अछि नहि। गाम-घर मे विद्यापति पर्व नहि मनौल जाइत अछि। पेघ-पेघ शहर आ राजधानी मे एकर आयोजन आदर्श अहिए, जाहि सं सरकारक कान पर डाकिन पड़य। मुदा एहि चोटक प्रभाव दूर-दूर धरि पसरल गाम पर तखने हैत जखन एकाग्र निष्ठा, निस्पक्षता आ दलीय भावना सं उपर उठि कें आह्वान केल जेत। परंच स्थिति त एहने अछि जे शोणित ककरो बहल आ शहीद कियो दोसर कहबैत अछि। राघवाचार्य कतबो युग-युग धरि विद्रोहक शंख फूकथु—शोणित दे शोणित मैथिलायं कतबो हम सभ जय जय भैरवि गाबी, कतबो विद्यापति पर्व मनाओल जायत, अपन गामघर मे मैथिली ओहिना अवहेलित उदास रहतीह। यावतधरि यथास्थिति बनल रहल, मिथिलाक क्षितिजपर दुर्दिनक कारी मेघ मड़राइते रहत।

वैद्यनाथ विमल

●

बोनिहारक गीत

चढ़ा ले रे बुधना तों हंसुआपर शान रओ॥
हंसुए मे शान अपन हंसुए गुमान हइ
हंसुए हइ अप्पन परान आर जान रओ॥

हम सभ कमाएब आर खाएत केओ आन
लागए छगुन्ता ई हइ केहन विधान
ककरा ले' धर्म कर्म ककरा ले' देश हइ
अमरूख के ठकबा ले' हइ भगवान रओ।,

सोनित सुखा क पसेना बनेलिऐ
तकरा चुआ क जे खेतो पटेलिऐ
उगिलै तें धरती ई सोना सुगन्धि भरल
मरूआ, खेसारी, गहूम आर धान रओ॥

रोपने छी कटबे आ घर अपन भरबै
अन्नक अभाबे ने आब हमे मरबै
ठकळक बहुत मुदा आब ने ठकैबै हम
कालो सं लड़बै अरोपि देबै जान रआ॥

—राम लोचन ठाकुर

एकटा गोपनीय पत्र : संदर्भ मुख्यमंत्रीक घोषणा

प्रसंग मैथिली

श्रीमान् स्वानामधन्य सम्पादकजी महोदयजी

जय मैथिली।

आगा हाल-सुरति ई जे भरि छितनी उमेद छल जे बाबा विद्यापतिक बर्खी मे अहां सं भेट होएत आ भरिपोख गप शप करब। पटनाक चेतना समिति जखन सभ बेर जवारी नोतिते अछि तखन अहीं छुटि जायब तकर संदेहे केना कएल जा सकैत छल। परञ्च जानथि बाबा बैद्यनाथ जे अहां के नहि पावि जे हमरा कतेक कचोट भेल। ओना अहां कें नोत नहि गेल आ नहि पहुंचलौं से नीक भेल। हमरा त पूरा-पूरी क्वींटल भरि विश्वास अछि जे जं अहां रहितौं त शुभ-शुभ कें कलकत्ता आपस नहि जा सकैत छलौं। अहां पूछब जे तेहन कून बात भेलैक एहि खेप। त सेहो सुनिए लिय'।

अहां के त जनले होएत जे चेतना समिति जन्मकालहि सं प्रतिबर्ख जे बाबा विद्यापतिक बर्खी मनबैत आयल-ए से आन संस्था सं अपन फराक महत्व रखैत छैक। जतबा टाका ई असगरे जवार खुएबा मे खर्च करै-ए, ततवा समस्त प्रवासी संसाथ मिलियो कें ने क सकैछ। अहीं सभ ने तखन आलोचना केने रहिएक जे एहि टाकाक अबो जं विद्यापतिक डीह पर खर्च कएल जाइत त आइ ओहिठाम नढ़ेया-कुकूर नहि भुकैत खोपड़ीक स्थान पर भव्य-भवन शोभायमान रहितै। परञ्च इहो त एही संस्थाक विशेषता छैक जे प्रतिबर्ख राज्यक मुख्य मंत्री, राज्यपाल तथा अन्यान्य मंत्री लोकनि कें बिझो करा आनि लेए या इहो लोकनि प्रतिबर्ख मैथिलीक लेल सोन महल बनेबाक घोषणा करैत रह लाइ-ए। गत बर्ख जं एहि सनातन नियम मे व्यवधान भेलैक त एहि लेल निश्चिते दोखी किछु भगत्ती छौंड़ा सभ छल, नेकि ई संस्था वा मंत्री मदोदय। कहू त भला, ई केहन विचार-नियार जे स्वनामधन्य मुख्य मंत्री कें पनहीक माला सं स्वागत कएल जाय। आ तें जं मुख्यमंत्री महोदय पतनुकान ल लेलथि त बेजाइए की? त से जे कहैत छलौं, एहि बेरक स्थिति सामान्य छलैक आ तें मैथिल कुल-दुषण, बिहारक बड़द-पुत्र, वन-प्रतिनिधि, दुर्नामधन्य, मुख्य मंत्री प्रवर श्री श्री ८०१ श्री डा० श्री जगन्नाथ मिश्र जी उपस्थित छलाह। ओ भरल सभा मे उन्मुक्त कंठे घोषणा केलनि जे आइ दिन सं ओ मैथिलीक निमित्त किछु नहि करता। ओना ओ इहो कहलनि जे जखन लोक हुनकर सभ काज कें मैथिली विरोधीए कहैत अछि। त आब ओ एहन काजे नहि करताह अहां के त एगो खिस्सा बुझल हएत, जे एगो बच्चा कें सभ दिन मां-बाप घरिया पहिरा देथिन। जहन छेटगर भेल त एक दिन ई हलकिन बाउ आई अपने घरिया पहिरु त। बेचारा कएक खेप ओरिया-ओरिया कें घरिया पहिरलक मुदा ई लोकनि सभ बेर दूसिदेथिन। अन्त मे त कहिए देलथिन—हाय रे अपरोजक, एखन तक घरियो ने पहिरय एलह। एतवा सुनिते छौड़ा घड़िया फेकि फनकए लागल—आब हम घरिया पहिरबे ने करब नङटे रहब। मां-बाप सोचलनि जे जं ई नङटे रहत त एकरा की हेतैक। टोल-पड़ोस त हमरे लोकनिक खिधांस हेतए जे केहन अपाटक सन्तान कें जन्म देलथि आ तकरा ओहिना छोड़ियो देत छथिन तें फेर पोलाभय लागलाह। किन्तु दुखक गप जे बेचारे मिसरजी के पोल्हाबैयोवला केओ नहि।

हम बुझैत छी जे अहां के उपरक खिस्सा अनसोहांत लागत। अहां सोचब जे ई हम मिसरजीक बचाव लेल गढ़ल-ए। त जं सत्त पुछी त बाबू जे देथि पाकल आम सेह ने भेलाह ईल झा।

ओना ई गप्प त हमहूं जनैत छी जे जतय मुर्गी नहि रहैत छैक, परात ततहु होइते छैक। मिसर जी मैथिलीक-मिथिलाक लेल केबे की केलनिहे जे आब नहि करताह? मिथिला विश्वविद्यालय हो वा बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान—ई त श्रद्धेय स्व० ललित बाबूक देन थिक। ई एतेबरि अवस्से केलनि जे मिथिला सं पहिने ललित बाबूक नाम जोरि देलनि। हिनका के ज्ञान झाक योग देतनि आ बुझओतनि जे हेयो मुर्खधिराज ललित बाबू हमरा सभक लेल श्रद्धेय अवस्से छथि-परंच मिथिला सं पैघ नहि। स्व० ललितो बाबूक आत्मा एहिघृणित षड़यंत्र सं छटपटाइत होइत। जं डार मे दम्म अइ त एगो नव वि० वि० हुनकर नाम पर बना ने दियतु। रहल बात मैथिली अकादमीक। जं थोड़े कालक लेल मानियो ली जे ओ भोजपुरी अकादमी, उर्दू अकादमी वा चमचा अकादमी बना दितथि-मैथिली अकादमी छोड़ि सकैत छलाह। परंच से केने ओते पैघ संख्यक कुटुम्ब परिवारक भरण-पोषण केना होइतनि? ओतबे किएक, जनता सरकार जे मैथिली माध्यम सं शिक्षाक प्रारम्भ केने छल—ई तकरो नीपि पोति देलनि। उनटे मुसलमानक भाषा कहि उर्दू कें दोसर राजभाषा बना देलनि। एक गाम मे दू भाषा कहियो सुनलो ने छल। भइयारी मे झगड़ा बझेबाक भिनाउज करेबाक अभिनव तकनीक! जं सत पुछी त अंग्रेजक समय मे ई भेल रहितथि त निश्चिते ब्रिटिश बहादूर हिनका 'लार्ड'क उपाधि सं विभूषित केने रहति।

परञ्च सभ जनितो-बुझितो हमरा की गर्ज पड़ल-ए जे विरोध करी? जखन भरल सभा मे ककरो गजहा नहि ससरलैक तखन लाल बुझक्कर कें कुकूर कटने छलनि? असल मे जं पुछी त ई जातिए हिजरा थिक—जन्मना भनहि नहि हो, कर्मणा। तेहना हालत मे हमरो जे बर्ख मे दू सांझ परि लागि जाइए आ सए दू-एक भोजन दक्षिणा भेटि जाइए से अपने सं किएक छोड़ि दी? एगो पाइ त केओ देनहारे नहि। एही विरोधक कारणे कतेको कवि बन्धु आमंत्रितक सूची सं बारल छथि। कतेकोक नाम बाद मे काटि देल गेलनि।

त तें कहल जे अहां रहितौं त चुप रहि ने सकैत छलौं आ जं किछु बजितौं त सरकारी-अर्ध सरकारी चमचा सभ द्वारा अंग-भंग कइए देल जाइत। तें हमर त सलाह अछि जे अहां बेसी कूद-फान नहि करी सेह नीक। कहलके किने जे अपने जीने बापक नाम। ई आशा छोड़ि दिय जे जे जनता मिसर जी कें सिंहासन पर बैसलकनि से उतारियो सकैत छनि। असल मे हमरा लोकनि मूस कें सिंह त बना सकैत छी। किन्तु सिंह कें पुनः मूस बनेबाक मंत्र बिसरि गेल छी। संगहि अहांक जननी जन्मभूमिश्च""वला नारा पुरान भ गेल अछि। आइ-कालि मिथिलाक नव नारा छैक रोट-कोट-नोटश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

पत्र अनर्गल रूपें दीर्घकाय भ गेल तें शेष करैत छी। अन्त मे अपने सं पादबद्ध प्रार्थना जे एहि अति नितान्त गोपन व्यक्तिगत पत्र कें अपनहि तक सीमित राखी।

पत्रोत्तर नहि पएबाक प्रबल आकांक्षी
श्रीमान लाल बुझक्कर
बुझनुक ग्राम बासी

कलकत्ताक झाकावला........

मकान क सभ मजदूर अपना मे मेल केने अछि आपद-विपद मे एक दोसराक संग देत छैक। एक संग मिलि आवाज उठबैए। ओना एकरा शुभ लक्षणे मानक चाही। इएह संगठन एक मकान सं दोसर मकान के जोड़ि सकैछ अपन आयाम बढ़ा सकैछ। अपने मे सं केओ नेता बहरा सकैत छैक आ तेखन उचित मजूरीक अपेक्षा कएल जा सकैछ। जे वर्तमान मे निश्चिते नहि भेटैत छैक।

केनिंग स्ट्रीटक झाजी (परिचय लिख नाइ मना केलनि) एगोकलेन्डर व्यवसायीक दोकानक संग संयुक्त छथि। हिनक आमदनी त आरो थोड़ छनि परंच तैयो निर्वाह क लैत छथि। आश्रम छोट छनि।

—मुजतबा अली

एकांगी.......

अइ। ई बात सत्य जे मिथिलाक भौगोलिक अवस्थान एकरा बहुतहद धरि बाहरी आक्रमण सं बचओने रहलैक आ जे हेतु बाहरी आक्रमण नहि भेलैक तें केओ महाराणा प्रताप वा शिवाजी एहिठाम नहि भेलाह। परञ्च इहो गप तहिना सत्य छैक जे जखन दिल्लीक लोदी मिथिलापर आक्रमण केलक त वीर शिवसिंह सिंहनाद क उठलाह। एक नहि अनेको खेप दिल्ली सल्तनत के मिथिला सन छोट छोन राज्य लग पराजित होमय पड़लैक। जं पृथ्वी राजक संग तरूआरि लेने चन्द्रबर दाई रहैत छलथिन त शिवसिंहक संग सेहो वीर कवि विद्यापति रहैत छलाह। की महाबली लोरिक मिथिलाक संतान नहि छलाह? जनिका टाल ठोकने भूकम्प होइत छल आ जे अपन दुनू हाथे दू गोट दंतार हाथीक नाङड़ि पकड़ि ढेलमासुक देप सन फेकि देत छलाह एहन वीर सन्तान कएकटा कुन देश जनमा सकल-ए? आइ भनहि लोक कें लोरिकक एहि पराक्रम-गाथा मे अविश्वास होनि परञ्च महाभारत मे भीम द्वारा हाथी के आकाश मे फेकि देबाक कथा आ ठारजनक कथा-गाथा जं सत्य छैक त कुनू कारण नहि जे महाबली लोरिकक कथा-गाथा पर संदेह कएल जाय। लोक सेवक महावीर राजा सलहेस, राय रणपाल ओ हुनक बालक गुगली रणपाल, बंठा चमार आदि वीर पुरुष सं मिथिलाक इतिहास भरल अछि। एकदम निराधार थिक ई कहनाइ जे निश्चिते मनगढ़न्त थिक, फूसि थिक, एकांगी थिक। ई बात सत्य जे मिथिलाक अतीत साहित्य कलाक लेल स्वर्णयुग छल, चारिगोट दर्शनक जन्म स्थान रहल-ए। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-कला, दर्शन सभ क्षेत्र मे ई पूर्व भारतक पथ प्रदर्शक रहल ए। ई स्वाभाविको छैक कारण मिथिलाक अतीत शान्ति सम्पन्नताक रहले-ए। किन्तु सभ रहितहुं मिथिला मात्र एतबे सं नहि अइ। जे मिथिला गणतंत्रक जन्मदाता अइ से निश्चिते ओकर रक्षाक महत्व सं अपरिचित नहि रहल होएत। मिथिलाक इतिहास, भनहि जे कुनू कारणे हो, दोसर पक्ष कें एकदम सं बिसरा देने अइ, जे दोसर पक्ष थिक पुरुषार्थक वीरताक। तें लोक जनक-यज्ञ बल्वयक नाम त जनैए, गौतम-कपिलक नाम त जनैए मुदा शिवसिंह सलहेसक नाम सं अपरिचित अइ, लोरिक-गुगलीक नाम सं अपरिचित अः। ई त धन्यवाद दी मिथिलाक सर्वहारा वर्ग कें जे आइ धरि एहि महा पुरुष लोकनि कें मिथिलाक महान विभूति लोकनि कें अपन कंठ मे जोगओने अइ। तें महराइ वा गुगरी नाच मे तथा-कथित पढ़ल-लिखल धनी-मानी लोक भनहि नहि जाथु—तैयो लोकक करमान पड़ैत रहैए। अपन माटि-पानि सं जुड़ल, अपन वीर पूर्वजक गाथा हेबाक कारण महराजी मैथिल द्वारा नोति कें आनल हिन्दी नाटक कें इएह महराइ आ गुगली सलहेसक नाच आइ मिथिला सं बेलेबा मे समर्थ भ रहल-ए।

आइ इतिहासकारक ई पहिल आ प्रधान कर्त्तव्य छनि जे ओ उज्वल पक्ष कें प्रकाशित करथि ने कि छोट-मोट दोष के ल कें फोसेड़ी सं भोकन्नर करबाक प्रयास करथि। ६ दिसम्बर १९८० क आन्दोलनक पश्चातो जं केओ कहैत छथि जे मैथिल आन्दोलन नहि क सकैए त ओ किन्नहु मैथिलक शुभचिंतक नहि छथि। एहि तरहक कथन मैथिलक मनोबल कें तोड़बाक घृणित षड़यंत्र छोड़ि आर किछु नहि थिक।

—अग्रदूत

सभा-समिति

नवकी दिल्ली, १० नवम्बर १९८१ स्थानीय मविलंकर सभागार मे मिथिला संघ न० दि०) द्वारा दू दिना विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन कएल गेल। पहिल दिनक उद्घाटन कर्ता छलाह श्री केदार पाण्डेय रेल मंत्री, भारत सरकार तथा मुख्य अतिथि श्री वसंत साठे, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, भारत सरकार। अध्यक्षता केलनि पंडित श्री हरिनाथ मिश्र, संसद सदस्य। मुख्य वक्ता मे जनिक नाम छलनि श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, श्रम राज्य मन्त्री, भारत सरकार, ओ अनुपस्थित रहलीह। अन्यान्य गणमान्य व्यक्ति से सर्व श्री भोला पासवान शास्त्री, सतीश चन्द्र मिश्र कृष्ण चन्द्र पंत, मो० शफी कुरेशी, डी० पी यादव, के० पी० तिवारी, शिव-चन्द्र झा प्रो० अजीत मेहता, राम सहाय पाण्डेय, श्रीमती अनीसा इमाम, आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। सांस्कृतिक कार्य-क्रम मे भाग लेलनि श्री सरोद जी, श्रीमती सारदा सिन्हा। एहि अवसर पर एगो भव्य मजीरा नृत्य प्रस्तुत कएल गेल। अन्त मे श्री गुणानन्द ठाकुर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन कएल गेल।

दोसर दिन, १ दिसम्बर उद्घाटन कर्त्ता छलाह पं० श्री लक्ष्मीकान्त झा, अध्यक्ष, आर्थिक सुधार आयोग, भारत सरकार। अपन उद्घाटन भाषण मे श्री झा जी कहलनि जे बंगला भाषाक उद्भव मैथिली सं भेल। विद्यापति के बंगलाक कवि मानबाक इएह कारण छल। दुनू भाषा मे बड़ समानता थलैक जे कालान्तर मे निरंतर सम्पर्कक अभाव, स्थानक दूरी आ स्थानीय आवश्यकताक कारणे फराक होइत गेल आ बंगला भाषा ओ लिपिक अलग विकास भेलैक। एहि संदर्भ मे ओ पूर्वांचलक भाषाक उद्भव ओ विकास एवं परस्पर प्रभावक गहन अध्ययनक आवश्यकता पर जोर देलनि। अपन अध्यक्षीय भाषण मे हिन्दुस्तान दैनिकक सम्पादक श्री विनोद कुमार मिश्र जी कहलनि जे विद्यापति पहिल कवि छलाह जे परम्परागत संस्कृत तथा अपभ्रंश कें छोड़ि जन-भाषा मे काव्य रचना केलनि आ मात्र रचनाए नहि ओकरा लोक प्रिय सेहो बनओलनि। इएह कारण थिक जे एखनहुँ धरि घर-घर मे हुनक गीत गाओल जाइत अछि। मुख्य वक्ता श्री गंगा शरण सिंह जीक अनुसार विद्यापतिक काव्य मे आध्यात्म, भक्ति आर सौन्दर्यक अद्भुत समन्वय अछि। हुनक गीत मे गति, लय आर भावक तेहन सामंजस्य अछि जे ओकरा आधार पर कोनो सफल नृत्य नाटिकाक आयोजन कएल जासकैछ। आजुक मुख्य अतिथिक पद पर छलाह श्री वेदानन्द झा, भारत स्थित नेपालक राजदूत।

एहि अवसर पर एक भव्य कवि सम्मेलनक आयोजन सेहो भेलछल। आमंत्रित कविगण मे छलाह सर्व श्री महा कवि यात्री, राम सहाय पाण्डेय, रमानाथ अवस्थी, आर० सी० भारद्वाज, कवि चूड़ामणि 'मधुर, कविवर सुमन, प्रवासी, अमर नारायण कुँवर, रवीन्द्र, महेन्द्र धीरेन्द्र एवं मायानन्द मिश्र।

अन्त मे सर्वश्री शिलाकांत, गिरीश, सरोज, लेखनाथ, सारदा सिन्हा, ए० के० सिंह, एवं नाटक प्रभागक कलाकार लोकनि द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल।

(देसिल बयनाक दिल्ली प्रतिनिधि सूर्यनारायण मंडल द्वारा प्रेषित)

× × ×

कलकत्ता २१ नवम्बर ८१ बड़ा बाजार युवक सभा हॉल मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति स्मृति पर्व मनाओल गेल। अध्यक्षता केलनि श्री मुकुटधारी मिश्र तथा प्रधान वक्ता छलाह मिथिलेन्दुजी कवि पति कें श्रद्धांजलि दिनिहार अन्यान्य वक्ता मे छलाह सर्वश्री बाबू साहेब चौधरी, राम लोचन ठाकुर, शरद चन्द मिश्र, ब्रह्म नारायण झा, श्रीदेव झा आदि। एहि अवसर पर विद्यापतिक 'सखि हे हमर दुखक नहि ओर' गीत पर आधारित भावनृत्य प्रस्तुत कएल गेल तथा आर संगीतक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल।

कलकत्ता, १४ नवम्बर १९८१। संस्कृत साहित्यक मर्मज्ञ आ मैथिलीक प्रकाण्ड पण्डित पं० जयकान्त झा 'श्रुतधर' क आकस्मिक निधन पर स्थानीय मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा एक शोक सभाक आयोजन विद्यापति विद्यामंदिरक सभागार मे कएल गेल। अध्यक्षता कएलनि परिषदक अध्यक्ष श्री मुकुटधारी मिश्र तथा भाग लेलनि स्थानीय सभ मैथिली सेवी संस्थाक प्रतिनिधि लोकनि। श्रद्धांजलिक क्रम मे विभिन्न वक्ता लोकनि 'श्रुतधर जी' क व्यक्तित्व आ कृतित्वपर प्रकाश देलनि तथा ओहि सं शिक्षा लेबाक अनुरोध समस्त मैथिली भाषी सं केलनि। स्व० श्रुतधर जी मे काव्य सृजनक तथा कुनू वस्तु के नव ढंग सं आ एकदम मौलिक रूप मे प्रस्तुत करबा अदभुतक क्षमता छलनि। 'सीतायण' महाकाव्य मे सीताक गरिमाक उपास्थापन हुनक कला-कौशलक परिचायक थिक। मैथिली मे 'मेघदूत' ओ 'गीताञ्जलि'क पद्यानुवाद अपन विशिष्ट स्थान रखेए। एकर अतिरिक्त ओ कतेको मैथिली सेवी संस्थाक संरक्षक छलाह। मैथिली भाषी सदा एहि विभूतिक ऋणी रहत। श्रद्धांजलि अर्पित केनिहार मे छलाह सर्व श्री शरद चन्द्र मिश्र, कालीकांत झा, हरिश्चन्द्र मिश्र, मिथिलेन्दु जी, राम लोचन ठाकुर, किशोरी कान्त मिश्र, एवं ब्रह्मानन्द सिंह झा। अन्त मे दिवंगत आत्माक शान्तिक हेतु दू मिनटधरि मौन प्रार्थनाक उपरांत सभाक विसर्जन भेल।

बाल कविता

नञि छइ तकर विनाश

तरूआ तिलकोरक कद्दू
ककरा लगै ने नोक
अनसोहांत ककरा लगै
कोबर घर के गीत
किन्तु मात्रटा नीक सं
होएत की उपलब्ध
लोक नपुंसक के कहू
की करैत प्रारब्ध
पुरुष सिंह निश्चित सकए
तोड़ि अकाशक चान
पुनि दुर्लभ एहि जगत मे
तकरा लें' की आन'
मरियो अमर बनैत अछि
कीर्तिक संग महान
उद्यमहीन मनुक्ख कें
बचै ने नाम निशान
दिय' दिय' टा मात्र सं
भेटय नञि अधिकार
बंचलोटा बुरि जाइ छइ
तेहने छइ संसार
हाथ पसारल बाटपर
मरय हजारो लोक
कुकूर बिलाड़िक मृत्यु पर
के मनबै छइ शोक
हाथ बढ़ा जे ल' सकए
छइ तकरे इतिहास
जागल सदा सतर्क जे
नञि छइ तकर विनाश॥

—राम लोचन ठाकुर

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन
१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाउ।
२—'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना कें अग्राधिकार देल जायत।
३—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाउ।
४—'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

कह लोचन कविराय

आइ एम एफ के कर्ज थिक एक दवा सओ मर्ज
बरू बेचि स्वाधीनता प्राप्त करब तें फर्ज
प्राप्त करब तें फर्ज अर्ज ई आइ समय के
समाजवादक तर्ज उत्स क्षमताक उदय के
कह लोचन कविराय ओ महा शत्रु देश के
जे करैत'छि निन्दा कर्जक आइ एम एफ के

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, वृन्दावन बैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अंक—४ जनवरी, १९८२ मूल्य—पचास पाइ

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

सम्पादकीय

भीख नहि, अधिकार चाही

दिल्ली मे आयोजित विद्यापति-पर्व समारोहक उद्घाटन करैत रेलमंत्री श्री केदार पाण्डेय मैथिली कें संविधानक आठम अनुच्छेद मे सम्मिलित करबाक माङ कें समर्थन करैत एहि लेल एक शिष्टमंडल कें प्रधान मंत्रीक संग भेंट करबाक आवश्यकता पर जोर देलनि। ओ आरो कहलनि जे एहि शिष्टमंडलक नेतृत्व ओ स्वयं क सकैत छथि जं कहल जानि। केदार बाबू एहि सं पूर्व रांची मे सेहो ई घोषणा केने छलाह।

एहि मे कनिञो संदेह नहि जे केदार बाबू मैथिलीक शुभेच्छु छथि। मिथिलावासीक दीर्घकालीन माङ आ आशा—मिथिला विश्व विद्यालय तथा बिहार लोकसेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हिनकहि मुख्यमंत्रीत्व काल मे भ सकल। मैथिली अकादमीक निर्माणहुं मे हिनक सहयोग सद्भावनाकें बिसरल नहि जा सकैछ।

जहाँधरि शिष्टमंडलक प्रश्न अइ, हमरा पूर्ण स्मरण अइ जे १९७० मे श्रद्धेय स्व० ललित बाबू मैथिलीक प्रतिनिधि लोकनि कें कहने रहथिन जे एहि निमित्त संस्थाक नहि, संसदीय समिति (Parliamentary Committee) क प्रयोजन छैक, आ हुनकै निर्देशानुसार एगो समितिक निर्माणो भेल छल जकर संयोजक छलाह श्री यमुना प्रसाद मंडल आ प्रायः मैथिलीक निमित्त यदा-कदा बजनिहार समस्त सांसद लोकनि सदस्य छलाह। खेदक संग लिखय पड़ैछ जे ई समिति तेहन अकर्मण्य भेल जे एकर चर्चा नदारद। पता ने शिष्टमंडल सं केदार बाबूक तात्पर्य कोन तरहक शिष्टमंडल सं छनि। परञ्च जं एहने शिष्टमंडल सं होनि त आगा प्रयास केनाइ व्यर्थ। कहबाक प्रयोजन नहि जे मिथिलाक सांसद सभ 'चीटर्स' थिक, नमक हराम थिक। ओ खायत त मिथिलाक परञ्च पहरा करत दिल्ली पटनाक। दोख ओकरो सभक नहि छैक। ओ सभ हमरा सभ कें, मिथिलावासी कें बड़ोड़ बराबरि नहि बुझैए। लाठी-ठठैत' जीन्दावाद! करिया टाका जीन्दाबाद!!

जं केदार बाबूक तात्पर्य आन तरहक शिष्ट मंडल सं होनि, जकरा सभक प्रयासे आइधरि थोड़-बहुत काज भेलए, त ताहू संबन्ध मे हम फेर १९७० क कथा दोहराएब। १९७० क दिसम्बर मे एहि तरहक शिष्टमंडल प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी सं भेंट केने छल आ ओहो सहानुभूतिपूर्वक विचार करबाक आश्वासन देने छलीह। परञ्च १९८१ बीति चुकल। आइधरि श्रीमती जी कें एहि समस्या पर विचरा करबाक पलखति नहि भेलनि वा जानि ने सहानुभूतिक स्त्रोत्र सुखा गेलनि। तें जं फेर कुनू शिष्टमंडल भेंट करबे करनि आ भ सकैए फेर आहैन आश्वा सनो भेटि जाइन तथापि संभावित फलक संभावना नहिञे बुझना जाइछ। स्पष्ट छैक जे आजुक राजनीति में, आजुक नेता लोकनिक लेल स्मार-पत्र वा अश्वासनक कोनो महत्व नहि। आश्वासन ठकबाक लेल होइत छैक आ स्मार-पत्रक भाषा ओ लोकनि बुझैत नहि छथि। ओलोकनि एकेटा भाषा बुझैत छथि क्रान्तिक, रक्तक्षमी क्रान्तिक। प्रमाण अइ आसामक आन्दोलन।

केदार बाबू कें हुनक सद्भावनाक लेल धन्यवाद परञ्च हुनका बुझि लेबाक चाहियनि जे हुनको वक्तव्य सं मिथिलांचलक सांसदपर कोनो प्रभाव पड़निहार नहि। श्वान प्रवृतिक संग विवेकक प्रश्ने ने उठि सकैछ। तें मिथिलाक रौदी-दाही महामारीपर पटना-दिल्ली दरबार मे बहस नहि होइ छइ। तें किछु लाख सिन्धीक भाषा कें संविधान मे स्थान भेटि जाइत छैक मुदा चारि कोटि लोकक मातृभाषा ओहि सं बारल रहैए। अरुणाचल-मेघालय सन राज्यक निर्माण भ जाइ छइ मुदा मिथिला कें खिचड़ी राज्यक संग रान्हि देल जाइछ। इएह करण छैक जे मिथिला मे रेल-बस नहि बाटो-घाटक स्थिति सोचनीय छैक। कलकारखानाक चर्च की हो—एगो अशोक पेपर मिल बनलै त सेहो उठि कें आसाम चलि गेलै आ कोशी समस्या त 'एवर लास्टिंग स्टोरी' अहिए।

मिथिलावासी कें भीख नहि, अधिकार चाहिऐक। मैथिली कें संविधान मे स्थान हो—से हमर न्योयोचित माङ थिक। हमर अधिकार थिक आ तकर पूर्ति केनाइ सरकारक कर्त्तव्य। एहि निमित्त शिष्टमंडल क प्रयोजने नहि हेबाक चाही। परञ्च असलियत त ई अछि जे सरकार कांग्रेसी सरकार—जकर वर्चस्व सभदिन मिथिलांचल मे रहलैए, जन्मजात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि।

आइ समय आबि गेलए जे मिथिलावासी कें साधुरूपी एहि सरकारी रावण कें चीन्हय पड़तनि। चीन्हय पड़तनि एकरा द्वारा बनाओल। पठाओल वर्णप्रेमक स्वर्णमृग कें जे वर्णकहलक बीज थीक आ भाइ-भाइ मे कपर फोड़ौअलि करबैए आ सामूहिक समस्याक समाधान लेल, जातीय उत्थान लेल हमरा लोकनि कें एक संग नहि होमय देए। हमरा लोकनि कें अपने बाहुबल आ बुद्धिबल पर भरोस राखि अगुएबाक चाही। प्रश्न अस्तित्व क छैक। अधिकार भीख माङने नहि भेटैत छैक। एहि लेल चाही संघर्ष—रक्त संघर्ष।

—जय मैथिली

जनकपुरक विद्यापति-स्मृति पर्व : स्थिति आ अपेक्षा

जखन कखनो हमरा लोकनि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक चर्च करैत छी त निश्चिते भारत वा नेपाल ताइ बीच मे नञि अबैए। एबो केना करत जखन कि मिथिला-मैथिल-मैथिली अपने आप मे सम्पूर्ण अइ अनेक नञि एक अइ। ओतबे किएक, वियाह-दानहुंक समय हमरा लोकनिक मन मे एहि तरहक भावना नञि जन्मैए जे बीच मे एगो आड़ि छइ जे एकै जमीन कें जमीनक फसिल के दू भाग मे विभाजित करै छइ, एक दिसुक पानि के दोसर दिस जेवा मे बाधक होइ छइ। आ इएह भावनाक नञि जन्मनाइ एइ आड़िक कृतिमता के प्रमाणित करैए। परञ्च आइ इएह कृतिमता सत्य छइ कारण एकरा पाछा राजनीति छइ आ आजुक युग मे राजनीतिए सभ सं पैघ सत्य थिक। ओना भावना सं राजनीतिके जन्म लेबाक घटना कुनू नव नञि, किन्तु मिथिला-मैथिल-मैथिलीक संदर्भ मे एहि तरहक बात केनाइ नवम अचरजक बात केनाइ सन हएत।

से जे हो, किन्तु ई धरि सत्य छइ जे आइ आड़िक दुनू कातक मैथिल पछुआएल अइ, ओकर भाषा-संस्कृति आ आन समस्या सभ सरकार द्वारा अवहेलित छइ। एहि संदर्भ मे एहि पारक तथा कथित गणतांत्रिक आ ओइ पारक राजतंत्री सरकार मे वड़ बेसी फर्क नञि छइ। फर्क नञि छइ दुनू कातक मैथिल मे जे अपन दीन-हीन अवस्था लेल सरकार सं बेसी दोखी अपने अइ कारण ओकरा मे त्याग बलिदानक भावनाक, जकर बड़ दीर्घ आ गौरवशाली परम्परा मिथिलाक रहलैए—एखनो पूर्ण अभाव छैक। अभाव छैक संघर्ष चेतनाक। किन्तु, जे थोड़ बहुत चेतन लोक अइ से अपन मान-मर्यादा लेल, अपन अधिकार पेवालेल सुगबुगा रहल-ए, आवाज बुलन्द क रहलए।

एहि सभक अतिरिक्तो नेपालक स्थिति भारत सं भिन्न छेइ। ओइठाम राजतंत्र छइ परञ्च भारत मे तथाकथित गणतंत्र। इतिहास प्रमाण अइ जे नेपालक राजवंश मैथिलीक प्रबल पक्षधर आ पोषक रहलए जखन कि भारतीय गणतंत्र जन्मजात मैथिली विरोधी। नेपाल मे मैथिली भाषीक संख्या भारतीय मैथिली भाषीक संख्याक एक चौथाइ सं बेसी नञि छइ। राष्ट्रीय जनगणनाक अनुसार अठारह जिला मे तिरफन लाख मैथिली भाषी छथि। ओना भारतीय जनगणना जखन चारि कोटि मैथिली भाषी कें एको कोटि नञि लिखैए ताइठाम निश्चिते नेपालक जनगणनाक, सत्यता पर प्रश्न चिन्ह नञि लगेबाक चाही, तथापि हमरा हिसावें ई संख्या किछु पैघ अवस्से हेबाक चाही। जं जनगणनेक संख्या कें सत्य मानि ली तैयो नेपाल मे एकर दोसर स्थान छइ। किन्तु खेदक विषय जे नेपाल सरकार एखनोधरि एकरा दोसर राष्ट्रभाषा नञि घोषित केलकए आ मैथिली भाषी क्षेत्र मे राजकाज एहि भाषा मे करबाक व्यवस्था नञि केलकए। ई निर्विवाद नेपाल राजवंशक आदर्श परम्पराक विपरीत थिक आ श्री ५ को सरकारक उदारता-सहृदया आ विवेक बुद्धि पर प्रश्न चिन्ह लगबैए। एहूठाम एम० ए० धरि मैथिली पठन-पाठनक व्यवस्था छइ मुदा शिक्षाक माध्यमक रूप मे मैथिली के स्वीकृति नञि देल गेलैए। बूझना जाइए जेना ई सभ भारतक देखादेखी चलि रहल हो, जे निश्चिते एगो स्वाधीन देशक मर्यादाक प्रतिकूल थिक।

४-५ दिसम्बर कें अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद द्वारा जनकपुर मे आयोजित विद्यापति स्मृति पर्व कें एही परिप्रेक्ष्य मे देखल जा सकैए। समारोहक उद्घाटन केलनि नेपालक भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री मातृका प्रसाद कोइराला। मातृका बाबू गणतांत्रिक विचारक सुयोग्य आ अनुभवी राजनेता छथि, मैथिलीक प्रबल पक्षधर छथि। एगो स्वाधीनता-प्रेमीक हेतु

मात्र अपने स्वाधीनताक नहि दोसरोक स्वाधीनताक ओतबे चिन्ता सम्मान रहै छइ आ मातृका बाबू एकर प्रत्यक्ष प्रमाण छनि।

ओना त मातृका बाबू कतेतो खेर, कतेको मंच सं मैथिलीक सम्बन्ध मे अपन विचार प्रस्तुत क चुकल छथि परञ्च उपरोक्त अवसर पर ई जे किछु कहलनि तकर फराक महत्व अइ। ई मात्र सुझावे नञि अपन सहयोगक आश्वासन सेहो देलनि आ लोक जनैए जे हिनक आश्वासन भारतीय नेतासन ठकबाक निमित्त नञि होइ छैनि। ई भनहि एखन क्षमता में नञि छथि परञ्च क्षमताहीन त किन्नहु ने छथि आ तें जं ओ चाहथि त निश्चिते मैथिलीक कल्याण अनति विलम्ब भ सकैए। किन्तु प्रश्न हिनक चाहबाइक नहि. हिनक सुझाव सहयोग लेबाक छइ—जकर ओ आश्वासन देलनिहें। आशा अइ जे परिषदक कर्मी लोकनि एहि मे नञि चुकताइ कारण अवसर बेर-बेर नञि अबै छइ।

मातृका बाबूक वक्तव्य मे तीनटा विषय ध्यान देबाक अइ, महत्वपूर्ण अइ। पहिल ई जे नेपालक दोनवार लोकनिक भाषा मैथिली थिक। जहांधरि विकृत-रूपक प्रश्न छइ से बाजल जायवला भाषा मे त पांचे कोसपर अन्तर होइ छइ आ स्तरीय भाषाक संग भंजारने ओ विकृत बुझैबे करत। ई पार्थक्य साहित्य कें माध्यम सं दूर कएल जा सकैए। हुनको लोकनि कें जं मैथिलीक माध्यम सं शिक्षा भेटनि, शिक्षाक प्रसार होइक, हुनको लोकनि द्वारा साहित्य सिरजल जाय आ आन अंचलक संग सम्पर्क गाढ़ होनि त अपनहि ई पार्थक्य समाप्त भ जायत। उदाहरणक लेल पूर्व बंगाल आ पश्चिम बंगाल मे बाजल जायवला भाषा मे बड़ अन्तर छइ। कुनू-कुनू अंचलक भाषा त बहरियाक लेल बुझबो कठिन किन्तु साहित्य मे, पठन-पाठन मे मोटामोटी एक तरहक भाषाक प्रयोग होइ छइ। सभ अंचलक लोक गर्वक संग अपना कें बंगाली आ अपन भाषा कें बंगला मानैत छथि आ मात्र मानिते नञि छथि ओकर मान-मर्यादा रक्षार्थ कुनू मूल्य देबाक हेतु सदा-सर्वदा प्रस्तुत रहैत छथि।

दोसर वात जे ओ कहलनि से ई जे आइ दोसर विद्यापतिक प्रयोजन अइ। ठीके आइ विद्यापतिक नाम जपने मैथिलीक विकास नञि हेतैक। प्रयोजन छइ विद्यापति परम्परा कें जिएबाक आ तें एक नञि अनेको विद्यापतिक प्रयोजन—जे फेर एक खेप 'बाल चन्द विज्जावइ भाषा'क उद्घोष क सकथि, मैथिली-साहित्य भंडार कें भरि सकथि, जनचेतना जगा सकथि, पुरुषक निर्माण क सकथि आ मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक पथ प्रशस्त क सकथि। प्रयोजन छइ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

हुनक तेसर सुझाव छलनि मैथिली मे एगो नियमित मासिक पत्र बहार करवाक। सरहदक एइपार सं त केकटा एहि तरहक पत्र बहारो होइए, मुदा ओइपार एकर अभाव छइ। तें एहि तरहक पत्रक चड़ वेसी खगता छइ जे ओइपारक लोकक समस्या ओकर आशा आकांक्षा के स्वर देक। पोथी जते किएक ने छपि जाओ मुदा पत्रिकाक अपन फराके महत्व छइ आ आजुक युग के एकर उपयोगिता कें अनठाओल नञि जा सकैए।

एहि अवसर पर भूतपूर्व मंत्री श्री मकेश्वर प्र० सिंहक कहब जे एम ए० क शिक्षणधारि मैथिलीक मान्यताक औचित्य तखने प्रमाणित हएत जखन प्राथमिक कक्षा सं मैथिलीक माध्यमे शिक्षणक व्यवस्था हो—पूर्णतः सत्य अइ आ श्री सिंह धन्यवादक पात्र थिकाह। ओ मैथिली के नेपालक दोसर भाषाक मान्यता देबाक माङ करैत कहलनि जे क्षेत्रीय भाषाक विकासक विना ओइ क्षेत्रक विकास असंभव छइ आ तें सरकारक कर्त्तव्य छइ जे एइ दिस ध्यान दिअय। श्री सिंहक निर्भीक-निरपक्ष आ सही विचारक लेल मैथिली भाषी हुनक आभारी रहत। की भारतीय नेता लोकनि कें एहि सं कनियों चेतना जगतनि ?

एहि अवसर पर जनकपुर नगर पंचायतक प्रधान पंच श्री दामोदर प्र० उपाध्याय तथा राम नगीना सिंहक उद्गार सेहो प्रशंसनीय छल। परिषद दिस सं श्री उदय कान्त ठाकुर द्वारा माङ कएल गेल जे राजकीय ज्ञान प्रतिष्ठान मैथिली पोथी पर पुरस्कार दिअय तथा रेडियो नेपाल सं मैथिली मे नियमित कार्यक्रम प्रसारित हो।

आइ सरहदक एइपार जखन कि विद्यापति स्मृति पर्वक रूप पूर्णरूपेण विकृत भ चुकलए आ अपन महत्व गमा चुकल-ए, ओइपारक लेल ई निश्चिते महत्वपूर्ण अइ आ एकर उपयोगिता छइ—जे उपरोक्त विवरण सं पता चलैए। आयोजक लोकनि एहि पुनीत अवसर पर कुनू चमेली बाइक मोजरा वा बिरजू महाराजक नाच नञि आयोजित केलनि, वरन मिथिला-मैथिलीक समस्या पर विचार-विमर्श लेल विचार गोष्ठी आयोजित केलनि, समाधान लेल शपथ लेलनि। उदय जी अपना के पूर्ण उत्सर्ग करवाक बात कहलनि। श्रोता-दर्शक लोकनि सेहो नाच-गान देखवा-सुनवा लेल नञि, अपन समस्या जनवा बुझवा लेल, ओकर निदानक बाट तकवा लेल जमा भेल छलाह। महेन्द्र मलंगियाक नाटक 'ओकरा आंगनक बारहमासा' क मंचन कें सेहो एही दृष्टिएं विचारल जेबाक चाही।

आवश्यक नञि, विश्वासो अइ जे आयोजक लोकनि [illegible] अपन पथ निर- [illegible] [illegible]। देसिल बयनाक शुभकामना।

—[illegible]

गीत

ओ लोकनि : ई लोकनि

बूढ़ पुरनियां सोचि रहल छे पुरने ठाठक पुरना बात
नवतुरिया लै नवका साळक नवका चूरा नवका भात॥

बुढ़वा के नञि चाह ने चिन्नी
बुढ़िया के नञि हुक्का पिन्नी
बुढ़िया के छै उखड़ल सांसी
कफ्फ जकड़ने सत्यानासी
बुढ़वा पोसल घीवक टारा, आब मलय खैनीपर हाथ॥

बुढ़वा अमलक सिकमी कोठा
बुढ़ियाक छानल चौकमी कोठी
बुढ़वाक मारल यों य्यों खोड़ा
बुढ़िया हाथक यों-य्यों रोटी
मोन पड़ै छै अपन जुआनीक चानोक राति आ सोनमा प्रात॥

ओ जमुबोनीक जामुन कारी
ओहेन जहाजी फांक सुपारी
कतऽ विलायल ननसुख साड़ी
डंड़कस - हंसुली भारी - भारी
बुढ़ियाक गाओल कोबर सुनि-सुनि, के घर जकर ने सिहरै गात॥

नवतुरिया ले गम-गम चूरा
छञ्जर दप-दप नवका गूर
छल्हिगर भितगर दही दहीपर
नोन मिरिच आ ळळका मूर
ले नवतुरिया तोरहिं परसल, ई पारस ई पुरनीक पाव॥

नवतुरिया लै खिमिट पिटाओल
महल-महल पर महल जोड़ाओल
भारत मे जलखइ नवतुरिया
लंदन मे भोजन बनबाओल
सांझक सैर करू चन्ना पर, मंगल पर जा खाउ बसात॥

चल चल चल चल, चल नवतुरिया
चल नवतुरिया चढ़ै पहाड़
चौकठि स पग करै बहार
पवन चीरि क आगि फारि क
गगन भेद-कर सागर पार
चल सुठाम मे……ठाम-ठाम मे
चल सुठाम मे शोणित द क, हासिल क ले अपन जिरात॥

—श्री सरस

यातायातक समस्या

६ दिसम्बरक प्रदर्शन

मिथिलांचलक यातायातक समस्या पर लिखेत हम स्पष्ट कहने रही (देसकोस, जुलाइ १९८१) जे एकर स्थिति कुनू साम्राज्यवादी देशक उपनिवेश सं नीक नहि छेक। हम इहो लिखि चुकल छी आ से पूर्णतः सत्य अछि, जे आजुक युग मे कुनू क्षेत्रक आर्थिक विकास बहुत दूर धरि यातायातक सुविधा पर निर्भर करेछ। कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि निमित्त हमरा लोकनि समय समय पर सरकारक समक्ष अपन असुविधा के रखेत ओकर समाधानक माङ करेत रहल छी, किन्तु बहिरी कहेत सन भारत सरकार आ तकर पोआ बिहार सरकार कहियो कान नहि पटपटोओलक। समस्या जतेक तते पड़ल अछि। धैर्यक सेहो एकटा सीमा होइत छेक आ तकर अतिक्रमण भेने लोक दोसर बाट पकड़बा लेल बाध्य भ जाइए। ६ दिसम्बर १९८१ क घटना एकरे ज्वलंत प्रमाण थिक।

विगत ६ दिसम्बर कें बिहार अवामी पंचायतक नेतृत्व मे मिथिलांचलक हजारो लोक हावड़ा टीशन पर जमा भेल छल। 'गाड़ीक चक्का जाम करू'—एकरा लोकनिक नारा छलेक आ नाङ छलेक—हावड़ा तथा सियालदह सं एक-एक गोट एक्सप्रेस गाड़ी मुजफ्फरपुर क लेल देल जाय (२) मिथिला आ नार्थ बिहार मुजफ्फरपुर सं आगा नहि जाय, (३) हावड़ा मुजफ्फरपुरक एगो सुपर एक्सप्रेस गाड़ी देल जाय, लखीसराय सं मुजफ्फरपुर धरि दोहरी लाइन हो तथा समस्तीपुर दरिभंगा बड़ी लाइनक शिघ्र निर्माण हो। प्रदर्शनकारी सभ कें पुलिस भीतर नहि जाय देलके तें गाड़ीक चक्का जाम त नहीं भेल परञ्च प्रदर्शनकारी सभ भाषण नाराबाजी आरम्भ केलथि। ओना किछु व्यक्ति प्लाट फारम दिस बढ़बाक प्रयास अवस्से केलनि फलतः पुलिसक लाठी चार्ज भेलैक आ गोर्ट पचासे लोक आहत भेल। थोड़ेक कालक हेतु भीड़ अवस्से छिड़िया गेलैक परंच नूर अहमदक सफल नेतृत्वक कारणे ओ सभ फेर जमा भेल। आहत लोकनिक प्राथमिक चिकित्सा कराओल गेल, मनेजर कें माङ पत्र देल गेल आ एमहर नाराबाजी चलेत रहल। एरेस्ट भेल सहकर्मी के नूर अहमद अपना जमानत पर मुक्त करबओलनि।

लाठीचार्य मे गोपीकान्त झा के माथ फुटि गेलनि, राघवेन्द्र झा, अब्दुल हसन आ कमलेश झा के सेहो बड़ बेसी मारि लागलनि। एकर अतिरिक्त अब्दुल सकुर, मो० कयुम, बनारसी प्रसाद, मो० अख्तर, हर्षनाथ झा महेन्द्र ठाकुर आदि पचासो व्यक्ति घायल भेलाह। से जेहो परञ्च प्रदर्शन सफल रहल आ तकर सर्वाधिक श्रेय छलनि नूर अहमद के आ तकर बाद अब्दुल शकुर आ अब्दुल हसन कें। जुलूस मे बिहार अवामी पंचायतक अतिरिक्त और दू गोट फेस्टन देखल गेल छल—एस० एस० पी० ओ मिथिला संघर्ष समितिक।

एहि घटनाक बाद १४ ता० के बिहार भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर बंगालक राज्यपाल आ रेल्वे रिफॉर्म कमिटीक चेयरमैन श्री बी० डी० पाण्डे सं भेट केलनि आ हवड़ा तथा सियालदह सं एक आर गाड़ो देबाक माङ केलनि। ओ इहो कहलथिन जे गत बीस वर्ख मे हवड़ा टीशन आ उत्तर बिहार तथा उत्तरी उत्तर प्रदेशक बीच चलेवला गाड़ीक संख्या मे बढ़ोत्तरी नहि कएल गेलए। कर्पूरी जी के विलम्बो सं सही, विवेक भेलनि ताइ लेल धन्यवाद देल जा सकेछ। ओना सत्य त इएह अइ जे तीन वर्ख ओहो लोकनि सत्ता मे छलाह तखन किछु ने क सकलाह। एखनो दिल्ली दरबार मे हुनको दलक लोक अइ, परञ्च सभ चुप्पी सधने अइ। जं कर्पूरी जी एकरा समस्या मानेछथि त तकर समापनक निमित्त किएक ने पार्टीए स्तर पर संघर्ष करेत छथि? गाड़ी हावड़ा टीशन पर नहि समस्तीपुर मे रोकबाक प्रयोजन छेक।

ओना त हम एहि सं पूर्वो लिखि चुकल छी जे एहिठाम सं जे लोक नार्थ बिहार आ मिथिला एक्सप्रेस मे यातायात करेए तकर स्थिति आलूक बस्ता सं नीक नहि रहैत छेक आ तें रेल मंत्री के कएक बेर लिखलो गेलनि। परञ्च, जहाँधरि आन्दोलनक प्रश्न छेक ई आन्दोलन एहि ठाम नहि समस्तोपुर-मुजफ्फरपुर मे हेबाक चाही जे ओहठाम सं गाड़ी आगू नहि जाय। जं लाइनक विस्तार कएल गेले त गाड़ीक संख्या मे वृद्धि अवस्से हेबाक चाही। आन्दोलन मात्र हावड़ा मुजफ्फरपुरक गाड़ी बढेबा लेल नहि मिथिलांचल सं भारतक सभ प्रधान शहर मे जाय आबय वला गाड़ीक संख्या बढेबाक लेल आन्दोलन हेबाक चाही। आन्दोलन हेबाक चाही समस्तोपुर-जयनगर (दड़िभंगा नहीं) बड़ी लाइन निर्माणक निमित्त। आन्दोलन हेबाक चाही मिथिलांचल मे नव रेल पथ निर्माणक निमित्त आ लोकल गाड़ीक संख्या बढ़ेबाक निमित्त। हमरा लोकनि जनेत छी जे जतेक समय हवड़ा सं समस्तीपुर जाइ मे लगेछ ततबे समस्तीपुर सं जयनगर वा झंझारपुर जाय मे लागि जाइछ' आ जकर एक मात्र कारण गाड़ीक अभाव छेक। जयनगर सं झंझारपुर जेबा मे भरिदिन समय लगेत छेक। आन्दोलन चाही मिथिलांचल मे कलकारखानाक स्थापना आ विकासक लेल जे लोक कें रोजी-रोटी लेल रने बने छिछिए नहि पड़ेक। ई गप्पत निर्विवाद अइ जे आब कलकत्ता-पटना मिथिलावासीक लेल नहि रहलेक। श्रेणीय भावना आ राजनीति जाइरूप मे बढ़ि रहल छेक—बहरिया के नोकरी नहि होइत छेक। तें आन्दोलन उपरोक्त विभिन्न समस्याक समाधानक निमित्त हेबाक चाही। दोसर शब्द मे मिथिलांचलक सर्वांगिण विकासक निमित्त हेबाक चाही।

हमरा लोकनि जखन कखनो मैथिलो आन्दोलनक बात करेत छी त तकर अर्थ इएह रहैत अइ मिथिलाक सर्वांगिण विकासक हेत आन्दोलन। आ तें मैथिलीक न्यायोचित अधिकार प्राप्तिक ओकर विकासक बात पहिने आबि जाइए। भाषा मूल वस्तु थिक। ई जातीय चेतनाक उत्स थिक, जातीय एकताक आधार थिक। जातीय चेतना आ एकताक अभाव मे कुनू आन्दोलनक कल्पनो ने कएल जा सकेछ, सफलताक बात दूर रहओ।

एहिठाम 'हेबाक चाही' वला बात पर बहुतो कें आपत्ति भ सकेत छनि किन्तु हम जानिये-बूझि कें एकर प्रयोग कएलए। से एही दुआरे जे आन्दोलन नोकरियाहा पुत नहि क सकेए-ई काज राजनीतिक दलक, ओकर नेता लोकनिक छेक। राजनैतिक दलक विभिन्न शाखा विभिन्न समस्याक समाधानार्थ प्रदर्शन, जुलूस हड़ताल क सकेए—करेक चाहिऐक। तखन समस्याक समाधान संभव। अन्यथा कलकत्ताक लोक अपन सुविधार्थ हावड़ा मे आ दिल्लीक प्रवासी मैथिल दिल्ली मे भनहि गाड़ी रोकि लेथि—भ सकेछ हुनक माङ थोड़-बहुत पूराओ भ जाइन-परञ्च चारि कोटि मैथिलक समस्याक समाधान एहि तरहें किन्तहुं नहि भ सकेछ।

रिपोर्ट—रामाधार मिश्र

लोककथा

ठठपाल

एक गाम मे एगो गरीब लोक रहथि। ओ जेहने देखबा-सुनना मे सुन्नर, तेहने मेधावी आ तेहने पढ़बा-लिखबा मे चन्सगर। नाम रहनि ठठपाल।

ठठपाल बहुत दिन धरि परदेस मे रहि पढ़लनि। ओ बड़का विद्वान भ गेलाह। चारूभर हुनक विद्या बुद्धिक चर्चा होमय लागल। पाइयो-कौड़ीक नीक आमदनी होमय लगलनि। तखन हिनका अपन गाम, गामक माटि-पानिक सोह भेलनि आ ओ गाम चलि एलाह।

गाम पहुंचला पर ठठपालक खूब स्वागत भेलनि। सर-समाज मे कुनू काज-उदम होइ त हिनका अरवधि के बजाओल जाइन आ विचार पुछल जाइन। परञ्च सभ होइतहुं कखनो-काल हिनका मन मे एकटा बातक बड़ दुख होइन। से बात ई जे लोक हिनका ठठपालहिक नामे बजबनि। ई सोचलनि जे एते पढ़ला-लिखलाक बादो हम ठठपाले रहि गेलहुं। एहनो कतो नाम भेलै-ए? मुदा उपाइए की? गामक लोक जन्महि सं जाइ नामे जने-ए तकरा बदल लो केना जाय? हं, एगो उपाय छेक जं गाम छोड़ि दूर-देश चलि जाइ। ओतय कुनू नोक नाम राखि लेब। आ इएह सोचि ओ एक दिन अपन गाम छोड़ि विदा भ गेलाह।

जाइत-जाइत जखन ओ बड़ी दूर गेलाह त थाकिसन गेलाह आ तें एगो गाछक जड़ि मे बेसि सुस्ताय लगलाह। ओही गाछतर आर एगो लोक बेसल छल। ओकर पहिरन रत्ती-रत्ती भेल छलेक आ बगे बानि सं एकदम भीखारि बुझा रहल छल। ठठपाल के ओकरा पर दया आबि गेलनि। किछु जिज्ञासाक क्रम मे नाम पुछलथिन त ओ कहलकनि—धनपति। हिनका मनहिमन बड़ हंसी लगलनि मुदा हंसने धनपति अन्यथा ने सोचय से विचारि ओकरा जाति उठि विदा भ गेलाह। कने दूर आगा एगो टोल पर गेलाह त पियास लागलनि। सामने मे एगो लोक पर नजरि पड़लनि, जे वो पोआर ढोइत रहए। लग जा के एक लोटा पाइन देबाक आग्रह केलथिन। ओ भद्र लोक अपन दरबजा पर पोआर राखि लोटा माङि एक लोटा टटका पानि हिनका देलकनि। पाइन पीबि ई तृप्त भेलाह त ओकर नाम पुछलथिन। ओ कहलकनि—अशर्फी। ठठपाल आगा बढलाह। गाम सं बहाराएले रहथि कि एगो अर्थी पर नजरि पड़लनि। आगा-आगा अर्थी आ तकर पाछा, कटिहारीक विशाल पांती। मने-मने सोचलनि—निर्विवाद कुनू पैघ लोक मुइल-ए, ने त एते कटिहारी कतये पाबी। मृत लोकक परिचय जनबाक बड़ इच्छा भेलनि। भन्त मे एक आदमी सं पुछिए देलथिन—कुन महाजन संसार त्याग केलनिहे? 'अमर साहु' ओ व्यक्ति जबाब देलकनि।

ठठपालक पएर ठमकि गेलनि। हिनका मन मे जेना बड़का बिहाड़ि उठि गेल होइन। अमर साहु मरि गेलाह। अशर्फी पोआर ढोइ छलाह आ धनपतिक देह पर गुदरीयो नदारद। इएह त निक नामक महत्व। आ तकरे फेर मे पड़ि हम अपन गाम-घर सर-समाज, अपन परार तेजि पड़ाएल जाइत छी। हमराहन मुर्ख के

हड़ताल आ तकर मुकाबला : बिहारी स्टाइल

बिहार सरकारक छ लाख नन गेजेटेड कर्मचारी आ स्कूल शिक्षक गत ११ दिसम्बर सं हड़ताल पर छथि। एहि हड़तालक चलतें जे केहन भयाबह स्थिति छेक से ओहीठामक लोक बनेत अइ। शहर मे त पीबाक पानियो भेटनाइ पराभव भ गेल छेक। बिजुलीक तेहने स्थिति छेक जखन कि सामान्यो स्थिति मे बिजुलीक जे ओइठाम स्थिति रहैत छेक से अतुलनीए। गाम घरक त चर्चे ने हो। प्रति बर्ख किछु गाम मे बिजुली खम्हा गाड़ि-तार लगा देल जाइए—अखबार मे प्रचारित क देल जाइए जे एते गामक बिजुलीकरण भ गेल। ई भिन्न बात जे मास मे दुइयो दिन 'लाइन' नहि रहैत छेक। अस्पताल सभक स्थिति सभ सं सोचनीय छेक—पानि, बती ८:१ लोकक अभावें। आरेशन शय्या पर पड़ल रोगी कुहरि रहल आइ—देखनिहारक पता नहि।

विचारणीय थिक जे एहन स्थितिक लेल जिम्मेवार के अइ? हड़ताली कर्मचारी, ने सरकार? उपर-उपर देखने त बुझबे करत जे दोखी सरकारी कर्मचारी अइ परञ्च बिखिया कें देखला-सोचलाक बादे असली बात फरिछा सकेछ—असली जिम्मेवार के चीन्हल जा सकेछ।

हमर विश्वास अइ जे कर्मचारी लोकनि सेहन्ते हड़ताल नहि करेत छथि। हड़ताल फेसन किन्नहु नहि थिक। जखन हुनका लग अपन दावी अदा करबाक कुनू दोसर बाट नहि रहैत छनि तखने ओ हड़ताल पर जाइ छथि। दोसर शब्द मे कहने ओ जखन हड़तालक लेल बाध्य कएल जाइत थथि—तखने हड़ताल करेत छथि। आब देखबाक ई अइ कि सरिपहुँ एहन स्थिति आबि तुलायल छलेक?

हड़ताली कर्मचारी लोकनिक ओना त छोट-पेघ कएकटा माङ छनि परञ्च जे प्रधान माङ छनि आ जाइपर कर्मचारी आ सरकार मे बीच चलि रहल-ए ओ थिक चारिम तनखा संशोधन समिति (4th Pay Revision Committee) क सलाह के १९७८ फरवरी सं लागू कएल जाय। कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि तरहक समितिक गठन सरकारे करेत रहल-ए आ तें ओकर नेतिक दायित्व भ जाइ छइ समितिक सुझाव के माननाइ। विगत अप्रील मे जखन कि समिति अपने रिपोट जमा केने छल तखन संसदक गर्मी—बेसक मे स्वयं मुख्य मन्त्री डा० जगन्नाथ मिश्र जाजल छलाइ जे सरकार समितिक सुझाव के मानेए आ तकरा कार्य रूप देत। ओ आरो कहने रहथिन जे एहि लेल अर्थ कुनू समस्या नहि छेक। परञ्च कनिञो दिनक बाद सितम्बर मे केबिनेट निर्णय लिलक जे एकरा अक्टूबर सं कार्य रूप देल जायत आ फेर नवम्बर मे तीन आदमीक समिति बनल—एकर आर्थिक स्थितिक अध्ययन करेक। आइ मुख्य मंत्री कहि रहल छथि समितिक सुझाव लागू केला सं २८० करोड़ क आर्थिक चाप सरकार पर पड़तेक आ बिहार जे भारतक गरीबतम प्रान्त मे सं अछि—एकरा वहन नहि क सकेछ।

एहि तरहे स्पष्ट बुझना जाइए जे सरकार आइधरि एहि सम्बन्ध मे कुनू निर्णय नहि ल सकलए। संगहि दिन-पर-दिन गिरगिट सन रंग बदलेत रहल-ए आ एहना स्थिति मे कर्मचारी लोकनिक लेल हड़ताल छोड़ि दोसर बाट नहि रहि गेल छलेक। जहांधरि बिहारक गरीब हेबाक प्रश्न अइ, मुख्य मंत्री महोदयक बुद्धि पर लोक हंसिटा सकेए। बिहार भारतक सभ सं धनी प्रान्त अइ, जकर प्राकृतिक सम्पदा कुनू प्रान्तक हेतु इर्ष्याक विषय छेक। जं गरीब अइ त एहि खिचड़ी प्रान्तक लोक—बिहार! आ तकरा गरीब बना कए राखेक उद्देशे सं एहि खिचड़ी प्रान्तक निर्माण भेल छल। के नहि जनेए जे एहिठामक सम्पति सं बाहर कलकरखाना चलेत छेक आ लोक जीविका अर्जन करेए। एहिठामक लोक अनका दुआरिपर चाकरीक भीख मङेत फीरेए। दोसर बात—जं सरकार के अर्थ संकटक चिन्ता सत्ते छेक त किएक ने मंत्री लोकनिक खर्च मे कटौती कएल जाइए? किएक ने ओ लोकनि अपन जीवन पद्धति बदले छथि; योग-विलास कें कमबेत छथि? एगो साधारणो मंत्रीक जीवन पद्धति अतीतक राजा महाराजा सं घाटि अइ की?

तें स्पष्टतः कहल जा सकेछ जे एहि स्थितिक लेल पूर्णतः सरकारे जिम्मेवार अइ। ई मानितो जे खास के बिहारक सरकारी कर्मचारीक जे चरित्र छेक से अति निन्दनीय रहलेए आ तें ओकरा प्रति लोकक सहानुभूति मिसियो भरि नहि छेक।

एखनो जखन कि स्थिति खतरनाक रूप ल चुकल-ए, सरकार तसफीया करबा लेल उत्सुक नहि बुझना जाइछ। ओ समझौताक गप्प त करेत अइ परञ्च दोसर दिस लाठी-गोलीक बल पर हड़ताल के दबेबाक पूर्ण प्रयास मे लागल अइ आ तकरे प्रमाण थिक जे समस्त प्रान्त मे सीमा सुरक्षा दल आ केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस कें भरि देल गेल अइ। एहि सं स्थिति आर विस्फोटक भ चुकलए कारण कुनू आंदोलनक प्रतिरोध सं शक्ति भेटेत छेक। दोसर दिस सरकार समस्त अस्थायी कर्मचारीक चाकरी समाप्त करबाक आ बहुलांश स्थायी कर्मचारीक चाकरी स्थगनक आदेश द चुकल अइ। १७ दिसम्बर के जे मुख्य मंत्रीक बासा पर बेसार भेल आ पांच आदमीक समिति एहि स्थितिक निपटारा लेल गठित भेल-ए, ताइ मे एकोटा मंत्री नहि छथि 'ब्यूरोक्रट' छथि, जनिकर सलाह सं ई स्थिति जन्म लेलकए। एहि सं इहो पता चलेछ जे मुख्य मंत्री के अपन सहयोगी लोकनि पर भरोसा नहि छनि, विश्वास नहि छनि आ ओ पूर्णतः 'ब्युरोकेट' पर निर्भर छथि। एहना स्थिति मे समस्याक शिघ्र समाधानक संभावना त नहिए छेक देखा चाही एहि प्रतिष्ठाक लड़ाइ मे उंट कून मुंहे बेसए।

—अग्रदूत

(दस दिनक बाद उपरोक्त हड़ताल समाप्त भ गेल। समझौताक अनुसार चारिम PRC क सलाह के विगत अप्रील सं लागू कएल जायत। मुख्य मन्त्रीक अनुसार बिहार सरकार कें सलाना सत्तरि कोटि टाका एहि मे लगतेक आ तीस कोटि लगतेक एकस ग्रेसिया भुगतान मे जे पांच सय प्रति कर्मचारी कें देल जेतेक।

—सम्पादक)

इइत? हम व्यर्थक विद्वान हेबाक दंभ पोसने छी.....। एहि तरहे सोचेत विचारेत ओ गाम घुरि एलाह।

परात भेने संगी-साथी सभ, जकरा सभ कें हिनक गाम छोड़बाक विषय बुझल रहैक भेंट होइतहि घुरि एबाक कारण पुछनि। ठठपाल सभ कें एके जबाब देथिन। ओ जबाब छलनि—धनपति देह पर लताफता नहि असर्फी ढोथि पोआर अमर साहु कें मरिते देखल भनहि नाम ठठपाल।

प्रस्तुति—अग्रदूत

चारि गोट मिनी कविता

(१) सूर्योदय

● माइक आंचरतर सं
बहार कक मुंह अपन
बिहुंसि देलक
शिशु अबोध।

(२ राति

● दुरगमनियां कनियां बनि
बन्न सांझ महफा मे
बेटी प्रत्येक दिन
चलि जाइछ
देने बिछोह व्यथा
पसारि मन पिरथी पर
कारी धन अन्धकार।

(३ चन्द्रमा

● परदेशी पाहुन केर
जोहैत होथि बाट जेना
खिड़की लग ठाढ़ि
कुनू राधिका।

(४ बर्खान्त

● इहो बर्ख
ओहिना बीति गेल
वुढ़ अथबल सूर्य
बस गैरेजक
पछुआर में डूबि गेल।

●

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन—

१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाउ।

२—'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना कें अग्राधिकार देल जायत।

३—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाउ।

४—'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

लाल बुझक्कड़क चिट्ठी

श्रीमानजी, संपादक जी, महोदयजी।
जय मैथिली।

आगा हाल-सुरति ई जे पूर्ण तामसक संग लिखय पड़ि रहल-ए जे हमर मना केलाक उपरान्तो अहां हमर पत्र कें छापि देल आ मात्रा छापिएटा नहि देल-तकर प्रति हमरो नामे सरकारी डाक सं पठा देल। बाबा वैद्यनाथ अहां के ततबोपर संतोष दितथि। किन्तु ताइपर सं अहां चिट्ठी लिखे छी जे एकरा स्तम्भक रूप मे देबाक नेयार अइ आ तें हम नियमित रूपें एहि तरहक पत्र लिखि पठाओल करी। एकरे ने कहैत छइ 'घाव पर नून छिट-नाइ।' चिट्ठी पढ़ि मन त भेल जे अहांक मूंह नोचि ली परञ्च अहां त छी अखिया कोसपर आ तें अपने केश नोचि संतोष करय पड़ल।

हेयो सम्पादक प्रवर! मिथिला मे एगो कहबी छइ—बांझ की जानय प्रसव के पीड़ा? से तकरे परि। अहां त परदेश मे छी। दोसर राज, दोसर राजा। तें अपने किजानय गेलिऐ जें एहिठाम लोक केना खेपैए। अहां सभ सोचैत होएब जे मिथिला मे रहनिहार सभ भरिसक मुइल-मुर्दा थिक—जे मैथिलीपर ओहन पैघ बज्रपात होइतहुं करोट नहि फेरलक। किन्तु असल्यित से नहि छेक। असल मे कचोट आ तामस ककरा ने भेले? किछु सरकारी कौरा पर पालित लोक कें छोड़ि सभ भीतरे-भीतर महुरायल अइ। परञ्च डर होइ छइ जान-माल्क, जीविकाक। जं अहां के विश्वास नहि हो त हमर हकार रहल, अपने श्रीमान् मुखमंत्रीएजीक क्षेत्र मे आबि जाउ। स्पष्ट भ जायत जे किछु धनी-मानी लोक, मुखिया-सरपंच तथा उनरा फीतावला अफसर छोड़ि सभ तामसे विकल भेल अइ। परञ्च जहां कनियो फेओ चूं केलक कि उपरोक्त लोकक गिद्ध-दृष्टि ओकरापर पड़ि जाइत छेक। सरकारी वेसरकारी गुंडा ओकरा पाछा लागि जाइत छेक आ नाकें सूते पानि पिया देत छेक। नहि किछु भेलें त थने-पुलिस करा देलक आ दू-चारि केस झुझा देलक। आ जेना कि कहबी छइ किने जे 'चोर न्याये नष्ट' से विरोधी अन्याये नष्ट भ जाइए। सर्वत्र आतंकक मेघ पसरल छइ।

ओना अहां कहि सकैछी जे एक आदमी के ने तंग कएल जाइ छइ, जं लोक संगठित भय आवाज उठाबय तखन। त हमर उत्तर रहत—श्रीमान बुधियार जी महराज, जते पोन पर हाथ चले छइ तते ढोलपर चले तखन ने? जानथि दिनकर दिनानाथ जे मिसियोभरि फूसि कहैत होइ, समाज ने काज आबय एहिठाम वर्णवादक तेहन ने बिग्ख छिड़िया देल गेल छइ—जे लोक कें संगठित केनाइ सं सहज भरिसक डूमरीक फूल अननाइ होएत। एहिठाम त तथाकथित पैघ आ छोट वर्ण मे भेड़ा-महिसाक कान्हि चलैत छेक आ दुनू वर्णक मुंह पुरुखसभ सकड़ौरी सुड़-केए। ने त आइ मिथिला-मैथिलीक कतौ ई हालत रहिते? सभसं अचरजक बात त ई जे जे सर्वहरा वर्ग मैथिली कें अपन हिरदेक मणि आ कंठहार बना कें रखलक—से आइ अपना कें मैथिल कहितो ने अइ। मैथिल माने भेल बाभन! आ बाभन सभ त बुझले अइ—कनहा कुकूर माँड़े तिरपीत। बाभने ने मुख्यमंत्री छइ। ओना खुशीक बात जे बाभनो मे मध्य-वर्गीय आ निम्नवर्गीय समुदाय मे चेतना एलैए परञ्च बोलबाला सभठाम जगन्नाथी मैथिलेक छइ। अहां के त बुझले हैत जे एहि अंचल मे नोट अथवा सोंट सं भोट लेल जाइ छइ। आ तें हमरा क्विन्टल भरि विश्वास अइ जे अगिलो चुनाव मे अहांक मिथिलाक मिर्जाफर विपुल मत सं विजयी हेताह आ अहांक सपना-सपने रहि जायत।

तें कहबाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे रामजीक इच्छा सं आ गुरु गंगाक परताप सं—विद्रोहक आगि नीक जकां पजरल छेक—मुदा उक लेसनाहर त चाही। से जं साहस हो त हमर नोत-हकार रहल। आ नहि हो त सभसं बुरिबक दीनानाथ—माने लालि बुझक्कर कें नहि बुझियनि। हमर पत्र ने छापी आ ने कुनू तरहक सम्पर्क राखी—से अनुरोध। ओना त हम पहिनहि सं बदनाम छी। कहलके किने जे नामी चोर महदेवा—से तकरे परि। जानथि बाबा वैद्यनाथ जहिया सं अहां हमर पत्रा छापि देलए तहिया सं हम त्रिकाल भगवानक पूजा छोड़ि मस्तानक पूजा मे लागल छी जे कोनहुना एहि खेप बाँचि जाइ। गत अन्हरियाक एकादशी सं चमचा सहस्त्र नामक रोजना पाठ सेहो आरंभ क देने छी। एही क्रम मे जगन्नाथ चालीसा लिखनाइ जे आरंभ कएल से त आब लगचिएल सन अइ। विश्वास त अछिए जे जं कहियो आक्रमण भेल त ई कृतिसभ हमर कवचक काज करत। आगा त उगिलहे जानथि।

अपने सं फेर हमर आपाद-मस्तक प्रार्थना जे एइ पत्र कें जुनि छापि दी। दोहाइ ओइपारक छी।

पत्रोत्तर नहि पेबाक प्रबल आकांक्षी

श्रीमान लाल बुझक्कर
बुझन्तुक ग्राम बासी

★

एकटा आर गीत

देश-दशा

की भेलै किए भेलै, भैया ई केना भेलै
तीनू भुवनक परसिद्ध मिथिला, आइ किए एना भेलै
आइ किए एना भेलै, आइ किए एना भेलै
धन-बुद्धि-विद्या किछु ने रहलै, सब कत्त' हेरा गेलै

जकर माटि सं जनमलि सीता, अहिलाक शाप मेटा गेलै
देह अछैत विदेह कहेलकै, से परताप कहां गेलै
से परताप कहां गेलै, से परताप कहां गेलै
सुग्गो शास्त्रक गप्प करै छल, से परताप कहां गेलै

ओ शिवसिंह सलहेस कहां छइ, विद्यापति कहां गेलै
नढ़ेया कुकूर तीन कोटि छइ, सिंहक नाम मेटा गेलै
सिंहक नाम मेटा गेलै, सिंहक नाम मेटा गेलै
ठोहि पारि क कनै मैथिली, की छलै आ की भेलै

—राम लोचन ठाकुर

१. मिथिलाक छी : मैथिल छी॥
२. मैथिली बचाउ : हिन्दी हटाउ॥
३. मैथिली बाजू, पढ़ू, लिखू॥
४. मिथिला मे यातायातक सुव्यवस्था लेल,
रौदी-दाही सं मुक्ति लेल, कल-कारखानक
विकास लेल—जनमत तैयार करू।
मैथिली आन्दोलन कें सफल बनाउ॥
५. मिथिला-मैथिल विरोधी जयचंद-मिरजाफर के चीन्हि क राखू।

निवेदक
मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता

आइ भिक्षापात्र नाञ, चाहीँ महाकालीक खप्पर

बन्धुगण !

युगों सं हमरा लोकनि विद्यापति स्मृति पर्व मनबेत आ प्रस्ताव पास करेत आबि रहल छी परञ्च मिथिला-मैथिलीक समस्या जते छल तते पड़ल अछि। कहबाक प्रयोजन नहि, जे प्रस्ताव-पारित केनाइ तथा मंच सं बड़का-बड़का भाषण देनाइ, संगहि नेता लोकनिक आश्वासन देनाइ कोनो अर्थ नहि रखेत अछि। इ कटु सत्य हमरा लोकनि भरिसक एखनोधरि नहि बुझलौंहें आ जाधरि नहि बुझब ताधरि समस्याक समाधान असंभव। तें, कोनो विभूतिक स्मृति-पर्व मनओनाइ बेजाय नहि, परञ्च प्रस्ताव पास केनाइक बदला अधिकार प्राप्तिक लेल संघर्षक शपथ लेब परमावश्यक। मोन राखू जे हाथ पसारने भिख भनहि भेटि जाय मुदा अधिकार नहि। अधिकार छिनय पड़ेत छेक आ ताइ लेल त्याग, बलिदान आवश्यक। जे जाति मरनाइ नहि जनेए ओ ने त जीवाक महत्व बुझेए अथवा ने जीवाक अधिकारे रखेए। आ अपन भाषा-भूमिक उद्धार हेतु जे मरेत अछि, तकरा जं मरबे मानि लेल जाइ त अमरता भेलेक की ?

निज भू-भाषा हित मरय,
मरय ने अमर बनेत अछि।
तकरे गाथा विश्व ई,
गाओत, सदा गवेत अछि॥

मैथिली मुक्ति मोर्चा एही सिद्धान्त मे विश्वास करेछ आ तें संघर्ष पथ निर्माण मे लागल अछि। परञ्च कोनो जातीय संघर्ष, जातीय मुक्ति-संघर्ष-जन समर्थन आ जनवलक सहयोग सं सफल भ सकेछ। उदाहरणक लेल आसामक आन्दोलन कें ले जा सकेछ—जकर आरंभ निश्चिते छात्र वर्ग द्वारा भेल छलेक। परञ्च जं ओकरा विपुल जनसमर्थन नहि भेटितेक, ओहि संघर्ष पथ पर आवाल-वृद्ध-वनिता एक संग नहि उतरि अबेत त कि ओ एतेक प्रभावशाली भ पबेत ? तें हमरा लोकनि समस्त मिथिलावासी सं आ विशेष कें छात्र युवा वर्ग सं अनुरोध करेत छी जे ओ लोकनि एहि निमित अपना कें, अपन समाज कें जागरूक करथि, तेयार राखथि। आन्दोलन दिनतका कें नहि होइत छेक। आन्दोलनक आगि सुनगि रहल-ए ओ कखनो दावानलक रूप ल सकेछ।

—जय मैथिली

निवेदक :
रामाधार मिश्र
वास्ते—मैथिली मुक्तिमोर्चा,
कलकत्ता

चिट्ठी पुर्जी

'देसिल बयना'क अंक-२ प्राप्त भेल। आभारी छी। मुक्तिमोर्चाक ई प्रयास अति श्लाघनीय—हमर हार्दिक शुभेच्छा स्वीकारी। यथा-योग्य सेवा लिखी।

—धनचक्र

'देसिल बयना'क तीनटा अंक देखबाक-पढ़बाक अवसर प्राप्त भेल। मैथिली मे जाहि तरहक पत्रक आवश्यकता छलेक—तकर ई पूर्ति करेत अछि। ओना तऽ एकर सभ रचना उपरा-उपरी रहैत छेक परञ्च 'गाम सं दूर: मिथिलाक मजदूर' हमरा विचार सं सब सं महत्वपूर्ण स्तम्भ थिक। जं अन्य रचना कें छोड़ियो देल जाइ तऽ एकमात्र एही स्तम्भक कारणे देसिल बयना अमर रहत। 'कह लोचन कविराय' (यद्यपि दोसर अंकक पूर्ण प्रभावित नहि कऽ सकल) बाल-गीत तथा पहिल आ दोसर अंक मे प्रकाशित श्री रामलोचन ठाकुर जीक कविता तथा तेसर अंकक 'वोनिहारक गीत', दोसर अंकक 'संस्कृतिक सारापर सत्ताक बबूर' तथा 'बुढ़ारी-भत्ता बनाम सत्ताक राजनीति' एवं तेसर अंकक समस्त रचना एकर उपलब्धि थिक। श्री कुणालक कथा 'डकेत' यद्यपि पत्रिका मे बेसी जगह छेने अछि—तथापि प्रशंसनीय अछि। बहुत दिनक वाद एहन नीक आ सशक्त कथा पढ़बाक मौका भेटल। और अन्त मे एकर सम्पादक कें एहन समयोपयोगी सुन्दर-सशक्त सम्पादकीय लिखबाक हेतु अशेष धन्यवाद। ई पत्र चिरजीवी हो से हमर कामना। —राजेन्द्र कुमार सिंह

'देसिल बयना' प्राप्त भेल। विषय वस्तु देखि मन प्रफुल्लित भए गेल। ई एक आन्दोलनात्मक डेग थिक आ माइलस्टोन प्रमाणित भेल अछि। हमर सहयोग संग रहत।

—अनिल सुधा

पढ़ि अत्यधिक प्रसन्नता भेल। हम जाहि क्षेत्र मे छी ततए मैथिली भाषाक प्रति जनमानस मे कोनो भावना नहि। परन्तु 'देसिल बयना' ओ जागरण एहू क्षेत्र मे स्वल्प समय मे यथासाध्य कए देलक अछि।

—शम्भुनाथ झा

'देसिल बयना' दू खेप सं पढ़बाक मोका भेटि रहल अछि। आइ-काल्हि.... सेकड़ो पत्र-पत्रिका प्रकाशित भय रहल अछि। हमरा बुझने किछु कें छोड़ि बांकी सब बिना आदर्श कें सामने रखेत प्रकाशित भय रहल अछि। ओकर सबहक उद्येश्य छेक द्रव्यार्जन। द्रव्यार्जन लग आदर्श कतय भेटत ? तें 'देसिल बयना' सन-सन आदर्श पर आधारित पत्रिकाक प्रकाशन पर बल देमय पड़त।....हम प्रत्येक मिथिलांचलक बासी सं एहि पत्रक द्वारा अनुरोध करेत छियेन्ह जे ओ सब 'अपन डफली अपन राग' नहि अलापि एकरा सहयोग अवश्य देथ। सहयोग अनेक ढंगक होइत छेक—रूपया-पेसाक सहयोग, आदर्शोन्मुख करयवाला लेख लिखि और यदि ताहि मे समर्थ नहि छी तं कम स कम एक-एक प्रति प्रत्येक मैथिल केर हाथ थम्हा कें।

शुभकामनाक संग—
—मदन मोहन झा, अधिवक्ता,

बालगीत

क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलाबासी रे

सीता कानि कै छथि मिथिलाबासी रे
मायक बोल बचा ले मिथिलाबासी रे
जे सभदिन सभसं आगू छल
सेह बनल छथि मिथिला सिथिला
विद्या - बुद्धि - कला वा हो बल
चारि कोटि सुत के मां अवला
नवतुरिया उठ जागै मिथिलबासी रे
मायक लाज बचा ले मिथिलावासी रे
सभसं मधुर मैथिली भाषा
चारि कोटि मैथिल के आशा
मिथिलाक्षर सन लिपि पुरातन
करय उपेक्षा शासक रावण
उठ युवागण बनै राम अविनाशी रे
मैथिलीक मान बचा ले मिथिलाबासी रे
उभय भारती सीता लखिया
गौतम विद्यापतिक भूमि ई
जे कहियो सभठां पूजित छल
आइ छिए सभठां अवहेलित
आबहुं चेत, बनै जुनि सत्यानाशी रे
क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलाबासी रे

— सुभाष चन्द्र झा

विशेष सूचना

मिथिलाक सर्वांगिण विकासक हेतु अपेक्षित जनजागरण आ जनान्दोलन पर विचार-विमर्शकक सही मार्ग ताकबाक हेतु आगामी १० जनवरी कें इन्द्रभवन मैदान (दड़िभंगा) मे प्रातः ६ बजे सं सांझ ७ बजे धरि मिथिलाक विकास मे अभिरूचि राखयवला प्रत्येक संगठन आ राजनीतिक दलक एक दिवसीय प्रतिनिधि सम्मेलन, मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा आयोजित करत। एहि सम्मेलन मे भाग लेबाक हेतु मिथिलाक प्रत्येक प्रगतिशील बुद्धिजीवी आ श्रमजीवी कें सादर आमन्त्रण।

—धर्मेन्द्र कुमर
संयोजक, मि० ज० मोर्चा, दरभंगा

'देसिल बयना' चन्दाक दर :—

१ प्रति	५० पइसा
१ बर्खक	५) टाका
५ बर्खक	२०) टाका

पाइ पठेबाक पता—

श्री जनार्दन झा,
१७/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

कह लोचन कविराय

बारिक पटुआ तीत आ, हो बाजारक मीठ
कुहरि रहल तें मैथिली, डनियां टेरय गीत
डनियां टेरय गीत, नचैए पश्चिम गामक
चाम-दाम सं मोहि, पुत सभ मिथिला धामक
कह लोचन कविराय, कलंकक लेपल कारिख
मैथिल युवजन मानि मैथिली पटुआ बारिक॥

अरूणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, वृन्दावन बेशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अंक—५ फरवरी, १९८२ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

खगता मिथिलाक्षरक

लिपि आ भाषा मे उहह सम्बन्ध छेक जे देह आर मन मे। सुगठित स्वस्थ्य शरीर मात्र सुन्दर आ आकर्षके नहि होइत छेक अपितु प्रसन्न मन आ स्वस्थ्य-सही चिन्तनक आधार सेहो होइत छेक। तहिना सुन्दर-सुगठित लिपि सेहो कोनो भाषाक विकासक आधार होइत छेक। इहह कारण छेक जे लिपिक निर्माण मे विद्वान लोकनि के अकथ परीश्रम करय पड़ैत छनि आ एहि क्रम मे युगहु लागि जाइत छेक। इहह कारण छेक जे कोनो जोवित जाति अपन लिपि कें तेजि दोसर लिपि अपनेबाक लेल तैयार नहि होइत अछि।

लिपि जे हेतु भाषाक देह थिक तें ओकर पहिल पहिचान थिक। ई लिपिएक विशेषता छेक जे पहिले नजरि मे दर्शक कें अपन अस्तित्वक, अपन विशेष परिचितक मान करा दैत अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे ई परिचित गमा देने कोनो भाषाक भविष्य संदिग्ध भ जाइत छेक, ओकरा चारूकात संकटक मेघ सदिखन मड़राइत रहैत छेक।

उत्तर-पूर्वांचलीय नव्य-भारतोय भाषा सभ मे सभ सं प्राचीन आ समृद्ध भाषा होइतहु मैथिलीक स्थिति आइ सभ सं दयनीय आ सोचनीय छेक आ तकर जबर्दस्त कारण छेक मिथिलाक्षरक अवहेलना ओ देवनागरीक अभ्यर्थना। हिन्दीक कारा पर पालित तथा-कथित विद्वान लोकनि द्वारा यदा-कदा मैथिली के हिन्दीक बोली कहि देबाक दुस्साहसक आधार निश्चित रूपे ई लिपिए थिक। जाइ विद्यापति कें ल क हमरा लोकनि एतेक नचैत छी, जं हुनको मैनुस्क्रीप्ट देवनागरी मे प्राप्त भेल रहैत तं निश्चिते हुनका मैथिलीक कवि मान्य करोओनाइ ओतेक सहज नहि भ पबैत। ओना मिथिलाक्षर मे रहितहु प्राचीन मैथिली नाटक सभ कें हिन्दीक नाटकक रूप मे अबस्से लिखल गेलए परञ्च ताहू मे मैथिलीक पाइपर पालित सिंह-नाडड़ि वला मैथिले प्रोफेसरक षड़यंत्र छेक जे समस्त पोथीक सूची आ परिचय उपलब्ध करा देलथिन। आ से होइतहु मान्य नहिञो भ सकलैक।

थोड़ बहुत इएक कारण छेक जे बहुत दिन धरि विद्यापति बंगालक कवि मानल जाइत रहलाह। ओना ई मैथिलीक हिते मे रहलैक ने त कविपतिक प्रायः समस्त पदक संकलन-प्रकाशन जे कि मित्र-मजुमदार महोदय द्वयक प्रयासे भेल से अकर्मण्य मैथिल जाति सं किन्नहु संभव नहि भ पबैत। आइयो चर्यापद तथा मैथिलीक प्राचीन नाटक खास कें मल्लकालीन नाटक कें बंगाली लोकनि अपन पोथी मानत छथि आ ताइ पर बड़-बेसी काज भ रहल छेक।

स्पष्ट छेक जे मैथिलीक विकास मे सभ सं पेघ बाधक भेलए आ भ रहल देवनागरी लिपिक प्रचलन आ मिथिलाक्षरक तिरस्कार। एहि सं ई मात्र अपन विशेष परिचितिए टा नहि गमओलक-ए अपन जाति सं (पूर्वांचली भाषा-समूह सं) सेहो कटि गेलए। आ जाइ विजातीय भाषाक संग जुटल वा जोड़ि देल गेल-से सुरसा सन एकर बाट मे बेसल अवसर पबिते गीड़ि जेबाक ताक मे अछि। ई विजातीय भाषाक सामिप्य एकर स्वरूप के घूमिल त करबे केलके संगहि मिथिलाक संकृति तथा मैथिलक रूचि कें सेहो विकृत केलकेए आ ओकर जातीय चेतना एकता कें, जातीय संस्कार कें पूर्ण तरहे नष्ट क देलकंए।

तें आइ जं सरपहु हमरा लोकनि अपन जातिक, भाषा संस्कृतिक अस्तित्व रक्षा करय चाहैत छी, ओकर विकास चाहैत छी त ई अनिवार्य छेक जे अपन लिपिक रक्षा करी, ओकरा प्रयोग मे आनो। प्रश्न उठि सकैच जे एते दिनुका बाद पुनः मिथिलाक्षरक प्रयोग मे बाधा व्यवधान कि नहि हेतेक। उत्तर छेक—हेतेक। कोनो नीक काज मे हजार बाधा-व्यवधान अबैत छेक—परञ्च से स्थायी नहि, क्षणिक होइत छेक। एते दिन हमरा लोकनि पातर मे पथ विहीन बौआइत रहलौहें आ आब जखन घरक बाट भेटि गेलए त जतेक थाकल-ठेहिआएल किएक ने होइ—घरमुंहा चलबाक शक्ति-गति अप्रतिम होइत छेक। निश्चित समय सं पहिने हमरा लोकनि पहुंचि सकैत छी।

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

मैथिली आन्दोलन

मिथिलाक जन-आन्दोलनक सन्दर्भ मे

जीवैत रहबाक लेल मनुष्य कें ने मात्र प्राकृतिक प्रतिकूलताक विरुद्ध सतत् संघर्ष करऽ पड़ैत छेक अपितु ओकरा समाजक ओहि प्रतिक्रियाबादी शक्तिक विरुद्ध सेहो संघर्ष करऽ पड़ैत छेक जे अपन रजानेतिक एवं आर्थिक वर्चस्व बनोने रहबाक लेल वर्गीय एवं जातीय शोषण उत्पीड़नक बल-पर समाज कें जर्जर, कंगाल, मूक ओ बधिर बना, ओकर अग्रिम विकास कें 'सील' कऽ दैत छेक। वर्गभेद वला समाज मे वर्गीय शोगण-उत्पीड़न, जातीय वा राष्ट्रीय शोषण-उत्पीड़नक माध्यम सं अभिव्यक्ति पबैत छेक। मिथिलासन पिछड़ल क्षेत्रक जनता ने मात्र वर्गीय वरन् जातीय वा राष्ट्रीय शोषण-उत्यपीड़नक शिकार होइत रहल अछि। जतऽ किछु अर्थ लोलुप व्यापारी, पदसत्ता लोलुप राजनीतिज्ञ आर किछु सामंतवादी विचारधाराक पोषक सभ एकजुट भऽ मिथिलाक अशिक्षित एवं अविसित जनताक शोषण करैछ आर तें आइ वर्तमान मे ई आवश्यके नहि अनिवार्य भऽ गेलेक अछि जे एहि राष्ट्रीय शोषणक विरुद्ध चलाएल जा रहल संघर्ष के अविलम्ब गति देल जाय...मिथिलाक संस्कृति; भाषा-साहित्य; कला-कोशल; वाणिज्य-व्यापार; उद्योग-धंधा आदि कें उचित संरक्षण दऽ मिथिला क्षेत्रक विरुद्ध चलाओल जा रहल षट्यन्त्र कें विफल कऽ देल जाय।

आजादी प्राप्तिक पश्चात् अपना देश मे जे प्रगति भेल अछि ओकरा नकारल नहि जा सकैछ मुदा जाहिस्तरपर मिथिलासन अविकसित क्षेत्र उपेक्षित राखल गेल अछि ओ वस्तुतः विचारणीय अछि। ओना सरकारी स्तरपर कागजी उन्नति आर विकासक अम्बार लागल छेक मुदा वस्तुस्थिति ई जे मिथिला कें माध्यम बना, केन्द्रीय एवं राज्य सरकारक टहलु सभ मात्र अपन-अपन आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति कें मजबूत आ स्थायी बनेबाक बन्दोवस्त कएलनि अछि आर किछु नहि। कृषि विकासक नामपर जे थोड़-बहुत खाद आ बीज उपलब्ध कराओल जाइछ तं पानि निपत्ता भऽ जाइछ; सिंचाइक नाम पर जं पाँच-दस गोट "बोरिंग" आदिक व्यवस्था कराओल जाइछ तं बिजलो विला जाइछ भने जनता कें मात्र आस्वासनक बोझ सं ताहि रूपें दबेबाक प्रयास कएल जाइत रहल अछि आइ आजादीक ३४-३५ बरखक पश्चातो मिथिला ओतहि अछि जतऽ आइ सं ३४-३५ बरखक पूर्व रहए—शिक्षाक अव्यवस्था; कृषिक ह्रास; गाम-गाम भड़ल टूटली मड़ेया; चाकरीक खोज मे बौआइत मिथिलाक शिक्षित युवा वर्ग; आवागमनक अव्यवस्था; सांझक सांझ पेट मे जुन्ना लेपेटने रौरव नकर्क यातना भोगैत साधनहीन समाज; जीवैत रहबाक अभिलाषा नेने गाम गाम सं पंजाब-हरियाना, बंगाल-आसाम...पड़ाइत बूढ़, जवान....मिथिलाक वर्तमान चित्र इहह रहि गेल अछि। आ रहबो करत एहिना यावत्धरि भारतक मानचित्र मे मिथिलाक रेखांकण नहि भ जाइछ... जाधरि सरकारी रेकार्ड मे मिथिलाक अपन खेसरा-खाता नम्बर नहि लिखा जाइत छेक।

भौगोलिक दृष्टिकोण सं, भारतक सुरक्षा एवं अखंडताक लेल जतबा महत्व मिथिलाक छेक ओतेक महत्व ने दिल्ली के देल जा सकैछ आ ने पटना कें। भारतक सीमान्त प्रदेश हएबाक कारणे मिथिलाक अपन अलग महत्व छेक। सामरिक-सुरक्षा कें दृष्टि मे राखि सरकार एतहु विराट 'एरोड्रम'क निर्माण रातो-राति करा सकैछ—डिवीजन डिवीजनक 'मलेटरी' एकट्ठा कऽ सकैछ मुदा मिथिलाक विका-

भारत मे एखनो साक्षरक संख्या पचीस प्रतिशत सं बेसी नहि छेक। मिथिला मे त आरो कमे हएत। एहि मे शिक्षितक संख्याक अनुमान सहजहि लगाओल जा सकैछ। शिक्षितक लेल एक घंटाक समय जं रोज देथि त सात दिन सं बेसी मिथिलाक्षर सिखबा मे किन्नहु नहि लगतनि। जे नेना सभ अक्षरारंभ करत तकरा लेल जेहने रोमन वा देवनागरी तेहने अपन लिपि। बरू अपन हेबाक करणे आर सहज हेतेक। जहांतक पोथी प्रकाशनक गप्प छेक ताहू मे विशेष असुविधाक संभावना नहि। बंगला आ असमियाक लिपिक संयोग सं सहजहि मैथिली अक्षर भेटि सकैछ। खगतानुसार एकरा किछु नव-सहज रूप देल जा सकैछ, जेना बंगला मे कएल गेल छलैक। खास कें 'उ' कारक मात्रा मे एकरूपता आवश्यको छेक कारण प्राचीन बर्तनीक अनुसार किछु आखर मे ई मात्रा लगने ओकर रूपे बदलि जाइत छेक आ सहजे चीन्हबा मे नहि अबैछ।

आशाए नहि विश्वासो अछ जे मैथिली प्रेमी विद्वान लोकनिक तथा आन्दोलन कर्त्ता लोकनि एहि पर ध्यान देताह आ गंभीरता पूर्वक सोचता। समय जते बीतैत अछि—अवकाहे होइत अछि तें शिघ्रता आवश्यक।

● जय मैथिली

सक नामपर सरकारी-तंत्र गुमकी किएक लाधि लेत अछि ई एकटा अति विचारणीय प्रश्न ! एहि परिप्रेक्ष मे जं गंभीरता सं विचार कएल जाए तं ई स्पष्ट भS जाइत जे 'मिथिलाक विरुद्ध राजनीतिज्ञ लोकनि द्वारा एक गोट भयंकर षटयन्त्र कएल गेल अछि जे मिथिलाक जनता कें दिकभ्रमित कS शासन मे बनल रही—खाहें ओ राजनेता लोकनि कोनो पार्टी सं सम्बन्ध होथि। की तीन साढ़ेतीन करोड़ मैथिल कें ई यथास्थिति कें बनौने रहबाक चाही ? बोक बनक, हम सभ एहि स्थिति कें अपन प्रारब्ध बूझि हाथ पर हाथ धएने बैसल रही ? केओ स्वाभिमानी मैथिल एहि दयनीय स्थिति कें अपना मोन सं स्वीकार नहि कS सकैछ—आर एतहि यक्ष-प्रश्न उत्पन्न होइछ—"कः पन्थाः ? यद्यपि एहि प्रश्नक उत्तर युधिष्ठिर द्वापर-युग मे दS चुकल छथि मुदा हुनकर उत्तर (महाजनेन""वला) आधुनिक काल मे अप्रासंगिक भS कS रहि जाइछ कारण महापुरुष वला—निर्धारित पथक अन्वेषण सं पूर्व 'महापुरुष'क अन्वेषण करS पड़त आर अपना मिथिला मे एहन महापुरुषक अभाव प्रायः सभ कें खटकत मिथिला मे "कुर्सी पुरुष" अगनित भेटि सकैछ मुदा 'महापुरुष' कतS पाबी ? जं से रहैत तं मिथिला सन पुण्य भूमिक ई दुर्दशा ! मैथिलीक एहन अवहेलना !! मैथिलक ई अपमान !!!

अतएव, हम सभ जे संघर्षपथ निर्धारित कएने छी ओकरा आर सुव्यवस्थित रूपें आगां बढ़ाबS पड़त, अपन संघर्ष मे तीव्रता आनS पड़त आ तखनहि हम सभ कोनो फलक आशा कS सकैत छी। ई प्रायः सभ के आभास हैत जे एखनधरि मिथिलाक जागरूक प्रहरी सभ भाषावला फ्रान्ट पर अपन मोर्चा जमौने छथि एम्हरे किछु दिन सं मिथिलाक लेल "सम्पूर्ण-क्रान्तिक" परिभाषा प्रचारित ओ पारिभाषित कएल जा रहल अछि। एहिठाम ई कहब प्रासंगिक हैत जे भारत सन विशाल जनतांत्रिक देश मे केन्द्र सरकारक समक्ष ततेक ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्या सभ प्रस्तुत रहैत छेक जें मिथिला सन उपेक्षित भू-खण्डक भाषाक समस्या पर ओकर ध्यान आकृष्ट कराएब जं असंभव नहि तं कठिनाइ अवस्स कहल जा सकैछ। तें हमरा सभक ध्येय ई हएबाक चाही जे येन-केन प्रकारणे केन्द्र सरकारक ध्यान आकृष्ट करा सकी। एहि सन्दर्भ मे मात्र भाषाक सरकारी मन्यताक समस्या के पर्याप्त नहि कहल जा सकैछ। जं एकबेर केन्द्र सरकार कें ई बात स्पष्ट रूपें भान करा देल जाए जे मिथिला मे ओ सभ तत्व वर्तमान छेक—ओ सभटा साधन उपलब्ध छेक जे एक गोट स्वतंत्र प्रान्तक लेल आवश्यक कहल गेलेक अछि मने एक गोट पृथक राज्य बनबाक सभटा योग्यता मिथिला रखैत अछि तं एकहि बेर केन्द्र सरकारक भक खुलि जएतेक आर अनेरे मिथिलाक कैकटा समस्याक समाधान स्वयं भS जयतेक (एहि संदर्भ मे श्री दिनराज शाण्डिल्य जी द्वारा कएल गेल कार्य कें नजर अन्दाज नहि कएल जा सकैछ)।

मिथिलाक बौद्धिक वर्ग लगभग दू दसक सं जनतांत्रिक माध्यम कें अपना, केन्द्र सरकार सं आग्रह करैत रहल अछि जे 'मैथिली' कें सरकारी मान्यता प्रदान कS (संविधानक अष्टम अनुसूची मे सम्मिलित कS एकर प्राचीन प्रतिष्ठा कें संरक्षण देल जाओ—प्रांतीय सरकार सं सेहो आग्रह करैत रहल अछि जे ओ एहि संदर्भ मे उचित डेग उठाबS मुदा ओकरा मुंह पर जुत्ता मारैत बिहारक सुयोग्य मैथिल मुख्य मंत्री जनाब जगन्नाथ मिश्र साहेब अनायास "हिज मास्टर्स वायस"क रेकार्ड जकां पेंपिया उठलाह - "अस्सलाम वालेकुम !" पटनाक गोल घर पर चढ़ि अजान देबS लगलाह "औ मैथिली भाषी लोकनि, कण्ठस्थ कS लियS""या लिल्लाह रसुलिल्लाह"" !!" एकर कि अर्थ ? मने हम सभ स्त्रोण छी ? जायज मांग छल मैथिलीक लेल सरकारी मान्यता आ नाजायज रूप सं लदा गेल माथ पर उर्दू !! आब रटैत रहू आलिफ बे-पेते""आर अदा करैत रहू नमाज !!! एहि सं बढ़ि कS आर की दुर्भाग्य भS सकैछ हमर सभक ! मुदा एकरा मात्र दुर्भाग्य कहलां सं काज नहि चलत। जं समयानुसार एकर प्रतिकार नहि कैल गेल तं असम्भव नहि जे कांहि बिहार सरकारक नवका अध्यादेश जारी होइक जे मिथिलाक जनता मे जे एखन धरि 'टीक' नहि कटबोने होइ आर 'कट्टा' नहि करबोने होइ से अविलम्ब 'टीक' कटबा लेथु आर 'कट्टा' करबा लेथु ""आ पश्च तू जगन्नाथ बाबू गामे-गामे घोषणा करने फिरताह जे एहि काज मे विलम्ब नहि हएबाक चाही—ई दिल्ली दरबारक आदेश छियेक !! हमर कहबाक ई तात्पर्य नहि जे उर्दू भाषाक विरोध हएबाक चाही उर्दू अपना देशक एक गोट अति समृद्धि आर विकसित भाषा थिक। उर्दूक क्षमता पर कोनो प्रकारक प्रश्न चिह्न नहि लगाओल जा सकैछ आ उर्दूए कि विश्वक कोनो भाषाक अनादर नहि हएबाक चाही कारण कोनो देशक भाषा-साहित्य, ओहि भूखण्ड विशेषक सभ्यता आर संस्कृतिक प्रतीक होइत छेक। ई इतिहास सिद्ध तथ्य छियेक जे जं कोनो भूखण्ड विशेषक तथ्यता ओ संस्कृति कें नष्ट करब अभीष्ट हो तं ओकर भाषा-साहित्य पर प्रहार करू। जतS धरि मैथलिक प्रश्न अछि, एखनधरि एकरा कोनो भाषा सं विरोध नहि रहलैक अछि आने रहतैक मुदा एकर अर्थ ई नहि जे समदर्शिताक दर्शनक कारणे एकरा गरदनिए मरोड़ि देल जाए मिथिलाक प्राचीन सभ्यता ओ संस्कृति कें नष्ट कS देल जाए। मैथिलीक संग अन्याय कS बिहार सरकार अपन जाहि अदूरदर्शिताक प्रमाण देलक अछि, ओहि लेल कम सं कम जगन्नाथ बाबू कें मैथिली भाषी कहियो माफ नहि करतनि।

एहि सभ शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध, वैचारिक क्रान्तिक पड़ाव हम सभ पार कS चुकल छी—आब आवश्यकता अछि अपन संघर्ष कें सही धरातलपर, सही योद्धाक माध्यमे गति दी—तीव्र करी। मुदा ई हमर सभक दुर्भाग्य कहल जा सकैछ जे सही योद्धाक निर्माण पूर्णरूपें एतावधि नहि भS सकल अछि तें संघर्षरत मैथिल योद्धा लोकनिक ई प्रथम कर्त्तव्य आ दायित्व भS जाइत छनि जे एहि संघर्ष लेल सैनिकक चयन कS ओकरा युद्ध-स्तरपर प्रशिक्षित करथि। प्रशिक्षित सैनिकक युद्ध नियमबद्ध आ कौशलपूर्ण होइत छेक तथा विजयश्रीक संभावना शत-प्रतिशत बढ़ि जाइत छेक।

एखनधरि सरकार संग हमरा सभक जे संघर्ष होइत आबि रहल अछि ओकर सभ सं कमजोर पक्ष अछि सफल नेतृत्व एवं मिथिलाक जनसाधारणक सहानुभूतिक अभाव। अपन लक्ष्य कें प्राप्त करबाक लेल हमरा सभक लेल ई आवश्यके नहि अनिवार्य भS जाइछ जे मिथिलाक स्थिर जनमानस कें झिकझोरी, अवचेतन मे पड़ल प्रसुप्त विवेक कें झकझोड़ि कS उठा दी आर एहि निमित्त हमरा सभ कें मिथिलाक सुखभूमि सं सम्पर्क साधS पड़त, गामे-गाम जाकS खेतिहर श्रमिक कें विश्वास दियाबS पड़त जे ओकरा देह मे आब मात्र हड्डियेटा साबित छेक—मासु नोचा गेल छेक, शोणित पिबा गेल छेक"" विद्यार्थी समुदाय कें बुझाबS पड़त जे हुनकर सभक शिक्षाक कोनो औचित्य नहि""जं मिथिला जीवैत नहि रहल तं हुनको सभक गणना मृतकें मे कैल जएतनि""भ्रष्ट राजनेता लोकनि के चेताबS पड़त जे ओ लोकनि अपन भाभट समेटथु—मिथिला आब आर शोषण-उत्पीड़नक कें बर्दास्त नहि कS सकैछ—जं ओ लोकनि राजनीति करS चाहैत छथि तं स्वच्छ राजनीति करथु; मिथिला के मिथिला के गौरव दियाबथु, आर मिथिलाक दिगभ्रमित मतदाता कें सिखाबS पड़त जे ओलोकनि अपन मत मात्र मैथिल राजनीतिज्ञ कें देथि भने एहि भीषण शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध संघर्ष मे मिथिलाक बच्चा-बच्चा कें संग लS कS चलS पड़त तखनहि लक्ष्य-प्राप्ति संभव।

— घनचक्र

मिथिला विभूति महाकवि डाक

मिथिलाक माटि जेहने उपजाउ अछि तहिना एहि ठामक लोकक मस्तिष्क सेहो आ विशेष कें एकरे बलपर मिथिला कहियो तीन लोक मे विख्यात छल। एहिठाम एक सं एक विभूतिक जन्म भेल अछि जे सरिपहुं दोसर देशक हते ईर्ष्याक विभूति रहल। तें आश्चर्य नञि जे कतेको विभूति कें कालक्रमे बिसरा देल गेलए आ महाकवि डाक सेहो एहने विभूति मे सं छथि। ओना इहो निर्विवाद जे जे कुनू जाति अपन विभूति कें बिसरि जाइए ओकर अधः पतन अनिवार्य छेक आ वर्तमान मिथिला एकर ज्वलंत प्रमाण थिक।

ओना त महाकवि डाकक सम्बन्ध अइधरि कुनू प्रामाणिक शोध नहि भ सकलए परञ्च हिनक अपनहि रचना जे युगो सं एक कंठ सं दोसर कंठ मे प्रवाहित होइत आबि रहल ए हिनक व्यक्तित्व आ कृतित्वक नीक परिचय उपस्थित करैछ।

हिनक जन्मस्थान तथा समयक सम्बन्ध एखनो धरि निस्तुकी नहि भ पओलक ए परञ्च कहल जाइछ जे वर्ण सं ई यादव छलाह। एहि तथ्यक पूर्ति हिनक अपनहुं पद सं होइए—जं ओकरा हिनक सही रचना मानि लेल जाय—जेनाकि—कहि गेल डाक गोआर। एकर सत्यताक आधार इहो थिक जे वर्णवादी कुसंस्कार ग्रस्त समाज ब्राह्मण-कर्णकायस्थ सं इतर वर्णक एहि प्रतिभा के नञि स्वीकारि सकल आ इहो एगो कारण थिक जे एहन विराट प्रतिभा सम्पन्न विभूति के बिसरा देल गेल।

कारण भनहि जे हो परञ्च एतबाधरि सत्य जे एहन प्रतिभा मात्र मिथिलेटा मे नहि, अन्यत्रो दुर्लभ्य अइ। महाकवि डाक मे बहुमुखी प्रतिभा छलनि। हुनक साहित्यक प्रतिभाक ज्वलंत प्रमाण अइ हुनक ग्रंथ 'डाक वचनामृत' जं सरिपहु अमृत तुल्य थिक। ओना त ई पोथी सेहो अप्राप्य सन अइ आ तथा कथित मैथिलीक पोथी प्रकाशन संस्था जे लाखो टाका खर्च क कें भाल्तू-फाल्तू पोथी छपैए—तकरा सभ कें एहन पोथी छपबाक प्रयोजने ने बुझाइ छइ, परञ्च मिथिलाक विशाल जनकंठ एखनो एकरा जोगओनेधरि अवस्से अइ आ भविष्यो मे रहत से विश्वास अनाया से होइए।

महाकवि डाक मात्र कविए टा नहि छलाह, कृषि विज्ञान हिनका अतुलनीय पहुंच छलनि।

(शेषांश पृष्ठ ५ पर)

पाकिस्तानी कथा

इफतारी

'भरिदिनुका उपासल छी। गरीब कें एक टुकड़ी रोटी मेटौक। अल्लाह अहांक भला करताह।' ई आर्तस्वर, कलपनाइक पुनरावृत्ति डिप्टी कलक्टर साहेबक मकानक जनानी महल मे प्रवेश करेछ। डिप्टी साहेबक धर्मपत्नीक मेजाज ओहिना सभ समय चढ़ल रहैत छथि, ताइपर सं भरि-दिनुका उपास। स्वभावतः एहि शोकार्तस्वर सं खौंझा उठैत छथि। 'भरिदिन ई कपर-जरुआ भीखमंगा सभ जानि ने कून चुल्हि मे रहत, मुदा साँझ पड़िते जं कने चैन सं रोजा खोलय बेसू कि बिनबिना क बहार हएत।'

'अल्लाह अहांक मेहरबानी पर दुआ करताह'—उएह कंपितस्वर लगातार बहरा इत रहल।

'नसीबन! ओ नसीबन!! परसुका मधुर सभ जे रहो से भीखमंगा कैद दही।'

नसीबन—अर्थात नोकरनी—बचिया-हठल। जाइत-जाइत माथपर अंचरा राखि लेलक। बेगम साहिबा बरंडाक सोफा पर ओकरल दुनू बेटा आ स्वामीक बाट ताकि रहल छलीह। सामनेक टेबुल उजर दपदप कपड़ा सं झाँपल छलेक आ ताइपर नाना तरहक सुस्वादु खाद्य-सामग्री। सामग्री ततेक छले जे आर जे वस्तु आएब बाकी छले, तकर रखबाक जगहो नञि। छने-छन ओ घड़ी देखि रहल छलीह आ अधेर्य भ रहल छहीह जे कखन रोजा भांगि एक खिल्ली जर्दापान मुँह मे देती।

एक त ओहिना बेगमक खिटखिटाह मेजाज सं नोकर-चाकर तंग रहैत छल ताइपर रमजानक समय त ई मेजाज आर तुंग पर चढ़ि जाइछ। प्रायः सभ तामस बिसाइ छइ नसीबनक कपारपर। बेचारीक कुलखुट मे केओ छेक ने आ तें सम्पूर्णरूपें बेगम पर आश्रिति। बेगम साहिबा सेहो अपना दिस सं कनियो कमी नञि रखेत छथिन। मारि-गोट सं कहियो कनिओ कुंठित नञि होइ छथि। बरन एहि विशेष काजक लेल जाड़-गर्मी बारहोमास छतीसो दिन एगो पंखा हाथे रहैत छनि।

'गे निकम्मी! ओतय जा क मरि गेलें ने की? बहरा किए ने होइ छी?'

नसीबन चट-पट मुंह पोछेत बरंडा दिस अगुआएल। हाथ मे कएकटा मधुर नेने खिड़ी दिस चढ़ल।

'एमहर आ त देखियौ केटा छौ?'

मन मसोसि क नसीबन घुरि गेल आ बेगम साहिबाक सामने जा हाथ पसारि देलक।

'अंय! मात्र दूटा?' बेगम गरजलीह। 'गे पपियाही राक्षसनी ओते मधुर सभ मेले की? निश्चिते गीड़ि गेलें'। देखियौ, लग आ।'

'नञि-नञि, हम नञि खेलीहें'—नसीबन कहैत रहल आ बेगम साहिबाक आँखि रंजन रश्मि जकां नसीबनक मुंहक भीतर घुसाएल एक टुकड़ी मधुर पर पहुंचि गेल। बेगमक पंखा तैयारे छल, तरातर लगली ओकरा डेंगाबय। 'चोरनियां, चुड़ैल! इएह रोजा होइ छइ?'

'खोदातल्ला दुआ करता। बुढ़, आन्हर अफाहिज के कने इफतारी मेटौक।' बाट पर सं ई स्वर लगातार आबय लागल।

'ओ....बाप रे! आर नञि मलिका-इन। अहांक पएर पकड़े छी बेगम साहिबा फेर कहियो ने खेब। एइ बेर छोड़ि दिअ हम खोदा कसम कहै छी।

'थरइ ने तोरा हम कसम खोअबै छी। आइ तोंही ने की हमही ने।'

'अल्लाह अहांक बाल-बच्चा कें भला करताह।' फेर उएह करुणस्वर।

एकदम हकमि गेलाक बाद बेगम साहिबा नसीबन कें पएर सं ठेलेत बजली जो मुंहझड़की! मधुर सभ भीखमंगा कें देने आ। कखन सं ने बेचारा कंठ फाड़ि क चिचिया रहल-ए। आ इहो द दिअही।' चंगेरी सं कने भूसल मुंगक दालि देत कहलथिन। अंचरी सं अपन नोर पोछेत नसीबन बहरान दिस अगुआएल।

× × ×

नया-रास्ता निश्चिते कहियो नव-रहल हेते परञ्च एखन खाबि-खुधि भरल छइ। दुनू कातक मकान सभक हालात सेहो तेहने। खाली एगो मकान एखनो रहय जोगर छइ। बाट ततेक चौड़ा जे एक कात मे तांती, लोहार, कुम्हार सभ दोकान सजा क बेचि सकेछ। गरमीक राति मे त तते ने खाट पसारल रहै छइ जे कुनू गाड़ी-घोड़ा भरि टोलक लोकक बिनु निन्न तोड़ने जाइए ने सकेए।

टोलक लोक सभ तीनटा मसजिद रहबाक कारणे खूब गर्बित। गरीब-गुरबा सभक कुसंस्कारक सुयोग ल मोट हेबा लेल मुल्ला सभ मे बेश प्रतिद्वन्द्विता। बच्चा सभ कें कोरान स शुरू क क तंत्र-मंत्र, यंतर-मंतर खिलौनाइक सभ समय प्रतिद्वन्द्विता चलिते रहैत छेक। एक शब्द मे कहने लोक कें ठकबाक समस्त कौशल अपनौने। एहि सभ सतपरीश्रमी लोकक बीच तीनटा फालतू-आलसी परिवार बास करेए, जेना सघन बनक उजरा पीपड़ी सभ सजीव गाछ कें नष्ट करबा लेल। मुल्ला सभक पोशाक बेश साफ सुथारा दोसर दिस जकरा सभक कान्ह पर भार राखि ई सभ मौज करेछे, से सभ मैल-कुचैल मे पड़ल। मुल्ला सभ भद्र लोक भेल आ बोनिहार सभ नीच जातक—असभ्य।

प्रायः गोर बीसे सुदखोर खान सोझा सोझी एइ इलाकाक लोकक शिकार पर निर्भर अइ। दहल दनमनाएल एगो मकानक छत पर कचराक बीच ओ सभ रहैए। उत्तर पश्चिम सीमान्त सं आयल एहि बनैया दलक सभ सुदखोर। लोक एकरा सभ सं डेराइए। कुनू एसगरुआ स्त्री ओकर सभक लग द क नहि जा सकेछ। एहि इलाकाक प्रायः सभ लोक एकरा सभक रिनियां अइ आ मोटाउ सूदि सधेवा मे सभक स्थिति प्रजान्तक।

दिनभरि एकरा लोकनिक घरक केवार बन्न रहतेक आ ई सभ हिंस जानवर जकां भरि शहर टहलान मारत। साँझखन रोटी माउस लेने फीरत। कैटलीए एकर सभक थारीक काज करतेक। सभ एकेठाम खायत हड्डी चुसेत-चुसेत जखन उज्जर भ जेते त बाटपर फेकि देत। ओइ हड्डीपर हमला लेल बाटपर कुकूर सभ जेना तैयारे रहैछ। शेष रातिभरि कुकूरक कटाउझ सूनल जाइछ।

खान सभ खेनाइ-पीनाइ शेष क हिसाबक खाता ल बैसि जायत। एक-एक पाइक हिसाब करत। फेर केओ-केओ हुक्का ल क मैल कुचैल कम्मलपर पड़ि रहत। जे कने फुर्तीबाज रहल शहरक एक चक्कर मारेलेल बहरा जायत।

सूदि खेनाइ मुसलमानक लेल धर्म-शास्त्रक निषेध छेक। किन्तु निर्दयतापूर्वक सूदि असुलेतो ई सभ नमाज पढ़बा आ रोजा रखबाकाल बड़ निष्ठावान जेना खोदा ताल्ला के घूस द क प्रसन्न राखय चाहैत हो। स्वभावतः रमजानक समय भुखे काहिल भेल साँझ पड़ैत-पड़ैत फीरि अबैत। सूर्यास्तक ठीक घण्टा भरि पहिलुका समय जेना बीते ने चाहय। केओ-केओ भानसो मे लागि जाइत आ बाँकी बरंडापर टहलान दीत। लग दने कुनू असगर जनानी के जाइत देखि आर घेंट नमरा दीत आ अश्लोल शब्दक बाण छोड़ेत। मुदा कान सदिखन सतर्क रहिते जे कखन मस्जिद मे अजान पढ़तेक-मानेभरि दिनक उपास समा-तिक घोषणा हेतेक।

एकरे सभक हंगामाक कारणे दोसर कातक मकान खाली पड़ल छलेक। परञ्च बजारक एते लग आ एते पैघ मकान मात्र बीस टाका भाड़ा मे पाबि एइ टोलक नव बासिंदा असगर अली सोचने छल जेना ओ कुनू नव वस्तुक आविष्कार कैने हो। तें बेसी खोज-खबरि नञि ल अपन माय बीबी आ बच्चा कें ल क सोझे एइ मकान मे आबि गेल। बीबी नवीमा के सेहो बड़ पसिन्न पड़ले। ओ वस्तु जात सरियावय मे लागि गेल। परंच पहिले दिनक साँझ मे कने सुस्तेबाक हेतु ओ उपरतलाक खिड़की लग ठाढ़ि भय नीचा नेना-भुटकाक खेल देखैत छल कि हठात ओकर ध्यान आबि ओकरा भीतर ल जाय चाइलके।

ओह! महिषा खान सभ कें त देखू। कैना ताकि रहलए जेना आँखिक डिम्हा बहार भ जेतैक।'

नवीमा घरफर मे देखलक जे बरंडापर भीड़ कैने खान सभ ओकरे दिस ताकि रहल छेक आ हंसि-हंसि इशारा क रहल छेक। जखन खान सभ देखलक जे नवीमो ओकरा सभ दिस देखेछइ त आर जोर सं ठिठिआय लागल। नवीमा निलित भावें चुपचाप देखेत छल-ता ओकर घाहुक स्वर कान मे पड़लेक—जं मौगीए कें कनियों लाज-धाख नञि होइ त मनसाक कून दोख?

कए वर्ख सं नवीमा आ असगरक बीच एगो दुर्वीध दूरी बनल छइ। दुनू पितिऔते भाइ बहिन छलआ ने ने मे बागदान भेल रहै। परंच रेवाज एहन जे भेंट-घांट प्रायः नहि अ जकां होइ। ओना कहियो काल बुढ़वा-बुढ़ियाक आँखि मे छाउर झोंकि दुनू भेंट क लेत छल। जाइठाम जनानी कें अन्तपुरक बासी बना राखल जाइ छइ ताइठामक लेल एहि तरहक घटना साधारण बात भेले। बाद मे ओकरा दुनूक बीच प्रेम बढ़ले आ चिट्ठी पुरजी सेहो चलय लगलेक आ तकर बादे असगर नवीमा के स्कूल मे भर्ती करावेलेल जोर करय लगलेक।

जवानीक शक्ति, उत्साह-उमंग कौलेज जीवनक आरम्भ मे असगर ओहन छात्र सभ मे सं छल जे सभ देशक स्वाधीनताक बात छोड़ि आर किछु सोचिए ने सकेत छल। किसानक गरीबी, जमीन्दारक शोषण बोनिहार सभक दुर्दशाग्रस्थ अवस्था आ पूंजी पति सभक सर्वग्रासी लिलसा आदि सभ विषय पर गर्म-गर्म भाषण देबाक लेल ओ बेश जनप्रिय छल। जेहने सुवक्ता, तेहने अध्ययन छात्र सभ ओकरा उदीयमान नेता हिसाबें देखितेक। नवीमा लग सेहो नाय-कोचित, धर्महुक मामिला मे कनियों कम नञि। नवीमा लग ओ अपन रंगीन कार्यावलीक रूप उपस्थित करेत। अख-बार मे ओकर नाम देखि नवीमाक छाती सूरसन भ जइतेक। ओकर सखी-सहेली, परिजन-पुरजन मे केओ एहन नञि छले जकरा मे असगर सं बेसी देश प्रेमक भावना होइक। नवीमा सेहो ओकरा संग नव जीवन आरम्भ करबाक हेतु अपना कें तैयार करय लागलि। अत्यन्त संवेदनशील, बुद्धिमती एहि बालिकाक चिन्ता धारा कें एहि पथपर अग्रसरित करे लेल मात्र कने इंगितक खगता छले। शिघ्र ओ भारत वर्षक समस्या सभ सं परिचित होमय लागलि आ सम्भाव्य समाधान सोचि ओकर मन आनन्द विभोर भ जाइ। भारतक स्वाधीनता क्रमशः ओकरामन मे स्थान बनबेत गेले आ देशक लेल प्राणो देबाक हेतु ओ तैयार भ गेलि।

असगर कालेज जीवन शेष होइतहि बिवाह केलक आ तकर बाद आइब पढ़नाइ आरम्भ। नवीमा ई देखि अवाक रहि गेल जे असगर ओकरा अपन कएक-टा राजनैतिक संगी सं परिचय करौनाइ आ गर्म-गर्म भाषण तक सीमाबद्ध अइ। फेर सोचेत जे भ सकेए पढ़नाइक कारणे एना होअय आ पढ़नाइ शेष होइतहि ओ पूर्ण-रूपेण राजनीति मे भाग लेत।

वस्तुतः नसीमाक राजनैतिक उत्साह जेना दिन-दिन बढ़ैत गेले, असगरक उमंग ठंढा पढ़ैत, गेले। नसीमाक प्रश्नक उत्तर मे ओ नाना तरह बहन्ना बतिआय लागल। कहियो कहितै- शिघ्र हमरा लोकनि के संतान हएत'। फेर कहितै बच्चा एखनो ततेँ छोट अइ जे एकरा छोड़ि बहरा जेनाइ उचित नञि। बखन बच्चा बड़ दिनक भेले आ हमदर नसीमा सेहो अपना के राजनैतिक कार्यक्ष्य तेयार क लेलक तखन एकदिन असगर कहलके जे आइनक परीक्षा लेल ओकरा नीक बकां प्रयास करय पड़ते। आ पास केलाक बाद नोकरीक प्रयास मे लागि गेल।

से जे होइ, सत्य बात, कम स कम पत्नी सं, बेसी दिनधरि नञि नुकाओल जा सकेए। ओना दोस-महिम सं ओ इएह कहितै जे पारिवारिक काज मे तेना ने बाझि गेलए जे पलखतिए ने होइ छइ। दोस-महिम सोचेत—सरिपहुँ बेचारा बियाह क क फंसि गेल।

किन्तु तकर बाद? नसीमा अन्ततः बूझि गेल जे पेच-पेच लेक्यर छोड़ि असगर सं आर किछु पार नञि लगतै, से साहस ओकरा मे नञि छइ।

धीरे-धीरे असगरक कछु-कबवक परिवार किछु ओकील आ सरकारी कर्मचारी धरि सीमाबद्ध भ गेले, जे सभ दिनभरि टाकाक चिन्ता मे व्यस्त रहैत छल। नसीमा के त कें आब ओकरा बेत अस्वस्ति बोध होइक कारण बुझबा मे भाङ्ठ नञि रहले जे नसीमा ओकरा दकस्यागी बुझैत छइ आ मनहि-मन घृणाओ करै छइ। नसीमाक चुप्पी सं ओ ततेक विरक्त भ जाइत जे कखनो-कखनो ओकर सुन्नर गालपर थप्पर मारेक इच्छा होइतेक। बरू नसीमाक उपहास, झगड़ा केनाइ एहि चुप्पी सं नीक ओ सोचैत।

इफतारीक समय भ गेले। खानसभ जमा भेल। कइ गोटे बरंडा पर आ बांकी चाह बनावे मे व्यस्त। नसीमा खिड़की लग ठाढ़ि नीचा बाट पर देखि रहल छलि। भरिसक मास छ एक भेल हेतै ओकरा सभ के एइ मकान मे एना। खान सभ सेहो ओकर मुंह निहारैत अभ्यस्तसन भ गेल छल। ताइ पर एकर उदासीनता देखि ओहो सभ आब बेसी रूचि नञि लेत। आ ठीक एहि समय ओकरा सभक ध्यान केन्द्रित रहैक लगक मसजिद पर, जतय सं जे कुनू समय अजानक स्वर सुनाइ पड़ि सके छले।

कुनू गली सं एगो बूढ़ भीखमंगा थेहैत-थेहैत आबि हाजिर भेल। हाथक लाठी पर भार देबाक बादो ओ अपन देह कें सोझ नञि क पाबि रहल छल। ओकर सर्वांग कपे छले। नसीमाक मकानक सामनेक बाट पार करैत ओ जेना हरूमि गेल हो आ तें एगो देवाल मे पीठ अरा ठाढ़ भ गेल।

नसीमाक नान्हिटा बच्चा असलाम सेहो ता खिड़की लग आबि गेले। ओकर नजरि सामने भीखमंगा पर पड़ले। ओ पुछलके—मां देखही त, ओइ भीखमंगाक हाथ मे की छइ?

'की जानय गेलिऐ बेटा, भरिसक लेबाक कुनू बद्ध हेतै।'

—तखन खाइ किए ने छइ?

—भ सकेए जे रोजा रखने हो आ तें अजानक बाट तकैत हो।

—तों रोजा नञि करै छैं मां?

नसीमा अबोध नेना दिस देखि कने बिहुंसैत सन नकारात्मक मुड़ी हिला देलके।

—तखन अल्लाताला जे इन्सपेक्टर के कहलथिन! ओ पूछि बाबत रहथिन!

नसीमा किछु सोचि बाजलि—से बात तों अपन अब्बेजान सं पूछि लिअहुन।

—किन्तु मां, तों किए ने रोजा करै छैं?

नसीमा सिनेह सं बेटा के दुलारैत बाजलि—तों नञि करै छे ने—तें।

—हम त बच्चा छी। दाइ कहै छइ जे जे रोजा नञि करैए तकरा ने कि नर्क मे जाय पड़ै छइ। अच्छा—नर्क कैहन होइ छइ मां!

—नर्क! इएह त हमरा लोकनिक सामनहि अइ—नीचा मे। तीव्र घृणाक संग नसीमा कहलके।

असलाम सामइ चारू भर तकैत पुछल के—कतय?

—नीचा मे—उएह जतय ओ भीखमंगा ठाढ़ अइ, जतय लोहार, कुम्हार, तांती, बोनिहार सभ रहैए।

—मुदा दाइ त कहै छथि ज नर्क मे आगि होइ छइ?

—हं सोना, ठीके।

—आ स्वर्ग केहन होइ छइ?

—इएह छइ स्वर्ग जतय तों, हम आ तोहर दाइ रहै छथुन। जाइ ठाम पेच-पेच, साफ-सुथरा झकझक करैत घर सभ छइ। मारितेरास नीक-नीकुत खेबाक, नीक-नीक पहिरबाक छेक, नाना तरह खेलओना सभ छइ।

—शहर मे तखन किएक ने सभ स्वर्गे मे रहैए?

—कारण स्वर्गक लोक अनका स्वर्ग मे नञि आबय दे छइ। ओकरा सभ सं काज करा ले छइ आ फेर बक्रिया क नर्क मे ठेलि दे छइ?

—आ ओ सभ आन्हरों भ जाइ छइ?

—हं सोना, नर्क आन्हर लोक सं भरल छइ।

आ ठीक एही समय अजानक स्वर सुनाइ पड़ले। भरिदिनुका उपासक समाप्तिक घोषणाक संग प्रज्वलित भेल रंग-बिरंगक आतिशबाजी। खान सभ धरफर करय लागल।

ओ बूढ़ अशक्त भमंखीगा अपन हाथक वस्तु मुंह मे देबाक प्रयास केलक परञ्च उत्तेजना सं ओकर हाथ कापय लगलेक आ हठात मधुर खसि पड़ले। ठेहुन पर भर द क ओ मधुर उठेबाक प्रयास करय लागल। ओकर आंगुर मधुर धरि जाइ-जाइ ता केम्हरो सं एगो कुकूर आबि लूझि लेलके। शिघ्रे आर कएकटा कुकूर जुमि गेले आ कटाउझ करय लगले। दुर्बल कंठे कुकूर सभ कें दबारेक प्रयास केलक परञ्च कुकूर सभक आवाज आर तेज भ गेले। भूख आ व्यर्थता त अमुस्य ओर बूढ़ माटि पर खसि पड़ल आ बच्चा बकां हिचुकय लागल। औहरि सुनि दू गो खान गरदनि नमरा काण्ड देखलक आ खुशी सं हंसय लागल।

'मां!' माइक पाछा मुंह नुकओने डेरायल असलाम फिसफिसा क आवेदन जनओलक। आ इएह प्रथम ओकर अबोध मन नर्क शब्दक प्रकृत व्यञ्जना उपलब्धि केलक।

'शयतान'! खान सभ दिस देखि नसीमा घृणा भरल स्वरेँ आस्ते सं बाजलि!

'मां!' भरल कंठे फेर असलाम कहलके।

नसीमा ओकरा कोरा मे उठा छाती सं सटि लेलक आ आंखि मिलबैत जाइत कंठे बाजलि—सोना, पण भ क तो सभ सं पहिने इएह काज करिहें जाइ सं आर ककरो नर्क मे बास नञि करय पड़ै।'

—आर तों मां! तोंहू रहबे किने?

—हम! हम की करब कइ? हम त एही जहल मे बन्न भेल बूढ़ि भ जायब''''

—तों त कनियों बूढ़ नञि छे। दाइ बकां नञि। आ तों नञि रहने जे हम एक दम सं असगर भ जायब।'

—नञि सोना! हम किन्नहु ने अपन सोना बेटा कें असगर होमय देब। हमहूं रहब-अवस्से रहब।

—रसीद जहान
मैथिली—अग्रदूत

दू गोट गीत

महा जागरण गीत/ एकटा किसानक लेल

उठऽ हो किसान भइया फुटलइ किरिनमा!
पूरूब सं बदलल जाए दुनियां असनमा!
गान्हीजीक राज बंटय मुफुते जनेरा
पुहुप बिमान चढ़ि मन्तरीक फेरा
दूधे पुते बढ़ऽ 'सोम' मान धान धनमा! उठऽ०
रातिए सं डेरा देने फौती मलेरिया
भोरे पधारल घर मे पाहुन समरिया
भोट मांगऽअयला सतरङ्गिया सजनमा! उठऽ०
रहऽ ने बहाना कयने
भूखकेर घऽत थयने
अपना करम सं मरिकऽ भूखकेर बहनमा! उठऽ०

—सोमदेव

मिथिलाक वसन्त

तीन कात मे, नदिया रे नदिया उत्तर दिस पहाड़े हो
बिराजै माझे
रामा हमरो मिथिला देश हो बिराजै माझे॥
तीन लोक मे सुन्नर मिथिला पावन ओ मनभावन हो
लोभाओन लागे
रामा एलै मास फगुनमे हो लोभाओन लागे॥
तीसी जे फुलेलै रामा सरिसो जे फुलेलै हो
फुलाइए गेलै
रामा बन के बनफुलबा फुलाइए गेलै॥
सजल धजल पिरथी लागै नव कनिये हो
अबैया भेलै
रामा पहुना राज बसन्तक जनु अबैया भेलै॥
छीटै अतर बसात डुलसि कें बेनिया जनु डोलाबै हो
अलापे लगलै
रामा कोइली कनियां परिछन गीत अलापे लगलै॥

—राम लोचन ठाकुर

बाल-मंच

वाचस्पति मिश्रक जन्मस्थान मिथिलाक तीर्थस्थान

षडदर्शन टीकाकार वाचस्पति मिश्र अपन जन्म सं कोन स्थान कें विभूषित कएलन्हि ई हुनक कोनो ग्रन्थ मे स्पष्ट रुपेण वर्णित नहि अछि। परन्च वर्तमान अन्धराठाढ़ीक पूर्व मे एक उच्च स्थान छैक, ओहिठाम दू गोट पोखरि छैक, जाहि मे एकक नाम मिश्राइन तथा दोसरक नाम बचही छैक। वृद्ध परम्परा सं ई सुनि रहल जे एहिठाम वाचस्पति मिश्रक आवास तथा विद्यालय छलन्हि। एहिठामक ई परम्परा अखन धरि छैक जे लोक अपन सन्तानक अक्षरारम्भ वाचस्पतिक घराड़ीक माटि सं करबैत छथि। लोकक ई धारणा छन्हि जे एहि डीहक माटि सं अक्षरारम्भ करओने ओ व्यक्ति विद्वान होइत छथि। वाचस्पति मिश्रक आवास सं उत्तर प्रायः पाँच सए बीघा जमीन एहन छैक जे प्राचीन कालक पैघलोकक आवास भूमि सदृश लागत। एहि गामक नाम अन्धराठाढ़ी पड़बाक वृद्ध मत अछि जे राजानृग आन्हर छलाह हुनक राजधानी रहबाक कारणें एकर नाम अन्धराठाढ़ी नहि अन्धराजधानी दू खण्ड मे परिवर्तित भऽ गेल प्रथम अन्धरा द्वितीय धानी सं धानी आ क्रमशः ठाढ़ी भेल, जे सम्प्रति दू टोल रहितहुं एके ग्राम अन्धराठाढ़ी सं सम्बोधित होइछ। राजा नृगक राजधानीक प्रति किछु मतभेद अवश्य छैक। डा० गंगानाथ झा सांख्यतत्त्व कौमुदीक भूमिका मे राजानृगक राजधानी नेपाल प्रान्त मे सिमरांव गढ़ मानने छथि, मुदा डा० झाक मतें म० म० डा० उमेश मिश्र पूर्ण रूपेण सहमत नहि छथि। पं० श्री वासुदेव झा, अत्यन्त नीक विद्वान जे सम्प्रति हाई स्कूल अन्धराठाढ़ी मे हिन्दीक प्राध्यापक छथि हुनका मतें ई बुझना जाइछ जे सिमरांव गढ़ मे राजा नृगक राजधानी रहलो होइन्हि तथापि वाचस्पति मिश्र सम्पर्कित रहबाक कारणें हुनक एक छोट राजधानी अन्धराठाढ़ी मे अवश्य रहल होएतन्हि। वाचस्पति मात्र अद्वितीय विद्वाने टा नहि छलाह अपितु उच्च कोटिक साधको छलाह, एकलग्रन्थ भगवानहि कें स्वयं अर्पण कएने छेथि ताहि सं हिनक आध्यात्मिकता क परिचय होइछ। कतेक विद्वानक विश्वास छन्हि जे सुरेश्वराचार्य पुनः वाचस्पतिक रूपे प्रकट भेला। वाचस्पति मिश्र छओ दर्शनक टीका मे तत्तत सिद्धान्तक समर्थक निष्पक्ष भावे केलन्हि ताहि लेल हिनक परम प्रामाणिक टीका सं छओ दर्शन सर्वथा पुष्ट भेल। हिनक टीकाक अध्ययन मुख्य साधन मानल जाइछ। अस्तु! एहन विद्वान परमपूज्य वाचस्पति मिश्र जे मिथिला मे अवतीर्ण भए जग के सम्बोधित कयलन्हि, हुनक जन्मस्थान रूपी तीर्थक तीर्थाटन करव हम मिथिलावासीक पुनीत कर्त्तव्य एवं धर्म थीक।

— अनिल "सुधा"

बाल—कविता

उदघोष

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित. लए 'पाश्चजन्य' उद्घोष करब।
अपन मातृ भाषाक हितक हित, स्व स्वत्व ग्रहण क जाय लड़ब॥
अभिलाषा भाषा सुविकासक, युव जब आन्दोलन मे आबथु।
कछिया काछे बान्हि दृढ़ बल लए. स्व भाषा अधिकार देखाबथु॥
हम छाती फुला बढ़ब आगां, दय नारा. कारा सं न डरब।
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित, लए 'पाञ्चजन्य' उदघोष करब॥
बनि मातृभूमि केर सबल पूत, निज भाषा केर उत्थान करब!
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित. लय 'पाञ्चजन्य' उद्घोष करब।

— भूतनाथ

मिथिला विभूति ……

हिनक पद—

'थोड़ के जोतिह, अधिक मंहियबिह,
उंच क बन्हिह आरि।
जं खेत तेयो ने उपजह,
डाक कें पढ़िह गारि॥'

एखनो किसानक लेल पथ प्रदर्शनक काज करैछ। ई पद मात्र हिनक कृषि सम्बन्धी ज्ञानहिक नहीं, अपितु आपना पर अटूट विश्वासक सेहो प्रमाण थिक।

एहिना—

'कुसि अमवस्या, चौठो चान,
आवहुं बेसह घर किसान।
मारे बिया, बोंझे धान,
आब कि रोपबह धान किसान?'

धनरोपनीक उचित समयक सम्बन्ध मे प्रमाणिक मानल जाइछ आ प्रायः किसान लोकनि एकर पुनरावृति करैत सूनल जाइ छथि।

'साओन पछबा, भादव पुरिबा,
आसिन बह इशान।
कातिक कंता सिकियो ने डोलय,
कत'क रखबह धान।'
जं पुरबा पुरबैया पाबए,
सुखले नदिया नाव बहाबए।

हिनक ज्योतिष ज्ञान गणनाक अप्रतीम उदाहरण अइ।

महाकवि डाकक पद सभ जाह ठाम सहज बोधगम्य अइ ताइ ठाम किछु पद सभ दृष्ट कूटक पर्याय मे सेहो अबैए, जेना कि कबिर दासक उनट बांसी। एहि तरहक एक पद अइ—'बहुदा मूते खेत दहाय, खसे खेत त बहुत पड़ाय।' कबिर दासक संग आरो समता छलनि हिनका मे। जेना कि कहल जाइए—ई पढ़ल-लिखल नञि छलाह—कबिरदासक मसी कलम छओनही सन। सत्य जे हो परंच ई त माने पड़त जे पूर्वकाल मे सभक लेल पढ़बा-लिखबाक सुविधा नञि छलैक। परंच कबिरदास सं फराक हिनक अधिकांश कविता सहज अइ जनगणक इच्छा आकांक्षा दर्पण आई। महाकवि डाक सरिपहुं लोक कवि छलाह—भक्त कवि नहि-शृंगारिक नञि… एहन जे महाज्ञानी पंडित छलाह डाक तनिक मृत्युक सम्बन्ध मे कहल जाइछ जे पोखरि मे डूबि अकाले कालक गाल मे चल गेलाह। ओना प्रतिभाक प्रायः अकाले मृत्यु होइत रहलैक ए परंच एहू सम्बन्ध मे महाकवि अनजान छलाह से नञि। ओ स्पष्ट कहै छथि—ई जुनि बुझि डाक निर्बुद्धि. नाशक काल विनाशक बुद्धि।

आइ समय आबि गेलए जे हमरा लोकनि अपन एहन एहन विभूति कें ताकी बीयाबी आ अपन जातीय मर्यादा कें बढ़ाबी।

—मुजतबा अली

लाल बुझक्करक चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक जी. महोदय जी!

जय मैथिली!

बाद समाचार ई जे हमर बेर बेर मना केलाक उपरान्तो अहां अपन आदति सं बाज नञि एलहुँ आ हमर दोसरो चिट्ठी कें छापिये देलहुँ। त कान खोलि क सुनिए लेल जाओ जे आहाँ के जं थेथरपनक विशेष दावी हो त ताइ सं मिसियो भरि फस लाल बुझक्कर कें नञि छनि। कहलके किने जे 'चोरेक डरें भगवा नुकओनाइ—से तकरे परि' आइ कालिक ढोआही नेताक डरें लाल बुझक्कर अपन मुंह मे ताला किन्हुँ ने लगा सके छथि। तखन त खुद्दो खा क भूख नष्ट करबाक पक्ष में हम कहियो नञि रहलौं आ जे हेतु अहां लोकनिक पत्रिका से हो कहीं आयल पानि गेल पानि बाटे बिलायत पानि सन ने हो—तें एक आध अंक लेल किछुक देखार-बिन्हार होइ—एहए सोचि चिट्ठी नञि छापे लेल लिखने रही। हं, तखन ई बात धरि सत्त जे फरमाइसी रचना हम नञि लिखै छी—माने आर्डर सप्लायर नञि छी।

आहां लिखैत छी जे देश मे महगी आकास छूबि रहल-ए, आगइने सं चाउरक दाम चारि टके भ गेल छैक ताइ ठाक सरकार २ लाख टन चाउर पठा बदला मे तेल लेबाक जे रूसक संग संधि केलक-ए तकर विरोध हेबाक चाही। हमरा त अपनेक बुद्धि पर हंसी लगेए। कहू त भला, कहां राजा भोज आ कहां भोजवा तेली। तेलक संग कतौ चाउरक तुलना हो। एही बुद्धिक कारणे ने मैथिल एते पिछड़ल अइ। जे जाति सूति उठि कें सर्वांग शरीर मे तेल लगबैए आ तेखन स्नान करैए, स्नानक बाद पूजा करैए आ भगवानो कें तेल दैत छनि, भोजन में रोज जं तिलकोरक तरुआ नहि भेलैक त अदौरी-दनौरियो अवश्य चाही आ से बिनु तेले भूजल नहि जाय अचार दो बर्खां-तीन बर्खां जोगओने रहत आ बर्खे-बर्खे तेल पलटत. राति सूते सं पहिने तेल पएर मे लगेबे करत आ तें पेट मे खड़ ने सिंग मे तेल बला कहबी कें चरितार्थ करत—माने तेल सं पलो भरि फराक नहि रहत तकरा लेल तेलक विरोधक बात कैहन लज्जास्पद थिक सेहो त सोचितहुँ?

सम्पादक जी, तेलक उएह महत्व छैक जे जे काज शक्ति सं संभव नहि तकरा सहजहि संभव क सकैछ जं रमैन पढ़ने हएब त बुझले हएत जे रावण आ बालि सन बीर पुरुष अपटी खेत मे मारल गेलाह आ बिभीषण-सुग्रीव सन पछत्तुआ मात्र तेलक बले राज्याधिकारी बनि गेलाह। महाभारत काल मे युधिष्ठिर सन अनाटक लोक धर्मराजक उपाधि पओलनि आ कर्ण-भीष्म पितामह सन सत्यवादी योद्धा अकाले कालक मुंह मे चल गेलाह। कहबाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे एहन जे महत्वपूर्ण वस्तु भेल तेल—तकर विरोध नहि क उपयोग केनाइ सिखूंजे भविष्य बनत। हेयो महानुभाव हमरा लोकनिक पुरखा मुर्ख नहि छलाह जे बहुत पहिनहि कहि गेल छथि—तिल तेल, ई केमहर इंगित करैए—ताइ पर ज्ञानक योग द कें त सोचू।

सम्पादक जी जं अपने लोकनि हमर सलाह मानी त हम कहब जे व्यर्थक मैथिली आन्दोलनक नाम पर अपन सर्वस्व नहि गमा—तेल आन्दोलन आरंभ करू। सफलता सुनिश्चिते मानि लियह आ मिथिला-मैथिलीक सम्पूर्ण समस्याक समाधान तथा सर्वांगिण विकासक एक मात्र ई पथ जानि लियह। ओना अपन खर्चा खा कें एहन सलाह देबे के करत—तथापि हम त गारंटीयो देब जे जं हमर बात फूसि प्रमाणित हो त हमरे नाम पर एक दर्जन एससिसियन पोसि लेब। हेयो बाबू—एकर त साक्षात प्रमाण छथि अपना लोकनिक मुख्य मंत्री डा० श्री जगन्नाथ जी मिश्र। हं तेल लगेबाक कला अवस्से जानल रहक चाही ने त हनुमान जी जकां भरि जीनगी तेले लगबैत रहि जायब आ हाथ बंचत सुन्ना।

सम्पादक जी, अहां के त बुझले अइ जे श्रीमान लाल बुझक्करक जेठ बालक एइ बेर मैट्रिकक परीक्षा दे थन परंच एखनहि सं कन्यागत लोकनिक लाइन लगले रहैत छनि हुनका ओतय। एकर कारणो छैक जे ओ दहेज विरोधी छथि आ तें बेटा मे टाका गनेबाक प्रश्ने ने उठैत। किन्तु एमहर आबि के ओ निर्णय लेलनिहें जे बेटाक बिवाह ओकरे ओतय करओताह जे लाइसेंस प्राप्त तेलक डीलर होथि। जं अहूँ के एहि तरहक कथा जानल-बूझल हो त घटकैती क सकैत छी।

अन्त मे अपने कें सूचनार्थ लिखि दी जे हम एखन तेल पर शोधक रहल छी। शोधक विषय थिक—तेल किएक आ केना। परंच दुखक बात जे तेलक अभाव मे घर मे साँझो ने पड़ैछ आ तें शोध कार्य ठप पड़ल अइ। एही अलगा कें बाट ताकि रहल छी जे कहिया रूसक साम्यवादी तेल भारत मे पदार्पण करत जे हमरो घरक दीप जरत आ शोध कार्य पूण भ सकत। एही दुभारे एखन रचना पठेना सं सेहो असमर्थ छी किन्तु तेलक आगमन होइते रचना अवस्से पठाएब से विश्वास अछि। आर की?

अपनेक पत्रोत्तर नहि पेबाक प्रबल आकांक्षी

श्रीमान् लाल बुझक्कर

बुझनुक ग्रामवासी

सभा-समिति

डयौढ़ १० जनवरी, ८२। आइ एतय डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक अध्यक्षता मे विद्यापति पर्व समारोह मनाओल गेल। वर्माजी कहलनि जे लोहनाक पूब ई पहिल विशिष्ट आयोजन थिक। उद्घाटन भाषण करैत डा० कांचीनाथ झा किरण कहलनि जे मैथिली भाषी क्षेत्र भाषाई उपनिवेशवादक शिकार अछि। ओ संस्कृत आ हिन्दी सं शोषित अछि। जाबरि घर, मन्दिर आ पाठशालाक भाषा एक नहि होयत, ताबरि ई भूभाग पिछड़ले रहत।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर कहलनि जे मातृभाषाक माध्यम सं शिक्षा नहि देबाक कारणें एतऽ एतेक दिनक बादो शिक्षाक प्रतिशत—साक्षरताक प्रतिशत पचीस सं आगां नहि घुसकल अछि।

आचार्य नाजिम रिजवी कहलथि जे अपन अधिकार लेल मुखिया, बी० डी० ओ०, विद्यापक आ सांसद लोकनिक घेराओ करू जाहि सं सरकारी कार्यालय मे मैथिली भाषा मे काज भऽ सकय।

श्री सुभाषचन्द्र यादव कहलनि जे मिथिलाक लोक मे संघर्ष चेतना जगयबा लेल विद्यापति पर्वक उपयोग करबाक चाही।

एहि समारोह मे मंच संचालन कऽ रहल छलाह श्री जीवकान्त।

कवि सम्मेलनक संचालन कएलनि श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर। एहि मे भाग लेलनि मणिपद्म, किरण, चन्द्रभानु सिंह अमर, प्रवासी साहित्यालंकार, जीवकान्त, उदयचन्द्र झा विनोद, ज्योतिवर्द्धन, नाजिम रिजवी, पवन कुमार, विमलेश किंकर प्रो० डा० दयानन्द झा, प्रो० देवकन्त मिश्र, प्रदीप मैथिली पुत्र इत्यादि।

सांस्कृतिक कार्यक्रम मे अपन आकर्षक गीत सभ सुनौलनि शशिकान्त सुधाकान्त, चन्द्रमणि, सुमन माया कान्त, गगन सुवन आ गंगाधर झा। एहि कार्य-क्रमक संचालन क रहल छलाह जीवछ झा ज्ञानचन्द।

विद्यालयक छात्रा लोकनि उषा, इन्दु, गिन्नी कार्यक्रमक आरंभ विद्यापतिक गोसाउनिक गीत सं कमलनि।

आचार्य नाजिम रिजवी राघवाचार्य शास्त्री आ दामोदर लाल दासक मृत्यु पर शोक प्रस्ताव अनलनि।

किरण जीक प्रस्तावक अनुमोदन करैत जीवकान्त बिहार सरकार सं माङ कयलनि जे मैट्रिक परीक्षा मे निर्धारित मैथिली गद्य पद्य संग्रह अनुपयुक्त आ छात्र लोकनिक स्तर सं बाहर अछि, तें अनुभवी शिक्षक लोकनिक नव सम्पादक मण्डल नव गद्य-पद्य संग्रह सम्पादन करय।

भोला उच्च विद्यालय डयौढ़क प्रधानाध्यापक श्री बिलट झा स्वागत भाषण कयलनि आ कार्यक्रमक अन्त मे धन्यवाद ज्ञापन कयलनि विद्यालयक वरिष्ठ शिक्षक श्री लोचन झा।

✱ जेना कि वर्माजी कहलनिहें जे ई आयोजन एहि अंचलक पहिल विशिष्ट आयोजन निक से जं सत्य त कहय पड़त जे एकर श्रेय श्री जीवकान्त कें छनि जे हालहि मे खजौली छोड़ि डयौढ़ मे खेमा खसओलनिहें। किन्तु एहू बात कें अस्वीकारल नहि जा सकैछ जे हुनका लोकक सहयोग भेटलनिहें जकरा बल पर आयोजन सफल भ सकलए। एहिठाम ई स्पष्ट आइ जे मैथिल चेतना मुइल नञि अइ अपितु सुसुप्तावस्था मे पड़ल अइ जकरा झकझोड़ि कें जगेबा लेल नेताक प्रयोजन छइ अगुआक प्रयोजन छइ जकर नितान्त अभाव रहलै-ए।

एहि अवसर पर किरण जी कहब जे मैथिली भाषी क्षेत्र भाषाई उपनिवेशवादक शिकार अइ सतप्रतिशत् सत्य अइ। शतप्रतिशत सत्य अइ जे मिथिलांचल संस्कृत हिन्दी द्वारा शोषित होइत आबि रहल-ए आ आब एहि मे निश्चिते उर्दूक सहयोग सेहो रहतेक। तें आइ आर वेसी प्रयोजन छेक जे मन्दिर-मसजिद, स्कूल आ घरक भाषा एक मात्र मैथिली हो आ एहि लेल जनहि जे कुनू मूल्य चुकाबय पड़य-हमरा लोकनि कें तैयार रहक चाही।

जहाँधरि मैट्रिक परीक्षाक निमित निर्धारित मैथिली गद्य-पद्य संग्रहवला प्रस्तावक प्रश्न अइ प्रायः समस्त मैथिली भाषी एहि सं सहमत हेताह जं हुनका विषय बोध हेतनि। परंच प्रश्न त ई अइ प्रस्ताव पारित केनहि टा सं की समस्याक समाधान भ सकैछ? सरकार मैथिलीक हित चाहैए नञि आतें ओकरा पर एहि प्रस्तावक कुनू प्रभाव पड़बाक संभावना कहल नञि जा सकैछ। की आशा करी जे एकर सम्पादक लोकनि जे निश्चिते मैथिली भाषी विद्वान छथि हुनका लोकनिक आंखि खुजतनि आ ओसभ एहि काज सं अपना कें फराक राखि उपयुक्त लोकक लेल स्थान खाली करताह? थोड़ेक कालक निमित मानिली जे इहो लोकनि से नहि क बिहारक मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र सन मातृधनक सूत्री मे अपन नाम लिखेनाइ मे बड़प्पन बूझति त की छात्र शिक्षक लोकनिक एहि संदर्भ मे कुनू कर्तव्य नञि?

जहाँधरि हमरा लोकनिक विश्वास अइ जे एकर समाधान छात्र-शिक्षक लोकनिक हाथ मे छनि। ओ लोकनि निश्चिते एहि निमित प्रयोजन भेने पेघ सं पेघ आन्दोलन हड़ताल क सकैत छथि। छात्र आ शिक्षक लोकनिक संगठन सरिपहु सशक्त अइ जे सरकार के नमरा सकैए आ अपन/अपन नेनाक भविष्यक बाट परिष्कार क सकैए, मातृभाषा मातृभूमिक मर्यादा बढ़ा सकैए।

✱ कलकत्ता, २७-१२-८१। स्थानीय निरामय पालि क्लिनिक मे नवगठित' नव जागरण मैथिल संघ'क पहिल सभा भेल जकर अध्यक्षता कएलनि मैथिलीक वयोवृद्ध सेनानी श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु'। एहि अवसर पर मिथिलेन्दु जीक अतिरिक्त सर्वश्री बाबू साहेब चौधरी, रामलोचन ठाकुर योगेन्द्र ठाकुर ब्रह्मनारायण झा, चन्द्र किशोर मिश्र ओहि वक्ता लोकनि संस्थाक प्रति अपन-अपन शुभकामना प्रकट कएलनि तथा सहयोग सुझावक आश्वासन देलनि। मिथिला मैथिलीक सर्वांगिण विकास लेल एकजुट भ काज करबाक आवश्यकता पर जोर देल गेल। संस्था दिस-सं संयोजक श्री वैद्यनाथ मिश्र आगत यतिथि लोकनिक प्रति आभार प्रकट करैत संस्थाक उद्देश पर प्रकाश देलनि तथा अनुभवी मैथिली सेनानी लोकनिक पथनिर्देशक आवेदन कएलनि।

तत्काल श्री वैद्यनाथ मिश्रक संयोजकत्व मे एगो एड्हक कमिटीक निर्माण कएल गेलए जाइ मे सर्व श्री राजबली ठाकुर, रामनारायण कुमर, सुरेश झा, चन्द्र कुमार झा, लखन निश्र सदस्य रहलाह-ए।

✱ मैथिली मे प्रायः संस्था ननेत रहल अइ' संस्थाक निर्माण नीकै नञि आवश्यको छेक खासकें मिथिलाक मैथिलीक वर्तमान स्थिति मे। परंच संस्थाक निर्माण अपना अपा मे कुनू महत्व नञि रखैछ महत्व-पूर्ण होइछ ओकर काज' इएह कारण छेक जे कतेको संस्था आयल पानि गेल पानि बाटे बिलाएल' पानि बला कहबी कें चरितार्थ करैत रहलए। नव जागरण मैथिल संघ' एहि कहबीक विपरीत अपन कार्य सं अपन अस्तित्वक भान मैथिल समुदाय कें कराओत तथा मैथिली आन्दोलनक आगामी इतिहास मे अपन स्थान बनाओत से आशा हमरा लोकनि करैत छी। विश्वास अइ जे एकर कार्यकर्त्ता लोकनि निराश नहि करता। 'देसिल बयनाक शुभकामना।

देसिल बयना
पाठकीय परिवारक सलियाना सदस्य

१ श्री अभय नाथ झा, कलिकता
२. श्री उदय कान्त मिश्र, कलिकता
३ श्री वैद्यनाथ मिश्र, कलिकता
४. श्री राम नारायण कुमर, कलिकता
५. श्री लखन चौधरी, कलिकता
६. श्री रामानन्द मिश्र, कलिकता
७. श्री बद्रीनारायण लाल, कलिकता
८. श्री हरे प्रसाद, कलिकता
९. श्री विद्यापति झा, बरौनी
१० श्री दास किरण, राउरकेला
११. श्री नागेन्द्र झा, ,,
१२. श्री के० के० मिश्र, ,,
१३ श्री बी० झा, ,,
१४. श्री सत्यरंजन, ,,
१५. कुमारी ज्योति झा, दिल्ली

देसिल बयनाक संवाद प्रतिनिधि
श्री सूर्यनारायण मंडल— नवकी दिल्ली
, अनिल सुधा—बिरौल मिथिला

कह लोचन कविराय

तेल इजोतक उत्स थिक तेल शक्ति केर खान
तेलक बल डिबिया जरय तेलहि उड़य विमान
तेलहिं उड़य बिमान तेलबल मंत्रीक आसन
तें जनसेवक राज तेल पर कएलक शासन
कह लोचन कविराय रूश सं कएल गेल-ए मेल
बदला मे द चाउर गरीबक लेल अबैए तेल

अरुणोदय प्रकाशन, ३०/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, वृन्दावन बेशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अंक—६ मार्च, १९८२ मूल्य—पचास

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

सम्पादकीय

फगुआ

मैथिली मे एगो बेस प्रचलित कहबी छइ—जे जीबए से खेलए फागु। कहबाक प्रयोजन नहि जे फगुआ जीवंतताक प्रतीक थिक आ जीवंतताक लक्षण होइछ आनन्द उमंग उल्लास। तें फगुआ आनन्द-उल्लासक पावनि थिक। परञ्च आनन्द उल्लास ककरो एकक नहि।

मनुक्ख सामाजिक प्राणी थिक। ओ मात्र अपने सुख सं सुखी आ दुख सं दुखी नहि होइए नहि भ सकेए। अपवादक गप्प फराक छइ। अपवाद मे बताइ भ सकेए, पशु प्रकृतिक वा दानवीय प्रकृतिक मनुक्खक भेषधारी जन्तु भसकेए। तें फगुआ सामूहिक उत्साह उमंगक पावनि थिक। पारस्परिक सहयोग, सद्भावनाक परिचायक थिक। एकर सभ सं प्रत्यक्ष प्रमाण मिथिलांचलक गाम-घर मे पाओल जा सकेछ—जाइठाम धर्ण, धर्म, सम्प्रदायिक भेद-भाव बिसरि लोक—एक संग—आनन्दोत्सव मनबेए—रंग-अबीर खेलाइए—माटि कें लाल क दैछ।

फगुआ समृद्धि परिपूर्णताक पावनि थिक। अभावी मन मे आनन्द उमंगक लहरिक कल्पना केनाई मूर्खता छोड़ि आर किछु नहि भ सकेछ। पेट मे अन्न आ देह पर वस्त्र नहि रहितो बताइ सदिखन हँसैत रहैए। तें बताइ एहि नियमक संगहि प्रत्येक सामाजिक नियमक अपवाद थिक।

फगुआ सामाजिक पावनि थिक। जातीय पावनि थिक, राष्ट्रीय पावनि थिक। युगो सं हमरा लोकनि एकरा एहि रूप मे मनबैत आबि रहल छी। परञ्च भरिसक कहियो सोचबाक खगता नहि बुझल जे वास्तव मे वर्तमान संदर्भ मे हमरा मिथिलावासीक लेल एहि जातीय आनन्द उमंगक पावनिक कि सरिपहुं कुनू अर्थ शेष रहि गेल अइ? जं सरिपहुं सोचितहुं त निश्चते आइ—मिथिला-मैथिल-मैथिलीक दोसर रूप रहैत।

हमरा जनतबे मैथिल जाति मरि चुकल अइ आ मृत जाति मे एकता, सहयोग सद्भावना कें ताकब 'चोवटिया पर रतौन्ही तकनाइ' सं बेसी आर किछु नहि भ सकेछ। ओकरा मे उत्साह उमंग कें ताकब 'दूधक बाटी मे अनन्त भगवान कें ताकब' छोड़ि आर किछु नहि। ओना मजबूरिक नाम महात्मा गाँधी होइते छइ आ तें लोक कें रतौन्ही छुटि जाइ छइ आ अनन्तो भगवान भेटिए जाइ छथिन। परञ्च ई—आत्मघाती प्रक्रिया थिक। लोक अनका भनहि ठकि लौक—अपना आप के ठकनाइ—संभव नहि भ सकेछ।

आइ मिथिला विश्व मानचित्रपर नहि अइ, मैथिली भारतीय संविधान सं बारल अइ मैथिल अननहि घर-आङन मे दुत्कारल अइ। कहियोक त्रिभुवन विख्यात मिथिलाक नाम आइ ओकर अपनो सन्तान ने जने छइ। आइ मिथिला मे रौदी-दाही भुखमरी महामारीक स्थायी वास छेक। आर्थिक विपन्नता एकर रीढ़ कें तोरी देने छेक आ सरकारी अवहेलना प्रतारना वैमनस्यताक सम वा श्वासन सन नाङड़ि हिलबैत अपने सन्तानक अधःपतन एकर माथ लाजे झुरा देने छेक। तेहना स्थिति मे आनन्द उत्साह उमंग कतय पाबी। ई भिन्न कथा जे अंचियापर चढ़ल लासक शरीर संकोचक कारणे हिल्नाइ-डोल्नाइ कें लोक जीवंतताक लक्षण मानि लिअय।

कहल जाइछ जे एही तिथि कें श्रीरामचन्द्र रावण कें मारि लंका विजय कैलनि आ मैथिलीक संग अयोध्या घुरला। सीता सभक आगमनक उपलक्ष्य मे ई उत्सवक आयोजन भेल छल आ तहिया सं प्रतिवर्ख होइत चलि आबि रहल-ए। सीता-रामक घिरबाक पाछा अपन आत्मीय के पैबाक आनन्द त छेके संगहि हुनक विजय गाथा स्वजातीयक विजातीय पर विजय, मानवीय चरित्रक दानवीच चरित्रापर विजयक महान गाथा कें अपना मे समेटने अइ। आइयो भारतक कथक क्षेत्र मे रावणक प्रतिमा जराओल जाइछ आ तकर बादक दिन रंग अबीरक संग आनन्द उत्सव मनाओल जाइछ। मिथिला मे पहिल दिन रातिमे 'सम्मत' जराओल जाइछ, दोसर दिन फगुआक उत्सव होइए।

जं आजुक संदर्भ मे नीक जंका विचार करी त स्पष्ट हैत जे मैथिली एखनो लंकाक अशोक वाटिका मे मरणासन्न छेथि। राम स्वयं हुनका रावणक जाल मे फंसा देने छथिन आ लव-कुशक जन्म भेबे नहि कइल फेर आनन्द कथिक?

तें ई समयक माङ थिक जे हम मिथिलावासी एहि पर्वक अवसर पर अपनाबीच एकता-सहयोग-सद्भावनाक बीजारोपण करी—जातीय मुक्तिक मैथिलीक मुक्तिक, मिथिलाक मुक्तिक शपथ ग्रहण करी। आर्थिक विपन्नता, कुशिक्षा-कुसंस्कार-वैमनस्यता आ एहि सभक लेल दायी मिथिला-मैथिल विरोधी तथा कथित गणतांत्रिक सरकार सं लड़बा, लड़ि कें अपन न्यायोचित अधिकार प्राप्त करबाक प्रतिज्ञा करी। तखन वास्तविक उत्सव, आनन्द-उमंगक सार्थकता।

श्री मार्कण्डेय प्रवासी पुरस्कृत

मैथिली क सुपरिचित कवि आ लेखक श्री मार्कण्डेय प्रवासीक सद्यः प्रकाशित महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' कें वर्ष १९८१ क सर्वश्रेष्ठ रचना मानिकें साहित्य अकादमी पुरस्कृत कयने अछि। गत २६ फरवरी कें पणजी (गोवा) मे साहित्य अकादमीक एकटा भव्य समारोह मे कविकेर प्रवासी कें पाँच सहस्र टाका उतरीय तथा सरस्वतीक प्रतिमा अर्पित कयल गेलनि।

समस्तीपुर (बिहार) जीलाक गढआरा गाम मे १ मई १९४२ कें एकरा मध्य-वर्गीय कृषक परिवार मे जन्मल श्री प्रवासी सम्प्रति पटना मे 'आर्यावर्त' दैनिक क सम्पादकीय विभाग मे सेवारत छथि। हिन्दी आ मैथिलीक पत्रकारिताक क्षेत्र मे हिनक लिखल 'चुटकुलानंद की चिट्ठी' आ 'झामलालक झामा स्तम्भ रचनात्मक दृष्टिकोण आ व्यंजनापूर्ण भाषाक कारण एकटा विशिष्ट उपलब्धि मानल जाइत अछि।

बहुचर्चित महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' क अतिरिक्त हिनक तदर्थ काव्य संग्रह 'एतदर्थ' 'अभियान' उपन्यास तथा विभिन्न पत्र-पत्रिका एवं ग्रंथ सभ मे प्रकाशित प्रायः एक सहस्र रचना मैथिलीक अमूल्य रत्न मानल जाइछ। हिन्दी मे सेहो ई 'कविता बोलती है' तथा 'शंखध्वनि' सन काव्य संग्रह एवं शताधिक रचना क माध्यम सं एकटा सम्मानित स्थान प्राप्त कयने छथि। रचनाकारक अलावा भी प्रवासी एकटा नीक समाज सेवीक रूप मे हिन्दी आ मैथिलीक एक दर्जन सं अधिक संस्था सं सम्बद्ध छथि।

श्री प्रवासी सन छल-छद्म-रहित, भाविष्णु, प्रभविष्णु, प्रतिभाशाली, विनम्र आ विषशायी, साहित्यकारकें पुरस्कृत कऽ साहित्य अकादमी पहिल बेर मैथिली क तरुण पीढ़ीकें सम्मानित कयलक अछि। ई एकटा नीक प्रवृत्ति अछि, जकरा हमरा लोकनि स्वागत करैत छी। 'देसिल-बयना' परिवार प्रवासी जी कें पुरस्कृत भेला सं अत्यधिक हर्ष आ गौरवक अनुभव क रहल अछि। एहि वासन्ती परिवेश मे नव वसंत क अग्रदूत क रूप मे परिवार श्री प्रवासी अभिनंदन करइत अछि आ कामना करइत अछि जे ओ अपन विशिष्ट सर्जनशील प्रतिभा सं अहिना मैथिली भाषा आ साहित्य कें समलंकृत करैत रहथि।

'देसिल बयना'क अगिला अंक में पुरस्कृत महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' पर श्री बुद्धिनाथ मिश्र क समीक्षात्मक लेख प्रकाशित भऽ रहल अछि।

वसंत केहन होइछ !

घर क देवाल क उड़ल पलस्तर
साँझ क साँझ आगिक मुँह
नहि देखऽवला चूल्हि
खाली थारी - बासनक छटपटी
पेबंद लागल साड़ी
बनिया - बेताल क तगादा
धीया-पुताक पाकल पात-सन
पीयर डबडब आँखि
हम तँ नहि बूझै छी
की होइछ फागुन,
की होइछ वसंत।
जँ अहाँ बुझैत होइ तँ
कने हमरो बता दियऽ
बसंत कोन बाध मे
आबि कें
अटकि गेल अछि।

—बुद्धिनाथ मिश्र

□ □

मिथिलाक विभूति—२

लुइ एवं अन्यान्य पाद लोकनि

मैथिलीक प्राचीन पोथी सभ जे आइ-धरि उपलब्ध भ सकल-ए ताइ मे 'चर्यापद' वा 'चर्यागीत' सभ सं प्राचीन मानल जाइछ। एहि मे कुल पचास टा गीत छल जाइ मे २४, २५ आ ४८ म गीत पन्ना हेरा जेवाक कारणे प्राप्त नहि भ सकल। उपलब्ध संइतालिसटा गीतक रचयिता चौबिस गोट पाद लोकनि छथि, जं कान्ह ओ कान्हु पाद एके व्यक्ति होथि, कृष्णाचार्य पाद ओ कृष्णवाद अभिन्न होथि। जं भिन्न होथि त निश्चिते ई संख्या चौबिसक बदला छबिस होएत। पाद लोकनिक नाम ओ पद संख्या निम्न प्रकारें अइ :—

नाम	कुल पद
१. लुइ पाद	२
२. सरह पाद	४
३. कुक्करी पाद	१
४. विरुव पाद	१
५. गुण्डरी पाद	१
६. चोटिल्ल पाद	१
७. भुसुक (कु) पाद	८
८. कान्हु पाद	५
९. कान्ह पाद	१
१०. कम्बलाम्बर पाद	१
११. कृष्णाचार्य पाद	३
१२. कृष्ण पाद	२
१३. डोम्बी पाद	१
१४. शान्ति पाद	२
१५. महीधर पाद	१
१६. वीणा पाद	१
१७. कृष्ण वज्र पाद	१
१८. शबर पद	२
१९. आर्यदेव पाद	१
२०. ढण-ढण पाद	१
२१. दोरिक पाद	१
२२. भादे पाद	१
२३. तारक पाद	१
२४. कोंकण पाद	१
२५. जयनन्दी पाद	१
२६. धाम पाद	१

चर्यापदक रचनाकालक सम्बन्ध मे एखनोधरि निष्कर्षी नहि भ पाओल-ए परन्च विभिन्न विद्वान लोकनि जे एहिपर खोज-शोध कैलनिहें हुनका लोकनिक अनुसार दसम शताब्दीक लगभग एकर रचना भेल होएत। स्वभावतः रचनाकार लोकनिक काल सेहो ताइ सं निर्धारित होइए। एहि समस्त पाद लोकनिक मे लुइ पाद सभ सं पहिने भेलाह से शोधकर्त्ता लोकनिक मत छनि।

एहि मे संग्रहित समस्त पद मे बौद्ध धर्म ओ दर्शनक स्पष्ट चित्र अइ। कहवाक प्रयोजन नहि जे सभ पाद लोकनि बौद्ध धर्मावलम्बी छलाह। परञ्च तंत्रक प्रभाव सेहो स्पष्ट परिलक्षित होइछ जे तत्कालीन मिथिला मे तंत्रक प्रभाव क संगहि बौद्ध धर्म पर सेहो तंत्रक प्रभाव कें रेखांकित करेछ।

चर्यागीत पर एखनोधरि विवाद अछिए जे वास्तव मे एकर उत्तराधिकारी केथिक? बंगाली लोकनि एकरा अपन आदि ग्रंथ मानेत छथि आ एहिपर बड़ बेसी कार्य भेलए। डा० हर प्रसाद शास्त्री आ डा० सुनीति कुमार चटर्जी सन उद्भट विद्वान लोकनि एहिपर बड़ बेसी श्रम कैने छथि आ एहि ग्रंथ कें बंगला प्रमाणित करवाक आधार तर्क जुटओने छथि। एकर तुलना मे मैथिल विद्वान लोकनि लज्जास्पद भावें पछुआएल रहलाह। आ निर्विवाद एकोटा स्तरीय प्रामाणिक पोथी आइधरि प्रकाशित नहि भ सकल-ए। परञ्च से होइतहुं एहि गीत सभक भाषा, वर्ण विन्यासओ शब्द शिल्प विषय वस्तु तथा एकर दीर्घ परम्परा जे पदावली कालधरि अक्षुण रहल एकरा मैथिलीक आदि ग्रंथ होएवाक अकाट्य प्रमाण थिक।

एहि पोथीक महत्ताए एकर रचनाकार लोकनिक महत्ताक परिचायक थिक / जाइ समय मे संस्कृत भाषाक एक छत्र राज छलेक मनहि ई लोक भाषा कहियो ने रहल हो विद्वानक भाषा छल, राजकीय भाषा छल, ताइ युग मे लोक भाषा मे काव्य रचनाक उहि वा चेतना साधारण बात किन्नहुं ने कहल जा सकेछ। तें एहि चेतनाक अग्रदूत लुइ पाद मैथिलक छेल प्रातः स्मरणीय छथि, मैथिली साहित्य मे अमर छथि आ नव्य भारतीय भाषाक आदि पुरुष छथि। ई हिनके कृतित्व छनि जे हिनक परवर्ती अन्यान्य पाद लोकनि लोकभाषा मैथिली मे काव्य सरजतक प्रेरणा पओलनि तथा आगा चलि कें विभिन्न भारतीय भाषाक रचनाकार लोकनि कें अपन मातृभाषा मे रचनाक प्रेरणा ओ दिशानिर्देश भेटलनि।

ताहि युग मे लोकभाषा मे रचना करब सहज नहि रहैक। रचनाकार कें पर्याप्त व्यंग-बाधाक सामना करय पड़नि। हमरा लोकनि जनेत छी जे स्वयं कविपति विद्यापति कें—जे हिनका लोकनि सं लगभग चारि-पांच सय वर्ख पश्चात भेलाहए—लोकभाषा मे रचना करबाक कारणे विद्वत मंडली द्वारा मखौल उड़ाओल जाइन। तेहना स्थिति मे पाद लोकनिक संग जे एहन बात नहि भेल होयत से मानेवला किन्नहु नहि। परञ्च एकक बाद एक पादक आविर्भाव आ तदुपरान्त अविच्छिन्न मैथिली साहित्यक परम्परा कें देखेत हिनका लोकनिक आत्मबलक, लोक चेतना आ वास्तव बुद्धिक परिचय सहजहि प्राप्त होइए।

ओना त ई काज बहुत पहिनहि हेवाक चाहेत छले, परञ्च से जे हेतु नहि भेलेक तें आइ एकर बड़ बेसी प्रयोजन छइ जे हिनका लोकनिक कृति के प्रकाशित क मैथिली पाठक कें सहज उपलब्ध कराओल जाइक। कुनू जातिक, ओकर भाषा संस्कृतिक विकासक छेल ई परम आवश्यक छइ जे ओकर जड़ि मजबूत होइक आ ताइ सं ओकर सम्पर्क अविच्छिन्न होइक। जड़ि सं कटल रहने वा बिनु जड़िक कुनू जाति, ओकर भाषा-संस्कृतक दीर्घ जीवन संदिग्ध रहेत छेक—ताइ ठाम विकासक बाते की? मैथिल जाति, ओकर भाषा-संस्कृतक जड़ि माटि मे छेक, जोवंत आ सशक्त छेक ताइ मे संदेह नहि परञ्च अधुनातन ओ एहि सं कटल जकां अइ। सम्पर्क कथे की जखन कि ओ एहि सं नीक जकां परिचितो नहि अइ। तें हमरा लोकनि के आर विलम्ब नहि क शिघ्र एकरा सं परिचित हेवाक अइ आ एकरा आर सशक्त करवा लेल लागि जेवाक अइ अन्यथा अस्तित्वो पर संकट आबि सकेछ—विकास के बाते की?

—सुजतबा अली

आवह हे शोणितक बुमकार

लेव-मूनि कऽ कत्तेकाल रखतै क्यो
ज्वालामुखीक मुँह के?
सुरूज के कत्तेकाल झपने रहते
बादलक झुण्ड?
के मोड़ि सकत गंगाक प्रवाह के?
सनसनाइत बयार कें रोकबाक सामर्थ्य ककरा छैक?
के झुका सकत हिमालयक माथ?
के देखाओत सूर्य कें आङुर?
आगिक चिनगोला सं
के खेलायत गोटरस? / आगि!
दह दह करैत चिनगोठा!!
उत्तेजनाक जनक!!!
सिताहल खढ़ के खड़ा रहलैए
आस्ते-आस्ते।
कए देतै सुड्डाह
तीनू लोक, चौदहो भुवन के
पिरथीए सऽ उड़तै—
लाखक लाख झका-पत्तंग
भको भन्न क देतै दुनिया के
चीरी थोंत कऽ देतै—
आसमानक चादरि के।
सनसना रहलैए
हेंजक-हेंज कुकराहा
धमनीक जहल सं मुक्त हेव। लय
आफन तोड़ि रहलैए,
शोणितक बुमकार।
जे घड़ी ने कुसियार जकाँ
दू दालिक फटलैए धमनो,
शोणितक पेमाल बहलैए / —जे घड़ो ने।
कमला-बलान मे जे क्षण ने / निर्मल जलक बदला
लाल-टुह-टुह शोणितक धार बहलैए।
बजरङ्गीक गदा रावणक पीठ पर
"गदा रे गोईं गोईं" खेलाइ लय
सन सन करैत छनि। / दुर्गाक भाला महिषासुर सं
धाड़ा-जोरी करब'लय—
तन-तन करैत छनि।
आवह हे शोणितक बुमकार!
निश्चिन्त भऽ कऽ बहऽ तों!
कालीक कत्ताक कंठ
तरासे सुखा रहल छनि,
खप्पर मे एक बुन्न रक्त बिना
चट्ट पड़ैत छनि,
जीह पर गर्दा उड़ियाइत छनि,
धोरि दहक तरुआरि कें
खप्पर कें भरि दहक ऊम-डाम कए
जुरा धहुन काली कें,
भरि छाक टटका लेहूक घोंट स
उन्मत्त भ, करती काली—
ताण्डव नृत्य।
आवह!
आवह हे शोणितक बुमकार!!
जल्दी आवह!!!

—रमेश

फगुआक उपाधि

कवि चूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र मधुप —नयन न तिरपित भेल।
प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'—बुढ़ारी में धिढारी।
महाकवि यात्री —पैर मे घुरघुरा बान्हल अइ।
कविवर किरण –हम पारसे लेब।
श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर —हम पंछी एक डाल के।
डा० ब्रजकिशोर बर्मा मणि पद्म – आब अगिला साल।
प्रो० राधा कृष्ण चौधरी —खाधि खुनबाक सुख।
श्री जीव कान्त—कय बंडल पठाउ ?
,, सोमदेव—ककवा पर टैक्स लागय।
,, कीर्ति नारायण मिश्र—किदन तं कहै छइ, तकरे परि।
,, हंसराज—मानसरोवर कहिया जायब ?
,, गंगेश गुंजन—भागलपुर कइलऽ गुलजार।
,, धन चक्र—यक्ष प्रश्न।
,, उपेन्द्र दोषी—असकरे हमहीं दोषी नहि।
,, महा प्रकाश—भोर भेलै हे पिया।
,, सुभाष चन्द्र यादव—लिखि कें की होयत ?
डा० धीरेन्द्र (जनकपुर वाला) –विधि ककरो न सक।
श्री महेन्द्र मलंगिया—कमलाकातक रसिया।
,, रामभरोस कापड़िभ्रमर—गोनू झाक बिलाड़ि।
,, धूमकेतु—नव एकाटक तैयारी मे।
,, प्रदीप मैथिली पुत्र —बारह बाजऽ दियौ।
,, उदय चन्द्र झा बिनोद —सभ सं छोट कबिता तीन हाथक।
,, रमानन्द रेणु—एखन भदबा छै।
,, ललित –कापर करब सिंगार।
डा० गौरी मिश्र—डिबिया लेसैत छी।
श्री मायानन्द मिश्र—माछक मूड़ा।
श्रीमती लीली रे—आब फुराइत अछि।
श्रीमती शेफालिका बर्मा—निहुरि फूकू आगि।
श्रीमती शान्ति सुमन—पितरस्तृप्यन्ताम।
श्रीमती उषाकिरण खान—नकबेसर कागा ले भागा।
श्रीमती पद्माशा —हलो ! मंत्री जी के यहाँ से बोल रही हूं।
डा० सुभद्र झा—किरिध करिअ मन लाइ।
डा० जयकान्त मिश्र—मैथिली हमरे चारक कदीमा छी।
डा० सुधाकान्त मिश्र—आब ककरा चून लगाबी ?
डा० शैलेन्द्र मोहन झा —बरिसाइत कहिया छइ ?
डा० रामदेव झा —डम्फा काहे कोऽ।
डा० आनन्द मिश्र —भनहि विद्यापति।
डा० आनन्द ना० शर्मा मुंगेरी गंजक 'सर'।
डा० सीताराम झा श्याम —भुतराकस पंडित।
डा० जयमन्त मिश्र –हमरा सं उद्घाटन कराउ।
श्री दमन कान्त झा – एखन टोकू जुनि।
,, श्रीकान्त ठाकुर (विद्यालंकार)—आर केओ बांचल छी ?
,, हीरानन्द शास्त्री—एक धक्का आर।
प्रो० श्री हरिमोहन झा—बन्दे तां शारदा मिति खट्टरः।
श्री आरसी प्रसाद सिंह—अहुना कतौ भेलैए ?
,, सुधांशु शेखर चौधरी—एकदन्त।
,, भीमनाथ झा —हमर अभाग हुनक कोन दोष ?
,, गोकुलनाथ झा – चिक्कापार।
,, प्रबासी जी —एक त दाइ गोरे बढ़ि-दोसर नहेली हे।
,, राजमोहन झा —हम गुमसुम तकं छी।
,, उपेन्द्र नाथ झा व्यास—हमरा लेखे धन सन।
,, गोबिन्द झा —केसब केसन असि करी।
,, गौरी कान्त चौधरी कान्त—चौपालक आठि।
,, छत्रानन्द सिंह झा हम की सभ दिन बटुके रहब ?
,, प्रभास कुमार चौधरी—कने सुस्ता लियऽ।
,, मंत्रेश्वर झा—भारत-भारती एक्सप्रेस।
,, मोहन भारद्वाज—तनी एहरो देखीं, एजी !
,, कुलानन्द मिश्र –ऐ चंडलवा राज मे।
,, रमानन्द रमण—सुकुर जे लखनउ नहि गेलौं।
,, पद्म नारायण झा 'बिरंचि'—खरपी सं समीक्षा गढ़ छी।

डा० इन्द्रकान्त झा —विद्यापतिक केश : एकटा सूक्ष्म विवेचन।
डा० वासुकी नाथ झा —खाद्‌पुरक गोसाइ।
श्री अग्निपुष्प—जनमतक थोक व्यापारी।
,, पूर्णेन्दु चौधरी—तेहन मुहदुब्बर नहि छी हम।
,, विभूति आनन्द—उठा रहल घोघ तिलक।
,, सियाराम झा सरस—शिव मठ पर !
श्री विहंगम—पांचो आङुर घी मे।
,, शम्भुनाथ मिश्र—जात न पूछो साधु की।
,, रबीन्द्र नाथ ठाकुर—सिलेमा मे काज करब दाइ ?
,, महेन्द्र झा– गाबि सुनाओल हे।
,, फजलुर रहमान हासमी—हम मिथिले मे रहबै।
प्रभावती + गोपेश—आब कहू मन केहन लगैए ?
प० देवनारायण झा—प्रोसेपेकटस छइ।
डा० दिनराज शाण्डिल्य—खराती प्रमाणपत्र बितरण केन्द्र
श्री बाबू साहेब चौधरी —लोड शेडिंग।
आचार्य रिजबी—हम मैथिल, हँ हम मैथिल।
डा० प्रबोध ना० सिंह —जन्तर-मन्तरक नामी दोकान
डा० धीरेन्द्र मल्लिक —एलाह सोचय दिअ।
श्री सुकान्त सोम– राइटर्स बिल्डिंगेर इदुर (मूस)।
,, बुद्धिनाथ मिश्र – बलम कलकत्ता पहुँच गये।
,, राम लोचन ठाकुर —हम की की करब ?
,, अनिल ठाकुर—हम आत्म समर्पण नहि करब ?
,, कुणाल—कह दे कोई न करे यहां प्यार ...
,, राजनन्दन लाल दास —संतो, करमन की गतिन्यारी।
,, निरसन लाभ—मांड़ पसौलनि जीरा।
,, जनार्दन झा —'देसिल बयना' दांत करय खट्टा।
,, सुशील—बराही चल गेल—खेतक चिन्ता।
,, रामाधार मिश्र—जाइत छी गाछी ओगरय।
,, महेश्वर झा—समय आबय दियौ।
,, ब्रह्म नारायण झा—झोड़ा खाली अइ।
,, श्रीकान्त मंडल—ललका पाग।
,, शरद चन्द्र मिश्र—गइयो हं बरदो हं।
,, भोगेन्द्र झा—पबित्र पापी।
,, शिवचन्द्र झा—हमहुँ छी।
,, हुकुमदेव नारायण यादव —भगजोगनीक इजोत।
,, राजेन्द्र प्रसाद यादव – हम किसी से कम नहीं।
,, भागवत झा 'आजाद'—ताला कहिया खुजत ?
,, बालेश्वर राम—खेत चढ़ने किसान।
,, लक्ष्मी कान्त झा—निर्बल के बल राम।
पं० श्री हरिनाथ मिश्र —काशी से ले के भगह जा के पटकी।
श्री जगन्नाथ मिश्र—कुकुड़ूकूँ ऽऽऽ।
,, राधानन्दन झा—जय सन्तोषी मां।
,, कुमुद रंजन झा —कनही कहय हमहूं।
प्रो० नागेन्द्र झा—हम ओठंगर नहि कूटब।
प्रो० रामाकान्त झा—बसे सं बेबस छी।
श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर—छोरिक चूकल।
,, कपूरी ठाकुर—छनटा अस्तूरा।
,, राज कुमार पूर्वे – जागते रहो।
,, दिगम्बर ठाकुर—सभ गुन गोबर भेल।
,, रघुनाथ झा—खरा खेलाएल छी ?
,, बिधाकर कवि—छंद-बैसकीक अभ्यास।

नोट : महानुभाव लोकनि सं आग्रह जे ओ लोकनि अपन उपाधि-पत्र श्रीमान फगुआनन्द जी महराजक रंग-अघोर कार्यालय सं यथा शिघ्र प्राप्त क लेथि। आइ साहित्यकार, नेता लोकनि के एहि खेप उपाधि नहि भेटलनि-हुनका लोकनि सं आग्रह जे नवका बजट के ध्यान मे रखैत हमरा लोकनिक असुबिधा कें बूझथि आ व्यर्थे प्राण नहि गमा अगिला सालक प्रतीक्षा करथि।

सभा-समिति

दिल्ली सं सूयनारायण मंडल

नवकी दिल्ली, १४ फरवरी ८२। अ० भारतीय मिथिला संघ द्वारा इन्डियन मेडिकल एसोसियेशन सभागार मे प्रातः १० बजे सं 'सेमिनार तथा मिथिला विभूति स्मृति समारोह'क आयोजन कएल गेल। समारोहक उद्घाटन करैत उपराष्ट्रपति श्री मु० हिदायतुल्ला कहलनि जे भारतक अनेकता मे एकताक जं कोनो जीवित उदाहरण अइ त ओ मिथिला थिक। प्राचीनकाल मे मिथिले मे एहन एकटा राजा भेलाह जे सर्वप्रथम परिश्रमक महिमा कें स्वीकृति देलनि आ तें राजा जनकक राज्यपताका मे (मिथिलाक झंडा मे) हरक छाप छल।

उपराष्ट्रपति मिथिलाक गौरवशाली अतीतक चर्चा करैत आशा कहलनि जे वस्तुतः मिथिला अवतार आ विद्वानक भूमि थिक। मिथिले महाकवि विद्यापति कें जन्म देलक जिनकर अनमोल बोल आइयो सभठाम गुंजित भ रहलए। ओ आशा व्यक्त केलनि जे मिथिलाक लोक अपन गौरवशाली परम्परा कें अक्षुण रखैत वर्तमानक विविध समस्याक समाधान हेतु कन्हा सं कन्हा मिला कें अगुआइत रहत।

उपराष्ट्रपतिक स्वागत करैत केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री श्री बालेश्वर राम मिथिलांचलक विकट आर्थिक समस्या पर प्रकाश देलनि। केन्द्रीय पटौनी मंत्री श्री केदार पाण्डेय मिथिला-विभूति लोकनि कें श्रद्धांजलि दैत स्व० ललित ना० मिश्र द्वारा मिथिलांचलक विकास लेल, बनाओल योजना तथा काज पर प्रकाश देलनि एवं ओइ अपूर्ण काज कें पूरा करैक बात कहलनि।

विचार गोष्ठीक उद्घाटन करैत आर्थिक प्रशासन सुधार आयोगक अध्यक्ष श्री लक्ष्मीकान्त झा जी कहलनि जे एइ क्षेत्रक औद्योगिकरणक दिशा मे क्षेत्रक प्रबुद्ध जनता कें आगा आवक चाही।

एहि अवसर पर श्री भोगेन्द्र झा, श्री राजेन्द्र प्र० यादव, श्री रमानन्द रेणु, श्री धर्मेन्द्र कुमार आदि वक्ता लोकनि सेहो अपन मत प्रकाश कएलनि। सभ कें सभ प्रायः मिथिलांचलक दयनीय यातायातक व्यवस्था, कृषीक अवस्था एवं उद्योग-धंधा नहि रहबा पर चिन्ता व्यक्त केलनि आ एहि मे सुधारक लेल जोर देलनि। बाढ़िक सं मुक्तिक संगहि विजुलीक आपूर्ति तथा सिंचाइ लेल कोशी नहरिक संगहि कमला-बागमती बान्हक शिघ्र लगता पर प्रकाश देल गेल।

● अखिलभारतीय मिथिला संघ, नवकी दिल्ली, एमहर किछु दिन सं पूर्ण सक्रिय अइ—जे शुभ लक्षण कहवाक चाही। ओना इहो निर्विवाद अइ जे एहि तरहक सक्रियता जं शहर छोड़ि गाम मे देखाओल जाय त किछ आशाओ कैल जा सकैछ। उपराष्ट्रपतिक वक्तव्य उत्साहबर्द्धक थिक अवश्ये आ हुनका सं बेसी आशाए की कएल जा सकैछ? जहांधरि भोगेन्द्र बाबूक गप्प अइ, ओ अन्यान्य नेता सं एहि सन्दर्भ मे बहुत अगुआएल छथि आ तें तत्काल हुनको छोड़ि देल जा सकैछ। किन्तु पं० लक्ष्मीकान्त झा एगो पुरान हस्ती होइतहुं आइ पर्यन्त मिथिला-मैथिलीक सन्दर्भ मे उल्लेखनीय काज त नहिञे केलनिहे, तेहन इच्छा-उत्साह सेहो नहि देखओलनि। एमहर जं सरिपहुं हुनका अपन भूमि-भाषाक ख्याल भेलनि हें—देरियो सं सही-नीक थिक—परञ्च हमरा लोकनि सं नीक जकां ओ स्वयं जनैत होएताह जे मात्र वक्तव्य सं समस्याक समाधान असंभव। एहि बेर हुनका पूर्ण सक्रिय होमय पड़तनि आ अपन प्रभावक्षमता कें व्यावहारिक रूप देमय पड़तनि। हमरा लोकनि जनैत छी जे भाषा कें संविधान मे स्थान भेटलेक तकर पाछां इहने किछु प्रभावशाली व्यक्तिक हाथ छल, जनता त किछुओ नहि केने छल। एहि सन्दर्भ मे मैथिली भाषी त बड़ अगुआएल अछि। श्री झा जी भरिसक नीक जकां जनैत हेताह जे जनता पेप सं पेप आन्दोलन अवस्स क लेत परञ्च ओसत त पाछू रहैत—आगू नेताए रहैत छेक। तें जनतो—भले ओ बुद्धिजीवीए कें किएक ने आह्वान कैने छथि—तेखन किछु करत जखन कि ओकरा सुयोग्य नेता अगुआ भेटेक।

एमहर श्री बालेश्वर राम जी सेहो एहि क्षेत्र मे सक्रिय छथि परञ्च दुखक बात जे ओहो मंचेधरि सीमित छथि। श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव आ श्री हुकुमदेव यादव सेहो कहियो काल भगजोगनी जकां भकइजोत कय फेर निडुभान भ जाइ छथि। एहि तरहक प्रवृति घातकें थिक—नीक नहि। हमरा मन अइ जे श्री भगवत झा आजाद एहि संदर्भ मे कहियो बाजल छलाह जे कि हुनका लोकनिक मुंह मे ताला लागल छनि। पता ने ई केहन ताला थिक—आ कहियाधरि लागल रहत? अन्यान्य विषय लेल कहां ताला रहैत छनि? दोसर प्रान्तक नेता लोकनि कें अपन भूमि-भाषाक विकास लेल मात्र बजबैक नहि कार्योक स्वाधीनता रहैत छेक—तेहना ठाम हिनकें लोकनिक मुंहपर ताला किएक लागि जाइत छनि से विचारणीय।

जहांधरि श्री केदार पाण्डेय जीक प्रश्न अइ, एहि सं पूर्वो जखन कि रेल मंत्रालयक भार लेलनि, ललित बाबूक सपना साकार करैक बात बाजल छलाह। परञ्च दुखसं लिखय पड़ैए जे एहि संदर्भ मे ओ पूर्ण निष्क्रिय रहलाह आ मिथिलांचलक लोक—जे कि हुनका सं बड़ बेसी आशा करैत छल—पूर्ण निराश भ गेल। आब ओ पटौनी मंत्री भेल छथि—आ कोशी समस्याक निदान, जं चाहथि त निश्चिते यथा शिघ्र क सकैत छथि आ से भेले उत्तर हुनक प्रति लोकक हेराएल विश्वास फिर सकैत छेक।

मिथिलांचलक बड़ बेसी समस्या छेक। एगो अवहेलित भूमि थिक ई। एकर नेता लोकनि सभदिन सं एहिठामक लोक कें ठकैत रहलथिन हें। किन्तु कुनू वस्तुक एगो सीमा होइत छेक। जनताक धैर्य सीमा छेक। तें आबो जं ई लोकनि, जेना कि बजैत छथि, कार्य करथि त ने मात्र मिथिलांचलक अपितु समस्त देशक कल्याण ताही मे छेक।

× × ×

बाल-मंच

स्वर्गलोक मे मजदूर

'ब्रह्मा' जिनका हम देवता कहैछियनि, वास्तव मे एकटा मजदूर छलाह, जे विभिन्न उपकरणक सहायता स प्राणी एवं एहि संसारक निर्माण कयलनि। तकरा बाद हुनक सहायक विश्वकर्मा भेलन्हि। एहि प्रकारें हम देखैत छी जे मजदूर आइये नहि वल्कि सतयुग मे सेहो छलाह। ओहू युग मे एक कात पूँजीपति विष्णु अपन सहधर्मिणी लक्ष्मी के साथ फुंफकार छोड़ैत शेषनागक शय्या पर आसन जमोने रहैत छलाह, दोसर तरफ ब्रह्माजी एवम् विश्वकर्मा जी फाटल-पुरान कपड़ा पहिरने अर्थात् केवल एकटा धोती पहिरने सृष्टिक निर्माण करैत रहथि। ब्रह्माजी विभिन्न प्रकार क चीज बनेलनि जाहि मे एकटा सेफ्टीरेजरो छलैं जाही स विष्णु जी दाढ़ी के के कहे पूरा मोछों मुड़वा लेथि किन्तु ओही ठाम ब्रह्मा जी बड़का-बड़का अर्थात् हाथ तक दाढ़ी लेने अपन कार्य करैत रहथि। आइकालिह एहि मर्त्यलोक मे मार्क्स तथा लेनिनक क्रान्तिक फलस्वरूप मजदूर के सेहो रह'-पहिर क किछू सुविधा भेटि रहल छइ, विभिन्न Unions & Trade unions क द्वारा ओकरा सब के किछु सुविधा देल जाइ छइ किन्तु सृष्टिक निर्माता ब्रह्मा जी के कतहु जगह नहि भेटलहि। जखन पूंजीपति विष्णु हुनका कतहु जगह नहि देलकन्हि त ओ स्वतंत्र क्षितिजे मे लटकल रहि गेलाह।

मजदूर के त अहोभाग्य मानक चाही जिनकर इष्टदेव अर्थात् पूर्वज ब्रह्माजी छथिन अर्थात् ब्रह्माजी सब मजदूर कें बड़का भाइ भेलाह। आइ कालिक मजदूर पूंजीपति वर्ग अथवा शोषक वर्गक विरुद्ध हड़तालों करे छइ किन्तु ब्रह्माजी त किछु नहि क सकें छथि। आखिर बेचारे ब्रह्माजी केवल विश्वकर्मा के साथ पूंजीपति विष्णु क कतेक विरोध कय सकैत छथि? कने अपने सब विचार क क देखियउ, जेहि प्रकार स बड़का-बड़का पूंजीपति वर्गक सामंतवादी वर्गक सहायक अर्थात् चमचा सब विभिन्न विज्ञापन द्वारा अपन मालिकक गुणगान करैत रहैत छइ चाहे ओ कतबो जनताक शोषक होथि, ओकर सभक प्रतिमा स्थापित करबेत रहैत छइ आर ओहि सेठसभक मिल फैक्ट्री सब चलावय वला मजदूर के नामो नहि लइ छइ, ओहि प्रकार स स्वर्गलोकक पूंजीपति विष्णु कें स्वार्थी एजेंट पंडित जी प्राचीनकाल स लय क अखन तक घूमि-घूमि क एहि मर्त्यलोक मे विष्णु क गाथा गबैत छथि और कीमती पत्थर स निर्मित मन्दिर मे हुनक मूर्ति स्थापित करबेत रहैत छथि किन्तु एहि पंडित सबके तथा पूंजीपति वर्गक निर्माता मजदूर ब्रह्मा जी के कतौ शरण नहि भेटलन्हि। ई गप्प मजदूर सभक लेल कतेक अपमानजनक छइ? अहि लेल आइकालि के मजदूर सब के अपन बड़का भाइ ब्रह्माजी तथा विश्वकर्मा जी के यथापूर्वक सहायता करक चाही। मजदूर सब के ब्रह्माजी तथा विश्वकर्मा जी के नेतृत्व मे एक बहुत बड़का सामूहिक जुलूस के साथ स्वर्गलोक मे निश्चिन्तता पूर्वक बेसल पूंजीपति विष्णु के दरबार मे "स्वर्गलोकक तथा मर्त्यलोकक मजदूर एक होथि के नारा एक स्वर स बुलंद क क हमला कर क चाही। भ सकेत मर्त्यलोक स कुर्सी, 'टेबुल, जुता, चप्पल इत्यादि विरोध प्रदर्शित करवाक लेल ल जेनाक चाही कारण जे स्वर्गलोक मे ई सब चीज कहाँ स अभोतइ? एहि प्रकार स विरोध प्रदर्शित कयक ब्रह्माजी के अपन अधिकार मांगक चाही जाइ स विवश भ कय विष्णु जी ब्राह्माजी के रहबाक लेल एकटा टूटलो झोपड़ी आर किछु वस्त्र देवा लेल बाध्य होथि— —सुधा झा

दसम वर्ग

फगुआ समाचार

● सुनबा मे आयल-ए जे प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी संसद मे एगो नव विधेयक आनय जा रहल छथि। एहि विधेयकक अनुसार एहि बेर फगुआ मे लोक तेल मे रंग नहि सानि सकैए। ओना केन्द्रीय मंत्रीक संगहि प्रदेशीय मंत्री तथा भविष्य मे मंत्री बनवाक सपना पालनिहार कांग्रेसी नेता लोकनि एकर परिधि सं बाहर राखल गेल छथि। किन्तु हुनको लोकनिक संग शर्त ई राखल गेलए जे जं ओ लोकनि तेल मे रंग सनबो करथि त तकर उपयोग मात्र प्रधानमंत्रीतक सीमित हो।

कलकत्ता, २३-१-१-८२। आइ स्थानीय मित्र संघक दिस सं विदाथी सदस्य श्री लखन राय जीक सम्मान मे सभा भेल तथा हुनका सभ सदस्य भावभीनी विदाइ देलनि। एहि अवसर पर संघक अध्यक्ष श्री सत्यनारायण राय जीक पदोन्नति उपलक्ष्य मे माल्य प्रदान कएल गेल। श्री राय अपन परीश्रम आ बुद्धिक बल पर एगो साधारण स्टाफ सं पचैंज आफिसरक पदधरि पहुंचि चुकलाह-ए से निश्चित संघक लेल गर्वक विषय थिक तथा सदस्य लोकनिक लेल शिक्षाप्रद। संघ आशा करैछ जे एहिना आनो सदस्य लोकनि आगू बढ़ताह आ अपन संघक संगहि समाजक गौरव उद्योताह।

—रामाधार मिश्र
सचिव
मित्र संघ

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स, १२-बी, वृन्दावन बेशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अंक—७ अप्रील, १९८२ मूल्य—पचास

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि·जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

सम्पादकीय

भीख नहि अधिकार चाही

संसद मे फेर एक खेप मैथिली कें संविधानक आठम अनुच्छेद मे सम्मिलित करबाक प्रश्न आयल। श्री योगेन्द्र झा जतबे सहजता सं ई प्रश्न रखलनि सरकारी पक्ष ततबे सहजता सं एकरा अस्वीकारि देलक आ फेर ततबे सहजताक संग योगेन्द्र बाबूक संगहि समस्त मिथिलांचलक संसद लोकनि सुनि लेलनि। खिस्सा खतम पैसा हजम।

भोगेन्द्र बाबूक एहि तरहक प्रश्न-प्रस्ताव एहि सं पूर्व राखि चुकल छथि। प्रस्ताव आनो सदस्य (इन्दिरा कांग्रेस छोड़ि) राखि चुकल छथि। किन्तु एहि दिशा मे भोगेन्द्र बाबू आ हुनक दल सभ सं आगू अछि—से बरि निर्विवाद।

भोगेन्द्र बाबूक अतिरिक्त आर जे सदस्य मैथिलीक चर्च संसद मे कहियोकाल करैत छथि ताइ मे सर्वश्री राजेन्द्र प्रसाद यादव आ शिवचन्द्र झाक नाम लेल जा सकैछ। ओना शपथ ग्रहणक समय मातृभाषा मैथिली मे शपथ लेबाक लेल दृढ़प्रतिज्ञ श्री हुकुमदेव नारायण यादवक बात बिसरल नहि जा सकैछ जे अन्ततः संस्कृत मे शपथ लेलनि परञ्च हिन्दी मे नहि। यादव जी एहि लेल धन्यवादक पात्र छथि। शिवचन्द्र झा अपन वक्तव्य मैथिली मे नहि राखि सकबाक विरोध मे अवन त्यागि कए एगो उदाहरण प्रस्तुत केने छथि। परञ्च दुखक संग लिखय पड़ि रहल अछि जे जखन मैथिलीक संवैधानिक मान्यताक प्रश्न उठैत छैक त ई लोकनि एकबद्ध नहि भ पबैत छथि—जेना पंजाब, तामिलनाद वा बंगालक सांसद लोकनि मे देखल जाइछ। जुता-चप्पल आ कुर्सी फेकनाइक कथा संसदक इतिहास मे पुरान अइ परञ्च हिनका लोकनिक न्यायोचित माङ जखन लतिया देल जाइत छनि तखन ई सभ चिचिआयो ने पबैत छथि से अचरजक बात अवस्से थिक। एहि सं कम सं कम एतेबरि त अवस्से होइतैक जे किछु कालक लेल संसदक कार्यवाही ठप रहितैक आ प्रेसवलाक ध्यान एहि दिस जइतैक। परञ्च जे हेतु ई लोकनि प्रस्तावटा राखि चुप भ जाइत छथि तें हिनका लोकनिक नेत पर संदेह स्वाभाविकें।

जहांधरि सरकारक प्रश्न अछि, हमरा लोकनि कतेको बेर लिखि चुकल छी जे कांग्रेसी सरकार जन्मजात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि, ओ एकर कल्याण नहि देखय चाहैछ। ओकर एहि बात मे कनियो दम नहि छैक जे संविधान मे नहि रहनो सभ भाषा के समान विकासक सुयोग सुविधा देल जेतैक। ई निठाह फूसि थिक—चालाकी थिक, ठकपनी थिक। हमरा लोकनि जनैत छी जे सरकार ओही भाषाक विकासक हेतु खर्च करैछ जे संविधान मे छैक। संविधान मे नहि रहबाक कारणे मैथिली केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा सं बारल अछि। केंद्र सरकारक पोआ बिहार सरकार जखन उर्दू कें दोसर राजभाषा घोषित केने छल त ओ स्पष्ट कहने छल जे मैथिली कें राजभाषा एहि लेल नहि बनाओल जा सकैछ जे ओ संविधान मे नहि अछि। ओना हमरा लोकनि जनैत छी जे नेपाली संविधान मे नहि रहितो बंगालक दोसर राजभाषा थिक। हमरा लोकनि जनैत छी जे संविधानक बहन्ना बना कें बर्खों पहिने विधान सभाक सदस्य श्री नर्मदेश्वर सिंह आजाद कें मैथिली मे शपथ ग्रहण करबा सं रोकल गेल छलनि आ हाल मे श्री हुकुमदेव नारायण यादवक संग संसद मे सेहो एहने घटना भेलए। संविधान मे नहि रहबाक कारणे सं सरकारी कोनो विज्ञप्ति मैथिली मे नहि छपैत अछि आ एहि राशि सं मैथिली पत्र-पत्रिका कें वंचित राखल जाइछ। संविधानक कारणे आकाशवाणी वा दूरदर्शन सं मैथिली प्रोग्रामक प्रसारण नहि कएल जाइछ आ एहि तरहें मिथिलाक प्रतिभा कें सुयोग सं तथा सहयोग सं वंचित कएल जाइछ। जं सरिपहुं एहि सं फर्क नहि पड़ितैक, जेना कि बेर-बेर सरकारी पक्ष दलील पेश करैत रहल-ए, त संविधानक एहि अनुच्छेदक प्रयोजनें की छलैक ? किएक ने एकरा फाड़ि फेकल जाइछ ?

थोड़ेकालक लेल जं मानियो ली जे सरकार अपन वचनक पालन करत आ संविधान बहिर्भूत भाषाओ कें ओ समस्त सुविधा देतैक जे संविधान सम्मत भाषा कें देल जाइछ त कि ई भीख देनाइ नहि भेल ? सरकार कें ई जानि लेबाक चाहिऐक जे मैथिल जाति मे आन कोनो वस्तु भलें नहि होइक परञ्च आत्माभिमान अवश्ये छैक। अयाचीक संतान भीख कथमपि नहि ग्रहण क सकैछ। जगन्नाथ मिश्र तथा अन्य कांग्रेसी नेता जकां जं ओ चारि कोटि मैथिल सन्तान कें श्वान प्रवृतिक मानैत हो त ई ओकर भयंकर भूल थिकैक।

मिथिलावासी कें अपन अधिकार चाहिऐक। जं सरकार ओकरा भारतीय नागरिक मानैत अछि त अन्यान्ये नागरिक जकां ओकरो समस्त अधिकार भेटक चाहिऐक। आ जं से नहि भेटैत छैक त नागरिकोचित कर्तव्यो करैक लेल ओ बाध्य नहि अछि। जाइ संविधान मे मैथिलीक चर्च नहि, जाइ मानचित्र पर मिथिलाक नाम नहि तकरा सम्मान देबाक लेल ओ बाध्य नहि अछि आ ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक गाम-गाम मे सार्वजनिक स्थान पर एहि संविधान आ मानचित्रक होलिका दाह कएल जायत। जाइ झंडा पर ओकर अधिकार नहि छैक तकरा उतारि अपन स्वतंत्र झंडा फहड़ेबाक लेल ओ सतत तैयार रहत—जं सरकारक इएह रवैया रहतैक।

कोनो वस्तुक सीमा होइत छैक। सहन-शक्तियोक सीमा छैक। पैंतीस बर्ख सं मिथिलावासी सहैत आयल-ए परञ्च ई बान्ह जहिया टूटि जेतैक भारत सरकारक खेमाता नहि छैक जे ओकरा बान्हत। मिथिलाक भौगोलिक-ऐतिहासिक अवस्था कें सरकार एक बेर नीक जकां मन पाड़ि लिए आ समय रहिते सम्हरि जाय ताही मे सरकारक संग राष्ट्रोक कल्याण छैक। संगहि मिथिलाक नेता लोकनि कें सेहो सचेत भ जेबाक चाहियनि। ओ हिड़वा छवि मैथिल कें आर अधिक दिन भ्रम मे नहि राखि सकैत छथि। समय ककरो लेल बैसल नहि रहैछ। क्रांतिक आगि दिन तका कें नहि पजरैछ।

।। जय मैथिली

श्रमएव जयते

अपना देश मे कहियो सत्यक जीत होइत छलैक। ई ओ समय छल जखन भारत सोन-चिड़ैयाक रूप मे जानल जाइत छल आ एहठाम दूधक नदी बहैत छलैक। तहिया हमर नेता लोकनि मे स्तरहीनता अवश्से छलनि, काबिलतीक अभाव छलनि, परञ्च ओ लोकनि बइमान नहि छलाह। जं बइमानी कतौ बुझाइयो पड़ैत छल त से मूल्यहीनताक कारणे नहि अपितु दूरदर्शिताक अभावें। तें हुनका लोकनिक मन मे सत्यक एकगोट आग्रह छल आओर ओ लोकनि सत्यमेव जयतेक नारा लगबैत छलाह। किन्तु आइ सत्य हारि कें एक कोन मे अपन मुंह नुकओने बैसल अछि आ झूठक तिरंगा फहरा रहल छैक। हमरा सभकें तत्कालीन नेतागणक मोन मे ई प्रश्न उठलनि जे जखन सत्यक विजय होइते ने छैक तखन सत्यमेव जयते कहबाक अर्थे की।

'सत्यमेव जयते'क ओनहुना अवमूल्यन भ गेल छैक। जाइ भारत सरकार द्वारा चलाओल गेल टाका पर अशोक स्तंभक नीचा सत्यमेव जयते लिखल रहैछ ओकर अधिकांश भाग (मेहनति कें छोड़ि कं) झूठ चालाकी सं कमाएल जाइछ। चोरी-चलाकी सं कमाएल टाकापर 'सत्यमेव जयते' ओहने मखौल थिक जेना कचहरी मे भाराक गवाह द्वारा गीतापर हाथ राखिक कहनाइ—जे बाजब सत्य बाजब····

इन्दिरा गांधी एहि बातक असलियत कें जनताक नाड़ीए जकां पकड़ि लेलनि आ ओ एक गोट नव नारा देलनि—श्रम एव जयते। अर्थात श्रमक जीत हो। हुनका भेलनि जे एहि सं भारतक श्रमजीवी खुशी सं नचैत-नचैत कहत—देश के नेता इन्दिरा गांधी। आओर इहो जे हुनकर पहिलुक पुरिये जकां इहो छूइ उड़ि जायत।

श्रमक जीत होइ एहि मे भला ककरा आपत्ति भ सकैत छैक। परंच इन्दिरा गांधी ई नहि कहलनि जे ओ कोन श्रम थिक जकर विजय मे हुनका दिलचस्पी छनि ? ओ इहो नहि कहलनि जे जुआन बेरोजगार लोकक श्रम मे हुनका दिलचस्पी छनि वा नहि। हुनका कम स कम एतबो त खुलासा कहक चाहैत छलनि जे 'रोजगार दफ्तर' खाता मे नामांकित बेरोजगार सभक श्रमक जीत हेतैक वा नहि। हाथ-पएर दुरूस्त रहितो जे जुआन सभ बर्खों सं देशलग हाथ पसारने श्रम करबाक अवसरक याचना क रहल ए आ ओकरा सभकें से नहि देल जा रहल छैक—ओकरा सभक श्रम कें की हेतैक ? भरिसक इन्दिरा गांधी एहि पर सोचबाक श्रम नहि केलनि अन्यथा किछु दोसर परिणाम हुनका सामने होइत।

पहिल परिणाम त ई बहराइत कि श्रमक परिभाषा ओ जानि जइतथि। हुनका एकरो अन्दाज लगितनि कि एगो रिक्शावला आ ठेलावलाक एक घंटा श्रमक दाम पांचो टाका नहि होइत छैक जखन कि बिड़लाक एक घंटा श्रमक दाम पांचो लाख सं बेसी होइत छैक। भारतक एगो मिल मालिक लाखों-करोड़ो सं खेलाइए जखन कि ओही मिलक मजदूर 'ओवर

श्रमएव जयते…

टाइम'क श्रम कैलाक बादो अपन स्त्री-बच्चाक आवश्यक आवश्यकताओके पूर्ति नहि क पबैछ : पता ने इन्दिराजी एहि दुनू श्रम मे सं ककर विजय चाहैत छथि।

जाइ देश मे श्रमक आदर होइ छइ ताइ ठाम लोक बेरोजगार नहि होइए। किन्तु महान भारत वर्ष मे इन्जीनियरो हजारोक संख्या मे बेरोजगार अछि। स्पष्ट अछि जे अपन देश मे पाव विकासक योजना नहि अछि। अगर योजना रहिते त कोनो इन्जीनियर कें बेरोजगार हेबाक प्रश्ने ने उठैत। आओर अपना देशक इन्जीनियर ठीकेदारीक लेल धन्नासेठक सामने पंक्तिबद्ध याचक बनि ठाढ़ नहि होइत।

आर त आर, पूरा देश मे रोग आओर रोगीक संख्या मे रोजीना वृद्धि भ रहल छेक, किन्तु अपना देशक डाकडर बेरोजगार अछि। एहि सभक बावजूदो जं इन्दिरा गांधी श्रमक विजय चाहैत छथि त एहि मे हुनकर कोन दोष ?

इन्दिरा गांधी एखन जाइ भोलापनक संग श्रमक विजय चाइलनिहैं, ताही भोलापनक संग बीस सूत्री केर विजय सेहो चाहैत छथि। अही भोलापनक संग ओ पछिला दिन इहो कहलनि जे 'अमीर चाहे आर बेसी अमीर किएक ने भ रहल हो किन्तु गरीब आओर गरीब नहि भ रहल अछि।' बूझि पड़ैछ जेना अपना देशक गरीबक हुनका प्रतिपल सूचना भेटैत होनि। ओना एमहर दीर्घ दिन सं ओ एहि बात कें दोहरा रहल छथि जे चीज वस्तुक दाम घटि रहल-ए। परञ्च मजाक बात त ई थिक जे सरकारी–बेसरकारी आफिस मे प्रत्येक आदमीक महगाइ भत्ता बढ़ि रहल छेक। अगर चीज-वस्तुक दाम घटि रहल छेक तखन महगाइ भत्ताक बढ़नाइक गणित त वैयो ज्योतिषीए क सकैत छथि।

ओना भ सकैछ जे कोनो दिन भोरे नीन टुटिते इन्दिराजी के मन मे ई बात आयल होनि जे पहिलका समस्त नारा पुरान भ गेल, तें बीमार देश के एक नव औषधक खगता छेक। हुनका भरिसक इहो भेल होनि जे आइ संस्थान मे पहिने लोक श्रम करे सं हिचकिचाइत नहि छल, तते आइ-काल्हि ताश खेलाइत देखाइ पड़ि रहल-ए। जेना कि बेंक कर्मचारी, कोयला उद्योगक वरिष्ट कर्मचारी। हुनका एहनो बुझाएल होनि जे रेल के देरी सं चलनाइ श्रमक प्रति लज्जाभावक कारण थिक। तें ओ नारा देलनि कि हे राष्ट्रीयकृत संस्थानक कर्मचारी लोकनि आबो अहां सब कें श्रम करे मे लजेबाक नहि चाही। किएक त अन्ततः जीत श्रमे के होइत छेक।

अर्थात आब सत्य नहि विजयी भ सकत। सत्य सं पैघ चीज श्रम थिक। हुनकर एहि बात कें यदि सभ लोक गंभीरता सं ग्रहण करथ त नेता झूठ बाजबा मे आर बेसो परीश्रम शुरू करताह। बेरोजगार नओजुआन जे अर्थाभाव आ कुण्ठाक कारणे गलत दिशा मे डेग उठा चुकल-ए ओ ओहि दिशा मे आर बेसी सक्रिय भ जायत। किएक त आब ओकर श्रमक विजय हेतैक।

एहि सभक संग ई प्रश्न अहांक मन मे उठि सकैछ जे आब श्रमक जीत हेतैक त कि पहिने श्रमक जीत नहि होइतछ लैक ? त आइ, हमर एक विनम्र सलाह मानू जे एहि विषय पर आर अपन माथ जुनि घमाउ। किएक त हमरा लोकनिक प्रधान मंत्रीकें कहियो काल एहन 'नारानुमा' मजाक करबाक आदति रहलनिहैं।

ओनहुना अपना ओतय नाराक पुरान परम्परा रहल-ए। सुभाष बोस कहने छलाह —'तों हमरा रक्त दे, हम तोरा आजादी देबौक।' एक निर्दोष तरहक श्रम ओहु मे छल। लोक रक्त देबाक लेल तैयारो भेल। अन्ततः आजादी भेटलेक। किन्तु रक्त देबा मे थोड़ेक कसरि रहि गेलेक आ हमरा लोकनि कें जे आजादी भेटल से असली आजादी नहि, कारण ओ लड़ाई सं नहि समझौता सं भेटल छल। एही कारणे किछु सवाल तहिया नहि हल भ सकल आ हमरा लोकनि कें माउन्ट बेटन क बदला नेहरू भेटि गेलाह। आओर जे हेतु माउन्ट बेटन अपना संग कुर्सी आ अपन व्यवस्था नहि ल गेलाह आ तकरा उपहार मे भारत कें देने गेलाह, तें उएह व्यवस्था एहिठाम फुलाइत फरैत रहल आ ओहि मे जखन फल भेलेक त ओकरा संचय कै रूप मे एहिठामक जनता देखलक। ओहो अपन पांच सूत्री लइए क हमरा लोकनि समक्ष आयल छल।

आजादीक जाइ लड़ाइ मे तिलक 'आजादी हमर जन्मसिद्ध अधिकार अछि' कहने छलाह, तकर अर्थ आजुक नेतागण गलत लगओलनि। तें इन्दिरा गांधी हड़ताल आओर उचित मांगक लेल आवाज उठओनाइ पर पाबन्दी लगा देलनि। लाल बहादुर कहलनि—'जय जवान जय किशान।' 'जय जवान' पर लिखबाक छूट नहि कारण प्रतिरक्षाक मामिला छेक, परञ्च 'जय किसान'क बारे मे त एतेक कहिए सकैत छी जे ओकर स्थिति ककरो सं नुकाएल नहि छेक। अन्न उपजा क भरि देशक पेट भरनिहार किसान अपने भूखे मरि रहल-ए। एहना हालत मे जं इन्दिरा गांधी श्रमक विजय चाहैत छथि त एहि मे हुनकर कोनो दोष नहि।

—अनिल ठाकुर

कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर

कविपति विद्यापति कें जं मैथिली भाषा-साहित्यक पिता मानल जाय त कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर कें बिनु संकोचक जनकक स्थान पर प्रतिष्ठित कएल जा सकैए। दुर्भाग्यक बात जे एहन अप्रतीम पदक अधिकारी, मिथिला-विभूतिवर ज्योतिरीश्वरक परिचय हमरा लोकनि कें बड़ बिलम्ब सं भेटल, आ आइयोधरि पूर्ण परिचय न हि प्राप्त भ सकल। एक दिस जं ई 'मिथिला-मैथिलीक' हेतु दुर्भाग्यक विषय थिक त दोसर दिस मैथिल जातिक निमित्त घोर लज्जास्पद एवं पतनोन्मुखी प्रवृतिक परिचायक। एहिठाम ई कहनाइ अनर्गल नहि हएत जे प्रतिवर्ख मैथिली मे दर्जनो 'विद्वान' पी०एच०डी०, डि० लिट प्राप्त करैत छथि परञ्च हिनको ध्यान एहि बा एहने कतेको विभूति—जनिक परिचय एखनो अज्ञात भइ दिस नहि गेलनि। अथवा एना कही जे विद्वता नहि मात्र उपाधिक भूखल, मिथिला-मैथिलीक नहि मात्र अपन स्वार्थ पूर्ति लेल आकुल तथाकथित विद्वान लोकनि एहि मे अपन अमूल्य समय बेरबाद केनाइ उचित नहि बूझि—विद्यापति, जनिका पर बड़ बेसी काज भेलए—भनहि ओ सभ फालतूए किएक नहि हो—तिनका पर शोध केनाइ श्रेयस्कर बुझैत छथि, कारण विभिन्न पोथी सं दस-बीस लाइन नकल क लेने सहजहि पैघ पोथा तैयार भ जाइत छनि आ उपाधि लैल ताइ सं बेसी चाहबे की करी !

'धूर्त समागम', पंचसायक तथा रंगशेखरक रचयिता कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर संस्कृत साहित्य मे पूर्ण प्रतिष्ठित आ परिचित रहितहु मैथिली जगत मे अपरिचिते छलाह। १९४० मे जखन म० म० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा नेपाल राज लाइब्रेरी सं प्राप्त हिनक मैथिलीक आदि गद्य ग्रंथ वर्ण रत्नाकरक प्रकाशन भाषाचार्य सुनीति बाबूक प्रयासें हुनकहि सम्पादन मे एशिएटिक सोसाइटी सं भेल—तकर बादे अपन विभूति कें हमरा लोकनि चीन्हि सकलौं।

'धूर्त्त समागमक'क अनुसार हिनक समय तेरहम शताब्दी छल तथा ई रामेश्वरक पौत्र ओ धीरेश्वरक पुत्र छलाह। स्व० ईशनाथ बाबूक अनुसार ई बाबू पाली (पाली मोहन) गामक छलाह। संभवतः ईशनाथ बाबूक एहि मान्यताक आधार सेहो उक्त पोथीए हो जाइ मे श्रीमत्पल्लि जन्मभूमिना……'क चर्च कवि शेखर स्वयं केने छथि। ओना नगेन्द्र नाथ गुप्त महाशयक अनुसार ज्योतिरीश्वर ठाकुर कविपति विद्यापतिक पितामहक पितियौत छलाह। वास्तविकता जे हो, परञ्च ईश्वरि सत्य जे एहि संदर्भ मे अपेक्षित अनुसन्धानक त कथे की—वर्ण रत्नाकरक एगो नीक संस्करणो आइधरि मैथिली मे प्रकाशित नहि भ सकल।

कविशेखराचार्यक विद्वता कुनू एक दिशा मे सीमित नहि छल। दर्शन, साहित्य, संगीत मे हिनक समान अधिकार छलनि तथा कतेको भाषाक प्रकांड पंडित छलाह। पंचसायक मे ई अपना सम्बन्ध मे कहैत छथि—

अस्ति प्रत्यहमर्थिताप्रहरणः
लक्षुप्तेक दीक्षा गुरुः
श्रीकण्ठार्च्चनतत्परो भुवि
चतुःषष्टेः कलानां निधिः।
संगीतागमसत्प्रमेय रचना
चातुर्य चूड़ामणिः (स्वर)
ख्यातः श्रीकविशेखरार्पितपदः
श्री ज्योतिरीशः कविः॥

एहिपोथीक शेष ओ निम्न श्लोक सं कैने छथि—

यावच्चन्द्र कला किरीट हृदये
शैलात्मजा तिष्ठति
यावद् वसति माधवस्य सकला
सानन्दमादिस्यति।
यावत् कामकला विवर्त चटुला
क्षोणीतले सर्व्वदा
तावत् श्री कविशेखरस्य कृतिना
तावत्पदे दीव्यताम्॥

धूर्त समागम मे ओ लिखैत छथि—

तस्योदण्ड-भुजप्रताप दहन
ज्वाला निरस्तापदो
राज्ञः सर्वगुणानुराग्य पदवी
विद्योतनाचार्य्यकः।
यो धीरेश्वर वंश मौलितिलको
दातावदातासयम्,
तस्य श्री कविशेखरस्य कविता
सच्चित्तमालम्बते॥

तद्नेन सकल संगीत विशेष विद्योतनाभिनव भरतेन पुरमथन-पदारविन्द द्वन्द्व-वन्दारुकरपल्लवेन निखिल भाषोपभाषाशुभंभावुक सरस्वती कण्ठाभरणेन अनवरतसोमरसास्वादकषायकण्ठ कन्दलीनरी नृत्यमान मीमांसा महोत्सवेन रामेश्वरस्य पौत्रेण तत्र भवतः पवित्र कीर्तें धीरेश्वरस्यात्मजेन महाशासन श्रेणीशेखर श्रामत्पल्लि (श्रीमत्पल्लि-Nepal N.S.) जन्मभूमिना कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरेण निजकुतूहल विरचितं धूर्त समागमं नाम नाटकम्; प्रहसनमभिनेतुमादिष्टोऽस्मि।

एवंप्रकारे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक व्यक्तित्व आकृतिक परिचय हमरा लोकनि कें हुनके लेखन द्वारा प्राप्त होइछ।

वर्णरत्नाकरः मैथिलीक आदि गद्य-ग्रन्थ हेबाक गौरव जाइ पोथी कें प्राप्त छेक से थिक वर्ण-रत्नाकर—कविशेखरक एकमात्र मैथिली कृति जे आइधरि हमरा लोकनि कें प्राप्त भ सकलए। ओना बहुतो विद्वान हिनक 'धूर्त समागम' कें सेहो मैथिलीक मानि एकरा मैथिलीक प्रथम नाटिका कहैत छथि, परञ्च एहि पर मतैक्य नहि भ सकलए।

वर्ण-रत्नाकर मात्र मैथिलिएक आदि गद्य-ग्रन्थ नहि, अपितु समस्त नव्य भारतीय भाषाक आदि गद्य ग्रन्थ थिक कारण आइ धरि कुनू भाषा मे एहि सं पहिलुक वा एकर सम सामयिक गद्य-ग्रन्थ नहि प्राप्त भ सकलए।

म० म० हरप्रसाद शास्त्री तथा सुनीति बाबू एकरा 'वर्णन रत्नाकर' कहने छथि आ एही सं एकर महत्ता ओ विषय वस्तुक परिचय प्राप्त होइछ। हिनका लोकनिक मतानुसार एहि पोथीक उद्देश्य-भावी कवि ओ कत्थक लोकनिक निमित्त एकटा पथ-प्रदर्शक ग्रन्थ बनाएब छलनि, यथा, यदि

(शेषांष पृष्ठ पांच पर)

नारी, विधवा काटर आ हमर समाज

"आ, विवाहक दुइए-तीन बर्खक बाद कादम्ब विधवा भ' गेलीह। कादम्ब अर्थात् कादम्ब विधवा छथि आ जखन एहि अष्टा-दशवर्षीया विधवा कें देखैत छी त' मोन होइत अछि जे आगि नेसि दी वेद आ पुराण मे आ मनुस्मृति मे आ एहि देशमे जत' कादम्ब सन स्त्रीक शरीरकें वैधव्यक आगिमे भस्म कं' देल जाइत अछि! ओहि दिन कादम्ब भेंट करय आइलि छलीह त' कन्हौलीवालीक नवजात शिशु'कें केहन सिनेहसं कोरामे झुलबय लागलि छलथिन, कतेक दुलार करैत रहलि छलीह। आँखिमे केहन मातृत्व छलनि....आँखि निहुड़ओने दोकान लग ठाढ़ युवक सभक पिआसल दृष्टिसं अंग-अंगकें नुकओने, नहुएँ-नहुएँ डेग करैत कादम्ब कल्लनजीक दरवाजाक अ'ढ़मे सन्हिया जाइत छथि—जीवनक अन्हार आकाश मे भसिआयल जाइत जल-शून्य उज्जर मेघ सन कादम्ब।

...."जेना बिन रंगल, बिन माटि चढ़ाओल भगवतीक-मूर्तिक खढ़क साँचा.... रोगक मारल, सुखायल देह, कोटरगत, धँसल-धँसल आँखि, ज्योतिहीन, मन्द-मलिन दृष्टि, मैल, परम मैल नूआ आ तेओ हजार टा चेफरी लागल आ तेओ हजार ठाम फाटल नूआसं जीवनक दरिद्रता, देहक दरिद्रता, अस्तित्वक दरिद्रता, प्रदर्शित होइत।

...."आइ निर्मला दीदी मेनका छथि, काल्हि कादम्ब हेतीह, परसू कर्पूर दाइ हेतीह; कतेक कर्पूर दाइ हेतीह आ कोनो कण्व ऋषि नहि हेताह जे मेनका-सन्तानक रक्षा करथि। सभ विश्वामित्र हेताह, मेनकाक शरीर सं वात्स्यायनक कामसूत्रक अभ्यास करयवला, सभ दुष्यन्ते हेताह, मेनका पुत्रीक देह-रास-लीला करयवला...."

राज कमल चौधरीक एक कथा "सहस्र मेनका" सं लेल ई तीन अवतरण थिक। एहि कथाक तीन ठामसं उठाओल गेल तीन टा अवतरण मे एकटा बात छेक, एक गोट पीड़ा छेक। ई पीड़ा हजार-लाख बर्खक पीड़ा थिक। एहि पीड़ाक कोनो मानवीय समाधान नहि अछि। सभ पीड़ाक हल छेक, मुदा एहि पीड़ाक कोनो हल तकबाक कोनो प्रयास आइयो नहि भऽ रहल अछि।

मिथिला आइ पछड़ल-पछुआयल अछि। दरिद्रता छेक। अशिक्षा छेक। कुरीति छेक। धर्म आ धार्मिक कर्मकाण्डसं उत्पन्न अन्हारसे बौआइत जनता छेक। दरिद्रक शोषण होइत छेक।

दरिद्रोमे दरिद्र छथि मैथिल नारी। शिक्षा नहि धन नहि। बापक धन मे व्यावहारिक हक नहि। अपन रोजगार करबाक छूटि नहि। नोकरी आ दोकानदारी करबाक कोनो सामाजिक परम्परा नहि।

मैथिल नारीक जतेक शोषण आ दमन भऽ रहल अछि। तकर जोड़ा संसारक कोनो भागमे, कोनो कालमे नहि भेटत।

संयुक्त राष्ट्रसंघक मानवाधिकार समिति जेहेन-जेहेन शोषण दिस विश्व-जनमतक ध्यान आकृष्ट करैत अछि, ताहिसं भयावह आ अमानवीय ई शोषण थिक। मुदा संयुक्त राष्ट्रसंघो एम्हर ध्यान नहि देत, तकर कारण छेक जे मनु महाराजक शिकंजा मे कसि कऽ गलाइल मैथिल नारी धर्मक अग्निकुण्ड मे जीविते जराओल जाइत अछि। धर्मक लक्ष्मण-रेखामे राजनीति, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र घोसिआयल मे डेराइत अछि।

लोक कहैत अछि जे अहाँ लोकनि समाजक नेता छी। अहाँ लोकनिक कलममे बड़ शक्ति अछि। समाज कें सुधारू। व्यवस्था-प्रथापर हमला करू। विधवा-विवाह लेल समाज कें प्रेरित करू।

हम कहैत छिऐक जखन कुमारि कन्याक विवाहमे वरपक्ष हजार-लाख मङैत छेक, तं विधवाक विवाहमे वरपक्ष कतेक मङ्तक?

कुमारी कन्याक रूप-गुण-शिक्षाक कोनो मूल्य जखन एहि समाज मे नहि छेक, तं विधवाक मूल्य के बूझत? तें विधवा-विवाहक सामूहिक-सामाजिक प्रयासो कयलापर कोनो लाभ होयबाक संभावना नहि अछि। कोनो नव रीति चलायब हमरा बुझने सम्भव नहि लगैत अछि।

लोक कहैत अछि जे व्यवस्था-प्रथा आकाश लागि गेल। कन्या सभ अजगिर भेल जा रहल अछि। एहि व्यवस्थाक कोनो आ कत्तहु अन्त छेक की नहि?

हमरा बुझने एखन आ एहि स्थिति मे ई प्रथा एखन बढ़त आ एकर अन्त एखन सम्भव नहि अछि।

काटर-प्रथा जाहि रूप मे एखन प्रचलित अछि, ओकर इतिहास नव छेक। पहिने, आइ सं तीस-चालीस बर्ख पूर्व जातिक मूल्य चुकाओल जाइत छलेक। ओ एकदिशाह वरमूल्ये नहि छलेक, कन्योक मूल्य छलेक। आ ने ओ वरमूल्य छलेक आ ने कन्यामूल्य छलेक, ओ जातिक मूल्य छलेक। एहि मे नगदीक कारबार भेयो सकैत छलेक आ नहियो भऽ सकैत छलेक। तें एक प्रकारें ई जातिगत श्रेष्ठताक मूल्यांकन आ स्वीकार छलेक। ई कटु आ भयावह नहि छलेक। ई समाजक अभिशाप नहि छलेक।

शिक्षाक प्रचार-प्रसार, युरोपीय शिक्षाक व्यापक होयबा सं हम आजुक व्यवस्था-प्रथा कें जोड़ैत छी।

जाधरि वर डाक्टर-इंजीनियर नहि होइत छलाह, नोकरीक कोनो योग्यता-क्षमता हुनका मे नहि रहैत छलनि, तहिया धरि लोक जाति सं कुल सं श्रेष्ठ बूझल जाइत छल। आजुक लोक धन सं, धन कमयबाक क्षमता सं, पद सं पैघ बूझल जाइत अछि।

जहिया धरि लोक आइ जकाँ युरोपीय कुशिक्षा सं पीड़ित नहि छल, तहिया धरि व्यवस्था-प्रथा एतेक भयावह नहि भेल छलेक। जेना-जेना हमरा लोकनिक युवक नोकरी वला शिक्षा पबैत जयताह, नीक धन बटोरऽ वला पद आ नौकरी पबैत जयताह, हुनक दाम बढ़ल जयतनि। आजुक पाश्चात्य शिक्षा आ शिक्षाक बलें नोकरी तकबाक ई दौड़ व्यवस्था कें बढ़ौलक अछि, बढ़ा रहल अछि आ आगुओ बढ़ाओत। लोक शिक्षाक प्रति साकांक्ष-सावधान भेल अछि; लोक नोकरी मे पाइ कमायवाला पदक प्रति साकांक्ष भेल अछि। तें लोक व्यवस्था आ वर-मूल्यक प्रति दिनानुदिन बेस आसक्त भेल जा रहल अछि। तें हम देखैत छी जे व्यवस्था प्रथा घटबाक स्थान पर बढ़ैत अछि।

लोक कहैत अछि जे शिक्षा बढ़तैक, जागरण बढ़तैक, लोक व्यवस्थाक क्रूरता, अमानवीयता आ अनुपादेयता कें बूझत आ काटर-प्रथा समाप्त भऽ जायत। हम एकर उनटा देखैत छी, शिक्षा बढ़बाक संङ संङ काटर-प्रथा बढ़ैत अछि, घटैत नहि अछि।

हम आजुक प्रचलित शिक्षा-प्रणाली कें, युरोपीय शिक्षा प्रणाली कें कुशिक्षा कहल अछि, से हम जानि कऽ कहल अछि। आजुक शिक्षा नोकरी करऽ वला लोक जनमा रहल अछि, विवेकशील मनुष्यक निर्माण नहि कऽ रहल अछि। प्रचलित शिक्षा सं लोक धन-लोलुप भेल अछि। वेतनेक पाइ नहि, जाइलो पाइओक लोभ नोकरी पेशा वला सभ मे हूरि-हूरि भरल छेक, ई लोभ येह शिक्षा उत्पन्न कयलक अछि। काटरक लोभ आ नोकरी द्वारा वैध-अवैध ढंग सं अर्जित कयल जाय वला धनक लोभ कें हम फराक-फराक नहि बुझैत छी।

जाधरि ई शिक्षा विलासी, लोभी, समाज-चेतना सं विहीन लोकक निर्माण करैत रहैत, ताधरि ई शिक्षा कुशिक्षा रहबे करत। सुशिक्षा ओ थिक जे व्यक्ति कें वैयक्तिक लाभ-हानिक चिन्ता सं उपर उठा कऽ ओकरा सामाजिक हानि-लाभक चिन्ता सं उदार, बलिदानी आ श्रेष्ठ बनाबय।

मिथिला मे छागर-पाठीक मूल्य छेक, बड़द-महीसक मोल होइत छेक, कुमारि कन्याक कोनो मोल नहि छे। जऽ कुमारि कन्याक मोल नहि छेक, ततऽ विधवा स्त्री आ साधारण स्त्रीक की मोल होयतैक?

मिथिलाक स्त्री जखन मनुक्ख नहि छथि। कन्यादान शब्दो सूचित करैत अछि जे नारी दान मे देबाक वस्तु थिक। जनानी लोक नहि थिक। जनानी धान, चाउर, गाछ आ दूटकही-एकटकही जकाँ दान देबा योग्य तुच्छ वस्तु थीक। 'धवरसा धेनु' जकां एक गोट वस्तु, एक गोट "कमोडीटी थीक।

● जीवकान्त

अज़गुत-अनटोटल

* जेना कि पता चललए, मिथिलांचलक संगहि सम्पूर्ण खिचड़ि-प्रदेश (बिहार) मे प्राथमिक कक्षाक छात्र लोकनिक बीच पोथीक लेल हाहाकार मचल अइ। मार्च मास बीति गेलेक परञ्च पोथीक कतौ पत्ता नहि छेक। बिहार मे एहि तरहक पोथी बिहार टेक्स बूक कर्पोरेशन छपैए आ ओकरे द्वारा एकर वितरणो कएल जाइए। ई संस्था बिहार सरकारक निजी संस्था थिक। ओना एहि संस्थाक लेल ई कुनू नव घटना नहि। प्रायः प्रति बर्ख एहिना होइत छेक। विशेषता एहि खेप ई छेक जे मैथिलीक संगहि आनो भाषाक पोथी उपलब्ध नहि छेक जखन कि आन-बेर आन-आन भाषाक पोथी त समय पर भेटि जाइत छलेक परञ्च मैथिली-पोथी अगस्त-सितम्बर सं पहिने नहि पठाओल आइत छल। भ सकैछ मैथिलीक शुभ-चिन्तक मुख्यमंत्री पर फेर ने कहीं मैथिली विरोधक आरोप लागनि आ तें 'खोप सहित कपुआय नमः।

ओना बिहार मे छात्र लोकनिक लेल ई एकमात्र समस्या नहि छेक, एहन कतेको समस्या छेक। उक्त संस्थानक पोथी सभ खुदरा पोथीक दोकान सं विद्यार्थी सभ कीनैए। मुदा ई पोथी ओकरा तखनहि दोकानदार दैत छैक जखन कि ओ ओइ विषय नोटक पोथी कीने लेल तैयार हो। नोटक पोथी त एहने रहैछ जे ओकर एको पाँती शुद्ध नहि रहैत छेक आने टेक्स्टक संग कुनू सम्पर्क। दाम टेक्स्टबूक सं ठामहि दोबर-तेबर रहैत छेक। परञ्च से नहि कीनने जे हेतु दोकानदार टेक्स्ट बूक देतैक नहि तें बाध्य भ लोक कें ओहो कीनहिटा पड़ैत छैक। असल मे टेक्स्ट बूक कमिटीक संग खुदरा विक्रेता सभक सांठि-गांठि रहैत छेक आ रहैत छेक नोट लिखनिहार छपनिहारक। आ एहि संगठित षड्यंत्रक शिकार बनैत अइ छात्रक अभिभावक सभ। सरकार सभ जनैत अइ—परञ्च ओकरा लिखें छल स।

मैथिलीक माध्यम सं पढ़निहार तथा मैथिली पढ़निहार छात्रक लेल त ओकरो समस्या ई छेक जे जखन कि ओही वर्गक आन भाषक पोथीक दाम दू-तीन टाका रहैत छेक ताइ ठाम मैथिली पोथीक दाम ठामहि दोबर रहैत छेक आ से सोचेश राखल जाइत छेक ताकि लोक मैथिली नहि पढ़ि हिन्दी वा अन्य भाषा पढ़य।

टेक्स्ट बूक कमिटी आ बिहार सरकारक ई सम्मिलित षड्यंत्र बर्खों सं चलि रलकए आ पता ने कहियाधरि चलैत रहत। अचरजक बात त ई जे तैयो छात्र अभिभावक लोकनिक कान ठाढ़ नहि होइत छनि जे एहि घृणित षड्यंत्रक विरोध करता। शिक्षाक समुदायक एक पैघ

(शेषांक पृष्ठ पांच पर)

लालबुझक्करक चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक जी महोदय

जय मैथिली।

आगा हालसुरति ई जे अपनेक पत्रिकाक फगुआ अंक मे अपना लेल कुनू उपाधि घोषित नहि देखि बवीटक्षभरि कष्ट लाल बुझक्कर के भेलनि। परञ्च करबे की करितथि, बहन कपाड़े जरल छनि त अहांक दोषे की? सम्पादक जी जं सत्त पुछी त कम सं कम एहि सन्दर्भ मे लाल बुझक्कर शत प्रतिशत मैथिल छथि। तें जं कुनू प्राप्यो बस्तु नहि भेटैत छनि त अपन भाग्य के दोष दय संतुष्ट भ जाइत छथि। ओना ई गप्प त अहूं के बुझले हएत जे जखन लोक के काज पड़ैत छैक त ओकरो सं तेहक जोगार कए लाल बुझक्कर जकां दौड़ैए किन्तु जहां कि काज भ गेले त फेर केसी तेरी रंगा।' तें ने आइधरि कहनो काज उदेम कतौ होइक, लालबुझक्कर कें लोक नोतो हकार देबाक खगता नहि बुझैए। आ एक छथि लाल बुझक्कर, जे बिनु हकारहि सभठाम उपस्थित। से कहै छी सम्पादक जी, भनहि मन पड़ि गेल, गत फरवरी मे पुर्णिया मे बाबा विद्यापतिक बर्खी बड़े धूम-धाम सं मनाओल गेल छल। भरि जवार मे बरबरना नोत छलैक। बारल छलाह त लालबुझक्कर। मुदा लाल बुझक्करो त तेहने, भनकी पचिते उपस्थित। ओना गाम सं जेवा मे कने बिलम्ब भ गेलनि आ तें ओ दोसर दिन पहुंचि सकला। परञ्च जेना कि कहबी छैक—जाएब नेपाल कपार संगहि, सेह परि हुनको संग भेलनि। जाइते देखैत छथि जे मंचपर मैथिल कुलदूषण—मुख मंत्री डा० श्री जगन्नाथ मिश्र गरजि रहल छथि। से कहैत छी देखिते देरी त लाल बुझक्कर के तरवाक लहरि टिकासन चढ़ि गेलनि। परञ्च करता की? छलाहो त बिनु नोतले।

सम्पादक जी, अहां एक पत्र मे लिखने रही जे वार्द्धक्यक कारणे स्मरण शक्ति कमज़ोर पड़ि गेलए। एहि निमित्त हम नियमित शीर्षासन करैक सलाह देने रही। जं अपने से करैत हैब त निश्चिते स्मरण शक्ति बढ़ल होएत आ तें अवस्से स्मरण होएत जे पटनाक चेतनाहीन समितिक मंच सं जगन्नाथ बाबू बाजल छलाह जे ओ मैथिलीक हेतु किछुओटा नहि करताह। परञ्च एहिठाम ओ फेर स्पष्ट भाषा मे कहलनि जे मैथिलीक संवैधानिक मान्यता दिएबा लेल बिहार सरकार बचनबद्ध अइ। ओ आरो कहलनि जे प्रधान मंत्री आ गृह मंत्री ने कि आश्वासन देने छथिन जे संविधान संशोधनक समय एहि पर गम्भीरता पूर्वक विचार कएल जायत।

सम्पादक जी अहां के भनहि जनाव जगन्नाथ खाँक बोली परिवर्तनपर अचरज लागय परञ्च जानथि दिनकर दिनानाथ जे लाल बुझक्कर के कनियो अगुत्ता लागल होइन। असल मे लाल बुझक्कर के नीक जकां बुझल छनि जे भारतीय नेता लोकनि कें बात बदले मे ओतबो समय नहि लगैत छनि जते बम्बैया सिनेमा कनायिका के कपड़ा बदले मे। तें जं मुख्यमंत्री महोदय कथनी मे परिवर्तन भेबे केलनि त एहि मे अचरजक गुंजाइश कतय छैक? आब राप्प रहल प्रधान मंत्री आ गृह मंत्रीक आश्वासनक। जं अपने अखबार पढ़ैत हएब त नीक जकां बूझल हएत जे किछुए दिन पहिने साम्यवादी दलक नेता श्री भोगेन्द्र झा जीक प्रश्नक जबाब मे गृहमंत्री साफे कहने रहथिन जे मैथिली कें संविधान मे स्थान नहि देल जेतैक। कहबा ई जे संविधानक संशोधन बड़ झंझटिया होइ छइ। ओना अहूं के बुझल हएत जे अपना बेगरतें सरकार—उठैत-बैसैत एहि मे संशोधन करैत रहल-ए। आ भाषा किएक छोट-छोट राज्योक निर्माण करिते रहल-ए।

जहांधरि प्रधान मंत्रीक बात अइ त तिनका त हमरा सं नीक जकां अहीं चिन्हैत होएबनि, कारण १९७० मे जे प्रतिनिधि मंडल हुनका सं भेंट केने छल ताइ मे अपनो रहबे करी। हं फर्क एतेधरि अवस्से अइ जे तखन प्रतिनिधि दलक संग श्रद्धेय ललित बाबू छलाह आ प्रधान मंत्री 'सहानुभूति पूर्वक' विचार करबाक आश्वासन देने छलथिन। एहि खेप ललित बाबूक अनुरूपे स्थात धून्धकारी जगन्नाथ बाबूक एकान्ती मे ओ 'गम्भीरता पूर्वक' विचार करबाक बात कहलीह-ए।

त से कहै छी सम्पादक जी, स्थिति त अहूँ सं आब नुकाएल नहिञे रहल हएत। परञ्च लाल बुझक्कर कें दुख एहि बातक भेलनि जे जनाव जगन्नाथ खाँक उपरोक्त घोषणा पर ओहिना थपड़ी गड़गड़ा उठल जेना सुकराती मे सूप गड़गड़ाइए आ जिम्हरे-तिम्हरे सं खाली ओकरे आवाज सुनाइ पड़ैत छैक। मुदा अहां के इहो बूझल जे ओइ सं दलिद्रा नहिञेटा पड़ाइत छैक। ने त कहू भला, पुर्णियाँ जे कि मिथिलाक एक महत्वपूर्ण स्थान अइ, मैथिलक गढ़ अइ ताइ ठामक कालेज मे मैथिली-प्रतिष्ठाक पढ़ाइ एखन धरि नहि छैक। हमरा त सरिपों बुझलो ने छल ई बात। आ एहू लेल मैथिली भाषी कें माङ करय पड़लनिहें। आरो हंसीक बात त ई भेल जे खां साहेब पुर्णिया मे विद्यापतिक मंदिरक निर्माण लेल एक लाख टाका देवाक आश्वासन देलनिहें। अहां के बुझले हएत जे विद्यापतिक डीहपर बिसफी में सांकेराति सं नढ़ैया कानब आरम्भ क देछ। सम्पादक जी बलिहारी कहो मैथिलक विवेक कें जे मात्र एहन मातृघातो सभ कें आमंत्रिते नहि करैछ, तकर पूजार्चनाओ करैछ आ ओकर वक्तव्य पर थपड़ीयो पीटैछ। असल मे मिथिला मे एक बड़ प्रचलित कहबी नहि छैक—बर्काऽक प्रत्याशा वला—से अधिक मैथिलगण ताही प्रत्याशा मे छथि। आ फल जे की हएत से त अहां सन बुझनुक लोक सं नुकाएल नहिञे हेवाक चाही।

हं त कहैत जे छलहुं, ओहीठाम सं फिरलाक पश्चात लाल बुझक्कर आत्मग्लानि व्याधि सं ग्रस्त भय ओछाअन धेने छथि आ तें अहांक आदेशानुसार रचना पठेबा मे असमर्थ छथि। भरोस राखू जे स्वास्थ्य भेला पर रचना अवस्से पठओताह। ओना अपने कें रचनाक अभाव नहि हो ताइ निमित्त ओ अपन प्रिय-बन्धु 'विश्वंयक' जी कें सेहो अनुरोध पत्र सरकारी डाक सं पठा चुकल छथि आशा करैत छथि जे शीघ्रे हुनक सहयोग अहां कें प्राप्त हएत। एखन एतबे।

अपनेक पत्रोत्तर नहि पठेबाक प्रबल आकांक्षी

श्रीमान् लाल बुझक्कर

बुझनुक ग्रामवासी

★

कविता

मीताक नाम

लिखबा ले बैसै छी
गंगा अवतरण-कथा
लिखने चलि जाइत छी
कोशी-प्रांगणक व्यथा
स्वाभाविक
छन्द-भंग
अभिशापित कौशिकीक
आर्तनाद कोलाहल
भैरवीक नृत्यक संग
क्रन्दन चिरकालिक थिक
संभव श्मशान मे
किन्नहु नञि स्तोत्र-पाठ
घंटा ध्वनि
शंखनाद
रक्तहीन, मांसहीन
कंकालक द्वेश
हमर मातृभूमि मिथिला ई
'विख्याता भुवनत्रयम्'
~~मिथिला ई~~
बिसरल कि जाइत अछि
मानै छी मीत
सत्य सरिपहुं आरोप तोहर
बीति गेल हमर, समय
लिखि नञि सकै छी आब
व्यर्थ करै छी प्रलाप
संकुचित विचार बोध गहने चलि जाइत अछि
किन्तु
हम वाध्य छी
जरबय त चाहै छी
आशक आलोक नव
निराशाक बिड़रो
सिझओने चलि जाइत अछि
लिखबा ले बैसै छी
कथा आजादी के
व्यथा बेरबादी के
लिखबाक ~~सिझओने~~ चलि जाइत अछि।

—राम लोचन ठाकुर

अजुगुत अनटोटल···

हिस्सा जे हेतु एहि षड्यंत्र मे सम्मिलित अइ—तें ओ सभ किछु करत से आशाए वैनाइ व्यर्थ—

× × ×

** पश्चिम बंगालक सरकार एमहर बाट बामक बहना बनाके 'टाना-रिक्शा' बन्न करे लेल उनाहुत्र अइ। ओना लोक जनैए जे बड़ाबाजार सन व्यस्त इलाका कें ट्रक आ टेम्पू जाम केने रहैत छैक ने कि रिक्शा। परञ्च गरीबक हिमायती हेबाक दाबी केनिहार मार्क्सवादी सरकार ट्रक-टेम्पू पर कुनू कारवाइ करबा मे पूर्ण असमर्थ अइ, जखन कि भरिदिनक जी-तोड़ परिश्रमक बाद ५-१० टाका उपार्जन केनिहार श्रमिकक मुंहक आहार ओ छीनि रहलए।

सरकारक कहब जे एहि ठाम लाइसेंस प्राप्त रिक्शा सं बेसी बिनु लाइसेंसक रिक्शा छैक आ मात्र तकरे पर रोक लगाबए चाहैछ। किन्तु जं सवाल मात्र लाइसेन्सक रहितेक त लाइसेन्स देनाइ सरकारक लेल पैघ बात नहि छलैक। जे ओकर मालिक सहयोग नहि करैत छैक त रिक्शा चालक नामे किछु पाइयो ल कें लाइसेन्स देल जा सकैत छलैक। एहि सं सरकारो कें किछु आमदनी होइतैक आ गरीबक आहारो नहि छिनितैक। मुदा बात से रहैक ए तखन ने। जेना कि पता लागलए, सरकार लाइसेन्स प्राप्त रिक्शाओ कें आठ बजे सकाल सं आठ बजे राति धरि मुख्य पथपर चलनाइपर प्रतीबिम्ब लगेबाक सोचि रहलए। स्पष्ट छैक जे आठ बजे रातिक बाद सं आठ बजे सकाल धरि रिक्शाक चलनाइ-नहि चलनाइ एक बराबर थीक—कारण जे एही समय मे सबारी भेटबे कते करतैक।

एहि सं जे मात्र रिक्शेवलाक क्षति हेतैक से बात नहि। साधारण लोक, जेकरा ने त अपन गाड़ी छैक आ ने टैक्सी पर चढ़बाक लेल जेबी मे पाइ, तकरा लेल त इएह सुलभ साधन छैक। गरीबहाक धीया-पुता कें स्कूल पठेबाक लेल एहि सं सस्त आ विश्वस्त दोसर साधन की भेटतैक?

एखन जहां तहां पुलिस सभ रिक्शा जमा करे मे बेश सक्रिय देखल जाइछ। जे पहिने चौअन्नी-अठन्नी ओसुलैत छल एखन रिक्शा कें पुलिस भेन पर लादि थाना मे जमा क रहल-ए। सूनल जाइछ जे सभ के तोड़ि वो जरा देल जायत। बाट-घाट खाली पड़ल छैक आ रिक्शावाहक सभ हताश भेल अइ। ओकरा सभक ने कुनू संगठन छैक आ ने कुनू नेता—ओकरा लेल सोचनिहार।

जेना कि पता लागल-ए आ लोकसभ बस-ट्राम मे बजेए, जे हेतु रिक्शा खिचनिहार प्रायः सभ कें सभ अबंगाली थिक तें ओकरा देसयबाक लेल ई सरकारी चालि थिकै। जं ई बात सत्य हो त एहि क्षेत्रीय दृष्टिकोणक जते निन्दा कएल जाए थोड़ हएत। एहि विषय पर मानवीय दृष्टिकोण सं सोचल जेबाक चाही। जं सरिपहुं रिक्शा अवरोधक तत्व थिक त सरकार ओकरा हटा दौक, परञ्च ताइ सं पहिने लगभग दस हजार लोकक रोजी-रोटीक व्यवस्था त ओकरा करक चाहिऐक।

× × ×

खजौली सं रामचन्द्र वियोगी लिखैत छथि—दड़िभंगा आकाशवाणी केन्द्र बिहार राज्यक सभ सं घटिया केन्द्र अछि। एकर जतेक प्रसारण क्षमता छैक ताइ सं बेसी गुटबाजी, भाइ-भतीजावाद, जातिवाद आ आपाधापी एतय व्याप्त अछि। ओतबे नहि कार्य-क्रमक स्तर आओर बेसी घटिया रहैत छैक। कतेको वार्त्ताकार, कथाकार आ अन्य रचनाकारक रचना एहन लगैछ जेना हुनका पढ़नाइ-लिखनाइ सं कोनो मतलब नहि होइन। मुदा केन्द्र मे जे हेतु हुनक सम्बन्धी छनि तें हुनका रोकब असंभव।

आकाशवाणी दड़िभंगा केन्द्र मे गुटबाजी आ जातिवादक बोलबाल अछि। असली रचनाकार त पावनि-तिहार अपन रचना द पबैत छथि, परञ्च जे रचनाकार नहि छथि तिनका बेर-बेर सुनल जा सकैत अछि। कार्य-क्रमक संयोजक एकटा विशेष वर्ग कें कार्यक्रम दय जन आ यश देबाक निश्चयसन क लेने छथि। एक दोसर कें लाभ पहुंचेबाक व्यवसाय खुब जोड़ पकड़ने अछि।

प्रतिष्ठित रचनाकारक मामिला मे आकाशवाणी प्रायः ई करैत अछि जे स्वतः रचनाकार कें हुनक पता सं अनुबन्ध पठा देल। मुदा एहिठाम ठीक त कर उनटा होइछ। रचनाकार द्वारा प्रेषित रचनाओ घुमा देल जाइछ अथवा हेरा जेबाक बहना कएल जाइछ। अनुबन्ध पत्र त हुनके पठाओल जाइछ जे संयोजक स्वजातिक छथिन, सम्पर्कित छथिन, पीयाबे छथिन वा कमिशन देत छथिन।

एहि केन्द्र सं जे कार्यक्रम प्रसारित होइछ ताइ मे एकरूपता नहि रहैछ। मिथिलाक भाषा मैथिली थिक आ तें एहि केन्द्रक मुख्य भाषा मैथिली हेबाक चाही। परञ्च मैथिली कें मुश्किल सं घंटा भरि समय देल जाइछ आ जे कार्यक्रम प्रसारित होइछ से जातिवाद, भाइ-भतीजावाद मे फंसल रहैत अछि।

एहि केन्द्रक कर्मचारी लोकनि आबेवला निदेशक कें अपना जाल मे फंसा लेत छथि जकरा ओ तोड़ि नहि पबैछ आ तें कोनो समाधान-सुधार नहि क पबैछ। ओ कर्मचारी सभक हाथक खेलओना मात्र बनि कें रहि जाइछ।

उचित त छलैक जे केन्द्रीय सूचना ओ प्रसारण मन्त्रालय एहि दिस ध्यान दित आ एहि घोटालाक जांच करबैत। जातिवाद, गुटवाद कें तोड़ि सांस्कृतिक भ्रष्टाचार कें रोकब परम आवश्यक तखन सही रचनाकार कें अवसर भेटतैक, लोक कें नीक रचना सं परिचय होएतैक आ एहि केन्द्रक सार्थकता सिद्ध होएत। की सरकार एकरा आवश्यक नहि बुझैछ? की ओकरा एते पलखति छैक जे एहि दिस ध्यान देत।

✱

कवि शेखराचार्य···

नायकक वर्णन करबाक हो तं कोन-कोन विषयक उल्लेख करब उचित, यदि नायिकाक वर्णन करबाक हो तं की सभ निरूपण करब आवश्यक।

——

वर्ण-रत्नाकर सात कल्लोल मे विभाजित अइ। यथा—(१) नगर वर्णन (२) नायिका वर्णन (३) आस्थान वर्णन (४) ऋतु वर्णन (५) प्रयानक वर्णन (६) भट्टादि वर्णन (७ श्मशान वर्णन। एइ सात कल्लोलक प्रधान वर्णनक संगहि कतेको अप्रधान वर्णन अइ। एवम् प्रकारें ई वर्णनक हेतु सरिपहुं रत्नाकरे थिक।

वर्ण-रत्नाकर पढ़ला सन्ता दू गोट बात स्पष्ट परिलक्षित होइए। पहिल त ई जे एकर भाषा शिल्प तथा विषय वस्तु एहि बातक अकाट्य प्रमाण थिक जे मैथिली भाषा साहित्यक शुभारंभ एहि सं कम सं कम ५ ६ सए वर्ख पहिनहि भेल होएत। दोसर ई जे कवि शेखरक अन्यान्यो मैथिली रचना अवश्ये होएत जे आइधरि समुचित प्रयासक अभाव मे प्राप्त नहि भ सकलए। कहबाक प्रयोजन नहि जे इहो पोथीक प्रकाशनक लेल हमरा लोकनि बंगाली विद्वानक आभारी छी—जेना कि 'चर्यापद' आ 'विद्यापति पदावली'क निमित्त। इहो अचरजक विषय थिक जे जकर पूर्वज भारतीय दर्शन साहित्य-संस्कृतिक आकाश मे सूर्य-चन्द्रादि नक्षत्र सन आलोकित हो, से मैथिल जाति आइ भगजोगनी सं गेल-गुजरल हो। ओना हमर विश्वास अइ जे सूर्यक सन्तान भगजोगनी नहि भ सकैछ ओहो ज्वलंत नक्षत्रे होइछ। खगता छैक ओकर ज्ञान शक्ति के चिन्हबाक, अपन आत्माभिमान कें जगेबाक आ से भेने निश्चिते मिथिला-मैथिलीक पताका फेर विश्वाकाश मे फहराएत।

—सुजतबा अली

●

देसिल बयना

पाठकीय परिबारक (सलियना) सदस्य

१६· श्री कन्हैयालाल झा,	कलिकाता	२७· " श्याम नारायण झा	बर्णपुर
१७· " मोहित मिश्र	"	२८· " कृष्ण बिहारी झा	लिलुआ
१८· " रामचन्द्र झा	"	२९· " तारा नन्द झा	नरूआर
१९· " विष्णुकान्त झा	"	३०· " दुर्गानन्द राय	"
२०· " देव कुमार झा	"	३१· " शुभकान्त झा	हवड़ा
२१· " कृष्ण कान्त चौधरी	"	३२· " गीतानंद चौधरी उषानगर,	कल०
२२· " गोपी कृष्ण झा	"	३३ " हेम झा	" "
२३· " शिवनाथ राय	"	३४ " रामाश्रय सहनी	नवकी दिल्ली
२४· " आदित्य नाथ झा	"	३५· श्रीमती अंजनी झा	" "
२५· " रामानाथ राय	"	३६· श्री देव झा	हिन्द मोटर
६· " वंशीधर झा	"	३७· श्यामा भगवती 'पुस्तकालय, मछेता,	दड़िभंगा

विशेष-सूचना

मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ताक एक आवश्यक बैसार आगामी १८ अप्रील १९८२ के बेरिया ४-३० सं उषानगर स्कूल मे होएत। मोर्चाक प्रत्येक सदस्य तथा सहयोगी लोकनि सं एहि बैसार मे उपस्थित हेबाक अनुरोध कएल जाइए।

एहि बैसार मे आमद-खर्चक हिसाब सेहो प्रस्तुत कएल जाएत तैं प्रत्येक सदस्य सं निवेदन जे हुनका पास जे रसीद बही व्यवहृत/अव्यवहृत होनि तथा चन्दाक पाइ होनि से ३१ मार्च १९८२ धरि संयोजक लग (देसिल बयना कार्यालय,मे) अथवा श्री जनार्दन झा, उषानगर लग जमा कै देथि। एहि सन्दर्भ मे प्रत्येक सदस्य कें १५ मार्च १९८२ क पोस्ट कार्ड सेहो लिखल जा चुकल छनि। कुनू कारणवश जिनका पत्र नहि भेटल होनि से ११ अप्रील १९८२ धरि रसीद बही तथा चन्दाक पाइ जमा क सकैत छथि।

कुनू कारण वश जं किनको उक्त तिथिधरि रसीद बही वा पाइ जमा करबा मे असुविधा होनि आओर। अथवा बैसार मे उपस्थित होएबा मे असुविधा होनि तं ओ तकर पूर्व सूचना 'देसिल बयना' कार्यालय मे लिखित रूप मे पठावथि से अनुरोध। बैसार मे विचारणीय विषय रहत—

१. आमद-खर्चक हिसाब
२. अगिला कार्य-क्रम निर्धारण तथा
३. अन्यान्य

विनीत :
रामलोचन ठाकुर
संयोजक

'देसिल बयना' चन्दाक दर :—

१ प्रति	५०) पइसा
१ बर्खक	५) टाक
५ बर्खक	२०) टाका

पाइ पठेबाक पता —

श्री जनार्दन झा,
१७/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

बाल गीत

झिझिर कोना

झिझिर कोना झिझिर कोना कोन कोना जाउ
मिथिला के आङन मे सभतरि खेलाउ
उत्तर हिमालय आ दक्षिण मे गंगा छइ
कोशी आ गंडक मे हेलू नहाउ।
उत्तर आ दक्षिण के भेद बिसराउ
मिथिला के सन्तति छी मैथिल कहाउ
कन्हा स कान्ह जोड़ि जाति-पांति' आड़ि तोड़ि
मिथिला के माटि उठा माथ सं लगाउ॥
माय, मातृभूमि, मातृभाषा महान
कखनो ने होमय एकर अपमान
मायक जे बोल जुनि बाजै मे लाज करी
अपनो बाजू आ अनको सिखाउ॥
राखू नमस्कार कोठी के कान्ह
चीन्हल ने जाएत के अप्पन वा आन
भेंट जखन होइ वा जाइए लगै छी
'जय मैथिली' केर आदति लगाउ॥

—रामलोचन ठाकुर

• ई गीत एहि सं पहिनहु एकठाम प्रकाशित भेल छल। 'देसिल बयन'क पाठक लेल पुनः प्रकाशित कएल जाइछ।

कह लोचन कबिराय

सरकारी फरमान थिक श्रमिक मजूरक नाम
ई उत्पादन वर्ष थिक सुनू खोलि सभ कान
सुनू खोलि सभ कान न बिसरू एसमा नासा
मूंह जाबि करू काज, न हो अधिकार-तमासा
कह लोचन कविराय श्रमिक काजक सरकारी
लाभक मालिक मात्र घोषणा थिक अधिकारी

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, बृन्दावन बैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्तिमोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अङ्क—८ मइ, १९८२ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

मैथिली आन्दोलन आ माटि-पानिक प्रश्न

मैथिलीक नाम पर आइ धरि जे किछु भेल-ए से प्रवासे सं भेलए। यद्यपि एहि आन्दोलनक उपलब्धि कें नकारल नहि जा सकैछ, तथापि एतबाधरि मानहि पड़त जे जाइ मूल समस्याक समाधानार्थ एहि आन्दोलनक श्रीगणेश भेल छल, से एखनहुँ ओहिना पड़ल अइ। चारि कोटि मिथिलावासी मैथिलक संग स्वाधीनता प्राप्तिक पैंतीस वर्ख पश्चातो भारत सरकार दोसर स्तरक नागरिक सन व्यवहार कए रहल अइ। ओकर भाषा-संस्कृति मात्र अवहेलेटा नहि छैक, अपितु ओकर विनासक लेल नाना तरहें षड़यंत्र रचल जाइत रहल-ए, आइन-कानून बनाओल जाइत रहल-ए। ओकर आर्थिक विकासक कथा त कात रहओ, उनटे एहि पैंतीस वर्ख मे क्रमे-क्रमे ओकर रीढ़ तोड़ि अपंग बना देल गेलैए। आइ मिथिला देशक स्थिति कुनू साम्राज्यवादी-पूंजीवादी देशक उपनिवेशों सं अधलाह छैक। कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि स्थिति सं उपरबाक एक मात्र पथ छैक संघर्ष, जनसंघर्ष रक्त-क्षयी संघर्ष।

आब प्रश्न उठैछ जे ई संघर्ष करत के? सोझ उत्तर छैक—मिथिलाक जनता। कुनू जाति क्षेत्रक अपन फराक विशेषता होइत छैक, फराक समस्या होइत छैक आ तकर सभ सं नीक आ सठीक जानकार ओही जाति क्षेत्रक लोक होइत अइ। तहिना समस्याक समाधान सं क्षेत्रक विकास सं लाभान्वितो ओहीठामक लोक होइत अइ! बहरिया शोषक-शासक कें त एही मे लाभ छैक जें ओ क्षेत्र विशेष पिछड़ल रहै, ओइ ठामक लोक पिछड़ल रहै आ एकरा लोकनिक शोषण अवाध रूपें चलैत रहैक। आ एहीठाम जन्म लैछ संघर्ष—शोषक आ शोषितक बीच संघर्ष, मुक्ति संघर्ष। मैथिली आन्दोलन उएह मुक्ति संघर्ष थिक। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक जीवाक अनिवार्य शर्त्त थिक।

आब फेर प्रश्न उठैछ जे एहन अनिवार्य शर्त होइतहुँ एहि दीर्घ अवधि मे मैथिली आन्दोलन सफलता कें के कहय चरमताओ कें किएक ने प्राप्त क सकल? विद्वान लोकनिक कहब छनि जे एकर प्रधान कारण थिक जे प्रवास मे एकर जन्म भेलैक आ ओतै पसरबो करल। मिथिलाक माटि-पानि सं ई नहि जुड़ि सकल। एहि बात कें हमरो लोकनि मानिते नहि छी, पूर्ण विश्वासक संग मानैत छी। हमरा लोकनि मानैत छी जे अपन देसकोस, परिजन-पुरजन कें छोड़ि परदेश केओ सेहन्ते नहि, खगते जाइछ आ इएह खगता ओकर शक्ति-सामर्थ्य कें सीमित क दैत छैक। तें आइधरि जं मैथिली आन्दोलन सफल नहि भेल त सेहो स्वाभाविके थिक। तहिना स्वाभाविक थिक मैथिली आन्दोलन कें प्रवास मे जन्म लेनाइ—कारण प्रवास मे लोकक चेतना विकसित होइत छैक, अपन माटि-पानिक प्रति ममत्व बढ़ैत छैक। इतिहास साक्षी अइ जे कतेको आन्दोलनक जन्म एहिना प्रवास मे भेलैए आ पश्चात ओ क्षेत्र मे पहुँचल-ए। कतेको एहन आन्दोलन भ चुकलए जकर पूर्णता-सफलता धरि संचालन प्रवासे सं होइत रहल छैक आ लड़ाइ क्षेत्र मे लड़ल गेल अइ।

इएह सभ सोचि कें 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' गत वर्ख २३, २४ आ २५ मइ कें दड़िभंगाक नगर भवन मे तीन दिना सम्मेलनक आयोजन केने छल। एहि आयोजनक एकमात्र उद्देश छलैक मैथिली आन्दोलन कें माटि-पानि सं जोड़नाइ, मिथिलाक माटि पर मैथिली आन्दोलनक गाछ रोपनाइ।

एहि आयोजन मे मिथिलाञ्चलक विभिन्न मैथिली सेवी संस्थाक प्रतिनिधि, शिक्षक संघक नेता, छात्र नेता, राजनैतिक दलक प्रतिनिधि एवं साहित्यकार लोकनि उपस्थिति छलाह। सभक विचारानुसार 'मोर्चा'क प्रधान कार्यालय दड़िभंगा मे बनएबाक घोषणा कएल गेल एवं सत्रह सदस्यीय एगो कमिटीक गठन भेल। वर्ख दिनक प्रोग्राम लेल गेल। कहबा मे संकोच नहि जे कमिटी मे विभिन्न अंचल आ वयसक प्रतिनिधि सभ छलाह जनिका लोकनिक मैथिली आन्दोलनक क्षेत्र मे पर्याप्त नाम-यश छनि। परञ्च खेदक संग लिखय पड़ि रहल-ए जे सभ श्रम आ अर्थ व्यर्थ मे चल गेल। प्रोग्रामक कथा त कात जाओ, कमिटीक एकोटा बैसारो नहि भेलैक। आ एहि तरहें मैथिली आन्दोलन कें माटि-पानि सं जोड़बाक अपन पहिल प्रयास मे मैथिली मुक्ति मोर्चा पूर्णतः असफल रहल।

मैथिली मुक्ति मोर्चाक पहिल काज ६ दिसम्बर १९८० कें पटनाक प्रदर्शन छलैक जाइ मे पटनाक निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ एकर सहयोगी छलैक। ६ दिसम्बरक प्रदर्शन पूर्ण सफल रहलैक तथा प्रमाणित क देलक जे मिथिलावासी सेहो अपन अधिकार लेल संघर्ष क सकैए रक्त बहा सकैए। हमरा जनैत एहि मे दू मत नहि भ सकैछ। अपन दोसर काज मे असफल होइतहु मोर्चा बैसि नहि रहल। तेसर डेग भेलैक 'देसिल बयना'क प्रकाशन। मैथिली आन्दोलनक निमित्त आन्दोलन पत्रक खगता कें जहिना अस्वीकारल नहि जा सकैछ तहिना देसिल बयनाक भूमिकाओं के पूर्वाग्रह मुक्त व्यक्ति अस्वीकार नहिञेटा क सकैन छथि। देसिल बयना के ई आठम अंक थिक परञ्ज जाइ रूपें एकर स्वागत मिथिलांचल सं प्रवासधरि भेल छैक आ जेना सहयोग भेटि रहल छैक खास कें दिल्ली राउड़केला आदि प्रवासक मैथिल बन्धु लोकनि सं तकरा देखैत एकर दीर्घजीवनक प्रति निश्चिते हमरो लोकनि विश्वस्त छी आ आशा करैत छी जे निकट भविष्य मे एकरा पाक्षिक बनेबा मे सफल भ सकब।

एतबा होइतहु ई मानबा मे आपत्ति नहि जे पत्रिकाए सभ किछु नहि थिक आ एही सं मोर्चाक दायित्वक निर्वाह भ जेतैक। पत्रिका आन्दोलनक वातावरण तैयार क सकैछ, आन्दोलन कें गति प्रदान क सकैछ परञ्च मैथिलीक मुक्तिक लेल जाइ लेल 'मोर्चा' क जन्म भेल छैक—चाही सार्विक आन्दोलन जे मिथिलाक माटि-पानि पर होएत। दड़िभंगाक असफलता सं हमरा लोकनि के एतेक शिक्षा अवस्से भेटल जे मंचीय नेता सं, विद्यापति पर्व मात्र के आन्दोलन बुझनिहार नेता सं वास्तविक आन्दोलन संभव नहि। एहि लेल जगाबय पड़तैक गामक लोक कें, छात्र-युवा वर्ग कें आ ताइ लेल सीधा-सम्मर बान्हि गामे-गाम घूमय पड़तैत स्कूल कालेज मे बोआय पड़तैक। मैथिली मुक्ति मोर्चाक अगिला प्रोग्राम उएह होएत जकर विस्तृत विवरण शिघ्रे प्रकाशित हएत।

अन्त मे लिखि देनाइ आवश्यक जे दड़िभंगाक आयोजनक समय सं मोर्चाक बहुतो सहयोगी उदासीन वा फराक भ गेल छथि। हुनका लोकनि सं पुनः पुनः निवेदन जे 'तेरह पाक' बला कहबी चरितार्थ नहि करथि ओ। जं सरिपहु मैथिली-मिथिलाक मुक्ति चाहैत छथि त पहिनिह जकां संग मीलि काज करथि। हुनका लोकनिक स्वागत लेल सतत हमरा लोकनिक बांहि पसारल अइ। संगहि नवीनो संस्था। व्यक्ति विशेष जे मोर्चाक संग काज करबाक इच्छुक होथि तें हुनको स्वागत छनि। मोर्चाक नारा छैक पूर्ण स्वाधीनता अथवा मृत्यु।

—जय मैथिली

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

मिथिलाक विभूति—४

कवि विद्यापति

आइ सं लगभग साढ़े छओ सए वर्ख पूर्व मधुबनी जिलाक बिसफी ग्राम मे विद्यापति ठाकुरक जन्म भेल छलनि। हिनक पिताक नाम गणपति ठाकुर ओ पितामहक नाम जयदत्त ठाकुर रहनि। हिनका नेना मे दुलार सं खेलन कहल जाइन, जकर कतेको ठाम चर्च अइ।

विद्यापति नेने सं संस्कारी छलाह आ कनिञे अवस्था मे पूर्ण पाण्डित्य के प्राप्त केलनि। काव्य रचनाक प्रवृत्ति सेहो हिनका नेनहि सं छल जे वयसक संगहि बढ़ैत आ सशक्त होइत गेल। हिनक प्रतिभा बहुमुखी छल—जकर प्रत्यक्ष प्रमाण हिनक उपलब्ध पोथी सभ अइ। हिनक रचित पोथी जे आइधरि उपलब्ध भ सकल-ए निम्न अइ :

(१) कीर्तिलता
(२) भू परिक्रमा
(३) कीर्ति पताका
(४) पुरुष परीक्षा
(५) शैव सर्वस्वसार
(६) गंगा वाक्यावली
(७) विभागसार
(८) दान वाक्यावली
(९) दुर्गाभक्ति तरंगिणी
(१०) व्यालि भक्ति तरंगिणी
(११) विद्यापति पदावली

मिथिला संस्कृत पंडितक गढ़ रहलए आ विद्यापति सेहो संस्कृतेक विद्वान छलाह एवं परम्परानुरुपे संस्कृत मे लिखनाइ आरम्भ केलनि। परञ्च जेना कि कवि कें युगद्रष्टा ओ स्रष्टा कहल गेलए—विद्यापति एकर प्रमाण छलाह। संस्कृत सं अवहट्ट आ अवहट्ट सं मैथिली मे रचना कए ओ कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक परम्परा कें आगू बढ़ौलनि। असल मे मैथिलीक रचना हुनक लोकप्रियता ओ लोक परिचितिक आधार भेल। हुनक कोमलकान्त पदावली की शिक्षित की अशिक्षित दूनू श्रेणी मे समान रुपे प्रवेश कएलक आ आद्रित भेल। जनभाषा कें साहित्यिक भाषाक मर्यादा दिओनाइ आ साहित्य कें पंडित वर्ग सं जनसामान्य धरि ल गेनाइ हुनकेसन प्रतिभा सं संभव भेल जकर उदाहरण भारतीय वाङ्मय मे अप्रतीम अइ।

विद्यापति जाइ युग मे भेल छलाह ताइ युग मे देशपर दुर्दिनक मेघ मड़राइत छल। मुसलमानी आक्रमण सं छोट-पैघ कतेको राज-रजवाड़ा ध्वस्त भ चुकल छल आ तें मिथिलादेशक रक्षार्थ—एकर गौरवशाली साहित्य-संस्कृतिक रक्षार्थ ओ लेखनी धयने छलाह। बाहरी शत्रु सं लड़ैक लेल तरूआरिक प्रयोजन छलैक—वीरताक प्रयोजन छलैक आ तें कीर्तिलता ओ कीर्ति पताकाक सिरजन ओ कयलनि। विभागसार द्वारा सम्पतिक उचित भाग कए आपसी सहयोगक आधार सशक्त केनाइ हुनक

उद्देश छल कारण आपसी मतभेद शत्रुक प्रवेशपथ उन्मुक्त क सकेत छल। धर्म वर्तमानो काल धरि एहन तत्व मानल जाइए जकरा नाम पर जातीय-एकता ओ संगठन सहजतर होइत छैक आ बाहरी आक्रमण सं देश के रक्षा लेल ई संगठन आवश्यक छलैक—तैं हेतुएँ हुनका भक्ति रसक गीत लिखय पड़लनि।

कविपति विद्यापति महान समाजशास्त्री, ओ दार्शनिक छलाह; महान राजनीतिज्ञ संधि-विग्रहिक युगद्रष्टा आ स्रष्टा आ तें महान कवि छलाह। ओना बेर पड़ने ओ तरुआरियो पकड़ने छथि सन्धि वार्तालय लोदीक दरबार तक पहुँछल छथि—परञ्च सभ होइतहु ओ मूलतः कवि छलाह आ लेखनीए हुनक हथियार छल। एकर जाह ठाम जेहन प्रयोग अपेक्षित बुझलनि—तहिना प्रयोग केलनि। मैथिलीएक नहि समस्त आधुनिक भारतीय भाषाक पहिल कवि छलाह। हुनक पश्चात् ओ हुनके सं प्रभावित भय विभिन्न भाषाक कवि लोकनि अपन-अपन भाषा मे काव्य रचना आरम्भ कएलनि। ब्रजभाषा मे सूर, अवधी मे तुलसीदास आ राजस्थानी मे मीरासन प्रतिभाक पथ निर्देशक संरिपहुँ विद्यापतिए भेलाह।

कविपति विद्यापति कें वीर कवि, भक्त कवि, शृंगारिक कवि आदि आख्या देल जाइछ आ सरिपहुँ अपन रचनाक आधार पर से ओ छलाहो किन्तु ओ मात्र वीरकवि वा भक्तकवि वा शृंगारिक कवि नहि अपितु एके संग सभ छलाह जे विद्यापतिए सन प्रतिभा सं संभव छल। परञ्च सभ रहितहुँ मूलतः ओ महान प्रगतिशील कवि छलाह लोक कवि छलाह जे मात्र लोकभाषा मे रचनाएटा नहि केलनि अपितु लोकक बात लिखलनि। सर्वसाधारणक व्यथा—कथा, ओकर इच्छा-आंकांक्षा कें ओ अपन रचनाक आधार बनओलनि। एकदिस सामाजिक दुखदैन्यक सजीव चित्रण कए जं लोकक ध्यान एहि दिस आकृष्ट कएलनि त संगहि दोसर दिस एहि सं मुक्तिक निमित्त दिशा संकेत सेहो कएलनि। 'केहन केलहुँ भोला गरिबक दिन, एकटा जे लोटा छलनि बेटा छलनि तीन' एवं 'नित उठि गौरा शिव सं मनावथि, करू ने कठा दस खेत' मे जं पहिल गरीबीक चित्रण अइ त दोसर श्रमक महत्ताक परिचालक। एहिना 'पिया मोर बालक हम तरुणी' मे सामाजिक कुरीति अन मेल विवाह पर तिखगर व्यंग्य कएल गेलए। अपन एहीसभ विशेषताक कारणे कविपतिक गीत सभ ओतेक लोकप्रिय भेल जे एतेक दिन बीतलाक पश्चातो अपन लोकप्रियता कें मात्र अक्षुण नहि रखने अइ, अपितु ताइ मे पूर्ण वृद्धि करबा मे पूर्णरूपेण सफल रहलए। सात-सात सए बर्ख धरि लोककंठ मे अविकल प्रवाहित होइवला काव्य विश्वसाहित्य मे भरिसक एकर अतिरिक्त आन नहि भेटि सकैछ। ओतबे नहि अपन मूल रूपहि मे मिथिलाक सीमा अतिक्रमण करैत बंगाल, असम, उड़ीसा, नेपाल धरि एकर पूर्ण प्रचार-प्रसार भेलैक आ सभ ठामक लोक एकरा अपन मानलनि। ई कविपतिक लेखनीक जादू छल जे पदावलीक परम्परा सम्पूर्ण पूर्वी उत्तरी भारत मे चलि पड़ल जकर अन्तीम कड़ीक रूप मे रवीन्द्र नाथ ठाकुर विरचित भानुसिंहेर पदावली थिक। ई हिन के मधुर गीतक प्रभाव छल जे मैथिली सं अनभिज्ञ होइतहुँ परवर्त कवि लोकनि मैथिली मे काव्य रचनाक प्रयास केलनि आ मूलरूप सं भिन्न होएबाक कारणे से ब्रजबुलीक नामे पदावली साहित्यक विशेष भाषाक रूप मे परिचित पओलक।

कविपति विद्यापतिक गीतक नायक कृष्ण आ उगना अलौकिक नहि लौकिक छथि—लोकप्रतिनिधि छथि। राधाकृष्णक प्रेमलीलाक आधार मानवीय थिक जाइ मे सत्य शिव आ सुन्दरक सन्निवेश अइ। विद्यापति निर्विवाद सौन्दयापाशक छलाह कारण सुन्दरताए सत्य थिक आ सत्ये शिव थिक। तहिना विद्यापतिक उगना साधारण चाकर थिक, सेवक थिक आ सेवा धर्म मानवक सबसं पैघ धर्म थिक—इस्वरीय थिक—तें उगना कें विद्यापति महादेव बना देत छथि। एकरा उदारतावादी वा वास्तवतावादी भनहि जे कुनू दृष्टिकोणक नामे अविहित कएल जाय परञ्च ई थिक कविपतिक दृष्टि हुनक अपन मौलिक दृष्टि। ओना धार्मिक दृष्टिकोण रखनिहार समालोचकगण उगना कें देवाधिदेव महादेव मानैछ जे विद्यापतिक भक्तिभाव सं प्रभावित भए हुनक सान्निध्य लेल चाकर बनि आएल छल। जं एहूँ दृष्टिए देखल जाए त भारतीय साधक श्रेणी मे विद्यापतिक स्थान सबसं उपर अइ। रामकृष्ण परमहंस कें कालीक दर्शन मात्र भेल छलनि त ओ अवतारी मानल जाइत छथि, ताइठाम महादेव जनिक चाकर होथि तनिकर कथे की? ओ सरिपहुँ अतुलनीय छथि। किंवदन्ती अइ जे देहावसान काल मे स्वयं गंगा चारि कोस अगुआ कें अपन प्रिय सन्तान के कोरा मे उठा लेलनि। विश्वसाहित्य मे विद्यापतिक जोरी—से जै कुनू क्षेत्र मे भरिसके प्राप्त होएत।

कविपतिक रचना एकदिस सं हुनका सर्वसाधारण सं राजदरबारधरि आदर सम्मान देलकनि त दोसर दिस पंडित वर्ग द्वारा उपालंभ - उवहास सेहो। नव कविशेखर अभिनव जयदेव, कविकोकिल कविपति आदि उपाधि सं जे हिनका विभूषित कएल जाइछ ताइ मे सत्यतः कविपतिएटा एहन अइ जे हिनक प्रतिभाक सही मूल्याकनक आधार पर देले गेल अछि हिनक परवर्ती कवि गोवीन्द दास द्वारा। कविकोकिल त हिनक उपहास मात्र लेल ततकालीन पंडित द्वारा कहल जाइन आ तहिना अभिनव जयदेव हिनक प्रतिमो कें छोट क अंकबाक षड़यंत्र थिक। ई निर्विवाद जे गीत गोविन्दक रचनाकार जयदेवक परम्परा कें आगू बढ़बेत एवं सही आ सशक्त धरातल देत ई राधाकृष्णक गीत लिखलनि परञ्च ई ओतबे धरि सीमित नहि रहलाह। पहिनहि कहि चुकल छी जे हिनक प्रतिभा बहुमुखी छल आ ई निसन्देह जयदेव सं बहुत आगू बढ़ि चुकल छथि। राजदरबार मे रहितहु ई दरबारी नहि बनि एकलाह सदा लोक कवि रहलाह। ई दरबार सं प्रभावित नहि भेलाह अपितु दरबार हिनका सं प्रभावित नहि भेल।

किछुदिन पूर्व मैथिली साहित्य मे एहन चर्च उठल छल जे साहित्य महिलक पीठ पर नहि जा सकैछ। परंच विद्यापतिक साहित्य महीलक पीठ पर खेत-खरिहान मे, गोसाउनिक सीरा लग, घर आङ्गन मे सर्वत्र-समान रूपें व्याप्त देखल जा सकैछ। जन-भाषा मे जनगणक बात लिखबाक कारणें पंडित वर्गक उपहासक उत्तर स्वरूप कविपति कहने छलाह—

बाल चन्द विज्जावइ भाषा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिच्चइ नाअर मन मोहक
देसिल बयना सब जन मिट्ठा
तैं तइसन जाम्पओ अवहट्टा

ई पंक्तिये कविपतिक आत्मबल आत्माभिमानक परिचायक थिक।

आइ कविपति विद्यापति मैं अपरनाम छथि, मैथिल संस्कृतिक अ अंग छथि। मिथिला मे कुनू शुभ क हिनक गीतक बिनु नहि होइछ। एहन मिथिला वासी स्त्री-पुरुष नहि ताइ जनिका हिनक गीतक दू कंठस्थ नहि होए।

कविपतिक देहावसान लगभग १ मे भेल जाइ सम्बन्ध मे हिनक विख्यात अइ—

विद्यापतिक देह अवसान, व
धवल त्रयोदशी जान।

दू गोट कविता

(गत अक्टूबर मे कलकत्ता मे मैथिलीक एक पत्रिका टूटि रहल छल आ दोसर पत्रिकाक जन्म देबाक नेआर आ ओरिआओन भऽ रहल छल। अक्टूबरक आरिम सप्ताह मे एही मनःस्थिति मे लिखल दू गोट कविता)

(१)

हमरा लोकनि भाखाकें
भाखा नहि रहऽ दऽ कऽ झगड़ौआ खुरचनि बनौने छी
एहि खुरचनि कें अहाँ पूबसं घिचैत छी
हम ओकरा पच्छिमसं घिचैत छी
पचीस बर्खसं एहि खुरचनि पर बहस करैत
हमरा लोकनि अपन-अपन जोड़ बहार कयने
रहमि रहल छी
जकरा लोक मन्दिरमे स्थापित करैत अछि
तकरा हमरा लोकनि बच्छोंक नोंक पर टकने
फिरैत छी
एहि देशक युग्मतुक लोक
घुट्टीक धारी मे चलैत अछि
ई घुट्टीक धारी अनुशासित तं रहने अछि
जे दिन-राति चिन्नीक बोरा तकैत अछि
प्रत्येक घुट्टीक धारी
चिन्नियें दिस बनैत अछि

(२)

हमरा लोकनि भाखा कें कहियो नाओ बना देत छी
एहि नाओकें खेबबा लेल सभ क्यो तैयार होइत छी
नाओ आबत गाड़ी पर रहैत अछि,
हमरा लोकनि बसात मे कठआरि घुमबैत छी
नाओकें अखन पानि मे धऽ दिऔक
तं बेसी काल खूब तमाशा होइत अछि
लोक कठआरि कें पानि मे
चलयबाक बदला मे
ओकरा दहोदिस चलबैत अछि
नाओ ने आगाँ आइछ, ने पाछाँ
ओ ठामहि ठाम
चकभाउर देबऽ लगैत अछि
घारक कछेर पर ठाढ़ कतेको लोक
बेर-बेर एक्के तमाशा देखैत अछि
ई नाओ कहियो कोनो मोहनिमे नहि
सुक्खल बालु पर डूबल अछि
प्रत्येक बेर चुट्टी सभ
चिन्नीक बोरामे मुइल अछि

—जीवकान्त

मृत्यु अभिमन्युक

(जीवकान्तक निमित्त—हुनक दुनू कविताक संदर्भ मे)

शत्रु निर्मित
सात-सात टा चक्रव्यूह तोड़ि
अपराजेय अभिमन्यु
अखन आपस अबैछ
त
आलिंगन लेल आकुल
हजार-हजार स्वजनक हाथ
ओकरा आबद्ध क लैत छैक
आ तेखन
पड़ैत छैक ओकरा पीठ पर
सवधानक
एक नहि अनेको छूरा—
ओ आर्त्तनाद त नहि करैछ
जनहि कें तकैतहा अछि
आ खसि पड़ैछ—
ओना
महाभारतक ओ कथा
सुन्दरे नहि
आकर्षको अबस्से छैक
जे
सातम द्वार भेदनकला सं अनिभिज्ञ
शत्रु सं घेरल
असगर अभिमन्यु
मृत्यु कें प्राप्त भेल छल
आ सरिपहुं
अभिमन्युक मृत्यु
एहीठाम होइत छैक।

—राम लोचन ठाकुर

मिथिलांचलक विकास

मिथिलांचलक प्रायः पचहत्तर फी सदी आवादी कें नीक जेंका भोजनो प्राप्त नहि होइत छैन्हि। प्रति वर्गमील आवादीक लेखा-जोखा सं ज्ञात होइत अछि जे संसारक कोनो भाग सं आवादीक दबाव एहि क्षेत्र में बेसी अछि। कारण येह भ सकैत अछि जे मिथिलांचलक सामाजिक वातावरण बदलि रहल अछि। अनुशासन लुप्त भ गेल अछि। भाई-चाराक स्थान पर मालोन्यता आओर धोखा-धरीक बाजार गर्म अछि। आध्यात्मिक ज्ञानक लोप भए रहल अछि। ऋतु सेहो रंज बुझना जाईत छथि। आम, धान, मरुवा आदि कतहु भेल आ कतहु नहि होइत अछि। वेद सं सोधल कार्यक्रम यथा मुण्डन उपनायन, विवाह, श्राध, दश-कर्म आब एक परिपाटील रुप में मनावल ज रहल अछि। समाजक लोक कें एक दोसर कें शंकाक दृष्टि सं देखैत छथि विश्वास नामक चीज समाप्त भए रहल अछि। पाहुन कें रात्रि विश्राम हेतु आग्रह करब लोक छोड़ि रहल छथि। एहि प्रकार समाजक जे एक शृंखला छल टुटि रहल अछि। मुदा ई सभ कियेक, कोन लाभक प्रयोजन सं? एकेटा उत्तर अछि जे आध्यात्मिकताक तिलांजलि दए भौतिक वादी विचार धारा में सकल समाज बहि रहल अछि। टाका कोनो सुख-सुविधा प्राप्त करबाक साधन भएसकैछ मुदा साध्य कखनो नहिं छल, नहिं होएत। सर्वत्र टाका कमयबाक होड़ लागल अछि। जीवन स्तर, रहन सहन, शिक्षा-दीक्षा, खान-पान, आमोद-प्रमोद, हास्य-विनोद, संगीत-नृत्य, कला-कौशल, साहित्य, आध्यात्म आदि कलयुगी रूप धारण कए लेने अछि। विवेक, त्याग, स्नेह, सहिष्णुता, अनुशासन, परोपकार, संत संगम, शुद्ध भोजन आदि कें पेंच सं पेंच व्यक्ति देखा देखी में अपन संस्कृति कें नष्ट क रहल छथि। किछु लोक अपन पत्नी आ पारिवारिक सदस्य सं अंग्रेजी किम्बा शुद्ध हिन्दी में बजैत छथि। मैथिली बजवा सं घवराइत छथि।

शीर्षक पुरान अछि मुदा अवसर आवि चुकल अछि जे मिथिलांचलक विकास कार्य गतिशील बनावल जाए। एहि लेल परमावश्यक अछि जे ग्राम, प्रखंड, अवर, प्रमंडल आओर राज्य स्तर पर विचार गोष्ठीक आयोजन हो आ गोष्ठी द्वारा पारित प्रस्ताव कें सरकारक समक्ष राखल जाय। गोष्ठी द्वारा एक रुपक प्रस्ताव पारित करब आवश्यक अछि।

हमरा सभक सबसं पैघ समस्या अछि मैथिलीक स्थान अष्टम अनुसूची में सुरक्षित करायब, अराजपत्रित कर्मचारीक नियुक्ति परीक्षा में मैथिली कें ऐच्छिक विषयक रूप में राखब, राजकाज मैथिली भाषा में सेहो तकर प्रयत्न करब, प्राथमिक शिक्षा कें लोकप्रिय बनयबाब लेल पोथीक प्रकाशन आ वितरणक सुविधा प्राप्त करब, मिथिला पेंटिंग, हस्तकला, कारीगरी आदिक विकासक लेल योजना बनायब आओर कार्यान्वित करब, जनमानस कें अपन अधिकारक ज्ञान करएबाक लेल प्रचार-प्रसार करब आदि सम्मिलित अछि। प्रश्न उठैत अछि जे ई सभ कार्य होएत कोना? डेढ़ सए वर्ष सं पीड़ित एवं उपेक्षित मिथिलाक उद्धार करबाक साधन की भए सकैछ?

प्रश्न गंभीर अछि। सबसं पहिने आवश्यकता अछि जे चेतना समिति के आर्थिक रूपें स्वावलम्बी बनावल जाए। जाए। सरकारी अनुदान पर जीनिहार संस्थाक अपेक्षा जे संस्था अपन साधन पर निर्भर करैत अछि वो अधिक विकासशील रहल अछि तकर साक्षी इतिहास अछि। मिथिलांचलक दुर्भाग्य अछि जे औद्योगिक विकास, लघु उद्योग विकास एखन प्रारम्भ होयब बांकी अछि। कोनो वर्ष बाढ़ि सं सर्व साधारण अक्रान्त होइत छथि—तं कहियो सूखाड़क भीषण स्थितिक सामान करए पड़ैत छैन्हि। वस्तुक दाम नित्य-प्रति बढ़ि रहल अछि। खेतक उपजा बारी मुख्यतः भगवानक अनुकम्पा पर निर्भर करैत अछि। आर्थिक विपन्नताक भयावकता सं मिथिलांचल झरि-मरि रहल अछि मुदा देखनिहार के। लोकक प्रतिनिधि जखन पटना निवास करब शुरू करैत छथि तं गामक लोक कें बिसरि जाइत छथि। लाल-पीयर रोशनी सं जगमगायल शहर, रंग-बिरंगा वस्त्र-सुन्दर-सुन्दर भवन, सिनेमा आदि सहसा ककरो आकृष्ट कए लैत अछि। पटनाक मायानगरी में सभ मायावी भ जाईत छथि।

त ई सभ देखि कि हाथ-पर-हाथ धए, सांस रोकि समाजक मालिक अस्तित्वक विनाश देखैत रहबाक चाही किम्बा एकजुट भए मिथिलांचलक प्राचीन गौरव, परम्परा, साहित्य, हस्त-कला, पांडित्य, सामाजिक स्थिति, संस्कृतिक रक्षा करबाक संकल्प लए पुनः समाज कें समुन्नत करबाक प्रयास करी? ई दू गंभीर समस्या अछि। समाधानक लेल चेतना समिति अपनेक स्नेह आ सहयोगक आकांक्षी अछि। जाति, धर्म आ अवस्थासक संकीर्णता सं पृथक सौहार्द आ सौमनस्यक भावना सं एक बद्ध भए समस्त मैथिली भाषीक समुन्नयन आ मिथिलांचलक सर्वांगीण विकास में सहयोगी बनी तकर आमंत्रण दैत अछि।

निवेदन अछि जे 'चेतना' शब्द कें चरितार्थ कयल जाय।

—श्री राजेन्द्र झा
सचिव, चेतना समिति, पटना

(भाषा शिल्पओ विचार लेखकक निजी छनि तें ओकरा यथावत राखल गेल अछि—सं०)

लाल बुझक्करक नाम

(मारफत देसिल बयना)

श्रीमान् लाल बुझक्कर जी—महाराज,
जय मैथिली आदाब अर्ज।

शस्त कुशलञ्च। बाद समाचार ई जे एक तऽ अहाँ चिट्ठी लिखैत छी विप्राह आ ऊपर सं ओकरा पत्र पत्रिका मे प्रकाशित करबा कऽ नीक लोक कें देखार करैत छी से औ बाबू ई आदति छोड़ू। अहाँ त कलकत्ता वासी बनल छी आ भोगऽ पड़ैत छनि मिथिलावासी कें। कहाँदन अहाँ पत्रिका मे बिहारक वजीरेआला जनाब जगन्नाथ मिश्रजीक अदखोइ-बदखोइ लिखि देने रहियैक से बेचारे चीफ साहेब कें ओल जकाँ कबकबा कऽ लगलनि आ तकर प्रतिक्रिया स्वरूप ओ घरे-घर भुकभुकी लऽ क मैथिली पढ़निहार, बजिनिहार आ लिखनिहार कें गंगालाभ करेबाक लेल तकने फिरैत छथि। अहाँ पूछब से कोना आ प्रमाण मांगब तें लालबुझक्करजी, हम अहाँ कें सम्पूर्ण बृतान्ते संक्षेप मे सुना दैत छी। अहाँ त छीहे लालबुझक्कर, एकर सरलार्थ, भावार्थ ओ विशेषार्थ लगालेब।

घटना छोटछीन रहैक मुदा भयावह। भेलैक ई जे दिल्लीक संसद मे जखन बजट अधिवेशन प्रारंभ भेलैक तं मगज मे कीड़ा सभ सुगबुगाय लागल—नाना तरहक विचार तरंगक उतार-चढ़ाव प्रारंभ भऽ गेल आ लागल जे हो ने हो-एहि खेप मैथिली के संवैधानिक मान्यता भेटि कऽ रहतैक कारण मिथिलाक सपूत आ मैथिली-भाषी (सरकारी लोक) क आराध्य श्री जगन्नाथ बाबू अपना मुंह सं केकठाँ बाजल रहथि जे मैथिली कें संवैधानिक मान्यता देबाक लेल बिहार सरकार, केन्द्रसरकार कें एकटा जोरदार—असरदार चिट्ठी लिखलकैक अछि तें भावाधिक्यक कारणे अपना कें नहि संभारि सकलहुँ आर बिदा भेलहुँ मिथिलांचल मे अपन स्पेशल आइडियाक प्रचार-प्रसार करऽ। ओना मोन मे एकगोट पैघ स्वार्थ सेहो रहए जे यात्राक अवधि मे भोजनादि निःशुल्के प्राप्त हएत, लोकसम्पर्क हएत; अपन आइडिया कें भविष्यवाणीक रूप दए प्रचार करब आर जं माताजीक कृपा सं मैथिलीकें संवैधानिक मान्यता भेटि गेलैक तं अगिला एलेक्शन धरि देखल जयतैक मने लांगटर्म प्रोग्राम रहए मुदा औ बाबू कि कहू—नाम हमर विश्ववंचक ठगी करबाक अधिकार हमरा मुदा मुड़ा गेलहुँ हम स्वयं—आ सेहो मुफ्ते मुदा संतोष एतबे अछि जे जान बाँचि गेल। संयोग एहन भेलैक जे एकटा गाम मे हमरा सं एक जिज्ञासु व्यक्ति टकड़ा गेलाह। परिचय-पातक पश्चात जखन हम हुनका अपन भविष्यवानी सुना हुनकर विचार पूछलिअनि तं ओ तीनहाथ छड़पि उठलाह आ चिचिया-चिचिया कऽ नारा लगावऽ लगलाह—'अपूर्व आइडिया····ओरिजनल आइडिया ····विश्ववंचक जिन्दाबाद' देखिते, देखिते संपूर्ण गाम ओहि जिज्ञासुक दरबज्जा पर जमा भऽ गेलैक आ नारा पर नारा पड़ए लगलैक। जिज्ञासुजन हमर पीठ थपथपा कऽ बजलाह- 'भाइ एहि गाम मे पुरुष सभ मैथिली नहि बजैत अछि तैं की···· मैथिलीक एकोगोट पत्रिका एहि गाम मे नहि अबैत छैक तैं की कोर्सक पोथी छोड़ि कोनो घर मे मैथिलीक आन पोथी नहि भेटि सकैछ तैं की····अहाँक आइडिया मुदा अपूर्व अछि····एहि खेर मैथिलीकें सरकारी मान्यता भेटिकऽ रहतैक····बूझू जे मान्यता भेटि गेलैक····आब किछु करियौक खर्च-बर्च मैथिलीक नाम पर दियौक किछु टाका····भऽ जाइक एकगोट छोट-छीन पार्टी।' से लालबुझक्करजी चक्कर मे पड़ि गेलहुँ। घड़ी ओहिगाम मे बन्हकी लागि गेल। कोनो धरानी राति कटलहुँ आ अन्हरोखे सिताहल नढ़िया जकाँ पड़ेलहुँ मुदा बाहरे करम। कहबी छैकने जे 'जयबह नेपाल-कपाड़ संगे जयतह'····तकरे पड़ि भेल। ओहि गामक सिमानो ने टपने रही कि धड़ा गेलहुँ। एकगोट सज्जन पुरुस हमर बाट छेकि उलहन देबऽ लगलाह—'आहिरेबा, ई कि औ? एना किएक भागल जा रहल छी? चाह पीबि लिअ तखन जायब चाह पीबि ओ सज्जन जखन व्यवस्थित भेलाह तं रतुका पार्टीक रेफरेंस दैत हमरा अपन बचनामृत सं तृप्त करऽ लगलाह—'औ, अहाँ ई कोन फेरा मे पड़ल छी? मौका भेटल अछि तऽ ओकर लाभ उठाउ ई कि मैथिली-मैथिली पेंपिया रहल छी? जयप्रकाश बाबूक आन्दोलनमे जनऊ तं तोड़बनहि हैब अहाँ। आब जं हमर विचार मानी तऽ टीक सेहो कटवा लिअ आ प्रारंभ कऽ दिअ अलिफ बे-पे-ते 'हं हम एम० एल० ए० तं नहि मुदा जं अहाँ सन भाषा प्रेमी कें हम एम. एल. सी. नहि बनबौलहुँ तं हमरा नामे कुकूर पोसिलेब। आइधरि हमर एकोटा आग्रह नहि टाड़लनि अछि मिसरजी····ओ हमर साक्षाते····।'

हम ओहि सज्जनक मुंह निहारऽ लगलहुँ। चाहक प्यालीकें टेबुल पर राखि हम बजबाक साहस जुटौलहुँ—'प्रियवर। हमर अभिप्राय से नहि छल। हम एम. एल. ए. एम. पी. वाला बात तं ओहिना बाजि देने रही। असल मे हमर कहबाक तात्पर्य छल जे एहि बेर मैथिली कें संविधानक अष्टम अनुसूची मे स्थान भेटि जयबाक चाही मुदा भऽ सकैछ जे बिच्चहि मे कोनो विघ्न उपस्थित भऽजाय तैं हमरा सभकें साकांक्ष रहबाक चाही····'हमर बात कें बिच्चहि मे लोकिकऽ, ओ समांग राजनीतिज्ञ जकाँ भाषण देबऽ लगलाह—'औ बाबू, हम सभ किएक साकांक्ष हएब? मैथिली-फैथली सं हमरा सभकें कोन लाभ? साकांक्ष होयताह मैथिली एकेदमीवालासभ····चेतना समिति वाला सभ····साकांक्ष होयताह साहित्य अकादमीक प्रतिनिधि···सरकारी विज्ञापन प्रकाशित करऽ वाला साहित्यकार लोकनि जिनका सभक लेल सरकार 'कौरा' क-व्यवस्था करैत छनि····अनेरे हमर सभ किएक माथ-कपार पीटू····हमरा सभकें किछु करबैक हएत तं उर्दू क हेतु करब आ कि ई मौगी सभक भाषाक लेल? देखूऽ हमर बेटा भातिजकें फटाफट उर्दू लिखैत-पढ़ैत अछि। औ बाबू, चाहक कैंचा दिऔक आर अपन रास्ता धरू एहेन ने हो कि छौंड़ा सभकें पता लागि जाइव आर अहाँ मुफ्त में····।" हम अकचका कऽ पूछलिअनि—"से कि औ?" अहाँ कें नहि पता अछि ???सरकारी आदमी सभ मैथिलीक ओकालत कएनिहार सभ कें पकड़ि-पकड़ि कऽ पटना लऽ जा रहल छैक ····गंगापुलक उद्घाटन अवसर पर ओकरा सभकें गंगालाभ करेबाक प्रोग्राम छैक। हम अवाक रहि गेलहुँ।

ओ सज्जन पुरुष भभाकऽ हंसलाह आ हमरा सांत्वना दैत पुनः बजलाह—'गंगालाभ सं हमर तात्पर्य गंगास्नान सं छल। कहाँदन आब मैथिलीक किछु पत्रिका सभ सेहो मिसरजी के देखार करय पर लागल छनि तैं ओ बड़ गरम भऽ गेलाह अछि···· छुट्टा सांढ़जकां चरबाक प्रवृत्ति छनि तैं होहकारी सुनला पर भड़कि उठैत छथि। हुनका शंका भेलनि जे गंगापुलक उद्घाटनक अवसर पर अपन घरेक लोक सभ ने इन्दिराजीक समक्ष होहल्ला करए, तैं मिथिलांचलक प्रत्येक कोन सं एहन संदेहास्पद व्यक्ति सभकें सरकारी आज्ञापर पकड़ि कऽ पटना पार्सल करबाक अभियान चलल छैक····अहां चुप्पे-चाप निकलि जाउ····कोनो डर नहि ····ह, चाहक कैंचा दऽ देबैक।" बाजि ओ लोटा पकड़ि पोखड़ि दिस बिदा भऽ गेलाह। हमरा अपन सभटा आइडिया निरर्थक बुझाय लागल—अछूता पश्चा कऽ उठलहुँ जे आब अपन गामक बाट धरी मुदा होनी कें के टारि सकैछ? जावत हम झोड़ी झपटा लऽ उठी-उठी, पाँच-सात गोट नवयुवक ओहि दोकान पर अयलैक आ अबितहि दौरा मजिस्ट्रेट जकाँ जवाब तलब करय लागल। हम लाख प्रयास कयलहुँ मुदा नहि मानलक "राज्य द्रोही····सी. एम. द्रोही" पी. एम द्रोही आदि विशेषण सं भूषित कऽ, माल-जाल जकां हांकि कऽ ठूसि देलक सरकारी ट्रक मे आर अपन कमीशन प्राप्त कऽ ओ सभ नाचि-नाचि कऽ फिल्मी गीतक कीर्तन करए लागल—

'मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है, मेरे अंगने मे····।' से लालबुझक्करजी, अपन फजीहतक वर्णन की करू "जं सांगोपांग वर्णन करब तं एकगोट छोट-छीन उपन्यासे तैयार भऽ जायत। संक्षेप मे इएह बुझूजे हमरे सन केकटा दिवास्वप्नद्रष्टा मैथिल सभ मिथिलाक कोण-कोण सं बझाओलगेल रहथि····सभक मुंह सं मिसरजी जिन्दाबाद ···· माताजी जिन्दाबादक नारा लगवाउलगेलैक आर फेर पुनः हमसभ कोन धरानी महात्मागांधी सेतुक उद्घाटन उत्सव मे सम्मिलित भेलहुँ····सी. एमक संग राजनीतिज्ञ आर भाषा समस्या पर कोन तर्क-वितर्क भेल आ हम सभ गंगालाभ करैत-करैत कोना कें बांचि गेलहुँ—ओहि विषय अलग सं एक गोट विशेष रपट बना कऽ 'देसिलबयना'क सम्पादक कें पठा रहल छिअनि मुदा सम्प्रति एक गोट मर्मक बात लिख रहल छी—लालबुझक्करजी, मिथिलांचल मे ओतेक चक्कर कटलहुँ—मिथिला

अजगुत-अनटोटल

महाराष्ट्रक भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्रीमान अंतुले साहेबक बाद सभसं विवादास्पद मुख्य मंत्री छथि बिहारक स्वयंयू जनसेवक डा० श्री जगन्नाथ मिश्र। ओना त हिनका में बड़-बड़ गुण अछि—को बड़ छोट कहत अपराधू—परञ्च सभसं पैघ गुण—जेना कि पत्रकार लोकनि कहैत छथि—छनि, फूसि बजबा मे प्रवीणता। मिथिला मे एगो बड़ प्रचिलित फकड़ा छैक—लादय, पादय ओ औंघाय, सत्य न वाजय जौं मरि जाय। लोकक कहब छैक जे जं उपरोक्त तीनू श्रेणीक लोक भनहि सत्य बाजियो जाय किन्तु आजुक राजनेता आ खास कें कांग्रेस (इ) क नेता किन्हुँ सत्य नहि बाजि सकैत छथि। आ जं एकाध गोटे भूल सं एक-आध सत्य बाजियों लेथि तैयो स्वनामधन्य डा० साहेब त सत्य नहिञे टा बाजि सकैत छथि। जेना कि सुनवा मे अवैछ, मुख्य मंत्रीक शपथ लेबा सं पहिने डा० साहेब दू गोट महत्वपूर्ण शपथ से हो लेने छलाह। पहिल त मिथिला, मैथिल-मैथिलीक विनाशक आ दोसर सत्य नहि बजबाक। पहिल शपथक निर्वाह ई नीक जकां करैत आयल छथि—से त सभके ज्ञाते छनि परञ्च दोसरोक निर्वाह मे ई पाछू नहि छथि तकर टटके उदाहरण थिक—मधुवनी मे अपन दलक भवनक उद्घाटनक समय हिनका द्वारा देल गेल भाषण। एहिठाम ई कहलनि जे हिनक सरकार मैथिलीक संवैधानिक मान्यता लेल 'कृत संकल्प' अछि तथा मैथिली अकादमी के एहि बर्ख चारि लाख सरकारी अनुदान भेटलैक-ए। पहिलक संदर्भ में जेना कि ई अपने बजेत छथि एगो व्यक्तिगत चिट्ठी प्रधान मंत्री के लिखने छथिन"""जहां धरि दोसराक बात अछि मिथिला मिहिरक सम्पादकीय सं स्पष्ठ पता चलैछ जे मात्र पचहत्तरि हजार टाकाक अनुदान अकादमी कें देल गेलैए। ओना ई दिगर बात भेल जे जगन्नाथ मिश्र चारि कोटि लोकक भाषाक उत्थानक नाम पर बनल अकादमी कें (ओना काजक लेल ई अकादमी हिनके स्वजनक पोषण करैछ) जे अनुदान देत आबि रहल छथि ताइ अनुपात मे भोजपुरी अकादमी, एको प्रतिशत लोकक भाषा नहिं रहैत हिन्दी अकादमी आ हुनके अनुसार 'दश प्रतिशत लोकक भाषा' उर्दू अकादमी के कतेक अनुदान देत छथिन से नहि बजेत छथि। से जे हो, किन्तु हमरा लोकनिक सुझाव जं 'नोबेल पुरस्कार कमिटी' मानय त ओकरा फूसि बजनिहारक लेल सेहो पुरस्कारक घोषणा करक चाहिऐक आ एकर पहिल पुरस्कार डा० श्री विहारक मुख्य मंत्री जी जगन्नाथ मिसर साहेब कें देबाक चाहिऐक।

नबकी-दिल्ली, १३ मइ १६८१ केन्द्रीय सरकार एक खेप फेर परिछा देलक जे संविधानक आठम अनुच्छेद मे आर बेसी भाषा कें शामिल नहि कएल जायत। ओना परितोषक लेल, ओ कहलकएं जे राज्य सरकार सभ-अपन-अपन राज्यक ओहू भाषा सब कें, जे संविधान सं बाइल अइ विकासक लेल सुविधा सुयोग दैक-से उचित।

प्रश्न उठल छलैक मैथिली, नेपाली, डोगरी आ मनिपुरी भाषाक संवैधानिक मान्यताक। नेपालीक लेल प० बंगालक सरकार विधान सभा सं एहि संदर्भ मे प्रस्ताव पास कए केन्द्र सं बहुत पहिने अनुरोध जना चुकल अइ तथा नेपाली भाषा अंचल मे सरकारी समस्त काजक माध्यम भाषाक रूप मे एकरा मान्यता ओ ब्यावहारिक रूप द चुकल अइ। मनिपुरीक लेल सेहो ओकर सरकार केने छैक। पाछू अइ डोगरी आ सब सं पाछू मैथिली। मैथिली मात्र विहार सरकार द्वारा, अवहेल्तिटा नहि अइ, अपितु घृणित षड्यंत्रक शिकार भेल अइ। ओना जनता कें आबो अवस्से बुझक चाहिऐक जे जगन्नाथ मिश्रक डपोर शंखी भाषण मे कते सत्यता छैक आ हुनक नोर सरिपहुँ घरिपाली नोर सं बेसी नहि।

आजुक युग मे राजकीय मान्यता आंपोषणक बिनु कुनू भाषा संकृतिक विकास असंभव आ बिहार सरकार त पहिनहि स्पष्ट क देने अइ जे मैथिली संविधान मे नहि अइ, तें राज्य सरकार ओकरा मान्यता नहि देत। पता ने ई समाचार जनलाक बाद मुख्य मन्त्री साहेब जनिक दल मैथिलीक विकासक लेल 'कृतसंकल्प' अइ की बाजत आ की करत। ओना एहि सं पूर्वं विधान-सभाध्यक्ष राधानन्दन झा वज्जिकाक स्तुति-पाठ करैत मैथिलीक विनासक नव षड्यंत्रक बीजारोपण कइए चुकल छथि। की राधा बाबूक भाषण केन्द्र सरकारक निर्णय तथा बिहार सरकारक आगामी चक्रचालिक पूर्वाभास दल ?

आब प्रश्न अइ जे चारि कोटि मिथिला वासी कि पूर्ववत दोसर स्तरक नागरीक सन सरकारी कौरा पर जीवैत रहताह ने करोट करैताह ?

—उचित वक्ता



सारदा देवी

पुत्री : स्व० प० गणेश झा — पत्नी : स्व० सुरति ठाकुर

कोकन — बाबूपाली

मैथिलीक युवा साहित्यकार एवं मैथिली मुक्ति मोर्चा कलकत्ताक संयोजक श्री राम लोचन ठाकुरक पुजनीया मां श्रीमती सारदा देवीक आकस्मिक देहावसान लगभग साठि बर्खक अवस्था मे अपन गाम बाबूपाली मे विगत २ अप्रील १६८२ कें भय गेलनि। ई कुछ बर्ख सं गेस्टिक व्याधि ग्रस्त छलीह। ई लिखिया-पढ़िया, गीत-नाद मे पूर्ण पट्ठ ब्यवहार कुशल ओ धर्मपरायण महिला छलीह। स्व० सारदा देवी अपना पाछा एक मात्र पुत्र, पुत्रबधु, तीन पौत्र ओ दू पौत्री कें छोड़ि गेल छथि।

'देसिल बयना' चन्दाक दर :—

१ प्रति	५०, पइसा
१ बर्खक	५) टाका
५ बर्खक	२०) टाका

पाइ पठेबाक पता :—

श्री जनार्दन झा,
१७६।६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

देसिल बयना

पाठकीय परिवारक (सलियाना) सदस्य

३८. श्री रामचन्द्र झा, उषानगर, कलकत्ता
३९. ,, प्रबोध झा ,, ,,
४०. ,, कमल नारायण कर्ण ,, ,,
४१. ,, सूर्यकान्त मिश्र, उषा फेन, ,,
४२. ,, सत्यनारायण झा ,, ,,
४३. ,, कान्ति बिहारी मिश्र ,, ,,
४४. ,, सुरेन्द्र नाथ झा, रंगकल, ,,
४५. ,, खुशीलाल झा, बड़ाबाजार, ,,
४६. ,, राम नरायण मिश्र, उषा फेन, ,,
४७. ,, अर्जुन लाल करण, कलकत्ता
४८. ,, ललन मिश्र, नदारी, दड़िभंगा
४९. ,, विस्वम्बर मिश्र, ,, ,,
५०. ,, कुमारी ज्योति झा, कलकत्ता
५१. ,, बालनाथ झा, डाबरकेस

मिथिलांचलक विकास

भेटल, मैथिल भेटलाह मुदा मैथिलीक दर्शन कतहु नहि भेल ||| मैथिलीक जिज्ञासा पर सर्वत्र एकेटा उत्तर भेटल—'मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है ???

पत्र सुरसाक मुंह जकां अनेरे बढ़ल जा रहल अछि तैं आब पत्र कें समाप्त करैत अपने सं करबद्ध प्रार्थना कऽ रहल छी-जे लालबुझक्करजी, अहां कें जे मोन हो से लिखू—जं चाही तं एडवान्स मे अपन मृत्यु गीत पर्यन्त लिख सकैत छी मुदा भाइने—जगन्नाथबाबूक विरोध मे किछु नहि लिखी ओ मैथिल थिकाह, हुनकर मातृभाषा मैथिली छनि मने ओ खांटी अप्पन लोक छथि तैं अप्पन लोक कें देखार करब उचित नहि। शेष कुशल।

अहींक
—विश्व वंचित

मिथिलावासिक माङ

१. मिथिला राज्यक निर्माण हो।
२. मैथिली कें अविलम्ब संविधानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
३. समस्त सरकारी। अर्ध सरकारी प्रतियोगितामूलक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
४. मिथिला मे निम्नतम सं उच्चतम स्तर धरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो
५. मिथिलाक प्रथम राजभाषा मैथिली हो।
६. मिथिला मे सरकारी कल-कारखानाक स्थापना ओ विकास हो।
७. मिथिलाक कृषिक अवस्था मे सुधार हो आ एहि निमित्त रौदी-दाही सं मुक्तिक व्यवस्था हो तथा यातायातक सुव्यवस्था हो।

—रामाधार मिश्र
बास्ते—मैथिली मुक्तियोर्चा,
कलकत्ता